



लेखक
(बारी के पश्चिमी द्वार के बरतों में)

पृथ्वी-परिक्रमा

लेखक
गोविन्ददास

भूमिका-लेखक
श्री गणेश घासुदेव भावलकर
अध्यक्ष लोकसभा

१९२४
आत्माराम एण्डर्स मंस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विभेता
काश्मीरी गेट
दिल्ली ५

ब्रह्मसूत्र

रामलाल पुरी

श्यामलाल शर्मा

काशी १

मुद्रण १९१९

मुद्रक

श्यामलाल शर्मा

हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस

काशी १

भूमिका

सेठ गोविन्ददास देव-बिदेसों की विस्तृत यात्रा कर चुके हैं। साथ ही हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् एवं लेखक हैं। उनकी पुस्तक में न केवल लेखक द्वारा सन् १९२२ में बिदेस के विभिन्न भागों की यात्रा का विवरण दिया गया है बल्कि उन देशों के राजनीतिक सामाजिक तथा धार्मिक जीवन पर लेखक ने अपना मत भी सरस भाषा में व्यक्त किया है। लेखक केवल वर्तमान जीवन पर ही प्रकाश नहीं डालता बल्कि संक्षेप में उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी स्पष्ट करता है जिससे पाठक का वर्तमान परिचय के मूल तक पहुँचने में सहायता मिलती है। वर्तमान धार्मिक भ्रष्टाचार के घाघार पर ही बिकसित होता है। भ्रष्ट प्रस्तुत पुस्तक जिन देशों में लेखक गया उन देशों की इमारतों एवं स्मारकों का विवरण मात्र ही नहीं बल्कि उन देशों का संक्षिप्त राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास भी है। एक प्रकार से प्रस्तुत पुस्तक को बिदेस इतिहास का एक ठोस भाग कहा जा सकता है। मैं इसे एक भाग ही इसलिये कहता हूँ कि लेखक ने सारे बिदेस की यात्रा नहीं की। जिन देशों में लेखक गया उनके लिए तो यह एक "एनसाइक्लोपीडिया" ही है।

इस बिदेस-यात्रा के पहले भी सेठ गोविन्ददास बिदेसों में घूम चुके हैं। कैनेडा की प्रस्तुत यात्रा उन्होंने सेंटोटाबा में ८ सितम्बर से १३ सितम्बर १९२२ तक हुए कामनवेल्थ पैसिफिकमैट्री कांग्रेस में भाग लेने वाले भारतीय प्रतिनिधिमण्डल के सदस्य के रूप में की। वे सन् १९२० में भी म्यूजीकैंड में हुए इसी संस्था के सम्मेलन में प्रतिनिधि के रूप में यात्रा कर चुके हैं। सेठ गोविन्ददास उस प्रतिनिधि मण्डल के नेता थे। सेंटोटाबा सम्मेलन का नेतृत्व भारतीय संसद् के अध्यक्ष के नाते मुझे प्राप्त हुआ। उस समय प्रतिनिधिमण्डल के शीरे में हम लोगों ने समय-समय सारे कैनेडा की साध-साध यात्रा की थी और इसलिये मैं इस स्थिति में हूँ कि व्यक्तिगत अनुभव के घाघार पर सेठ गोविन्ददास द्वारा कलित इस यात्रा की सत्यता एवं सफलता की पुष्टि कर सकूँ। मेरा विश्वास है कि मेरा यह प्रमाण इस बात को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त होगा कि विभिन्न धर्म देशों की यात्रा एवं सांस्कृतिक इतिहास का जो वर्णन लेखक ने किया है वह सत्य एवं शुद्ध है।

कैसे वा यात्रा के समय हम लोग एक ही होटल में टहलते रहे है यद्यपि मिन मिन कमरों में । जब भी हमें उनका बरजात्रा घटनाटाने का अवसर प्राप्त हुन देखते कि ठेठ गौबिन्दवास मेज पर बैठकर कुछ सिखने में व्यस्त है । धारम्भ में तो हमारा अनुमान था कि वे अपने डाक निपटा रहे हैं लेकिन जब हम सभी को यह अनुभव होने लगा कि वे हमेसा मेज पर बैठे कुछ सिखने में व्यस्त रहते है तब एक बार वेने पूछा कि वे इस प्रकार निरन्तर क्या सिख रहे है । उनका उत्तर मिमा कि वे अपनी सारी यात्रा का वृत्तान्त लिखने में व्यस्त है । उस समय भी मेरी कल्पना नहीं थी कि यह वृत्तान्त केवल दर्शनीय स्मारकों, व्यक्तियों एवं स्मारकों के वर्णन से कहीं अधिक व्यापक एवं विस्तृत होगा । प्रस्तुत पुस्तक का पढ़ने के बाद ही मुझे सात हुआ कि यह पुस्तक केवल वनतारमक ही नहीं बल्कि एक ऐसी पुस्तक है जो प्रायः बङ्कर प्रत्येक देश को प्राचीन पृष्ठभूमि और साथ ही वर्तमान राजनीतिक सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों तक का वर्णन करती है । पुस्तक से स्पष्ट होता है कि प्रायक देश के इतिहास अपने संस्कृति कला इत्यादि का परिष्कृततम अध्ययन किया गया है । अतः प्रस्तुत पुस्तक प्रत्येक ऐसे पाठक के लिए अत्यन्त उपयोगी है जो कि पुस्तक में वर्णित देशों के अन्तर्गत जीवन से परिचय प्राप्त करने का इच्छुक है ।

लेखक ने पुस्तक में जिन व्यापक विषयों पर लिखा है उन्हें समझने के लिए प्रस्तुत पुस्तक को प्राचीनतम पढ़ना आवश्यक है । असाधारण के लिए जिस समय लेखक इस्लाम धर्म की धार्मिक पृष्ठभूमि पर विचार करता है उस समय मुस्लिम के वर्णन को भी बर्णन करता है, अन्तः मुहम्मद के विषय में जानकारी कराता है और बहुरिषों के इतिहास पर लगे इब्नरायस राज्ञ के निर्माण तक प्रकाश डालता है । विभिन्न जातियों का वर्णन भी वह करता है और उनके सम्बन्ध में अनेक विमल्य बातें बताता है । यह बताता है कि यूरोपीय विद्वानों के अनुसार पाश्चात्य संस्कृति की जनन भूमि मिस्र में थी पात्र को पवित्र माना जाता है । प्रायः यूरोप के वे विद्वान् जो मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खोज के बाद यह मानने लगे है कि भारतीय संस्कृति मिस्र से भी कहीं अधिक प्राचीन है । ठेठ गौबिन्दवास स्वयं भी-अपत्त हैं तथा भी रक्षा के लिए उन्होंने अनेक उल्लेखनीय प्रयत्न किये हैं । अतः स्वाभाविक ही है कि मिस्र के इस असाधारण से उन्हें अपने कार्यों के लिए समर्पण प्राप्त हो ।

वे अपनी पुस्तक में विभिन्न देशों के बाह-संस्कारों का वर्णन करते है तथा अनेक असाधारण सम्बन्धों पर विचार करते समय हमारे समस्त फिलिस्तीन के शरणाचिनों की समस्या प्रस्तुत करते है । पात्र हमें भी जिस शरणाधी समस्या का सामना करना पड़ रहा है उसकी पृष्ठभूमि में यह वर्णन अत्यन्त उपयोगी है । इस भूमिका में मेरे लिए उन सारे विषयों का उल्लेख करना अर्थात्क है जिनकी बर्णना लेखक ने की है । मैं पाठकों से अनुरोध करता कि वे पूरी पुस्तक का अध्ययन करें ।

सेठ गोविन्ददास ने अपनी अधिकांश यात्रा बामुवाज द्वारा की इसलिए अल्प समय में ही वे विस्तृत क्षेत्र की यात्रा कर सके । यद्यपि शारीरिक दृष्टि से उन्होंने बामुवाज द्वारा ही यात्रा की किन्तु जहाँ तक उनके विभिन्न देशों के निरीक्षण का प्रश्न है उन्होंने राज्यार्थ के अनुसार इन देशों पर सचमुच एक 'विह्वलन दृष्टि' प्रस्तुत की है ।

उन्होंने एशिया अफ्रिका यूरोप और अमेरिका में स्थित अनेकों पश्चिमी पूर्वी और दक्षिणी देशों की यात्रा की । प्रस्तुत पुस्तक में अफ्रिका के मध्य यूरोप के बीच इटली स्विट्जरलैंड फ्रांस और इंग्लैंड दक्षिण के कॅनेडा अमेरिका और हवाई तथा पूर्वी एशिया के जापान हांगकांग चीन स्वाम और बर्मा का बरण है ।

पुस्तक सरस एवं आकर्षक शैली में लिखी गयी है तथा एक बार पढ़ना आरम्भ करने पर अबाध रूप से पूरी पुस्तक पढ़ डालने की इच्छा बलवती हो पठती है ।

मेरा विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण निधि है जिससे कि सामान्य पाठक विश्व के विभिन्न देशों की घटीत एवं वर्तमान की समस्याओं जातियों बर्गों राजनीतिक विचारधाराओं तथा विभिन्न संघर्षों एवं अन्य प्रश्नों का समझने के लिए सहायता प्राप्त कर सकता है । हम सब सेठ गोविन्ददास के प्रामाण्य है कि उन्होंने इतने परिश्रम से इस पुस्तक को लिखा ।

मे अफ़िजवत रूप से भी उन्हें अभ्यवाह देता हूँ क्योंकि उनकी पुस्तक ने मेरी कॅनेडा-यात्रा की स्मृतियों को पुनः ताजा कर दिया और अनेक ऐसी बातों को जानने में भी सहायता दी है बिनाकी धोर ध्यान देने के लिए यात्रा में न तो मेरे पास समय था और न ही उनके समान सूक्ष्म-निरीक्षण की दृष्टि ।

नई दिल्ली

२० सितम्बर, १९५४

गणेश बामुदेव भावसाकर

अध्यक्ष,

सोसलमा

सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१	इस पृथ्वी-परिभ्रमा का अन्वयन तथा भारत से बिना	१
२	दिल्ली से काहिरा तक	११
३	उप पुरातन-भूमि में कहीं कमी पानी नहीं बरसता	२२
४	मिन्न देश के सम्बन्ध में कुछ शब्द धीर	४
५	मुकरात की ज्ञान बरा पर	४४
६	कृष्ण धीर शहर एबिस्त तथा मूलान पर	५१
७	पश्चिम के उस देश में जो सरा कलाकारों को प्रिय रहा है	५५
८	इटली देश धीर उसकी समस्यार्	७२
९	यूरोप के उस देश में जिसे प्रकृति ने सबसे अधिक रमणीयता दी है	७७
१०	छोटे-से स्विट्जरलैण्ड के महत्त्व के कारण	१००
११	बिलासिठा के समय में पाँच दिन	११३
१२	मांस धीर उसकी समस्यार्	१०१
१३	संसार के सबसे बड़े शहर में एक सप्ताह	१०१
१४	डिटेम बना या धीर बना हो पना	११६
१५	घास का यूरोप	११२
१६	वायुमाल में जब ज्ञान मुट्टी में धा जाती है	११०
१७	कामनवेल्थ पार्लियामेण्टरी परिषद् के पूर्व के घाठ दिन भीलों वाले देश में	१४६
१८	कामनवेल्थ पार्लियामेण्टरी परिषद्	१४०
१९	परिषद् के परचात् कृष्ण धीर समय भीलों के देश में	१७१
२०	कैनेडा पर एक दृष्टि	१७३
२१	गहनपृथ्वी प्रासार्तों के प्रांगण में	१७६
२२	अमेरिका-उद्धारक के समय में	१९८
२३	इस सर्वश्रेष्ठ देश में हम धीर कहीं गये	२०४
२४	संसार का सिरमीर अमेरिका	२१५

पृथ्वी-परिक्रमा

संख्या

विषय

पृष्ठ

२५. हवाई डीपों में दो दिन	२२४
२६. हवाई डीपों के सम्बन्ध में दो बार बातें और	२२६
२७. पूर्व के सबसे उन्नत देश की और	२३२
२८. जापान में एक पक्ष	२३५
२९. जापान पर एक दृष्टि	२३९
३०. उस प्राचीन देश की ओर जहाँ प्रजापीन साम्राज्य	३१२
का मयूख है	
३१. चीन में दो सप्ताह	३१६
३२. चीन पर ही कुछ और	३२४
३३. मंगोल के उस देश में जिसमें सबसे अधिक सामरिक	३२७
वायुमण्डल है	३३१
३४. स्वाम पर एक दृष्टि	३३३
३५. बिहारों और स्तूपों के देश में	३३५
३६. बर्मा पर एक दृष्टि	३३५
३७. पन-बल्ल मृमि में	३३५
उपसंहार	

पृथ्वी-परिक्रमा

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
२५	हवाई डीपों में दो दिन	२२५
२६	हवाई डीपों के सम्बन्ध में दो बार बातें और	२२६
२७	पूर्व के सबसे उत्तम देश की और	२३३
२८	जापान में एक पक्ष	२३३
२९	जापान पर एक दृष्टि	२३६
३०	उस प्राचीन देश की और जहाँ धार्मिक साम्यवाद का मूल है	२६१
३१	चीन में दो सप्ताह	३१२
३२	चीन पर ही कुछ और	३१८
३३	संसार के उस देश में जिनमें सबसे अधिक कामकि बायुमण्डल है	३२७
३४	स्याम पर एक दृष्टि	३३१
३५	बिहारों और स्तूपों के देश में	३३५
३६	बर्मा पर एक दृष्टि	३३७
३७	पुनः जन्म भूमि में उपसंहार	



लेखक (बैठे हुए) बायीं ओर जयमोहनदास और बायीं ओर बलरामदास (खड़े हुए)

इस पृथ्वी-परिक्रमा का उपक्रम तथा भारत से विदा

बद कामनवेल्थ पार्लियामेण्टरी एसोसियेशन के सेक्रेटरी जनरल सर हाबर्ड डेविल ने मुझे दिसम्बर सन् '५९ में कामनवेल्थ पार्लियामेण्टरी काङ्ग्रेस के कनेडा में होने की निश्चित सूचना दी और कामनवेल्थ पार्लियामेण्टरी एसोसियेशन की कार्यकारिणी, जिसे जनरल कौंसिल कहा जाता है के सदस्य होने के कारण मुझे उक्त परिषद् में घाने का निमन्त्रण भेजा तभी मैंने सोच लिया था कि मुझे कनेडा जाने का जो सबसे मिलेगा उसका उपयोग मैं पृथ्वी-परिक्रमा के लिए भी कर दानूँगा। कनेडा जाने के रास्ते में यूरोप पड़ता ही है और कनेडा से अमेरिका लगा हुआ है। लौटना फिर वही यूरोप होकर हो सकता है अथवा अमेरिका के पश्चिमी छोर के स्प्याक के अमेरिका के पूर्वी छोर सैनफ्रिस्को धारक। वहाँ से जापान और चीन होकर घाने में कुछ बचकर अवश्य पड़ता है और कुछ रुपया भी खर्च सकता है पर जीवन में बार-बार ऐसे अवसर नहीं आते अतः मैंने पृथ्वी की इस परिक्रमा को करने का ही निर्णय लिया। अमेरिका मत्वाया ग्युडीसड प्राप्त किया जो भी प्राथि में पहले हो आया था अतएव इस यात्रा के बाब हमारे संसार के प्रायः समस्त प्रधान-प्रधान देशों का पैरा भ्रमण हो आया और इस भ्रमण के कारण संसार की समस्याओं का अध्ययन इस विचार ने इस पृथ्वी-परिक्रमा के विचार को और अधिक उत्तेजना दे दी।

परन्तु कामनवेल्थ पार्लियामेण्टरी एसोसियेशन की कार्यकारिणी का सदस्य होना इस परिषद् के लिए भारत से जो प्रतिनिधिमंडल जाने वाला था उक्त मंडल का सदस्य होना नहीं था। प्रतिनिधिमंडल को चुनने का अधिकार या भारत की इन्टर-पार्लियामेण्टरी यूनियन की शाखा की, जिसके सभापति ने भारत की लोकतन्त्रा के अध्यक्ष की माहर्नकर। भारत की इन्टर-पार्लियामेण्टरी यूनियन की यह शाखा इस प्रकार के प्रतिनिधिमंडलों के चुनाव का अधिकार तथा अपने सभापति को दे दिया करती थी। इस बार भी यही होने वाला था अतः कामनवेल्थ पार्लियामेण्टरी एसोसियेशन की कार्यकारिणी के सदस्य होने पर भी कनेडा में होने वाली इस परिषद् के प्रतिनिधिमंडल का पैरा सदस्य होना भी माहर्नकर पर निर्भर था। बिना प्रतिनिधिमंडल के सदस्य

हुए भी कामनवर्कस पातिमेस्टरी एसोसियेशन की कार्यकारिणी के सदस्य होने के कारण इस हिसियत से भी न कनेडा की परिषद् में जा सकता था लेकिन उस कार्यकारिणी का मेरा सदस्य रहना भी कामनवर्कस पातिमेस्टरी एसोसियेशन की भारतीय शाखा पर निर्भर था। कामनवर्कस पातिमेस्टरी एसोसियेशन के सचिवालय के अनुसार उसकी कार्यकारिणी के सदस्य उसकी भिन्न भिन्न शाखाओं द्वारा चुने जाते हैं। यदि मैं प्रतिनिधिमंडल का सदस्य न होता तो कार्यकारिणी का सदस्य भी कोई दूसरा व्यक्ति ही चुना जाता। मंडल का सदस्य न होकर कार्यकारिणी के सदस्य के नाते कनेडा की परिषद् में न तो मैं जा सकता था और यदि कार्यकारिणी की सदस्यता में परिवर्तन न किया जाता और मैं कार्यकारिणी के सदस्य के नाते कनेडा जाता तो उसका कुछ धर्म भी न था क्योंकि उस हिसियत से जाने में मैं परिषद् की कार्यवाही में भाग न ले सकता था। अतः मैं प्रतिनिधिमंडल के नाम के निर्णय की प्रतीक्षा करने लगा।

तारीख ३१ 'मई' सन् ३२ की कामनवर्कस पातिमेस्टरी एसोसियेशन की भारतीय शाखा की बैठक हुई। उसमें प्रतिनिधिमंडल के चुनाव का अधिकार भी माबलंकर को दे दिया गया। उसके कुछ ही दिन बाद मुझे सूचना मिली कि मैं प्रतिनिधिमंडल का एक सदस्य चुना गया हूँ। पर अब मेरे सामने एक दूसरा प्रश्न उपस्थित हुआ कि मंडल का नेता कौन होया और उसके नेतृत्व में मेरा जाना कहीं तक बरे अग्रम सम्मान के अनुकूल पड़ेगा? यह प्रश्न मेरे लिए इस कारण और अधिक महत्व का हो गया कि न्यूजीलैंड में सन् ३२ में जो परिषद् हुई थी उसके भारतीय प्रतिनिधि मंडल के नेतृत्व का भार मुझ पर रखा गया था। पर इस अवसरमें मुझे बहुत समय तक न रहना पड़ा। बहुत धीमे धीमे सूचना मिल गयी कि या तो प्रतिनिधिमंडल के नेतृत्व की जिम्मेदारी फिर मुझ पर रखी जायगी या भी माबलंकर स्वयं प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे। भी माबलंकर के लोकतन्त्र के ध्येय्य होन के कारण उनके नेतृत्व में जाने में मुझे कोई आपत्ति न ही सकती थी। अतः मैं प्रतिनिधिमंडल के सदस्य होने की प्रथमी स्वीकृति भेज दी। कुछ दिन के बाद मुझे अन्य प्रतिनिधियों के नाम मालूम हुए। पुरा प्रतिनिधिमंडल न्यूजीलैंड के तमाम ही पाँच प्रतिनिधियों का था। इनके नाम थे—भी माबलंकर भी अग्रमप्रधान धर्मवर प्रोफेसर रंगा भी अनुसूया बाई काले और मैं। न्यूजीलैंड के प्रतिनिधिमंडल के मुझे छोड़ अन्य कोई प्रतिनिधि इस मंडल में नहीं थे। पातिमेस्टरी सदस्यों की संख्या काफी है और बहुत लोग विदेशों को जाने से इच्छुक भी रहते हैं। अतः हर प्रतिनिधिमंडल में प्रायः नये लोगों को ही भेजा जाता है। पर मैंने सुना कि मेरे सम्बन्ध में इस अवसर का यह कारण था कि न्यूजीलैंड के प्रतिनिधिमंडल के नेता के रूप में मैंने जो काम किया था वह काम कुछ अल्पकाल का माना गया था।

मेरे कुटुम्बियों को मेरे लौकिक जाने का वृत्त उसी समय से मामूल था जब से इस सम्बन्ध में भी हाबर्ड ईगबिल का पत्र मेरे पास आया था। मेरे कुटुम्ब में मेरे छोटे पुत्र जगमोहनदास मेरे साथ जाने के लिए बड़े इच्छुक थे। जगमोहनदास का विद्यार्थी-जीवन बड़ा प्रतिभाशाली रहा था। उन्होंने अपनी इम्प्ट, बी ए. एल एल बी सभी परीसार्पूर्व प्रथम श्रेणी में पास की थीं। हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर भी उनकी अच्छी प्रतिकार था। वे एक भव्य प्रदेश विधानसभा के भी सदस्य थे। अतः उनसे मुझे भी तारे दोरे में सहायता मिलेगी इस दृष्टि से साथ ही यह बोरा उनके भावी जीवन के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा। इस दृष्टि से मेने उन्हें अपने साथ ले जाने की स्वीकृति दे दी। इसी बीच कलकत्ते में मेरे बड़े पुत्र मनमोहनदास का एक प्रायश्चित्त था। जब मैं वहाँ गया तब मेरे छोटे बामाद भी जनश्यामदास त्रिपाठी का भी मेरे साथ जाने का निर्णय हुआ। इस प्रकार हम तीनों के इस प्रयास की तैयारी प्रारम्भ हुई।

सबसे पहला प्रश्न था पूरे कार्यक्रम का निर्णय करना। भारतीय प्रतिनिधि मंडल तारीख २७ अगस्त को जाने वाला था क्योंकि कॅनेडा में परिवर्द्ध भी सन् ५२ के तारीख ८ सितम्बर से १३ सितम्बर तक। तारीख २७ अगस्त को एरोप्लन से बम्बई से चलकर तारीख २८ को लंदन पहुँचना और वहाँ से एक चारदंड एरोप्लन से संतार के मिन्न-त्रिन्न देशों के अग्र्य प्रतिनिधिमंडलों के साथ भारतीय प्रतिनिधिमंडल का कॅनेडा जाना निश्चित हुआ था। हम लोग कॅनेडा पहुँचने के पहले रास्ते के देशों का बोरा कर लना चाहते थे, अतः हमने तारीख ३१ जुलाई को ही जाने का निश्चय किया। इसमें कोई दिक्कत नहीं हुई। कामनवेल्थ पार्लियामेण्टरी एसोसिएशन के नियमों के अनुसार इन प्रतिनिधिमंडलों के यात्रायत्त का खर्च एसोसिएशन की उक्त देश को धारणा देती है जिस देश में परिवर्द्ध होती है। कॅनेडा की इस धारणा ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल के जाने की व्यवस्था भी ए. सी. कम्पनी के हवाई जहाजों से की थी। जब मैंने भी ए. सी. कम्पनी वालों से तारीख २० अगस्त के बदले ३१ जुलाई को ही जाने की अपनी इच्छा प्रकट की तब उन्होंने कहा कि इस व्यवस्था में कोई अड़चन न होगी। जगमोहनदास और जनश्यामदास अपने अपने खर्च पर जा रहे थे अतः वे किसी भी एरोप्लन से कभी भी जाने के लिए स्वतन्त्र थे।

दूसरा प्रश्न था, कपड़ों का। अफ्रीका, न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया में मैंने अपनी काम शेरबानी बुद्धिदार पात्राने और पाम्पी रोपी से जताया था। अफ्रीका तो जमी जति यह काम चल गया था। क्योंकि वहाँ भारतीय काडी मंडल में रहने हैं वर न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया में नहीं। न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया में वहाँ कहीं भी भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य भारतीय डग के कपड़े पहनकर जाते वहाँ

हृष्ट भी कामनबेह्य पालिमेन्टरी एसोसियेशन की कार्यकारिणी के सदस्य होने के कारण इस हृष्टियत से भी न कनेडा की परिषद् में जा सकता था। लेकिन उस कार्यकारिणी का मेरा सदस्य रहना भी कामनबेह्य पालिमेन्टरी एसोसियेशन की भारतीय शाखा पर निर्भर था। कामनबेह्य पालिमेन्टरी एसोसियेशन के संविधान के अनुसार उसकी कार्यकारिणी के सदस्य उसकी जिम्मेदारियाँ द्वारा चुने जाते हैं। यदि मैं प्रतिनिधिमंडल का सदस्य न होता तो कार्यकारिणी का सदस्य भी कोई दूसरा व्यक्ति ही चुना जाता। मंडल का सदस्य न होकर कार्यकारिणी के सदस्य के नाते कनेडा की परिषद् में न तो मैं जा सकता था और यदि कार्यकारिणी की सदस्यता में परिवर्तन न किया जाता और मैं कार्यकारिणी के सदस्य के नाते कनेडा जाता तो उसका कुछ धर्म भी न था क्योंकि उस हृष्टियत से जाने में मैं परिषद् की कार्यवाई में भाग न ले सकता था। अतः मैं प्रतिनिधिमंडल के नाम के निर्णय की प्रतीक्षा करने लगा।

तारीख ३१ 'मई' सन् २२ की कामनबेह्य पालिमेन्टरी एसोसियेशन की भारतीय शाखा की बैठक हुई। उसमें प्रतिनिधिमंडल के चुनाव का अधिकार भी माबसंकर को दे दिया गया। उसके कुछ ही दिन बाद मुझे सूचना मिली कि मैं प्रतिनिधिमंडल का एक सदस्य चुना गया हूँ। पर अब मेरे सामने एक दूसरा प्रश्न उपस्थित हुआ कि मंडल का नेता कौन होना और उसके नेतृत्व में मेरा जाना कहाँ तक बरे धार्य सम्मान के अनुकूल पड़ेगा? यह प्रश्न मेरे लिए इस कारण और अधिक महत्व का हो गया कि म्यून्डोलैंड में सन् २९ में जो परिषद् हुई थी उसके भारतीय प्रतिनिधि मंडल के नेतृत्व का भार मुझ पर रखा गया था। पर इस अवसर में मुझे बहुत समय तक न रहना पड़ा। बहुत ही जल्द मुझे सूचना मिल गयी कि या तो प्रतिनिधिमंडल के नेतृत्व की जिम्मेदारी फिर मुझ पर रखी जायगी या भी माबसंकर स्वयं प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे। भी माबसंकर के लोकतन्त्र के अध्यापन होने के कारण उनके नेतृत्व में जाने में मुझे कोई आपत्ति न हो सकती थी। अतः मैंने प्रतिनिधिमंडल के सदस्य होने की अपनी स्वीकृति भेज दी। कुछ दिन के बाद मुझे प्रथम प्रतिनिधियों के नाम मालूम हुए। पुरा प्रतिनिधिमंडल म्यून्डोलैंड के लगभग ही पाँच प्रतिनिधियों का था। इनके नाम थे—भी माबसंकर भी धनन्तशायनम धायंगर घोषेसर रंवा भी अनुशुया बाई काले और मैं। म्यून्डोलैंड के प्रतिनिधिमंडल के मुझे छोड़ प्रथम कोई प्रतिनिधि इस मंडल में नहीं थे। पालिमेन्टरी सदस्यों की संख्या काफी है और बहुत लोग बिदेसों को जाने के इच्छुक भी रहते हैं। अतः हर प्रतिनिधिमंडल में प्रायः नये लोगों की ही भेजा जाता है, पर मैंने सुना कि मेरे सम्बन्ध में इस अवसर का यह कारण था कि म्यून्डोलैंड के प्रतिनिधिमंडल के नेता के रूप में मैंने जो काम किया था वह काम कुछ उच्छ्वेदीति का माना गया था।

मेरे कुटुम्बियों को मेरे कनेडा जाने का वृत्त जती समय से मालूम था जब से इस सम्बन्ध में श्री हाबर्ड ईंगविल का पत्र मेरे पास आया था। मेरे कुटुम्ब में मेरे छोटे पुत्र अणभोहनदास मेरे साथ जाने के लिए बड़े इच्छुक थे। अणभोहनदास का विद्यार्थी-जीवन बड़ा प्रतिभाशाली रहा था। उन्होंने अपनी इम्बर की ए, एन एन की सभी बरीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में पास की थीं। हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर भी उनका अच्छा अधिकार था। वे अब मध्य प्रदेश विधानसभा के भी सदस्य थे। अतः उनसे मुझे भी सारे बोरे में सहायता मिलेगी इस दृष्टि से, साथ ही यह बोरा उनके माबी जीवन के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा। इस दृष्टि से मैंने उन्हें अपने साथ ले जाने की स्वीकृति दे दी। इसी बीच कलकत्ते में मेरे बड़े पुत्र मनभोहनदास का एक अपरेशन था। जब वे वहाँ गया तब मेरे छोटे बानाद भी घनश्यामदास बिन्नायी का भी मेरे साथ जाने का विचार हुआ। इस प्रकार हम तीनों के इस प्रवास की तैयारी आरम्भ हुई।

सबसे पहला प्रश्न था बुरे कार्यक्रम का निर्णय करना। भारतीय प्रतिनिधि बडन तारीख २७ अगस्त को जाने वाला था क्योंकि कनेडा में परिषद् की मन् १२ के तारीख ८ सितम्बर से १३ सितम्बर तक। तारीख २७ अगस्त को एरोप्लेन से बम्बई से चलकर तारीख २८ को संबन पहुँचना और वहाँ से एक आरखर्ड एरोप्लेन से लंगार के भिन्न-भिन्न देशों के प्राय प्रतिनिधिमंडलों के साथ भारतीय प्रतिनिधिमंडल का कनेडा जाना निश्चित हुआ था। हम लोग कनेडा पहुँचने के पहले रास्ते के देशों का दौरा कर लेना चाहते थे अतः हमने तारीख ३१ जुलाई को ही जाने का निर्णय लिया। इतने कोई विचकत नहीं हुई। कामनवेल्थ पार्लियामेन्टरी एंथोतिपेसन के नियमों के अनुसार इन प्रतिनिधिमंडलों के यात्रायात का खर्च एंथोतिपेसन की उम देस को घाजा देती है जिस देश में बरिबद्द होती है। कनेडा की इस यात्रा में भारतीय प्रतिनिधिमंडल के जाने की व्यवस्था भी श्री ए. सी. कम्पनी के हवाई अड्डों से की थी। जब जाने दो दो ए. सी. कम्पनी वालों से तारीख २७ अगस्त के बरने ३१ अलाई को ही जाने की अपनी इच्छा प्रकट की तब उन्होंने कहा कि इस व्यवस्था में कोई अड़चन न होगी। अणभोहनदास और घनश्यामदास अपने-अपन बर २२ २४ थे अतः वे किसी भी एरोप्लेन से कभी भी जाने के लिए सम्भव थे।

दूसरा प्रश्न था कपड़ों का। अंग्रेजी, स्प्रीन्ग और इन्वर्निंग के लिए अपना काम होरबानी बड़ीबार बाबाय और काली डोरी के बरत का। अतः तो सभी प्रति यह काम बात गया था, बरिबद्द नहीं बरने। बरने का नै एन है पर स्प्रीन्ग और अंग्रेजी में नहीं। स्प्रीन्ग और इन्वर्निंग के बरने को भी भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य भारतीय इर के बरत का नै इने इने

के सभी निवासी उन्हें इस प्रकार घूरते जैसे किसी विचित्र जीवों की देख रहे हों और कुछ विविध ध्वजों को छोड़ इतर-उपर घूमने घामने में कोई इस प्रकार का बुरा जामा पहनने नहीं करता। इसीलिए पंडित जवाहरलाल भी बिदेसों में तथा यूरोपीय इंस के कपड़े पहनते हैं। इस विषय में जो धनुषध मुझे ग्युबीलड और फ्रांज़ेलिया में हुआ था उसके कारण मैंने जो बुद्धो-परिष्कार की इस यात्रा के लिए यूरोपीय इंस के कपड़े बनवाने का ही निश्चय किया वर जब हाथ से कते घोर बुने हुए। जपानोइनवास भी वही से कुछ खास ही पहनते हैं। उन्होंने भी हाथ से कते-बुने यूरोपीय इंस के कपड़े बनवाये। धनुषधवास ने भी यूरोपीय इंस ही घपनाया; हां उन्हें खारी पहनने का संकल्प न था।

घोर तीसरा प्रश्न था मिग्न-मिग्न देशों के 'बिता' का। बिदेस जाने के लिए केवल आसपोर्ट के काम नहीं चलता। पासपोर्ट मिलने के पश्चात् हर देश में जाने के लिए एक घोर धाकाधर की धाकाधरता होती है जिसे 'बिता' कहते हैं। भूमि में बालिगैटरी प्रतिनिधिमंडल में जा रहा था, इसलिए मेरे बिता का प्रबन्ध भारत सरकार ने किया। धनुषधवास एक बहुत बड़े रोजगारी बुद्धुध 'बिम्बानी पैटिल कर्त' के मालिक भी धनुषधवास जी बिम्बानी के पुत्र हैं। उन्होंने धमिकाइ देशों का घपना यह प्रबाध कलकत्ते में कर लिया। जपानोइनवास को यह इन्तजाम दिल्ली में ही करना पड़ा तथा धनुषधवास को भी धमेरिका तथा कुछ देशों का दिल्ली में। कत घोर धमेरिका छोड़कर धग्य देशों के लिए इस प्रबन्ध में कोई कठि नाई नहीं हुई। पर कत घोर धमेरिका के बिता प्राप्त करने में हमें जो तमुरने हुए वे धम्मेकनीय हैं।

'बिता' धम्मे का पर्याय धम्मे है पासपोर्ट की जाँच घोर उत पर हस्ताक्षर किया जाना। यद्यपि धम्मेरिष्ठीय धम्मे के राजनीतिक सम्बन्धों के विषय में बड़े-बड़े सिद्धान्तों का धम्मे से प्रतिपादक हो रहा है घोर संस्कृत बिद्धान्तों के 'धनुषध बुद्धुधकर्त' से लेकर घु एत धी के वर्तमान सिद्धान्त तक पर्याप्त विचार हो चुका है फिर भी यह धम्मे भी निश्चय धम्मे से तथ्य है कि वर्तमान राष्ट्रों के धैरिष्ठीय सम्बन्ध केवल स्वार्थ पर ही निर्भर हैं। पाश्चात्य धिष्णोमेती का धाकाधर ही धम्मे राष्ट्र का हित माना जाता है। यद्यपि स्वतंत्र भारत की धैरिष्ठीय नीति ने कालान्तर से इस सिद्धान्त का विरोध किया है घोर वर्तमान भारतीय धैरिष्ठीय नीति भी धुमिया के हित को धम्मे राष्ट्रिय हित से धम्मेक महत्त्वपूर्ण मानती है तथापि इस नीति का धम्मे धाकाधर धिष्णोमेती वर कोई विरोध प्रबाध नहीं बड़ पाया है। धैरिष्ठीय नीति से सम्बन्धित कितने भी धम्मे धाकाधर बुद्धुधकोण से किये जाते हैं वे सभी, इती राष्ट्रिय स्वार्थ पर धम्मेकित रहते हैं। बिता के धम्मे में बिदेस जाने की धनुषध धैरे तथ्य

भी विभिन्न राष्ट्रों के दूतावास भी इसी आचारभूत बुद्धिकोण से सभी बातों को देखते हैं। जैसा पहले लिखा है मेरे अधिकांश बिदा लेने का प्रबन्ध तो भारतीय सरकार की धीर से होने वाला था किन्तु जगमोहनदास को तो दिल्ली में स्वयं ही बिदा लेने की व्यवस्था करनी थी। हम लोगों को बड़ी इच्छा थी कि इस यूरोपीय भ्रमण के प्रवक्ता पर हम लोग सोवियत यूनियन सेकोस्तोविकिया सोलड इत्यादि साम्यवादी देशों को भी देखें। सोवियत यूनियन के बिदा लेने में सर्वत्र विवक्षित होती है यह मैंने सुना था इसलिए सोवियत यूनियन का बिदा लेने के लिए जाने का मैंने स्वयं ही निश्चय किया। सोवियत दूतावास को टेलीफोन किया गया यह पूछने की कि बिदा मिल सकेगा या नहीं। उत्तर मिला कि संघेजी में अधिक बात टेलीफोन पर हो सकना सम्भव नहीं दूतावास में व्यक्तिगत बात आवश्यक है। ये जगमोहनदास धीर भी धीरे ए सी क प्रतिनिधि की बिमेनजा को लेकर सोवियत दूतावास पहुँचा। सोवियत 'आइंसल' बड़ी सिध्दता से मिल। उन्होंने कुछ देर तक बातचीत की फिर कहा कि मैं इस सम्बन्ध में निश्चय उत्तर दो दिन बाद दे सकूँगे क्योंकि उन्हें मास्को से बातचीत करनी पड़ेगी। दो दिन बाद टेलीफोन करने पर ज्ञात हुआ कि अभी तक मास्को से कोई उत्तर नहीं आया है। अब कि हम लोगों को खाना हीने की ज़रूरत थी इसलिए यह निश्चय किया गया कि मास्को से उत्तर आने ही सम्बन्ध के भारतीय दूतावास की सोवियत दूतावास नयी दिल्ली समाचार में लेने की व्यवस्था कर देगा धीर कदाचित् सम्बन्ध में हमें सोवियत यूनियन जाने की अनुमति प्राप्त हो जायगी।

मैंने सर्वत्र ही सोवियत यूनियन में जो महान् प्रयोग हो रहा है उसे धारर की दृष्टि से देखा है। मैं ही क्या दुनिया के मरीच देशों के निवासियों को विद्यमान पञ्चीत बर्षों से कम ने जो प्रयुक्त प्रवृत्ति की है उससे प्रेरणा मिलती रहती है। मेरा यह मत है कि इस महान् प्रयोग को दुनिया के निवासियों को अधिक से अधिक देखना धीर सम्बन्ध चाहिए जितसे वे इसका अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। इसी दृष्टिकोण से मैं यही धारा करता था कि सोवियत दूतावासों को अधिक से अधिक लोगों को सोवियत यूनियन जाने की अनुमति देना चाहिए। सोवियत दूतावास में मैंने जो बातचीत की उससे मुझे पुरा समीप नहीं हुआ। प्रत्येक छोटी-छोटी बात पर मास्को का इतना बड़ा निर्बल मेरो सम्बन्ध में नहीं आया। एक भारतीय नागरिक को जितने भारतीय सरकार ने सोवियत यूनियन जाने की अनुमति दे दी बहूँ जाने के लिए बिदा देने में मास्को की अनुमति में इतनी आनाकारी की गया आवश्यकता है यह मेरी सम्बन्ध के बाहर की बात थी। प्रत्येक दूतावास में अधिक से अधिक जिम्मेदार व्यक्ति रहते हैं। राजदूत का बर्षा, जन्मी से मोबा नहीं होता। एनी परिस्थिति में बिदा सम्बन्धी बातें दूतावास की ही तय करने का अधिकार हीना चाहिए। यथाच मैं

दूतावासों के विविध कार्यों में एक सबसे महत्वपूर्ण कार्य बिद्या देने का भी है। यदि सोवियत-संघरक्षा चकती है यदि सोवियत भूमि नव राज्य में प्रत्येक व्यापकता हुई है यदि सोवियत संघर्ष का उच्चकोटि का विकास हुआ है तो फिर उसे दुनिया की ओरों से छिपाने की क्या आवश्यकता है? रंगीन पत्रिकाओं में जिस जीवन के चित्र प्रकाशित होते हैं वहाँ की उन्नति की तीव्र गति की छवि को पत्रिकाओं में प्रकाश करने का प्रयत्न होता है क्या उस जीवन की तहज प्राकृतिक वास्तु विद्वत् हो सकती है? क्यापि नहीं।

सोवियत मूनिषम जाने की इच्छा से कम तीव्र जालसा हर्षे अमेरिका जाने की भी नहीं थी। मेरे अमेरिकन बिद्या की व्यवस्था तो भारतीय सरकार ने की थी इसीलिए मुझे बिद्या का न तो कोई दुःख ही देना पड़ा और न कोई कठिनाई ही हुई। जबमोहनदास और यमश्यामदास दोनों ने ही नयी विस्ती स्वतः अमेरिकन दूतावास से बिद्या लेना का निश्चय दिया था और रवाना होने से दो दिन पूर्व के अमेरिकन दूतावास में अमेरिकन काउन्सलर से जेठ करने पड़े। इसके पूर्व का लक्षणा इसलिये सम्भव न हो सका कि प्रत्येक देशों के बिद्या रिजर्व बैंक से रुपये इत्यादि की अनुमति लेने में मासपोर्ट की समाप्ति आवश्यकता पड़ती रही।

विस्ती का अमेरिकन दूतावास नयी विस्ती की एक मध्य इमारत में है। इस इमारत का नाम 'भाबलपुर हाउस' है। भाबलपुर के राजा साहू ने विस्ती के राजधानी होने के बाद अनेक प्रथम भारतीय राजाओं के लक्षण इस मध्य भवन का निर्माण कराया था जिससे सामर्थ्य कम होने पर भी उनके राज्य की प्रतिष्ठा में कोई कमी न रहे। जैसे ही प्रायः इस इमारत के श्वेत्-द्वार से भीतर जाते हैं एक इन्टरे के प्राङ्गण के भीचे मोटरों की एक लम्बी कतार खड़ी रहती है जिससे यह ज्ञात होता है कि अमेरिकन दूतावास में जितने लोग कार्य करते हैं लगभग सभी के पास एक-एक मोटर है। अमेरिका में प्रत्येक गार मालिकों पर एक मोटर है तो यहाँ विदेश में प्रत्येक अमेरिका निवासी के पास यदि एक पाड़ी हो तो आवश्यकता की बात नहीं। अमेरिकन दूतावास के मकान का प्रत्येक कमरा एयरकंडीशंड है। जितने समय बिद्या लेने का प्रयत्न हो रहा था उन दिनों मकान की दुर्ग-सुसज्जित किया था रहा था। भारत का अमेरिकन दूतावास बहुत बड़ा है। प्रत्येक कार्य के लिए एक प्रत्येक अधिकारी हैं और उसके प्रत्येक कमबारी है। कौड़ी मामलों के लिए 'मिनिस्टरो एडेची' जाती के लिए 'एजीक्यूटिव एडेची' और इसी तरह प्रत्येक बात के लिए एक प्रत्येक अधिकारी विद्यमान है। पत्रार्थ में दूतावासों का कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। राजनीतिक सम्बन्धों के प्रतिष्ठित दूतावासों की मानव-जीवन के सभी क्षेत्रों के सम्बन्ध की जानकारी एकत्र करके अपने देशों को भेजनी चाहिए,

जितते अपने देश की उन्नति में पूर्ण सहायता मिले। यदि जेती पर उनका एक प्रलय प्रकृति भारत में निमुक्त है तो यह उसका काम है कि भारतीय जेती बितान की जो बिसेयताएँ हैं उनकी सभी जानकारी तथा नवीन अनुसन्धान की बिधा और उनके फल सम्बन्धी पुरे समाचार अपने देश की भेजे। भारतीय अमेरिकन दूतावास यह कार्य प्रत्यक्ष मुचाह रूप से करता होगा। अमेरिकन दूतावास की बहुत-बहुत ही इतका सबसे बड़ा प्रयास मालूम होता है। प्रत्येक कार्य को प्रचुरी से प्रचुरी तरह से करने का प्रयत्न अमेरिकन करना चाहते हैं और इसीलिए बिता लेने के लिए भी उन्होंने कानून द्वारा प्रबिक से प्रबिक जानकारी लेने की प्रथा बनायी है। अमेरिकन बिदा लेते समय सबसे पहले प्रायकी इस प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करना पड़ता है कि प्राय किसी 'टोमेटरियन' पार्टी—कम्प्युनिस्ट डॉसिस्ट या किसी अन्य—के सदस्य नहीं हैं। इसके बाद प्रायके हाथ की प्रत्येक उँगली के निशान लिये जाते हैं। अपने तीन बिच देते पड़ते हैं जो प्रलग-प्रलग पार्सों पर बिपकामे जाते हैं और सबसे प्रायश्चित्त वस्तु कम से कम भारतीय यात्रियों के लिए, डालर का साटौफिनेट देना पड़ता है। किसी भी पार्टी के लिए जो जस्वी में हो इतकी जानकारी देना बेसे ही एक तबामत की वस्तु ही जाती है। फिर जिस कच्चे-सूखे सिप्टाचार-बिहीन डंग से इसे लेने का प्रयत्न अमेरिका के भारतीय दूतावास में किया गया जतते तो यह तारा प्रकरण एक बन्ड बिधान-सा हो जाता है। जगमोहनदास और घनश्यामदास ने अपने जो बित्र तैयार कराये थे वे फोटो के अमकदार कागज (ग्लैस गेपर) पर न हीकर अमक-बिहीन (अल सरप्रेत) कागज पर न। सर्वप्रथम तो पहले बिग ही यह कह दिवा गया कि इन बित्रों से काम नहीं चलेंगा इन्हें अमकदार कागज पर लाइये। यह बताते का कि बिता की बहुत अस्वी है क्योंकि एक बिग ही बाब इबाई अहाज रवाना हो जाता है, कोई असर नहीं पड़ा। फिर जगमोहनदास के पातपोट पर इम्पीरियल बैंक की लही जो कि उन्हें काफी डालर दे बिये पये हैं। किन्तु यह निरचक माला गया और इम्पीरियल बैंक के एक अठिरिस्त पत्र की नाप की मयी जिसमें यह लिखा था कि उन्हें डालर निश्चित रूप से दे बिये पये ह। यद्यपि उत लही का प्रथं ही यह होता है। मुझे ऐसा लगा कि यह डंग अमेरिकन जीवन बद्धति के अनुसार बिमकुल ही नहीं है। अमेरिका तो इस बात में बिश्वास करता है कि कार्य जस्वी से अस्वी और प्रयिक से प्रबिक सहनियत देते हुए होना चाहिए। फिर दूतावासों को तो बिसेय रूप से सावधान रहना प्रायश्चित्त है।

इन जो प्रभुताग्रामी वर्तमान राष्ट्रों के बिता प्राप्त करने के अनुभव बिसेय रूप से उल्लेखनीय रहे। अन्य देशों के दूतावासों ने और बिसेय रूप से बनेडा तथा सिद्धारनेड के दूतावासों ने तो बड़ी सीधता और प्रायश्चित्त अस्वीक्यता से बिता

दृष्टी परिक्रमा

८

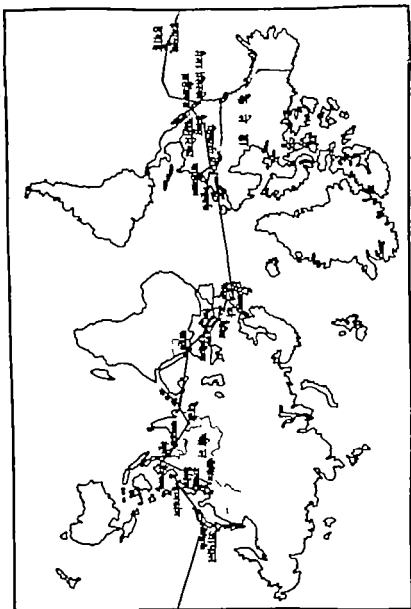
का कार्य निपटाया। हा इटली का बिना बम्बई से मिल पाया क्योंकि इटली के काउंसलर वहाँ रहते हैं। जो प्राप्त करने के लिए पातपोर्ट और प्रावेदन-पत्र बम्बई नेत्रने पड़े। फीस भी इटली के बिना में सबसे अधिक सपे। जब बम्बई के बिना में तथा बपया और स्विट्जरलैंड में सबा ग्यारह रुपये नये तब इटली के बिना में इकतीस रुपये लग।

हम तारीख ३१ जुलाई को रवाना हो रहे थे। भारत लौटने की कोई निश्चित तिथि तय कर सकना कठिन था पर हम किन किन देशों को कार्यमें पहुँचाने तय कर लिया। कुल का हमें बिना न मिलना था प्रतः कुल को छोड़ हमने निम्नलिखित देशों को जाने का निरुप किया—

- | | |
|----------------|-------------|
| १ सिंध | ८ अमेरिका |
| २ पूना | ९ हुवाई |
| ३ इटली | १० जापान |
| ४ स्विट्जरलैंड | ११ चीन |
| ५ फ्रांस | १२ हांगकांग |
| ६ इंग्लैंड | १३ रूस |
| ७ डेन्मार्क | १४ बर्मा |

रवाना होने के पहले मुझे जो घण्य प्राबन्धक काम निकटाने से उतने पहला का मेरी नैरुवाजिरी में प्रांतीय कांग्रेस कैम्पेटी के काम की व्यवस्था। इसके लिए प्रांतीय कांग्रेस की कार्यकारिणी की बैठक तारीख १९ और २० जुलाई को तामपुर में हुई। मेरी नैरुवाजिरी में प्रांतीय समाजिता का काम चलाने के लिए तामपुर के महान्त लक्ष्मीनारायण बाल को नियुक्त हुए।

दूसरा काम था जबलपुर जाकर सब बुद्धिबिद्यो से मिलना। म्यून्निंग बाले हुए मेरे बुद्धिबिद्यो और जालकर माता भी तथा मेरी प्रपत्नी ने मुझे जित प्रकार बिबा किया था वह मुझे बीसा का बीसा स्मरण था। उस बाल को लयमय हो बर्ब बीत चुके थे। इस बीच माता की और अधिक बूढ़ हो पयी थी तथा प्रत्यक्ष भी थी। पर चूँकि मैं तो बर्ब पहले ही एक लम्बी बीधेयिक यात्रा कर प्राया था इसलिए इस समय माता भी या मेरी पत्नी उतनी अधिक चिन्तित न थी जितनी मेरी म्यून्नी लक्ष यात्रा के समय। प्रांतीय कार्यकारिणी की बैठक के बाद तारीख २० को ही मैं तामपुर से जबलपुर प्राया। म्यून्निंग बाल के समय जबलपुर बालों ने मेरी बिबा के लिए बीस प्रायोजन किये थे इस बार भी के करना चाहते थे परन्तु बिस्ती में भार तोय संसर्ग का प्रबिबेक्षण चल रहा था और जान के पहले से बिस्ती से काम से काम नैरुवाजिर रहना चाहता था। घण-समे इन प्रायोजनों को लौटने पर करने का प्राय



का कार्य निपटाया। ही इटली का विना कच्ची से मिल बाग। क्योकि इटली के काउंसिलर बने रहने है। उसे प्रायः काल के लिए बागोई घोर घाघेंदम उन कच्ची भेजने बने। कोन भी इटली के विना म मरने घबिक लगे। जब कच्ची के विना में लडा दया घोर गिबदरमंड म लडा ग्यार दये लने मब इटली के विना में इकनीक दय लगे।

हम तारीख ११ कच्ची को रवाना हो रहे थे। भारत लौटने को कोई निश्चय निश्चि तय कर लकना कडिम का का एक दिन दिन देरी को कायेंवे यह हमने तय कर लिया। कम का हमें विना म विना का घन कम को छोड़ हमने निम्नलिखित देगों को जाने का निरुप्य किया—

१ विष	८ चक्रिका
२ कमान	९ इगार्ड
३ इटली	१० आराम
४ गिबदरमंड	११ चीन
५ प्राय	१२ हांगकांग
६ इंगलैड	१३ रवाना
७ कंचेडा	१४ कच्ची

रवाना होने के बहन मुझे को घण्य घावायक काम निकटाने में उनमें रहना का मेरी गैरहाकिरी में प्रांतीय कार्यक कच्ची के काम की लकलका। इसके लिए प्रांतीय कार्यक की कार्यकारिणी की बैठक तारीख १६ घोर २० कच्ची की नापपुर में हुई। मेरी गैरहाकिरी म प्रांतीय मन्त्रालय का काम चलाने के लिए रायपुर के कच्ची लडकोनारायक काम की नियुक्त हुए।

दूसरा काम का कचलपुर जाकर लड कुदुम्बिजे से मिलना। म्यूडोमैड जाने हुए मेरे कुदुम्बिजे घोर तातकर काता को तथा मेरी पसंखली में कच्ची जित प्रकार बिदा दिया या बहु मुक बीता का बेमा समरल का। उत बात की लपकय हो कच्ची चीन कच्ची में। इस बीच माना की घोर घबिक कच्ची हो गयी थी तथा घाघरक भी थी। पर कचि में ही कच रहने ही एन लम्बी बीडेगिट यात्रा कर घाया का, इसलिये इस समय माना की या मेरी कच्ची उनको घबिक बिभिन्न म घी जितनी मेरी म्यूडी लड यात्रा के समय। प्रांतीय कार्यकारिणी की बैठक क बाद तारीख २० को ही मे नापपुर ल कचलपुर घाया। म्यूडोमैड काम के समय कचलपुर काको मे मेरी बिदा के लिए जसे घाघोजन किये म इस बार भी क कचना काहने में कचलु रिशती में भार लोय लंसा का घबिकेयन कम रहा का घोर काम के कचलु मे रिशती मे काम से कम गैरहाकिर रहना काहना था। घन घने दूध घाघोजनों को लीटने पर करने का घाघड

किया जो कठिनाई से ही लोगों ने स्वीकार किया। जबतपुर भी म हो ही दिन रहा। बेता इपर लिखा गया है इस बार मेरे कुटुम्बी मेरी इस यात्रा के सम्बन्ध में पहले के समान चिन्तित न च फिर भी बिदा का दुःख कावलिक्त तो हो ही गया। माता जी ने चलते चलते जो कहा था वह में पूरी यात्रा में विस्मृत न कर सका। उनके शब्द कुछ इस प्रकार के थे— 'तुम क्यों बेल रह पाये हो। प्रक्रीका म्यूजीलेड घास्टुं लिया न जाने कहीं-कहीं हो पाये हो। तुम्हारी यह यात्रा भी कुसालपूर्वक हो घोर कम से कम तुम्हारे लोटने तक में बीती रहूँ जिससे घासीर बरन तुम्हारे हाथ की लकड़ियाँ तो मिल जायें।'

जबतपुर स्टेशन पर हमें बिदा करने कुटुम्बियो मित्रों तथा धर्म्य लोगों की एक जाती भीड़ इकट्ठी हो पयो। जयमोहनदास की पत्नी बिद्या तथा मेरा पौत्र रबिमोहन हमें पहुँचाने हमारे साथ ही दिस्नी पाये। हमारे दिस्नी पहुँचने के चार पाँच दिन बाद जनश्यामदास जबतपुर वालों से मिलने जबतपुर पाये घोर वहाँ से दिस्नी पा गये। उन्हें पहुँचाने उनके पिता भी पौबर्धनदास जो दिस्नी भी दिस्नी पयारे।

भारत छोड़ने के पहल हम लोग कोई एक लप्ताह दिस्नी रहे। दिस्नी में यात्रा की सारी लपारी हुई जिसमें बिता सेना मुख्य था घोर ये बिता मित प्रकार मिले इसका बिबरण पहले दिया जा चुका है।

इस एक लप्ताह में दिस्नी में जो सबसे बड़ा काम हुआ वह था राष्ट्रपति भवन में संसदीय हिन्दी परिषद् की घोर से भारतीय भाषाओं के संघम का एक आयोजन। यह आयोजन अपने ढंग का एक निराला ही आयोजन था। कई बत्तर घोर बलिया भारत की भाषाओं की कबिताएँ पढ़ी पयीं। भारत-नाट्य का प्रदर्शन हुआ घोर उत्तर भारत की भाषाओं के साहित्य पर लोकसभा के सदस्य भी बालकव्य सम्रा 'अबीन' तथा बलिया भारत की भाषाओं के साहित्य पर लोकसभा के उपाध्यक्ष भी जनश्यामदास धार्यगर के भाषण हुए। राष्ट्रपति डॉक्टर राजेन्द्रप्रसाद स्वयं इस आयोजन में उप

न्य थे घोर यह आयोजन उन्हें कुछ ऐसा बखड़ा जान पड़ा कि उन्होंने कहा कि

यों भाषाओं के संघम के लिए कोई पञ्चात वर्ष पूर्व बंगाल के न्यायाधीश

मित्र ने निम्न निम्न भाषाओं के साहित्य को देवनागरी-लिपि में

'देवनागरी' नाम का एक पत्र निकाला था बीता ही एक पत्र फिर से

को निकालना चाहिए। संसदीय हिन्दी परिषद् के अध्यक्ष की

धोवला कर बी कि राष्ट्रपति की इच्छा को हम लोग धीमे

करेंगे। हर्ष की बात है कि यह पत्र अब त्रैमासिक

है। इसके संरक्षक स्वयं राष्ट्रपति हैं घोर इसके कार्य

किया, जो कठिनाई से ही लोगों ने स्वीकार किया। जबलपुर भी में दो ही दिन रहा। जैसा ज्वर मिला गया है इस बार मेरे कुटुम्बी मेरी इस यात्रा के सम्बन्ध में पहले के समान चिन्तित न बच फिर भी बिदा का मुख्य कारणात्मक तो ही मया। माता जी ने चलते-बसते जो कहा या वह मैं पूरी यात्रा में बिस्मृत न कर सका। उनके शब्द कुछ इस प्रकार के थे— 'तुम क्यों खोल रह जाये हो। प्रप्रीका म्यूजिसिड घास्टे लिया न जाने कहाँ-कहाँ हो जाये हो। तुम्हारी यह यात्रा भी कुसलपूर्वक हो प्रौर कम से कम तुम्हारे लौटने तक मैं खीती रहूँ जिससे प्राचीर बसत तुम्हारे हृत्न की सकड़ियाँ तो मिल जायें।'

जबलपुर स्टेशन पर हमें बिदा करने कुटुम्बियों मित्रों तथा प्रम्य लोगों की एक जाती भीड़ इकट्ठी हो गयी। जयमोहनबास की पत्नी बिद्या तथा मेरा पौत्र रबिमोहन हमें पहुँचाने हमारे साथ ही विस्ती जाये। हमारे विस्ती पहुँचाने के चार चौब दिन बाद धनस्यामबास जबलपुर वालों से मिलने जबलपुर गये प्रौर वहाँ से विस्ती जा गये। उन्हें पहुँचाने उनके पिता भी मोहनबास जो बिल्लाभी भी विस्ती पधारें।

भारत छोड़ने के पहले हम लोग कोई एक सप्ताह विस्ती रहे। विस्ती में यात्रा की सारी तयारी हुई जिसमें विदा लेना मुख्य या प्रौर ये विदा जिस प्रकार मिले इसका विचरण पहले किया जा चुका है।

इस एक सप्ताह में विस्ती में जो सबसे बड़ा काम हुआ वह या राष्ट्रपति-जवन में संसदीय हिन्दी परिषद् की प्रौर से भारतीय भाषाओं के संगम का एक आयोजन। यह आयोजन अपने अंग का एक निरामा ही आयोजन या। कई अंतर प्रौर बहिए भारत की भाषाओं की कबिताएँ पढ़ी गयीं। भारत-नाट्य का प्रदर्शन हुआ प्रौर उत्तर भारत की भाषाओं के साहित्य पर लोकात्मता के तदस्य श्री बालकृष्ण दामा 'अबीन' तथा बहिए भारत की भाषाओं के साहित्य पर लोकात्मता के उपाध्यक्ष श्री धनन्तरधनम धार्यर के आयुक्त हुए। राष्ट्रपति डॉक्टर राजेन्द्रप्रसाद स्वयं इस आयोजन में उपस्थित थे प्रौर यह आयोजन उन्हें कुछ ऐसा धक्का जान पड़ा कि उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं के संगम के लिए कोई बजात सर्व प्रथम अंगम के न्यायाधीश भी धारदाचरण मित्र ने जिन-जिन भाषाओं के साहित्य को वैदिकवरी निधि में छापने के लिए 'रेकमण्डर' नाम का एक पत्र निकाला या बैसा ही एक पत्र फिर से संसदीय हिन्दी परिषद् की निकालना चाहिए। संसदीय हिन्दी परिषद् के अध्यक्ष की हस्तियत से मैंने तत्काल धोरला कर ही कि राष्ट्रपति की इच्छा को हम लोग प्रौर से प्रौर काय रूप में परिस्थित करेंगे। हृष की बात है कि यह पत्र धर प्रजासित रूप में प्रकाशित होने लगा है। इसके तदसक समय राष्ट्रपति है प्रौर इसका कार्य

कारी लग्नादक है थी वीरवर मनेग्रतथा थी तबिचदासग्रहीराज्य बागदावत। इनके लग्नादक संदल घोर इनको लक्ष्मणक तबिति में भारत की भिन्न भिन्न भागों की चीटी के लोप है। इन वन का भारत की गारी भागों में बड़ा अछटा स्थापन हुआ है।

राष्ट्रपति मदन के इन समारोह में एडमिनि लागे की मानुष का कि में वृद्धी-परिच्छेदा कर आ रहा है। राष्ट्रपति तथा अन्य लोगों ने बड़े उत्साह से इन समारोह में भाग लिया था।

सारीत ३१ अलाई की संस्था को हम एक हीयंवाय बार एडमिनि के बापवान से भारत भूमि से बिदा हुए। जिस प्रकार अच्युतल मत्री और मन्सू रबर से थी मोहयंनदास की बिन्नामी और बिद्या यादि न हम बिदा बिद्या। अब बापवान उड़ा तब मन्सूहमदास और मनसूदास के संग के बारत कुछ अचिद मानसिक उद्यम से मने निबिदम यात्रा के लिए भगवान की बनना थी।

दिल्ली से काहरा तक

१ भारत के पालन हुआई घड़े से उड़कर हमारा बापुमान सबसे पहले कराँची में उतरा। इस उड़ान में बापुमान को लगभग द्वाँ घण्टे लगे। कराँची मुमि को जब हमारे हुआई अहाज ने स्वर्ण किया उत समय मुम्मे बहु समय घाब घाया जब सन् १६११ में कांग्रेस का अधिवेशन कराँची में हुआ था। कांग्रेस का यह अधिवेशन कराँची में हुआ था सन् '३० के सत्याग्रह-ग्राम्बोलन के बाद जिसकी समाप्ति हुई थी गान्धी-अरविन्द-वैद्य से। बहु ग्राम्बोलन भारत की स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए सन् '२० के व्यापक असहयोग ग्राम्बोलन के बाद देश का बूतरा व्यापक ग्राम्बोलन का घोर चूँकि उसकी समाप्ति गान्धी-अरविन्द-वैद्य से हुई थी जिस वैद्य पर ब्रिटिश सत्तनव के लड़ते बड़े भारत में रहने वाले प्रतिनिधि भारत के बाइसराय ने भारत के सबसे बड़े नेता भारतीय हुबय-सम्प्राद महत्त्वा गान्धी को अपने बराबर का व्यक्ति मान हुस्ताकर किये थे इसलिये उस ग्राम्बोलन का महत्त्व बहुत बड़ गया था। असहयोग ग्राम्बोलन के समाप्त ही सन् ३० का सत्याग्रह का ग्राम्बोलन भी स्वराज्य प्राप्त करने के लिए हुआ था घोर अर्थात् गान्धी अरविन्द-वैद्य होने के बाद भी स्वराज्य उतना ही दूर था जितना इस वैद्य के पहले तर्वापि गान्धी जी का बाइसराय के बराबर बैठकर किसी ऐसे हस्ताक्षर पर हस्ताक्षर करना ही अपनी एक विशेषता रखता था। यों तो गान्धी जी घोर माई अरविन्द की क्या बराबरी थी? माई अरविन्द के सद्गुण न जाने कितने बाइसराय इपलेड से भारत का चुके थे घोर उनके बाद भी कुछ घाये जबकि मेरे मतानुसार पीतम बुड के बाद भारत में एक जीवस वाइस के बाद तसार में महात्मा गान्धी के सद्गुण महापुण्य ने जन्म नहीं लिया था तर्वापि राजनीतिक क्षेत्र में अधिकार बाल पर्वों का एक बिद्रिष्ट स्थान होता है। गान्धी जी ने अर्थात् अपने समय में भारतीय जीवन के हर क्षेत्र का नेतृत्व किया था तर्वापि भारत की स्वतन्त्रता उनके जीवन का प्रमाण थाय था घोर इस क्षेत्र में भारत के बाइसराय की बराबरी में बैठ किसी वैद्य के हस्ताक्षर अपनी एक विशेषता रखते थे। ऐसे वैद्य के बाद होने वाले कांग्रेस अधिवेशन की महत्ता थाय से थाय बड़ मनी

भी । भारत स्वतन्त्र नहीं हुआ था स्वतन्त्रता की बेड़ियाँ हीनी भी नहीं बड़ी थी गांधी जी की हर दृष्टा नुप हो यह परिस्थिति भी नहीं आयी थी तभी तो गांधी जी सरकार भंगनातह को जानी तक न रकवा मदे से फिर भी कांग्रेस के उन करारों परिषदाम में एक प्रथमपुर्व शोष रिनाई बहुत था । और उन समय भारत भूमि के दुखे होकर वाकिफान की रचना होगी तथा करारों वाकिफान की राजधानी बनेनी इनकी जिसे कल्पना थी ? पच्छि वाकिफान का मारा कई बनें पुर्वे धारण हो गया था और इसे धारण करने बाने बकाबिन् नारे कहीं से धरुता हिभोता हुमारा मोत के गांधी बहुकवि दृष्टकाल से हीने धारणी तथापि करारोंकी-कावेत के समय यह मारा कुछ समयमें लाम्प्रदायवादिओं की लमबनी कल्पना का विषय था । उस समय तो वाकिफान के संस्थापक कायेरे धारण जिम्मा तक का भारतीय राजनीति में उनसे भारत के स्वतन्त्र पुत्र में बाग न में के कारण कोई स्वाम न रह गया था और मिन कायेरे धारण जिम्मा का करारों के कावेत परिषदाम के समय भारतीय राजनीति में कोई स्वाम नहीं था उन्ही जिम्मा का कितने शीघ्र उपाय हुआ तथा उन्ही के प्रयत्न से वाकिफान की स्थापना हुई । यह सब हुआ जिम्मा के ध्येयता के कारण प्रथम परिस्थितियों के कारण ? एक बुराया विवाह का विषय क्या था रहा है कि ध्येयता समय का निर्माण करता है या समय ध्येयता का । थी जिम्मा के ध्येयता का नेकर से भी इसी विचारधारा में गोमे लगाने लगा । थी जिम्मा का ध्येयता करने विरोधताओं से मरा हुआ था इनमें तग्रेह नहीं । इस देश की राजनीतिक बागडोर गांधी जी के हाथ में आने से पूर्व इस देश की राजनीति में और इस देश की प्रथम राजनीतिक संस्था कांग्रेस में जिम्मा का बहुत बड़ा स्थान रह चुका था । कावेत के गांधी जी के हाथ में आने पर मिन प्रकार उस काल के ध्येयता राजनीतिक नेताओं में कांग्रेस की छोड़ दिया जती प्रकार जिम्मा में थी । बरन्तु इन कावेत छोड़ने वालों में से ध्येयता नरमरत के नेताओं में मिन तरहू 'लिबरल फेडरेसन' नाम की एक प्रथम संस्था बनायी जाती कोई बात जिम्मा में नहीं की बरन् मुस्लिम लीग तक की जिम्मा में हुबियाने का प्रयत्न नहीं किया । गांधी-नुप के त्यागमय स्वतन्त्रता के संघामों में जिम्मा करने बीदन की विविध धारतों के कारण भाग न से सकते थे ध्येयता से गांधी की ध्येयता में 'मैत्री बहु बपार कीठपुनि देती कीठे' लिखित के अनुसार बुधबाध बंधे रहे यहाँ तक कि कुछ बरों के लिए देश को छोड़कर विनायत बने गये वहाँ बकालत करते रहे । सन् १९२० में भारतवालों के चुनावों का कावेत में बहिष्कार किया था । जिम्मा साहब ने कावेत छोड़ भी थी पर से भी उन चुनावों में सड़े नहीं हुए । हाँ कावेत में रहते हुए भी जिम्मा राष्ट्रीयता के सबसे बड़े पुत्रारियों और लाम्प्रदायिकता के सबसे बड़े विरोधियों में एक से उन्ही जिम्मा में

धीरे-धीरे समय-समय पर मुस्लिम-हिंदुओं की बात कहना प्रारम्भ प्रारम्भ किया। साइमन कमीशन के प्रवक्ता पर नेहरू कमिटी की रिपोर्ट के समय पहली गोतमेज बरिच में तथा प्रथम अनेक प्रवक्ताओं पर उन्होंने जो कुछ कहा धीरे किया उस इतिहास को देखने से पाकिस्तान की स्थापना जित नीब पर हुई उस नीब की मुड़ाई कित प्रकाश ही रही थी इतका पता लग जाता है। धीरे धीरे में क्योंही उन्होंने देखा कि मुसलमानों में साम्प्रदायिकता का बहुर प्रबन्धी तरह फैल गया है तथा मौलाना मुहम्मदअली की मृत्यु के पश्चात् मुसलमानों में कोई नेता नहीं रह गया है क्योंही अपने समस्त पुराने राष्ट्रीय सिद्धान्तों को ताक में रख एक कदूर से कदूर सम्प्रदायवादी गता के रूप में वे फिर से राजनैतिक क्षेत्र में कूट पड़े। प्रथम जित प्रकार गान्धी जी ने पुरानी राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस को हाथ में ले अपने समस्त कार्यक्रम की कार्यरूप में परिष्कृत किया या उसी प्रकार श्री जिन्ना ने मुस्लिम लीग को हाथ में ले अपना कार्य कार्यक्रम में परिष्कृत करना प्रारम्भ किया। अन्तर इतना प्रबन्ध था धीरे यह बहुत बड़ा अन्तर था, कि गान्धी जी के कार्यक्रम में कुछ करने की बातें थी धीरे इस करने में स्वाग तथा तपस्या प्रावश्यक थी। जिन्ना के कार्यक्रम में करने को कुछ नहीं था बल्कि कुछ था कहने को था धीरे इस करने में न त्याग की जरूरत थी न तपस्या की जरूरत गान्धी जी की करने में बेस की जनता से जो स्वाग धीरे तपस्या करनी थी धीरे जिसके कारण बिदेसी सत्ता कमजोर पड़ती था रही थी उतका उपयोग जिन्ना को अपने करने के कार्यक्रम में होता था रहा था। अंग्रेजों की नीति क्यों से मुस्लिम परतत थी ही। हिन्दुओं धीरे मुसलमानों को लड़ते रहना तथा इस प्रकार अपना अलग लीबा करना यह अंग्रेज क्यों नहीं सुगों के करते था रहे थे। श्री जिन्ना ने अंग्रेजों से मिलकर भारत को कोई हानि पहुँचाई यह कहना जिन्ना के ताब अग्याय करना है। उन्होंने यह कमी नहीं किया, पर अंग्रेजों की इस नीति का उन्होंने अपने अरक्य के लिए पुरा-पुरा उपयोग प्रबन्ध कर लिया। इस प्रकार हम देखते हैं कि जिन्ना के व्यक्तित्व में एक नहीं अनेक बिदेयताएँ थीं। यदि जिन्ना के सद्गुण बुद्धत राजनीतिक मुसलमानों में न होता तो पाकिस्तान कदापि स्थापित न हो सकता था। व्यक्ति समय का निर्माण करता है या समय व्यक्ति का इस बिबाद को अब हम जानने रखते हैं तो जिन्ना का व्यक्तित्व बिदेयताओं से रहित था धीरे केवल समय ने जिन्ना को बना दिया, वह यह नहीं मान सकते पर ताब ही एक बिशिष्ट बरिचिपति के कारण ही जिन्ना का इतना अधिक अरक्य हो सका इसलै भी इन्कार नहीं किया जा सकता। सन् १० के पृथ भी जिन्ना राजनैतिक क्षेत्र में भोज्य थे। यदि जिन्ना के व्यक्तित्व के कारण ही सब कुछ हुआ तो सन् २० में उन्हें राजनैतिक क्षेत्र से अलग क्यों होना पड़ता ? एक बिशिष्ट बरिचिपति के उत्पन्न होने पर ही जिन्ना को लक्षता मिल

थी। भारत स्वतन्त्र नहीं हुआ था परतन्त्रता की बेनियाँ डीली भी नहीं चढ़ी थी, गांधी जी की हर इच्छा पूर्ण हो यह परिवर्तित भी नहीं आयी थी तभी तो गांधी जी सरकार भयतिह को जानी तक न रकवा सके वे फिर भी कांग्रेस के उग करीबो अधिवेशन में एक अमृतपुत्र जोत दिनाई चकना था। और उस समय भारत भूमि के दुकड़े होकर पाकिस्तान की रचना होगी तथा कराँची वाकिस्तान की राजधानी बनेगी इसकी कितने कल्पना थी ? यद्यपि वाकिस्तान का नारा कई कई वर्ष पूर्व आरम्भ हो गया था और इसे आरम्भ करने वाले बहाबिन् 'तारे जहाँ से अगठा हिम्बोस्ता हुकारा' गीत से मायक महाद्वि इन्डियन थे रँती 'आपली तबावि कराँची-काँपेल के समय यह नारा कुछ अन्वले सम्प्रदायवादिओं की अन्वले कल्पना का विषय था। उस समय तो वाकिस्तान क संस्थापक आये आरम्भ जिम्मा तक का भारतीय राजनीति में उनके भारत के स्वातन्त्र-युद्ध में आन न लेने के कारण कीई स्वाभ न रह गया था और जिन्म काये आरम्भ जिम्मा का कराँची के काँपेल अधिवेशन के समय भारतीय राजनीति में कीई स्वाभ नहीं था उन्हीं जिम्मा का दितने छोड़ आरम्भ हुआ तथा उन्हीं के प्रयत्न से वाकिस्तान की स्थापना हुई। यह सब हुआ जिम्मा के अस्तित्व के कारण प्रकषा बरित्थितियों के कारण ? एक पुराना बिबाद का विषय बला आ रहा है कि अस्तित्व समय का निर्माण करता है या समय अस्तित्व का। श्री जिम्मा के अस्तित्व को लेकर नें भी इती बिचारपारा नें गीते लगाने लगा। श्री जिम्मा का अस्तित्व अनेक बिरोधताओं से भरा हुआ था इसमें नगहेह नहीं। इस देश की राजनीतिक बाबदोर गांधी जी के हाथ में आने से पूर्व इस देश की राजनीति में और इस देश की प्रचल राजनीतिक संस्था काँपेल में जिम्मा का बहुत बड़ा स्वाभ रह चुका था। काँपेल क गांधी जी के हाथ में आने पर जित प्रकार इस काल के अनेक राजनीतिक नेताओं ने काँपेल को छोड़ दिया, उसी प्रकार जिम्मा ने भी। परन्तु इन काँपेल छोड़ने वालों में से अनेक अरम्भल के नेताओं में जित तरह 'लिबरल केडरेपन' नाम की एक प्रथम संस्था बनायी गयी कीई बात जिम्मा ने नहीं की, परन्तु मुस्लिम लीग तक की जिम्मा ने हबिधाने का प्रयत्न नहीं किया। गांधी-युग के स्थापमय स्वतन्त्रता के संघर्षों में जिम्मा अपने बीचन की बिधिष्ट आरतों के कारण आन न ले सके थे घल से गांधी जी आधी में 'जैती बहु बपार भीठगुनि बँती कीई तिहान्त के अन्तार चुपचाप बँटे रहे यहाँ तक कि कुछ वर्षों के लिए देश की छोड़कर बिलापत बने परे बहाँ बकायत करते रहे। सन् १९२० में आरम्भवालों के चुनावों का काँपेल ने बहिष्कार किया था। जिम्मा साहब ने काँपेल छोड़ दी थी, पर नें भी उन चुनावों में लड़े नहीं हुए। हाँ काँपेल में रहते हुए श्री जिम्मा राष्ट्रीयता के सबसे बड़े प्रचारियों और साम्प्रदायिकता के सबसे बड़े बिरोधियों में एक थे उन्हीं जिम्मा ने

बीरे-बीरे समय-समय पर मुस्लिम हितों की बातें कहना प्रारम्भ किया। साहमन कमीशन के प्रवक्ता पर, नेहरू कमिटी की रिपोर्ट के समय पद्मि मोलमेज परिवर्द्ध में तथा प्रथम प्रमेक प्रवक्ता पर उन्होंने जो कुछ कहा धीर किया उस इतिहास का देखने से पाकिस्तान की स्थापना जिस नींव पर हुई उस नींव की बुझाई कित्त प्रकार हो रही थी इसका पता लग जाता है। धीर प्रम में क्योंकि उन्होंने देखा कि मुसलमानों में साम्प्रदायिकता का बहुर प्रवर्द्धी तरह फैल गया है तथा मौलाना मुहम्मदप्रसी की मृत्यु के पश्चात् मुसलमानों में कोई नेता नहीं रह गया है क्योंकि प्रमने समस्त पुराने राष्ट्रीय सिद्धान्तों को ताक में रख एक कट्टर से कट्टर साम्प्रदायिकी नेता के रूप में वे फिर से राजनैतिक क्षेत्र में कूद पड़े। प्रम कित्त प्रकार पान्थी की ने पुरानी राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस को हाथ में ले प्रमने समस्त कार्यक्रम को कार्यक्रम में परिवर्द्धत किया या उसी प्रकार थी जिन्ना ने मुस्लिम लीग को हाथ में ले प्रमना कार्य कार्यक्रम में परिवर्द्धत करना प्रारम्भ किया। प्रमत्त इतना प्रमय या धीर यह बहुत बड़ा प्रमत्त था कि पान्थी की के कार्यक्रम में कुछ करने की बातें थीं धीर इतत करनी में रथाय तथा तत्पश्चात् प्रावर्द्धक थी। जिन्ना के कार्यक्रम में करने को कुछ नहीं था जो-कुछ या कहने को था धीर इस कबनी में न त्याग की जकरत थी न तत्पश्चात् की वरन् पान्थी की की करनी में देश की जनता से जो त्याग धीर तत्पश्चात् करानी थी धीर जिसके कारण विदेशी सत्ता कमजोर पड़ती जा रही थी उसका उपयोग जिन्ना को प्रमने कबनी के कार्यक्रम में होता था रहा था। प्रमंत्रों की नीति क्यों से मुस्लिम परस्त थी ही। हिन्दुओं धीर मुसलमानों को लड़ते रहना तथा इतत प्रकार प्रमना उन्नु लीला करना यह प्रमंत्रे कहीं नहीं सुनों से करते या रहे वे। धी जिन्ना ने प्रमंत्रों से निकलकर भारत की कोई हानि पहुँचाई, यह कहना जिन्ना के साथ प्रमयाय करना है। उन्होंने यह कभी नहीं किया, पर प्रमंत्रों की इतत नीति का उन्होंने प्रमने उत्कर्ष के लिए बुरा-बुरा उपयोग प्रमयय कर लिया। इतत प्रकार हम देखते हैं कि जिन्ना के व्यक्तित्व में एक नहीं प्रमेक विशेषताएँ थीं। यदि जिन्ना के लड़ा कुशल राजनीतिक मुसलमानों में न होता तो पाकिस्तान कदापि स्थापित न हो सकता था। व्यक्तित्व प्रमय का निर्माण करता है या प्रमय व्यक्तित्व का। इस विवाद को जब हम सामने रखते हैं तो जिन्ना का व्यक्तित्व विशेषताओं से रहित या धीर केवल प्रमय ने जिन्ना को बना दिया हम यह नहीं माल जकते पर तत्पश्चात् ही एक विभिन्न परिवर्द्धित के कारण ही जिन्ना का इतना प्रमिक उत्कर्ष हो सका इतते भी इत्कार नहीं किया जा सकता। तन् १० के पुत्र भी जिन्ना राजनैतिक क्षेत्र में जोड़ू है। यदि जिन्ना के व्यक्तित्व के कारण ही तत्पश्चात् कुछ हुआ तो तन् २० में उन्हें राजनैतिक क्षेत्र से प्रमय क्यों होना पड़ता ? एक विभिन्न परिवर्द्धित के उत्पन्न होने पर ही जिन्ना को लक्ष्यता मिल

धीरे-धीरे समय-समय पर मुस्लिम हितों की बातें कहना प्रबन्ध प्रारम्भ किया। साइमन कमीशन के प्रवर्तक पर, नेहरू कमिटी की रिपोर्ट के समय पहली घोरमेख परिचय में तथा अन्य अनेक प्रवर्तकों पर उन्होंने जो कुछ कहा धीरे किया उस इतिहास को देखने से पाकिस्तान की स्थापना जिस भीषण पर हुई उस भीषण की मुहूर्त किस प्रकार हो रही थी इसका पता लग जाता है। धीरे प्रकृत में योंही उन्होंने देखा कि मुसलमानों में साम्प्रदायिकता का चहूर प्रचली तरह फैल गया है तथा मौलाना मुहम्मदजवहरी की मृत्यु के पश्चात् मुसलमानों में कोई नेता नहीं रह गया है। योंही अपने समस्त पुराने राष्ट्रीय सिद्धान्तों को ताक में रख एक कट्टर से कट्टर साम्प्रदायवादी नेता के रूप में वे फिर से राजनैतिक क्षेत्र में कूद पड़े। प्रथम जिस प्रकार पान्थी जी ने पुरानी राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस को हाथ में ले अपने समस्त कार्यक्रम को कार्यरूप में परिवर्तित किया था उसी प्रकार श्री जिन्ना ने मुस्लिम लीग को हाथ में ले अपना कार्य कार्यक्रम में परिवर्तित करना प्रारम्भ किया। प्रन्तर इतना प्रबन्ध था धीरे यह बहुत बड़ा प्रन्तर था कि पान्थी जी के कार्यक्रम में कुछ करने की बातें थीं धीरे इस करनी में स्थाय तथा ठपठपा भावप्रवृत्त थी। जिन्ना के कार्यक्रम में करने को कुछ नहीं था जो-कुछ था कहने को था धीरे इस कबनी में न त्याग की जरूरत थी न तपस्या की जरूरत पान्थी जी की करनी में देश की जनता से जो त्याग धीरे तपस्या करायी थी धीरे जिसके कारण बिदेसी लता कमजोर पड़ती जा रही थी उसका उपयोग जिन्ना को अपने कबनी के कार्यक्रम में होता जा रहा था। संघर्षों की नीति क्यों से मुस्लिम प्रवर्तक थी ही। हिन्दुओं धीरे मुसलमानों की लड़ने रहना तथा इस प्रकार अपना जल्द लीबा करना, यह संघर्ष क्यों नहीं क्यों से करते था रहे थे। श्री जिन्ना ने संघर्षों से मिलकर भारत की कोई हानि पहुँचाई यह कहना जिन्ना के साथ प्रत्यास करना है। उन्होंने यह कभी नहीं किया पर संघर्षों की इस नीति का उन्होंने अपने प्रवर्तक के लिए पुरा-पुरा उपयोग प्रबन्ध कर लिया। इस प्रकार हम देखते हैं कि जिन्ना के व्यक्तित्व में एक नहीं अनेक विशेषताएँ थीं। यदि जिन्ना के सङ्घुष कुशल राजनीतिक मुसलमानों में न होता तो पाकिस्तान कदापि स्थापित न हो सकता था। व्यक्ति समय का निर्माण करता है या समय व्यक्ति का, इस विचार को जब हम सामने रखते हैं तो जिन्ना का व्यक्तित्व विशेषताओं से रहित था धीरे केवल समय ने जिन्ना को बना दिया हम यह नहीं मान सकते पर साथ ही एक विशिष्ट परिस्थिति के कारण ही जिन्ना का इतना अधिक उत्कर्ष हो सका इससे भी इन्कार नहीं किया जा सकता। सन् १० के दशक भी जिन्ना राजनैतिक क्षेत्र में मौजूद थे। यदि जिन्ना के व्यक्तित्व के कारण ही सब कुछ हुआ तो सन् २० में उन्हें राजनैतिक क्षेत्र से घलप क्यों होना पड़ता? एक विशिष्ट परिस्थिति के उत्पन्न होने पर ही जिन्ना को लक्ष्यता मिल

धीरे-धीरे समय-समय पर मुस्लिम हितों की बातें कहना प्रारम्भ किया। साइमन कमीशन के प्रवर्तक पर नेहरू कमिटी की रिपोर्ट के समय पहली मोलमेन परिषद् में तथा अन्य अनेक प्रवर्तकों पर उन्होंने जो कुछ कहा और किया उस इतिहास की रचना से पाकिस्तान की स्थापना जिस नींव पर हुई उस नींव की सुझाई किस प्रकार हो रही थी इसका पता लग जाता है। और अंत में योंही उन्होंने देखा कि मुसलमानों में साम्प्रदायिकता का बहुत बुरा तरीका फैल गया है तथा भीताना मुहम्मदअली की मृत्यु के पश्चात् मुसलमानों में कोई नेता नहीं रह गया है योंही अपने समस्त पुराने राष्ट्रीय सिद्धान्तों की ताक में एक कट्टर से कट्टर सम्प्रदायवादी मता के रूप में वे फिर से राजनैतिक क्षेत्र में कूद पड़े। अब जिस प्रकार गांधी जी ने पुरानी राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस की हाथ में ले अपने समस्त कार्यक्रम की कार्यक्षम में परिवर्तित किया था उसी प्रकार श्री जिन्ना न मुस्लिम लीग को हाथ में ले अपना कार्य कार्यक्षम में परिवर्तित करना प्रारम्भ किया। अन्तर इतना प्रबल था और यह बहुत बड़ा अन्तर था कि जल्दी ही के कार्यक्रम में कुछ करने की बातें भी और इस करणी में त्याग तथा तपस्या प्रावश्यक थी। जिन्ना के कार्यक्रम में करने को कुछ नहीं था जो कुछ वा कहने को था और इस करणी में न त्याग की आवश्यकता थी न तपस्या की जरूरत पानी की की करणी ने देस की जनता से जो त्याग और तपस्या करावी थी और जिसके कारण बिदेसी सत्ता कमजोर पड़ती था रही थी उसका उपयोग जिन्ना को अपने करणी के कार्यक्रम में होता था रहा था। अंग्रेजों की नीति बलों से मुस्लिम परस्त थी ही। हिन्दुओं और मुसलमानों को लड़ाते रहना तथा इस प्रकार अपना अलग हीना करना यह अंग्रेज क्यों नहीं सुगों से करते था रहे थे। श्री जिन्ना ने अंग्रेजों से मिलकर भारत को कोई हानि पहुँचाई यह कहना जिन्ना के साथ अयोग्य करना है। उन्होंने यह कमी नहीं किया पर अंग्रेजों की इस नीति का उन्होंने अपने अर्थ के लिए पुरा-पुरा उपयोग प्रबल कर लिया। इस प्रकार हम देखते हैं कि जिन्ना के व्यक्तित्व में एक नहीं अनेक विशेषताएँ थीं। यदि जिन्ना के सदा कुछ ही राजनीतिक मुसलमानों में न होता तो पाकिस्तान कदापि स्थापित न हो सकता था। व्यक्ति समय का निर्माण करता है या समय व्यक्ति का इस विचार को जब हम सामने रखते हैं तो जिन्ना का व्यक्तित्व विशेषताओं से रहित था और केवल समय ने जिन्ना को बना दिया हम यह नहीं मान सकते पर साथ ही एक विशिष्ट परिस्थिति के कारण ही जिन्ना का इतना अधिक उत्पन्न हो सका इससे भी इन्कार नहीं किया जा सकता। सन् '१० के पक्ष भी जिन्ना राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश थे। यदि जिन्ना के व्यक्तित्व के कारण ही सब कुछ हुआ तो सन् २० में उन्हें राजनैतिक क्षेत्र से अलग क्यों होना पड़ता ? एक विशिष्ट परिस्थिति के उत्पन्न होने पर ही जिन्ना की लक्ष्यता मिल

धीरे-धीरे समय-समय पर मुस्लिम हितों की बातें कहना प्रारम्भ किया। साइनन कमीशन के प्रवक्तृ पर, नेहरू कमीटी की रिपोर्ट के समय, पृथ्वी मोलमेन बरिबडू में तथा प्रथम अनेक प्रवक्तृओं पर उन्होंने जो कुछ कहा धीर किया उस इतिहास को देखने से पाकिस्तान की स्थापना जिस नींव पर हुई उस नींव की बुझाई किस प्रकार हो रही थी इसका पता लग जाता है। धीर अन्त में योंही उन्होंने देखा कि मुसलमानों में साम्प्रदायिकता का बहुर प्रबन्धी तरह फैल गया है तथा मौमाना मुहम्मदप्रसदी की मृत्यु के पश्चात् मुसलमानों में कोई नेता नहीं रह गया है क्योंकि प्रथम समस्त पुराने राष्ट्रीय सिद्धान्तों को ताक में रख एक कट्टर से कट्टर सम्प्रदायवादी गता के रूप में वे फिर से राजनीतिक क्षेत्र में कूद पड़े। प्रथम जिस प्रकार गांधी जी ने पुरानी राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस की हाथ में ले प्रथम समस्त कार्यक्रम को कार्यक्रम में परिवर्तित किया था उसी प्रकार श्री जिन्ना ने मुस्लिम लीग की हाथ में ले प्रथम काय कार्यक्रम में परिवर्तित करना प्रारम्भ किया। अन्त इतना प्रथम का धीर यह बहुत बड़ा अन्तर था कि गांधी जी के कार्यक्रम में कुछ करने की बातें थीं धीर इस करणी में त्याग तथा तपस्या प्रावश्यक थी। जिन्ना के कार्यक्रम में करने को कुछ नहीं था बल्कि कुछ वा कहने की था धीर इस कषणी में न त्याग की जरूरत थी न तपस्या की बरन् गांधी जी की करणी में देव की जनता से जो त्याग धीर तपस्या करणी थी धीर जिसके कारण बिदेसी सत्ता कमजोर पड़ती था रही थी उसका उपयोग जिन्ना को प्रथम करणी के कार्यक्रम में होता था रहा था। संघर्षों की नीति बर्षों से मुस्लिम वरस्त थी ही। हिन्दुधर्म धीर मुसलमानों को लड़ते रहना तथा इस प्रकार प्रथम बलन् लीवा करना यह प्रथम बर्षों नहीं सुगों से करते था रहे थे। श्री जिन्ना ने संघर्षों से मिलाकर भारत को कोई हानि पहुँचाई यह कहना जिन्ना के साथ प्रथम करना है। उन्होंने यह कमी नहीं किया, वर संघर्षों की इस नीति का उन्होंने प्रथम उत्कर्ष के लिए पुरा-पुरा उपयोग प्रथम कर लिया। इस प्रकार हम देखते हैं कि जिन्ना के व्यक्तित्व में एक नहीं अनेक बिदेयताएँ थीं। यदि जिन्ना के सद्गुण कुशल राजनीतिक मुसलमानों में न होता तो पाकिस्तान कदापि स्थापित न हो सकता था। व्यक्ति समय का निर्माण करता है या समय व्यक्ति का इस बिबाह को अब हम सामने रखते हैं तो जिन्ना का व्यक्तित्व बिदेयताओं से रहित था धीर केवल समय ने जिन्ना को बना दिया हम यह नहीं मान सकते पर साथ ही एक बिदिष्ट बरिस्थिति के कारण ही जिन्ना का इतना अधिक उत्कर्ष हो सका इससे भी इन्कार नहीं किया जा सकता। सन् २० के पूर्व भी जिन्ना राजनीतिक क्षेत्र में मौजूद थे। यदि जिन्ना के व्यक्तित्व के कारण ही सब कुछ हुआ तो सन् २ में उन्हें राजनीतिक क्षेत्र से अलग क्यों होना पड़ता? एक बिदिष्ट बरिस्थिति के उत्पन्न होने पर ही जिन्ना की अकलता किस

देखकर मुझे उस समय का स्मरण थाया जब पहले-पहल सन् १९२१ में मैंने श्री जिल्हा को देखा था। मैं केन्द्रीय धारासभा का सदस्य सर्वप्रथम सन् १९२३ में हुआ था जब पंडित मोतीलाल जी नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेसवादी स्वराज्य पार्टी बनाकर धारासभाओं में गये थे। मेरी प्रवस्था उस समय केवल २७ वर्ष की थी और उस समय केन्द्रीय धारासभा के सदस्यों में मैं सबसे अल्पवयस्क था। तब से लेकर अब तक ३० वर्षों में जब-जब कांग्रेसवादी धारासभाओं में रहे मैं बड़ा किंग में ही रहा। सन् १९२३ से भारतीय संविधान सभा के निर्माण तक श्री जिल्हा भी केन्द्रीय धारासभा में ही रहे थे और उनका और मेरा जोड़ा बहुत व्यक्तिगत सम्बन्ध भी रहा था। श्री जिल्हा के उस चित्र को देखकर उनसे सम्बन्ध रखने वाली द्दिनी बातें मुझे याद आयीं। ज्ञापने प्रारम्भ के इस चित्र के सिवा उस लाइन की जिस प्रथम वस्तु में मेरा ध्यान आकर्षित किया वह थी लाइन में काश्मीर के चित्रों का प्रदर्शन। श्री जिल्हा के चित्र के प्रतिरिक्त लाइन के सारे चित्र काश्मीर के दुर्गों के ही थे। काश्मीर के दुर्गों के इतने अधिक चित्रों की ब्रह्म से मेरे मन में उठा कि क्या केवल काश्मीर का प्राकृतिक सौन्दर्य ही इसका कारण है और यदि ऐसा है तो क्या पाकिस्तान में प्राकृतिक सौन्दर्य के और कोई ऐसे स्थान हैं जो नहीं जिनके चित्र वहाँ लपका जायें ? मुझे जान पड़ा कि काश्मीर का प्राकृतिक सौन्दर्य ही इसका एक मात्र कारण नहीं है। मुझे तो यह लगनेहूँ हुआ कि पाकिस्तान की सरकार इसे हथिय पाव रखने तथा प्रयों को याद दिलाने का लपतार प्रयत्न करना चाहती है कि काश्मीर पाकिस्तान का है भारत का नहीं।

हम लोगों ने सुना था कि भारतीयों के साथ पाकिस्तान के लोगों का व्यवहार अच्छा नहीं होता। हमें उपाहार-मुह में ही इसका अनुभव हो गया। श्री पी ए सी के इस हवाई जहाज में मेरे बामाव मेरे पुत्र और मेरे इन तीन यात्रियों के प्रतिरिक्त अन्य कोई भारतीय यात्री नहीं था। अन्य यात्रियों की खाने-पाने की जो सामग्री थी यही वह हथिय नहीं था ही हमारे प्रति खानसामों के व्यवहार में भी सिम्पता न थी।

समय ११ बजे रात्रि को हवाई जहाज ने कराची का हवाई अड्डा छोड़ दिया। जब कराची से हवाई जहाज रवाना हुआ तब भारत और पाकिस्तान के बीच की वर्तमान समस्याओं के सम्बन्ध में जमनीहुनदाम तथा धनश्यामदास से और मुझ से बातचीत चल पड़ी। भारत और पाकिस्तान के बीच मतभेद बात जब तीन ही तो मानते हैं—यहना काश्मीर का डूमरा एक देस छोड़कर डूमरे देस या बसने वालों की सम्पत्ति का और तीतरा नहरो पानी का।

वहाँ तक काश्मीर का प्रश्न है वैधानिक रूप में काश्मीर पूरी तरह भारत का

लकी इतने भी कौन धस्वीकार कर सठता है ? व्यपित समय को बनभता है या समय व्यपित को इस विषय में मैं सदा ही एक बात कहुा करता हूँ कि दोनों का सम्बन्ध है । श्री जिन्ना ने पाकिस्तान निर्माण के समय को बनाने में सहायता पहुँचायी इसमें सन्देह नहीं पर साब ही उस समय ने जिन्ना को भी बनाया यह भी पूर्वतया सत्य है । हाँ एक बात धीर । प्रायः महापुरुष अपने समय का निर्माण उन सिद्धांतों पर करता है जिन सिद्धांतों पर उसे विश्वास होता है । पृथ्वी भी ने भी यही किया था । पर श्री जिन्ना के सम्बन्ध में यह बात नहीं कही जा सकती । जिन सिद्धांतों पर पाकिस्तान का निर्माण हुआ वे सिद्धांत जिन्ना की व्यक्तिगत रूप से कभी भी मान्य न थे । इस एक धार्मिक-जनक बात का लक्ष्य इतिहास को सदा धस्तक करना ही होया । जो कुछ हो कराँची काँग्रेस के समय जित पाकिस्तान की बर्चा तक कोई महत्त्व न रखनी थी वही पाकिस्तान धाम स्थापित ही चुका था धीर कराँची उसकी राजधानी थी । क्या क्या हुआ था पाकिस्तान की स्थापना के समय धीर उसके बाद भी कितने निर्दोषों का खून बहा था कितनी सती-साधियों का धर्म लक्ष्य हुआ था कितने मालूम बच्चे ककड़ियों धीर मुद्दों के लघुय काट डाले गये थे । कितने लक्षपति धीर करोड़पति लंबास हो गये थे । कितने ऐसे थे कि उनके महल लम्बे हो घाम उन्हें भ्रोंपड़ो भी नसीब न थी । कितने ऐसे थे जिनके यहाँ सैकड़ों नौकर नौकरी करते थे पर घाम उन्हें ही नौकरी करनी पड़ रही थी । धरखाचियों की बिकट समस्या कैबल रेश बिनामन का परिहाम थी । भारत के धाम-कष्य में भी इस बिनामन का कम हाथ न था । धीर जब मेरे मन में यह सब घाया तब मैं एक बात धीर सोचने लबा—पाकिस्तान की स्थापना के अनुकूल समय धीर इस समय के महान् मुस्लिम नेता श्री जिन्ना के होने पर भी यदि पान्थो की तथा काँग्रेस के प्रम्य नेता रेश का बिनामन स्वीकार न करते तो क्या कभी पाकिस्तान ही सकता था ? धीर जब मैं यह सोचने लबा तब मेरे मन में उठा कि हमारे नेताओं ने रेश को धीर से धीर स्वतंत्र कराने प्रबबा अपने स्वयं के उत्कर्ष के लिए इस सम्बन्ध में कोई कसदबाबी की कार्यवाई तो नहीं कर डाली थी ? पहले भी ऐसे प्रम्य एक नहीं हजारों बार मेरे मन में उठ चुके थे धीर इन प्रश्नों का उत्तर न मुझे कभी मिला था धीर न घाम ही मिल रहा है ।

सन् १९३९ में मैं कराँची बहाज से गया था धरत कराँची का हवाई प्रदुदा मैंने पहली बार देखा । हवाई प्रदुडे की बनावट दिस्ती के बिलिंग्टन एरोडोम के लघुध थी परन्तु दिस्ती के बिलिंग्टन एरोडोम की धपेसा बहु प्रथिक स्वच्छ, प्रकाशमय धीर व्यवस्थित बिसायी दिया । ताँज में प्रवेश करते ही कापडे घाकम का रंगीन बित्र बिच पड़ा । बड़ा सुन्दर बित्र था । यह बित्र

देखकर मुझे उस समय का स्मरण प्राया जब पहले-पहले सन् १९२३ में मैंने श्री जिन्ना को देखा था। मैं केन्द्रीय धारासभा का सदस्य सर्वप्रथम सन् १९२३ में हुआ था जब पीठित मोतीलाल जी नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेसवादी स्वराज्य पार्टी बनाकर धारासभाओं में गये थे। मेरी अध्यक्षता उस समय केवल २७ वर्ष की थी और उस समय केन्द्रीय धारासभा के सदस्यों में मैं सबसे अल्पवयस्क था। तब से लेकर अब तक ३० वर्षों में जब-जब कांग्रेसवादी धारासभाओं में रहे मैं सदा कैम्प में ही रहा। सन् १९२३ से भारतीय संविधान सभा के निर्माण तक श्री जिन्ना भी केन्द्रीय धारासभा में ही रहे थे और उनका और मेरा जोड़ा बहुत व्यक्तिगत सम्बन्ध भी रहा था। श्री जिन्ना के उस चित्र को देखकर उनके सम्बन्ध रखने वाली कितनी बातें मुझे याद आयीं। क्रायबे प्रोग्राम के इस चित्र के लिहाज उस नाम की कितनी प्रग्य वस्तु ने मेरा ध्यान आकर्षित किया वह भी नाम में काश्मीर के चित्रों का प्रदर्शन। श्री जिन्ना के चित्र के प्रतिरिक्त नाम के सारे चित्र काश्मीर के दृश्यों के ही थे। काश्मीर के दृश्यों के इतने अधिक चित्रों की बबहु से भरे मन में उठा कि क्या केवल काश्मीर का प्राकृतिक सौन्दर्य ही इतका कारण है और यदि ऐसा है तो क्या पाकिस्तान में प्राकृतिक सौन्दर्य के और कोई ऐसे स्थान हैं ही नहीं जिनके चित्र वहाँ सपाये जाय ? मुझे जान पड़ा कि काश्मीर का प्राकृतिक सौन्दर्य ही इसका एक मात्र कारण नहीं है। मुझे तो यह साक्षेह हुआ कि पाकिस्तान की सरकार इसे स्वयं याद रखने तथा प्रशंनों को याद दिमाने का लगातार प्रयत्न करना चाहती है कि काश्मीर पाकिस्तान का है भारत का नहीं।

हम लोगों ने सुना था कि भारतीयों के साथ पाकिस्तान के लोगों का व्यवहार अच्छा नहीं होता। हमें उपाहार-गृह में ही इतका अनुभव हो गया। श्री प्री ए ली के इत हवाई अड्डामें मेरे बामाद भरे पुत्र और मेरे इन तीन यात्रियों के प्रतिरिक्त प्रग्य कोई भारतीय यात्री नहीं था। प्रग्य यात्रियों को जाने-पीने की जो सामग्री दी गयी वह हमें नहीं साथ ही हमारे प्रति आनन्दार्थों के व्यवहार में भी विषयता न थी।

समय ११ बजे रात्रि को हवाई अड्डामें करीबी का हवाई अड्डा छोड़ दिया। जब करीबी से हवाई अड्डामें रवाना हुआ तब भारत और पाकिस्तान के बीच की वर्तमान समस्याओं के सम्बन्ध में अपभोहनदात तथा मनःशामदात से और मुझ से बातचीत चल गयी। भारत और पाकिस्तान के बीच मतभेद वाले बड़े तीन ही तो मान्य हैं—पहला काश्मीर का दूसरा एक देश छोड़कर दूसरे देश का बतने बातों की सम्पत्ति का; और तीसरा नहरो पानी का।

अहाँ तक काश्मीर का प्रश्न है वैधानिक रूप में काश्मीर पूरी तरह भारत का

धंग ही चुका है। प्रायः किसी राज्य की तरह ही काश्मीर के नरेश ने भारतीय संघ में शामिल होने के इस्ताफेज पर इस्तख्त किये से और प्राकमलकारियों से अपनी रक्षा के लिए भारत से सुरक्षित सहायता की माँग की थी। सहायता की दुहाई देने पर तो नैतिक दृष्टि से और भारत संघ का धंध बन जाने के नाते अत्यधिक रूप से भारत काश्मीर की सहायता करने को बाध्य था। पाकिस्तान की यह पापे हुए प्राकमलकारियों ने काश्मीर में बैठा तहलका गवा दिया था और उसके कारण बैसी प्राङ्गि-भाङ्गि पक्ष लयी जो यह संबंधित है। भारतीय सैन्य ने न केवल काश्मीर को प्राकमलकारियों के अकार वंशों से मुखाया बल्कि वहाँ पुनर्निर्माण का भी काम किया। काश्मीर की जैसे थी ही सका भारत ने सहायता की और इसके लिए काश्मीर तर कार ही नहीं काश्मीर की जनता भी भारत का प्रामार मानती है।

प्राकमलकारियों के पीछे पाकिस्तान सरकार का हाथ था यह तो संयुक्त राष्ट्र में भी स्पष्ट हो चुका है और इसीलिए भारत ने बराबर इस ब्रत पर और दिया कि पाकिस्तान को काश्मीर में प्राकमल करने वाला प्रीक्षित किया जाय किन्तु एंक्ली-अमेरिकी कृत्रिमि के कारण यह सम्भव नहीं हुआ। यही नहीं एक सीबी-सावी ब्रत काटी उलम्ब गयी और मात्र दिन तक भी सुलभ न सकी।

निष्पन्न होकर भारत और पाकिस्तान की तुलना करने पर तो यही विजायी देता है कि पाकिस्तान के मन में हो कमजोरी है। काश्मीर को बल प्रयोग द्वारा हक करने का प्रयत्न भारत ने नहीं पाकिस्तान ने किया और बल प्रयोग कमजोरी का पहला लक्षण है। जब देशी रियासतों के नरेशों को स्पष्ट यह अधिकार दे दिया गया था कि वे बिल और बाहें भ्रष्ट और कितनी भी भूखंड के साथ मिल जायें तो पाकिस्तान को बल प्रयोग करने की क्या प्रावश्यकता थी? और पाकिस्तान की और से यह हुआ और भारत की और से काश्मीर-नरेश की प्राबंधना स्वीकार कर ली यही तथा काश्मीर बैधानिक रूप से भारत का धंध बन गया तो भी हमारे लोकतन्त्र के प्रेमी नेता अबदुल्लाखान जी ने यही कहा कि काश्मीर के अधिकार का निपटारा करने का अन्तिम अधिकार वहाँ की जनता को होना एवं जैसे ही अधिकार प्रथम प्रायया जनमत संग्रह किया जायगा। इसे हम अपने प्रधान मंत्री की स्वाभाविक उदारता के प्रतिरिक्त और क्या कह सकते हैं ?

काश्मीर की समस्या अब पाँच वर्ष पुरानी हो चुकी है। भारत की नून शिका-स्त यह थी कि पाकिस्तान काश्मीर में प्राकमलकारी है और उसे प्राकमलकारी प्रोषित किया जाय। संयुक्त राष्ट्र ने ब्रिटेन और अमेरिका की कृत्रिमि के कारण यह प्रथम बरा ही बरा दिया गया क्योंकि फिर यह लक्षण उठता कि यदि पाकिस्तान प्राकमलकारी है तो क्यों न उसके विरुद्ध भी बैसी कारवाई की जाय जैसे उत्तर

कोटिया के विरुद्ध की गयी है।

भारत और पाकिस्तान के साथ संयुक्त राष्ट्र के प्रतिनिधि काश्मीर-समस्या को लेकर जो कुछ बातचीत करते रहे हैं वह १९ अगस्त, १९५० और ६ जनवरी, १९५४ के प्रस्तावों के आधार पर होती रही है। यह संयुक्त राष्ट्र के भारत पाकिस्तान कमीशन की ओर से रखे गये वे और संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्वीकृत हैं। इन्हें काश्मीर की समस्या को तीन चरण में हल करने की व्यवस्था है—पुत्र विधायन प्रस्तावी-सन्धि और जनमत-संग्रह।

भारत निम्नलिखित जनमत-संग्रह के प्रथम अधिकारी नियुक्त भी दिये जा चुके हैं। इधर काश्मीर में नयी वैधानिक स्थिति पैदा हो गयी है। वहाँ विधान सभा की स्थापना हो चुकी है और राज्य के लिए प्रथम संविधान बनाया जा चुका है। प्रथम प्रश्न यह है कि जनता की इच्छा को व्यक्त करने वाली विधान सभा की स्थापना के बाद तारी स्थिति क्या होगी ?

उधर काफ़ी समय से डॉक्टर राहुल बड़े बर्ड के साथ भारत और पाकिस्तान के साथ काश्मीर की जनमत के सम्बन्ध में बातचीत करते रहे हैं और वे इस निर्णय पर पहुँचे हैं कि काश्मीर में भारत और पाकिस्तान की स्थिति में मूल अंतर यह है कि भारत तो यह कहता है कि राज्य की सुरक्षा का प्रश्न पर विशेष प्रत्यक्षत्व है और पाकिस्तान इस बात पर और बैठा है कि वहाँ नियुक्त और स्वायत्त जनमत-संग्रह होना चाहिए इसके सम्बन्ध काश्मीर में सैनिक रहने के अधिकार पर भी मतभेद है। भारत कहता है कि काश्मीर राज्य की सुरक्षा के लिए बाकी सेवा हटा लेने पर भी भारत को कम से कम इस्वीस हमार सैनिक रहने का अधिकार होना चाहिए और उधर पाकिस्तान अपनी इसाके में बार हमार अद्वैतिक हकिमदारकम जमान रहन चाहिये। पाकिस्तान भारत के लिए बड़ाछ हमार सैनिक तो स्वीकार करता है लेकिन इस बात की भाँव करता है कि पाकिस्तान अपनी काश्मीर में ६ हमार सैनिक रहने दिये जायें।

वह नत्वी ऐसी है जो कि साक्षाती से मुताब्ने वाली नहीं है और संयुक्त राष्ट्र में एंग्लो-अमेरिकी गुट का रबबा ऐता है कि कभी तो एक बमड़े की भुजा दिना जाता है और कभी भुलने की।

भारत और पाकिस्तान के मतभेद की दूसरी समस्या भारत छोड़कर पाकिस्तान अथवा पाकिस्तान छोड़कर भारत जा बसने वालों की सम्पत्ति की है। स्वातन्त्रता के बाद जब से यह समस्या पडी है तब से घाब तक मुताब्नाई नहीं जा सकी है। कहुना चाहिए पाकिस्तान सरकार का रबबा हो अधिनायक न ये इसके लिए जिम्मेदार है भारत सरकार न कुछ मुताब्न रखा कि यह समस्या सरकारो

स्तर पर निपटायी जाय अर्थात् दोनों देशों की सरकारें इस काम को अपने हाथ में ले लें। पाकिस्तान का कहना है कि सरकार के लिए इस समस्या को सम्हालना बड़ा कठिन है इसलिये अलग-अलग बे-घर लोगों पर ही यह जिम्मेवारी रहे कि वे जाकर अपनी सम्पत्ति का निरन्तरा कर धारें। पाकिस्तान भारत के मुद्दाब को क्यों नहीं मानता इसका कारण यह है, कि पाकिस्तान के विचार में उसे मान लेने से पाकिस्तान को नुकसान रहेगा।

अब बरा सम्पत्ति की समस्या की धोर धोर कीजिए। पाकिस्तान से आने वाले हिन्दू सिख लोगों में कोई १० लाख घरबा १ करोड़ एकड़ जमीन छोड़ पाये हैं जबकि भारत से आने वाले मुसलमान २० लाख से कुछ ही अधिक। इसके प्रतिरिक्त पाकिस्तान में छोड़ी गयी जमीन बड़ी उपजाऊ की धोर सिचाई के लिए नहरों का बीता प्रबन्ध वा बीता सतार में बहुत कम जगहों पर होना। भारत से आने वाले मुसलमानों के द्वारा उनको घरबड़ी जमीन नहीं छोड़ी गयी।

जहाँ तक शहरी सम्पत्ति का सम्बन्ध है हिन्दू धोर सिख पाकिस्तान में ४ लाख १६ हजार से अधिक मकान ९२ हजार मकानों के प्लाट धोर ११ हजार कारखाने छोड़ पाये हैं जबकि मुसलमान भारत में कुल २ लाख ८७ हजार मकान ६ हजार ६ तो मकानों के प्लाट धोर १ हजार ७८४ कारखाने छोड़ पाये हैं।

स्पष्ट है कि पाकिस्तान में जो सम्पत्ति छूट गयी है उतका मूल्य भारत में छोड़ी गयी सम्पत्ति से कहीं ज्यादा है। यही कारण है कि पाकिस्तान भारत के मुद्दाब को नहीं मानता। भारत का कहना है कि दोनों सरकारें विस्वापितों को मुदाबजा देने के लिए जिम्मेवार हों। दोनों देशों के प्रतिनिधियों का एक समीपन मिलकर दोनों में छोड़ी गयी सम्पत्ति का मूल्य धरिके धोर अतिनी रकम ज्यादा धार्ये वह दूसरे देश को बुता ही जाय। फिर मुदाबजे का सारा काम धपन धपने देश की सरकार सम्हाले। इसके विपरीत पाकिस्तान यह कहता है कि बे-घर लोग जाकर सम्पत्ति का निरन्तरा करें। इससे एक तो उन्हें बेहद कष्ट होया उनका धर्ष भी होया धोर उनकी सम्पत्ति का मूल्य उठगा नहीं क्योंकि वहाँ के खरीददार यह समझ बैठेंगे कि इसे तो धाखिर सम्पत्ति को किली तरह बजाक करना ही है।

भारत धोर पाकिस्तान की तीसरी अलमन नहरी धानो की है। पाकिस्तान में बहने वाली कुछ नहरों के हेंड बर्क भारत में है। बेंदपारे के बाह धानी के सम्बन्ध में कठिनाई उपस्थित हुई। पाकिस्तान चाहता है कि उसे धानो बराबर मिलता रहे धोर वह उतका धधिकार भी धाना जाय पर भारत को अपने विकास के लिए भी तो इस धानी की धावश्यकता है इसलिये उतने कहा कि पाकिस्तान एक निश्चित समय के भीतर अपने लिए धानी का प्रबन्ध कर ले।

जब इस समस्या पर दोनों देशों के प्रतिनिधियों ने विचार किया तो भारत ने सुझाव रखा कि बिजनेस स्थिति की पड़ताल करें। परिल्याप्त यह हुआ कि अमेरिका के एटम सक्ति कमोजन के घोर ईंगसी बंसी अपारिही के पिछले प्रयास की अंबिड स्थितिपनधन ने बाँध के बाह तिफारिप की कि जिल बायो की पाकिस्तान की पावस्पस्ता है उसकी भारत की भी। इसलिये उन्होंने सुझाव रखा कि जिस प्रकार अमेरिका में तात राम्यों ने जिनकर इत तरहू की धीजना बना रकी है वसी तरह भारत और पाकिस्तान सिन्धु नदी के मैदान की सभी नदियों से लाभ उठावे और इसमें बिजब ईक के सहायता की जाय। इसके बाह भी समस्या सभी विचारानीन ही बनी हुई है और किसी निश्चित परिस्थान पर नहीं पहुँचा जा सका है।

पाकिस्तान का पुराना मगिर्नमम बदलकर की मुहम्मद अली के बहों के अजान मन्त्री होने के बाह पाकिस्तान और भारत का सम्बन्ध कुछ सुबारा हुआ बिब रहा है। ईसें धाने क्या होता है। पर इतना ही निश्चित ही है कि भारत की वैदिकिक नीति सबसे बेजो रखने की है। फिर पाकिस्तान तो हमारा पड़ोसी है। हम पाकिस्तान के किसी प्रकार का भयड़ा नहीं चाहते और जो सबसे भयड़े के है उन्हें हल करना चाहते हैं।

बहुत रात पये तक हमारी से बातें होती रहीं। बातें करते-करते ही हमें नींद धाने लगी। बँडे-बँडे ही एरोप्लेन में नींद लने का अम्प्रास मुझे म्यूजीक की पाजा से हो गया का और जबभीहुनबात तो हर हातत में तो सधते है धनधामबात का भी धावब बहो हाव है। जब मंत्री नींद खुली तब पौ चड रहीं जो और मने देपा कि बापुयान बतरा में उतर रहा है। थोड़ी देर में बतरा की भूमि को एरोप्लेन ने स्पर्ट किया। जब हम एरोप्लेन से उतरे तब जबभीहुनबात और धनधामबात से मुझे मामूम हुआ कि वे लोप अरबी तरहू से लिये हैं।

बतरा हुआई अहुा अस्पत महुत्पुर्ल है। बलिली-पूर्वी एधिया और यूरोप के बीच चलने वाले सभी हुआई अहाज यहाँ से गुजरते है। यहाँ पर वे बिमान करते है और पैट्रोल बाडि लेंते है। अन्तर्राष्ट्रीय बिमान परिवहन के लिये तो यह समूचे मध्यपुर्ब का केन्द्र बिन्धु है। बतरा का महुरब इसलिये भी और धबिक है कि यह अन्तरनाहू भी है। इन तरहू धाव के संबार में बतरा का महुरब दौरा की राजधानी बपबाह से भी ध्यारा है।

यहाँ पर धरकों के सम्बन्ध में कुछ अर्बा करना अनुचित न होमा।

इत समय धरकों की संकरा बाँध छः करेडू होमी और धरब देप में रहः वाले धरकों की अंभ्या-अधमन अवा करेडू है। धरब देप में रहुने वाले अरब हैं

सुख जाति के हैं धर्म्य तो मिथित हो गये हैं। वे लोग मिला सीधिया द्यूनी-दिया, एन्जीरिया घोर घीराकी में काफ़ी बड़ी संख्या में पाये जाते हैं।

परब इस्लाम धर्म के ज्ञानने वाले हैं जिसके प्रवर्तक मोहम्मद साहब थे। मोहम्मद साहब के जन्म के पूर्व परब में ऐमेरिक जाति के लोग रहते थे। ऐमितानी प्रवेग के लोग घूमने करने बाल होते थे और घाड़ियों में बसे हुए लोच करी घोर व्यापार करते थे। मक्का और मदीना व्यापारिक और सांस्कृतिक विकास के केन्द्र थे।

मोहम्मद साहब का जन्म उनके पिता अबुसुम्मा की मृत्यु के बाद मक्का में हुआ था। जब उनकी आयु ६ वर्ष की हुई तो उनकी माता भी चल बसी। मोहम्मद साहब का जन्म-काल ६०० ईसवी माना जाता है। ६१२ ईसवी में उन्होंने अपने दर्शन का प्रतिपादन किया। उन्होंने—अल्लाह कयामत क़ाब (दान) नमाज़ और इस्लाम का प्रचार किया। वो जुलाई ६२२ ई० की लोगों के सताने पर के घोर उनके साथी मदीना चले गये।

मुस्लिम धर्म के मूल सिद्धान्त हैं—अल्लाह और उसके नबी में विश्वास करो (मोहम्मद साहब को धर्मित नबी माना जाता है) कुरान में पकीन रहो; कयामत का दिन याद रहो; किस्मत का भरोसा करो क्योंकि अल्लाह ने सबकी किस्मतें पहले से लिख दी हैं।

मुसलमान के पाँच प्रधान कर्तव्य माने गये हैं—हर रोज पाँच नमाज़ पढ़ो रमजान में रोझे रहो अक़ाब अर्थात् शर्म करो; मक्का की हज करो और धर्म के लिए मर मिरो।

‘जो नरेगा बहुमत चायेगा जो कीबित रहेगा वह राज करेगा’—इस नारे को लेकर मुसलमान भरती के कोने-कोने में छा गये। मिला स्पेन यूनान अफ़ग़ानिस्तान, भारत, चीन, इण्डोचाइना आदि सर्वत्र इस्लाम का बोलबाला हो गया।

मोहम्मद साहब की मृत्यु के तीसरे वर्ष पश्चात् उनके सतानुपायियों का एक इतने बड़े साम्राज्य पर आधिपत्य हो गया था जो कि बिस्के की जाड़ी से तिब्बु तक चीन तक और अरब सागर से चीन नदी के उद्गम-स्थल तक फैला हुआ था। वह साम्राज्य अरबी-कर्ष तक पहुँचे हुए रोमन साम्राज्य से भी बड़ा घोर अधिक प्रभावशाली था। इस समय इस्लाम मत के अनुयायियों की संख्या तीस करोड़ है। विश्वम जातियों के लोगों में इस धर्म की धर्मिकार कर रहा है। संसार में हर एक व्यक्तियों में से एक मुसलमान है। जिस प्रकार किसी समय यह कहा जाता था कि ब्रिटिश साम्राज्य में कभी सूरज नहीं डूबता उसी प्रकार कहा जाता है कि दिन और रात का ऐसा कोई पहर नहीं जाता जब संसार में कहीं न कहीं नमाज़ न पढ़ी जा रही हो।

एक विस्तृत साम्राज्य की स्थापना करने से भी अधिक धरकों ने एक स्वामी संस्कृति की भीषणता को भीषण बनाया। तीसरी शताब्दी के दशक में टिगिस और सुक्रीन के तहत पर जिस सभ्यता का प्रादुर्भाव हुआ उसने यूनानी और रोमन सभ्यता से बहुत-बहुत निया और फिर मध्य यूनानी यूरोप को ऐसा बहुत कुछ दिया जिससे प्राकृतिक युग के साम्राज्य में योग प्राप्त हुआ। मध्य युग के धारककाल में मानव विकास के लिए जो कुछ धरकों ने किया अन्य किसी जाति ने नहीं किया। धारक भी यह अव्यक्त महत्त्वपूर्ण है कि मोराको से लेकर इण्डोनेसिया तक इस्लाम एक जीवित धर्म है। इसी तरह धरकी भाषा एक जीवित भाषा है जिसका प्रयोग करने वालों की संख्या घटती चली गई है। मध्य युग में कई शताब्दियों तक धरकी भाषा मानव ज्ञान, संस्कृति और प्रगति की भाषा रही। नवीं और बारहवीं शताब्दी में धरकी भाषा में बहान चिकित्सा, इतिहास भूगोल और प्रयोग शास्त्र आदि के प्रथम ग्रन्थों की रचना की गयी। पश्चिम यूरोप की भाषाओं पर धरकी प्रसरणका प्रभाव धारक भी स्पष्ट है। लैटिन प्रसरणका के परभाव तत्पश्चात् में धारक भी धरकी प्रसरणका का ही सबसे अधिक प्रयोग होता है।

प्राकृतिक युग में धरक राष्ट्रीयता का विकास १८४७ में सीरिया में हुआ। फिर तुर्कों के विरुद्ध संघर्ष धारक हुआ। १९१४-१५ की लड़ाई में धरकों ने ब्रिटेन का साथ दिया और बदले में स्वतंत्रता प्राप्त की। युद्ध के बाद मध्य को कुछ हुआ उससे धरक तनुष्ट नहीं हुए। बाद में धरकों का साम्योत्तम अधिपतियों के विरुद्ध जोर पकड़ गया। अधिपतियों और उनके राज्य इस्लाम का विरोध करने के लिए धरक लोग की स्थापना की गयी और यद्यपि इस्लाम राज्य बन चुका है फिर भी धरकों का साम्य भाव तो धारक भी बना ही हुआ है।

उस पुरातन भूमि में जहाँ कभी पानी नहीं धरसता

हमारा वायुयान जब काहूरा पहुँचा तब काहूरा के ६ बजे प्रातःकाल का समय था परन्तु भारत के इस समय १२॥ बजे गये थे अर्थात् एक ही रात में ३॥ घण्टे का अन्तर बढ़ गया था। मुझे यह अन्तर देखकर म्यून्डीलैंड की यात्रा के समय का अन्तर याद आया। उस यात्रा में पूर्व की ओर जाने के कारण समय घायें चलता था और इस यात्रा में पश्चिम की ओर जाने के कारण पीछे। तो जो यह कहा जाता है कि चाहे दिन बढ़ा हो चाहे रात पर २४ घण्टे के दिन तथा रात में न एक बरत बढ़ता, और न घबटा, है यह चाहे एक स्थान के लिए सर्वथा सत्य ही पर यदि मनुष्य एक स्थान से किसी दूसरे सुदूर स्थान को जाये तो उसके लिए बीबीस घण्टे का दिन और रात घण्टों बढ़ या घट सकता है। बिस्ली से काहूरा की दूरी २,४६५ मील है और बिस्ली से यहाँ एरोप्लेन को पहुँचने में १५॥ घण्टे लगे थे।

काहूरा की धरती पर पैर रखते ही हमने मिथ बेस की उस पुरातन-भूमि को प्रथम किया जहाँ कभी पानी नहीं बरसता पर जहाँ मानव के कदाचित् सबसे पहले संरक्षित और सम्पत्ता का प्रसार किया था।

मिथ की सम्पत्ता का उदय ईसा के ७ हजार वर्ष पूर्व हुआ था। अब तक मानव सम्पत्ता का यही प्रारम्भ माना जाता है यद्यपि मेरा इतने मतमेव है न तो मानव सम्पत्ता का प्रारंभ इतने बहुत पहले मानता हूँ और धरती तक जितने अनुसन्धान हुए हैं उनसे मिथ की सम्पत्ता ही सबसे पुरातन है यही प्रमाणित हुआ है। वर्ष पुराना अंक्रयणित और सेकन के लिए अक्षर सबसे पहले मिथ में ही ईजाद हुए। यहीं सर्वप्रथम खेती और लिखाई का आरम्भ हुआ। मांसाहार के साथ मनुष्य ने प्राक्काल में कुछ ऐसी घास के पौधे कूड़े से जिनमें अनाज पैदा होता था। इन्हीं पौधों की खेती मनुष्य हाथ से जमीन जोदकर किया करता था। मिथ में सर्वप्रथम उसने बैलों की सहायता से खेती करना सीखा। हाथ से जमीन जोदना तो पहले से प्रचलित हो चुका था किन्तु पशुओं की शक्ति का उपयोग मानव कार्यों के लिए करना सम्पत्ता के प्रगस्त रूप पर एक बड़ा महत्त्वपूर्ण और लम्बा कदम है। मिथ में यह कदम सबसे पहले उठाया गया और यहीं से मिथ की सम्पत्ता का प्रारम्भ हुआ। मनुष्य की भौतिक शक्तियों की एक

सीमा है। भौतिक दृष्टि में मानव कई पड़ावों से पीछे है। अधिकतर पशुओं में मानव से कहीं अधिक बल रहता है। मनुष्य ने सृष्टि पर अपना साधारण ज्ञान के कारण स्थापित किया है। बड़ि घोर कीमत से पशु या अन्य दृष्टि के जीवों को अपने उपयोग में लाकर ही तो मानव ने सम्पत्ता और संस्कृति निर्मित की है। वह दिन मानव इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण दिनों में से एक है जिस दिन मिथ के धार्मिक मानव ने ईश्वरों की दृष्टि के सहारे नील नदी के कछार में सर्वप्रथम खेती प्रारम्भ की थी। इस खेती के सहारे जिस अतिरिक्त भण का उपार्जन हुआ था उसी से मिथ की प्राचीन सम्पत्ता निर्मित हुई। मिथ देश का मत्स्य का देवता 'सेरापोस' ईश के धाकार का है। वहाँ के महत्त्व के कारण पाप को मिथ देश में पवित्र माना गया। कहा जाता है कि संसार में मिथ में ही पाप को सर्वप्रथम ब्रह्मीय समझा गया। यहाँ की पुजनीय वाय की मूर्ति का नाम है 'एविज'।

पुजनीय लोक इतिहासकार हेरोडोटस (Herodotus) ने लिखा है—“मिथ के निवासी एक विशेष जनजात में एक ऐसी नदी के सहारे रहते हैं जिसके सङ्ग कोई नदी नहीं है और उन्होंने ऐसे रीति-रिवाज अपनाये हैं जो अन्य मनुष्यों के रीति रिवाजों से लयबद्ध सर्वथा भिन्न हैं।” मिथ की प्राचीन संस्कृति का स्मरण करते समय हमें मिथ देश की विचित्र जनजात और जनजात का ध्यान था जाता है जिसके कारण यह सांस्कृतिक विशेषता थी। भूमध्यसागर के दक्षिणी तट पर स्थित उत्तर-पूर्व अफ्रीका का यह देश कोई बहुत बड़ा देश नहीं है किन्तु सागर कड़ी चट्टानें देन के विज्ञान मैदान, मोरच गमन और समुद्र सम्पन्न जीवजगत् की दृष्टि कथा नील नदी में इस देश में कुछ धर्म विशेषता ला रही है जो अत्यन्त दुर्लभ है। समुद्र के मिथ देश का क्षेत्रफल १३८३००० वर्ग मील और प्रायः १६०३३२६। सम्पत्ता के उदय के समय की धारणा की तो कल्पना ही की जा सकती है किन्तु इतिहासकारों ने उसे पचास लाख के लगभग माना है। ५० लाख की आबादी का यह देश एक रैत का मैदान मात्र है किन्तु इसी में मिथियों के विरासत के धनुषार हाथी (Haapi) नील नदी के देवता ने नील सरोवर के रूप में एक विचित्र विज्ञान कथयका निर्मित की है जो चारों ओर की ऊँचता में एक अद्भुत उपजाऊ कछार है। इस कछार को बड़े-बड़े नदरयस पूव ओर दक्षिण से एवं भूमध्यसागर उत्तर की ओर से मानव-समाज से धरत करत है। मिथ देश के दो प्रधान भाग हैं—उत्तरी मिथ और दक्षिणी मिथ। दक्षिणी के धर्मग्रन्थ में स्थित जनजात और विश्वीय धर्मग्रन्थ दासक विज्ञान सरोवरों से नील निकली है। यंत्र धर्म १६३७ १६३७ की दक्षिणी धार में नील के इस उद्गम-रूप को देखा था। भूमध्यसागर तक लयबद्ध धार हजार मील बहने वाली नील नदी समार की सबसे बड़ी सरोवरों में से एक है। नील नदी की लम्बाई ३६०० मील है। लम्बाई की

नदियों में इसका तीसरा नम्बर है। प्रत्येक स्वर्णों पर इसका पाठ बहुत चौड़ा और गहराई भी बहुत अधिक है। यैने घाटीका की यात्रा के समय कई स्वर्णों पर इन नदों में शीघ्रता बरवाई छोड़े (हिपोपुटमस) देखे थे, वे हमें काहरा में जहाँ नील नदी बहती है वहाँ दिखायी दिये।

इस नदी के अन्तिम ६७३ मील अस्तबाल नगर के पास स्थित पहले कैटेरेफ्ट से लेकर भूमध्यसागर तक मिथ देश है। अस्तबाल से डेल्टा के प्रारम्भ तक के ५०० मील तक बहिरी मिथ और बहिरी मिथ की लतह से ३०० फुट नीचे डेल्टा के प्रारम्भ से भूमध्यसागर तक उतरी मिथ। मिथ देश नील नदी है मिथ नील का अस्तबाल है। पुराने इतिहासकारों से लेकर आज तक भूगोल विषयज्ञ सभी यह मानते हैं। मिथ का पूरा भाग आज भी ऐमिस्तान है। केवल पंचम भाग आबाद है और यही नील नदी की उपत्यका है। एरिप्स के कई महीने में नील नदी में सबसे कम पानी रहता है। जून माह से आधिक पुर प्रारम्भ हो जाते हैं। लम्बे नील और नीली नील घबीसीनिया की उच्चतम भूमि से बर्षा का पानी एकत्र कर नील में आती है और साथ ही घबीसीनिया के लघन बनों के छोड़े हुए झाड़ू झाड़ों का आर भी। यही सब मिथ स्थित उपत्यका में फैल जाता है। इसके साथ ही पोटास और सोदी क सिए नाम शायद अन्य अजिब-पदार्थ भी घबीसीनिया और उसके आसपास के पर्वतों से बहकर नील नदी का अरिबे मिथ पहुँच जाते हैं। नील नदी की उपत्यका में इस प्रकार स्वाभाविक ढंग से अचछे से अचछी सिंचाई हो जाती है और वहाँ की फसलों की अचछे से अचछा आब मिल जाता है। इसी आब और सिंचाई के कारण मिथ में बर्ष में तीन-तीन बार बार फसलें होती हैं। इसीलिए प्राचीन मिथवासियों ने नदी और उसके द्वारा प्राप्ति हुई जाली मिट्टी की कल्पना अपने सबसे अधिक प्रिय देवता ओसिरिस (Osiris) के रूप में की थी।

उतरी और बहिरी मिथ एक दूसरे के पूरक हैं। बहिरी मिथ छोटा और चौड़ा है, उतरी मिथ लम्बा और सकरा। उतरी मिथ में हरियाली एक छोटी-सी पट्टी के रूप में है श्रेय हिस्ता साल रैत और चट्टानों से पूर्ण है। बहिरी भाग में उपत्यका की चौड़ाई बहुत अधिक है। यदि उत्तर की उपत्यका कहीं कहीं केवल १२ मील चौड़ी है तो उत्तका बहिरी भाग किसी किसी स्थान पर ६० मील से भी अधिक चौड़ा है। उत्तरी और बहिरी मिथ में सम्मिलित रूप से लगभग ऐसी प्रत्येक बस्तु उपलब्ध है जिससे सम्पत्ता बनती है। प्राकृतिक साधनों से परिपूरु सुबल की अरानों से घिरी हुई मिथ की इसी बिलकल भूमि पर सर्वप्रथम राजनीतिक संगठन की आब व्यवस्था पड़ी थी और यही उतरी और बहिरी मिथ पर एक साथ आस्तन करने तथा नील नदी की देन का अधिक और पूरा उपयोग करने के लिए राजनीतिक लता

का प्राङ्मुख हुआ था। इस सत्ता की स्थापना के लिए एक ऐसे स्वतन्त्र की चीज भी नहीं थे पूरे मिश्र पर धातन किया जा सके और मेन्डिस, वर्तमान काहिरा नगर के निकटवर्ती स्थान को सर्वप्रथम इस महान् कार्य के लिए चुना गया। चलते पहिले से बिहीन उस युग में जहाँ एक बयह से दूसरी बयह जाना, सामान ले जाना, एक सबसे बड़ी समस्या थी, सर्वश्रेष्ठ आवागमन मार्ग नील के तट पर स्थित मेन्डिस नगर का एक प्रथम महत्त्व था जो वर्तमान काहिरा की भी बहुत दूर तक बिरासत में मिला है।

काहिरा में उतरते ही मिश्र के रेगिस्तानी तथा आबाद हिस्से स्पष्ट शीक जाते हैं दोनों एक दूसरे से मिले हुए रेगिस्तानी भाग पूर्व की फिरखों में चाँदी के चूरे के सङ्घटन बमकती हुई बालूका और आबाद हिस्सा गंगा प्रकार के बस सता और नुस्सों से हरा कच्छ। आबाद हिस्से में जन्मेजनीय वस्तु होती है कपास। मिश्र की रई का तार जितना लम्बा होता है संसार के किसी देश की रई का नहीं और इसका कारण मिश्र देश की भूमि के प्रतिरिक्त क्वाचित् उक्त भूमि पर कभी पानी न बरसना है। यह प्रभावच्छि जहाँ एक छोरे मिश्र के लिए धाप सिद्ध हुई जहाँ दूसरी छोरे बर भी क्योंकि मिश्र की सारी आबिक आबादकृतार्थों की पूर्ति केवल उतकी रई से होती है। सारे सत्तार के देशों में इस रई की माँग रहती है। पतमा सूती कपड़ा इस रई के मिश्रण के बिना बन ही नहीं सकता। मिश्र में इस रई से बहुत कम कपड़ा बनता है और अधिकतर कपास बाहर भेजा जाता है। नील नदी की उपत्यकाओं में उसी के नीर की तिबाई से बहु कपास उत्पन्न होता है, जिससे यह रई बनती है। मिश्र में जिन दिनों कपास के बड़े तैयार हुए जाते हैं मिश्रियों का काम और बहुत-बहुत बढ़ जाती है। कपास चुनने के लिए कई स्थियाँ और बन्धे क्षेत्रों में फँस जाते हैं। सारी की सारी कपास सिक्किरिया से ही बाहर भेजी जाती है। यह सहर काहिरा नगर का आबा होया सेकिन यह कितनी पूर्वी देश का नगर न मानूम होकर यूरोप या अमेरिका का-सा सहर मानूम होता है।

मिश्र देश में आपुमान से उतरते ही मिश्र देश की भूमि और नील नदी के प्रवाह के प्रतिरिक्त जहाँ के निवासियों की छोरे स्पन्न आकवित हुआ। मिश्र के निवासियों का बहुत भारत के निवासियों के सदृश ही मेहुँपा है। यूरोपीय पोसाक के प्रतिरिक्त आबादल मिश्र के पुरुषों की पोसाक है पले से पैरों की एके तट घारीदार कपड़े का लम्बा चौपा छोरे सिर पर साल रंग की कबने वाली तुर्की टोपी। यूरोपीय ढंग की पोसाक पहनते हैं उनमें भी अधिकांश सिर पर तो तुर्की टोपी ही सवाते हैं। स्थियों में भी यूरोपीय तरीके की पोसाक का बहुत प्रचार दिखा। स्थियों की मिश्र की पोसाक एक काले रंग का बुर्का है पर यह बुर्का रहता है पले से ~~बुर्का~~ केहरा इन बुर्का से नहीं बका जाता। मिश्र की स्थियों की पोसाक सोमब

रहित जान पड़ती है इसीलिए वहाँ की स्त्रियों ने कदाचित् यूरोपीय पोशाक अपना ली है। भारत में पुरुषों में तो परोपेय पोशाक का काफी प्रचार हो गया है पर स्त्रियों में एम्ब्रो-हॉडियनों तथा कुछ पारसियों को छोड़ बायब ही कोई महिला यूरोपीय शैली के कपड़े पहनती हो विदेशों में भी भारतीय रमणियाँ अपना देश की पोशाक पहनती है। इसका कारण कदाचित् साड़ी का अनिर्बन्धीय सौन्दर्य है। स्त्रियों की इतनी सुन्दर पोशाक बायब संसार के किसी देश में नहीं है।

मिथ देश के निवासियों के सम्बन्ध में काहुरा नगर में सारी जानकारी हो जाती है। इसीलिए मिथ के अनेक निवासी घायको काहुरा की सड़कों पर घूमते हुए मिलेंगे। उत्तरी मिथ और इसिली मिथ के निवासियों में अन्तर अचक्षु है। रंग में भी अन्तर है यद्यपि बहुत नहीं। हाँ लुडान के गहरे रंग के लोग भी कभी-कभी बहुत स्पष्ट रूप से बुद्धिमोचर हो जाते हैं। बेहरे की बनावट में भी मिलता है। इसिली मिथ के लोग अक्षोक्षु है और उत्तरी मिथ के निवासी एशिया के देशों के सदृश है। मिथ में इन दिनों फिलिस्तीन और निकटवर्ती देशों से घाये हुए अनेक परब भी दिख जाते हैं। काकेशिया के पास वाले देशों के निवासी अत्यधिक सुन्दर हैं और इसीलिए कदाचित् फिलिस्तीन से घाये हुए लोग बहुत ही स्वस्थवान हैं। उनमें से कुछ तो यूरोपीय देशों के निवासियों से भी अधिक सुन्दर थे। यूरोप के देशों में यद्यपि बर्ल अत्यधिक गौर होता है किन्तु बेहरे की बनावट में उतना लालित्य सर्वत्र ही नहीं रहता। केस के रंगों में भी यूरोप में बड़ी विविधता होती है यद्यपि विपन्न देशों का सीन्धर्व कभी-कभी बहुत मनोरम होता है तथापि सब ही वह सुन्दर नहीं सीकता। फिलिस्तीन की ओर से घाये हुए परब लोगों के बाल काले थे, बर्ल अत्यधिक गौर और बेहरे की बनावट में अपूर्व सुन्दरता थी। यदि हम बाहुर से घाये हुए परब वासियों को छोड़ दें तो मिथ-निवासियों में प्रचलितता अक्षीकी और एशियाई थे ही फिरके स्पष्ट रूप से पाये जाते हैं। इन्हें हम उत्तरी और इसिली कह चुके हैं। अलबामु और बातावरण अद्विज सृष्टि और प्राणी जगत का निर्माण करते हैं इसे ही अब निबिबन्ध माना जाता है। उत्तरी मिथ के अलबामु की भीषणता ने वहाँ के निवासियों को सरल बलिष्ठ और लड़ाकू बनाया है। इसिली मिथ पर भूमध्यसागर की अलबामु का प्रभाव है और इसीलिए यहाँ के लोग कम्पनाधीन अनुर धान्तिप्रिय और धामोवप्रिय हैं। अहुर बुन की वासियों को मिथ-निवासी धान्ति की सुन्दर मानते हैं।

प्राचीन काल से ही मिथ देश की विभिन्नताओं ने वहाँ के निवासियों पर बहुरा प्रभाव डाला है। मिथ के लोग काफी सावधान हैं क्योंकि बिना सावधानी के उनका काम नहीं चल सकता। यदि वर्षा विहीन देश में भील नदी की एकमात्र जीवन

शक्ति का ठीक उपयोग करना या तो बिना सावधानी के बहु हो नहीं सकता था। नील नदी में इतनी बाढ़ें आती हैं कि उनका हिसाब रकना और इती के अनुसार सारी व्यवस्था करना आवश्यक था। कदाचित् नील नदी की बाढ़ों का हिसाब ठीक से रखने के लिए ही हायरोप्टिकल लिपि (Hieroglyphic) का आविष्कार सर्वप्रथम मिश्र में हुआ था। इसी प्रकार मिश्र देश के प्राकृतिक वृष्टियों ने वहाँ के नैतिक वायुमंडल में मिश्र निवासियों की कला और जीवन-वृद्धि पर विशेष धतर जाता है।

एरोप्लोन से उतरते ही हम लोगों के पासपोर्ट बिता हुईं और माता के टीकों के कापडों की जाँच हुई और अचानक एक भगड़ा उड़कड़ा हुआ। कलकत्ते और दिल्ली दोनों जगह धनश्यामदास मिश्र देश का बिता लेना मूल पये थे। बिना बिता के वे केवल २४ घण्टे मिश्र में रह सकते थे पर चौबीस घण्टे पूरे हो जाते थे दूसरे दिन प्रातःकाल भी बजे। दूसरे दिन प्रातःकाल कोई वायुयान काहरा से न जाता था। दूसरा वायुयान का दूसरे दिन रात को ट बजे। अतः उनका पासपोर्ट मिश्र देश के अधिकारियों के पास हवाई अड्डे पर हमें जमा करना पड़ा तथा यह पत्र लिखकर देना पड़ा कि धनश्यामदास दूसरे दिन ट बजे रात के प्लेन से रवाना हो जायेंगे। पासपोर्ट, बिता और टीकों की जाँच के बाद चुंसी (कस्टम्स) में हमारा सामान जाँचा गया और तब हम एरोड्रोम छोड़ सके। एरोड्रोम पर बहुत भ्रंश्ट हुई। हमें भी ओ ए सी के प्रतिनिधि श्री नियोजितदास से बड़ी सहायता मिली अथवा हम और भ्रंश्ट में बड़ते; यह भ्रंश्ट अथवा कम हो जाती यदि भारतीय दूतावास से कोई लगन हवाई अड्डे पर आ जाते पर बाद में मान्य हुआ कि अछवि भारतीय सरकार ने धरे जाने की सूचना यहाँ के दूतावास को भेज दी थी पर हमने जो अपनी पहुँच का तार भेजा था वह इत दूतावास को हमारे वायुयान पहुँचने के बाद मिला।

पर दिल्ली में मूनान का दूतावास न रहने के कारण दिल्ली में मूनान का बिता मिलना सम्भव नहीं था। इतना हमने अथवा किया था कि अपने पासपोर्टों में भारत-सरकार से मूनान जाने की आज्ञा भी लिखवा ली थी। काहरा में जब मूनान का बिता लेने का प्रयत्न करेंगे यह हमने सोचा था अतः एरोड्रोम से हमने भारतीय दूतावास जाकर मूनान का बिता लेने के लिए भारतीय दूतावास से कहने का विचार दिया परन्तु ओ ए सी के प्रतिनिधि श्री नियोजितदास ने कहा कि वे मूनान के ही हैं तथा मूनानो दूतावास के लोगों की अपनीमति जानने हैं अतएव इसके लिए भारतीय दूतावास जान को आवश्यकता नहीं वे ही चलकर यह बिता बिता द्ये।

भी निबोस्मिडीस की जलाह के अनुसार उन्हें साब से इचाई घड़े से हम सीधे घुमाती हुआबास पहुँचे। भी निबोस्मिडीस की हुआबास के लोगों से तबतब बड़ी घबड़ी पहचान थी। फिर घुमाती हुआबास के लोग भी हमें बड़े सज्जन आन पड़े। यहाँ कोई १५ मिनट में ही बिना बरा सी भी किती दिक्कत के हमें घुमान के बिना मिल गये। घुमान के हुआबास के लोगों का व्यवहार हमारे साथ अत्यधिक सौजन्यतापूर्ण रहा।

अब हमारा ध्यान काहुरा शहर की घोर घमा जिते देखते हुए हम सेमिरेमिस (Semiremis) होटल की घोर चल पड़े अहाँ ठहरन की हमने एरोड्रोम से ही व्यवस्था करती की घोर जो काहुरा के सर्वश्रेष्ठ होटलों में से एक था। काहुरा ठीक बम्बई के सदृश शहर है। करीब-करीब बँटी ही सड़कें, बँते ही मकान। बम्बई भी काशी साफ-सुबरा नगर है पर तबहीं में काहुरा का गम्बर बम्बई से भी अँबा है। मिथ देश पुराना होने पर भी काहुरा सर्वथा नवीन ढंग का नगर है। घाबावी है करीब बीस लाख। खूब फैलकर बसा है। काहुरा में हाल ही में राजनैतिक बुद्धि से कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ घटी थी जिनमें सबसे मुख्य की मिथ के बादशाह फास्क का सिंहासन ह्युत होना। एक प्रकार से वह घटना एक छोटी-मोटी राजनैतिक क्रांति कही जा सकती है पर चूँकि बिना खून बहे राज्य-परिवर्तन हो गया था, इसलिए इस घटना को संसार का राजनीति में एक महत्वपूर्ण स्थान मिलते हुए भी क्रांति कना स्थान न मिलता था। बादशाह फास्क का मिथ के सभी क्षेत्रों में अत्यधिक प्रिय हो जाना इस बिना खून की क्रांति का प्रधान कारण था। फास्क सन् १९३३ में सिंहासनासीन हुए थे और सिंहासन पर बैठने के पश्चात् अनेक वर्षों तक वे मिथ में काशी अग्रिय भी रहे। सिंहासन पर बैठने के समय उनकी धामु लोगह नर्व की थी। कुछ वर्षों से इंग्लिष-लोकपता घोर घनैतिक आचरणों के कारण वे जनता के बीच प्रिय होने लगे, और फिर तो यह प्रियता इतनी बड़ी कि राज्य की सेना भी उनके दिक्कत हो गयी। सेना के इस बिद्रोह का नेतृत्व किया भी मुहम्मद गगीब ने, जो मिथ के प्रधान मन्त्री की दूरपाठा के भी परम मित्र थे। कनाड़ा बहुत बितों से चल रहा था पर भीतर भीतर ही। २३ जुलाई को बहुत ही सबेरे अनरल नयीब ने बिना किसी रक्तपात के सरकार का तस्का पतल दिया। जिस समय सेना ने बिद्रोह किया उस समय फास्क सिड्मिरिया के अपने नवियों के सहज में थे। उस समय प्रधान मन्त्री बिनासी वाता है, जिन्होंने २३ तारीख को कोरहूर को ही इस्तीफा दे दिया। उबर सेना ने बादशाह फास्क के पाठ पंथाम भेजा कि वे तत्काल सिंहासन छोड़ें और २४ घण्टे के अन्दर देश छोड़ दें वरि उन्होंने ऐसा किया तो सेना उनके सप्त मास के बच्चे को मिथ का बादशाह घोषित करने को तयार है अथवा फास्क परिवारों को भोपने

के लिए तैयार हो जावे। फारक धरती बढ़ती हुई अभिपत्ता से परिचित वे सन्तः जहाँने बहुत पहले से ही करोड़ों दरया बिदेमों में बसा कर रखा था। बिना सिना के वे कर ही गया सकते थे। फिर मिम के राजनैतिक नेता घोर जनता भी सिना के साथ थी। सिना की इस इच्छा के सामने फारक ने तिर झुका दिया। फारक का साथ प्राप्त का पुत्र मिम का बाबसाह घोषित हुमा और फारक ने २६ जुलाई को मिम छोड़ दिया। हाँ, अपने बाबसाह पुत्र को साथ बच को अक्षरता तक अपने पास रखने की सिना से उन्हें अनुमति मिम मयो। सुना कि बाबसाह फारक की बिनाई बड़ी कारखिफ हुई। सिना ने जिन मुहम्मद नबी के नेतृत्व में यह फालि की थी वे तथा मिम के मंत्रिमंडल के सभी सदस्य फारक को बिदा करने जाहान तक गये थे। ही उस समय इसके अतिरिक्त और कोई प्रवर्तन नहीं हुमा। २१ तोरे शम्मी यहाँ घोर मिम के राज्यदान की जन बजायी गयी। यही छोड़ते समय साह को आयु ३२ बर्ष की थी। साह फारक और महाराजी करीमन २१ जुलाई को नेहुस्त में बहु ब यत्रे। बड़ी जाकर जहाँने इस्ती में एक साधारण इस्तिन की हितियत से रहने की इजाजत मीवी को उन्हें प्राप्त हो गयी।

काहुरा मकर में यद्यपि बुर्रु धार्मिक थी तबानि धावन बस रहा था कीकी कानून के द्वारा, प्रथम धार्मिक का आयुमंडल होते हुए भी सारे आयुमंडल में एक विशेष प्रकार का किबाह और सदेह दृष्टिपोकर हुमा।

इमारत हीरत नील नदी के किनारे बड़े ही रमणीय स्थल पर था। हीरत एक विप्रात इमारत थी। अत्यन्त साफ-सुबरी। सगमय १२ बजे डोयहर की हम हीरत पहुँचे। काकी गरमी थी। नीलम करीब-करीब दिसती के लक्ष्म था।

हीरत पहुँचते ही सबसे पहले हमने भारतीय दूतावास को खोज लिया। जब हमने खोज किया उसी समय उनके पास हमारी बहूब का तार पहुँचा था। प्रायकल दूतावास में कोई व्यक्ति रूग के पक्ष पर न था, दो सेक्रेटरी य—धी नायर और धी सेक्रेटरीबरन्। दूतावास वालों ने इस बात पर बड़ा खेद प्रकट किया कि तार देर से मिलने के कारण वे हवाई अड्ड पर न था सके और जहाँने सूचना दी कि धी सेक्रेटरीबरन् तत्काल हमसे मिलन आ रहे हैं। निय के कारणों से निवृत्त होकर, धी सेक्रेटरीबरन् से मिल दूसरे दिन प्रातःकाल साढ़े नौ बजे भारतीय दूतावास जाने का समय निवृत्त कर, हम लोप मिम देय के प्रधान-प्रधान स्थानों को देखने एवाता हुए। एक मार्ग ब्रह्मक (माइक) की हमने तत्रवीच कर ली जो मिथी होते हुए भी अंग्रेजी भाषा अक्षरी तरह जाहता था और अंग्रेजी में हर्ब हर बस्तु को समझा सकता था।

बसते पहुँचे हम तीन मुहम्मद यानी की अतिरिक्त देखने गये। एक अतिरिक्त की

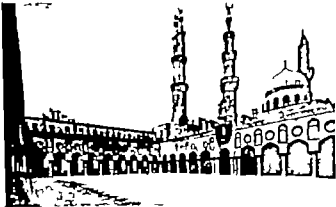
नीच बिम्ब के बाह्यग्रह मुहम्मद घली न सन् १८३० ई० में रकी की धीरे धीरे १८४७ ई० में पूरी हुई। कितनी विज्ञान, नम्य धीरे सुन्दर इमारत थी। मस्जिद की बीमारों में बाहर धीरे भीतर दोनों धीरे एम्बरस्टर नामक एक प्रकार का संयमरमर समा हुआ था। जिसे हम संयमरमर कहते हैं धीरे जो भारत में मकराने तथा इटली में बहुतायत से पाया जाता है। उक्त संयमरमर धीरे इस एम्बरस्टर में बह्य घन्तर यह है कि यह एम्बरस्टर बहुत दूर तक पारदर्शी है। जो बने किये हुए सीधे के एक धीरे प्रकार रखने से अित प्रकार उस प्रकार की ऋणक दूसरी धीरे दिखती है उसी प्रकार इस एम्बरस्टर में से। फिर यह बबेत न होकर प्रायः रंभीन रहता है धीरे इसमें बड़े सुन्दर रंभीन लहरिये रहते हैं। भीतर की बीमारों के इस संयमरमर का भिन्न भिन्न रंभों का उसी पत्थर का स्वाभाविक लहरिया धीरे पत्थरों को जोड़ते समय एक पत्थर के लहरिये का दूसरे पत्थर से कारीवरी से पैल बैठाना देखते ही बनता था। संयमरमर का स्वाभाविक रंभ का ऐसा लहरिया हम लोगों ने खोज में पहली बार देखा था। भार्यदशक ने हमें बताया कि मस्जिद में लपा हुआ वह सारा संयमरमर मुहम्मद घली ने बिम्ब देश के सबसे बड़े चैपस के विरामिड से कुदबाकर मँववाया था। मस्जिद की अँबाई उतले आत्मन की विज्ञानता आदि सभी वर्तनीय से पर सबसे अविज्ञान को आर्कावित करता था मस्जिद का रंभ-रंभया एम्बरस्टर (चित्र नं० १)।

इस मस्जिद को देखकर हम लोग इसी के निकट बनी हुई उस बाजार मस्जिद को देखने गये। यह मस्जिद मुहम्मद घली की मस्जिद से बहुत पुरानी थी। इसका निर्माण सन् १७० ई० में प्रारम्भ होकर सन् १७२ ई० में समाप्त हुआ था। इसकी प्राचीनता धीरे इसके मुख्य आत्मन में मौलवी के लड़े होने के स्वान पर परधर की पञ्चीकारी के सुन्दर काम के सिवा अन्य कोई विशेषता इसमें न थी।

इन दोनों मस्जिदों को देखने के पश्चात् हमने एक सड़क पर से खलीसों के मकदरे देखे (चित्र नं० २)। यहाँ से हम लोग काहुरा का मुख्य बाजार देखने पहुँचे। इस बाजार की इमारतों में तो प्राचीनता का कोई सबलेश भी न था, पर दिखने वाली वस्तुओं में प्राचिनिक काल की वस्तुओं के साथ-साथ कुछ प्राचीन काल की चीजें भी दिखायी दे जाती थी जिनमें मुख्य वे 'अपूरिधो' (चित्र नं० ३-४)। हमने बाजार से पत्थर के कुछ 'अपूरिधो' मिग के भिन्न भिन्न रूपों की कुछ छोटी धीरे प्राचीन तथा अर्वाचीन मिग पर कुछ पुस्तकें खरीदीं।

बाजार से हम उक्त समय संतार की तात अर्चुत वस्तुओं में से एक मिग के प्रतिष्ठ विरामिड देखन रचाना हुए, जब धुरत पस की बसती का खीर अर्चुत तरह के मिग के निर्मल पयन में अमरुने जवा, बजोंकि हमने मुना था कि हमारे अल्पम्यात्र

१ मुहम्मद ग़ाली की
मस्जिद काहरा



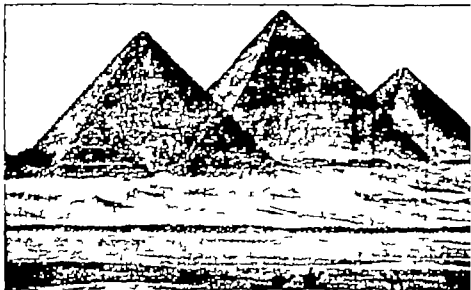
२ खमीशों के मकबरे
काहरा



३ काहरा का मुख्य
बाजार काहरा



४ बिहंगम हज़ि में
काहरा



२ मिस्र के तीनों प्रसिद्ध पिरामिड

९ स्फिक्स (Sphinx)



सबतपुर में नर्मदा के भेड़ाघाट तथा घाघरे के तारामहल के सद्यः विरमिड भी ज्योरसना की नीलिमायक इहेतता में घणता एक बिगोय सौर्य प्रबलित करते हैं ।

मिस्र में विरमिडों का निर्मात विरमिड युग में हुआ जो ईसा के २८१५ वर्ष पूर्व से २२१४ वर्ष पूर्व तक माना जाता है । इस बीच प्राचीन राजवंश की तीसरी चौथी पाँचवीं छठी चौथी चौथी ने राज्य किया । विरमिड युग में निर्मित सभी विरमिड नीस नदी के परिबन्धी तट पर बने हैं ।

पों तो मिस्र में इस समय आठ विरमिडों की संख्या संयमग ८० है किन्तु इनमें सबसे बड़े विरमिड तीन हैं । ये तीनों विरमिड एक ही स्वान गिराह के पठार पर एक दूसरे के अत्यन्त समिष्ट बने हैं (चित्र नं० ३) । सबसे बड़ा विरमिड चेरस (Chepos) ने बनवाया था और यह महान् विरमिड के नाम से प्रसिद्ध है । दूसरा विरमिड अफरन (Chephren) ने बनवाया जो उत्ती के नाम से प्रसिद्ध है । तीसरे विरमिड का निर्माता माइसेरिनस (Mycerinus) था । ये आठवाँ प्राचीन राजवंश की चौथी चौथी के हैं ।

महान् विरमिड की विज्ञानता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि ब्रिटेन के संसद भवन और सेंटपॉल (St Paul) गिरजाघर को विरमिड के मोतर रख लिया जाय तो भी बगल होय रहेगी । अगर इस विरमिड के एक-एक घन फुट के टुकड़े कर दिये जायें और उन्हें भूमध्य रेखा के साथ एक दूसरे से सटाकर रखा जाय तो उनके बुनिया के घेरे का ही तिहाई माप घिर जायगा । यह विरमिड १३१ एकड़ भूमि पर बना है और इसकी प्रत्येक भुजा ७५६ फुट लम्बी है । इस समय इसकी ऊँचाई ४३१ फुट है पर पहले इससे ३१ फुट अधिक थी ।

अफरन के विरमिड की प्रत्येक भुजा ७८ फुट घनी चेरस के विरमिड से कोई ४८ फुट कम है । इसकी ऊँचाई ४४७ फुट घनी चेरस के विरमिड से २३ फुट कम है । ऊँचाई पर बना होने के कारण इस बात का भ्रम होता है कि यही सबसे बड़ा विरमिड है । पहले इसकी ऊँचाई ४७१ फुट थी घनी चेरस के विरमिड की पहले की २४ फुट से इस फुट कम ।

माइसेरिनस (Mycerinus) के विरमिड की प्रत्येक भुजा ३२६ फुट और ऊँचाई ३४ फुट है । कहा जाता है कि पहले यह ११४ फुट अधिक ऊँचा था ।

मिस्र के रैगिस्तानी प्रदेश की वृष्टभूमि में ये विज्ञान विरमिड धाराओं को घूने प्रतीत होते हैं और इस बात का समस्त हिसाते हैं कि अनुपम बना कर सकता है । यहाँ एक और हमें इनके अनुपम की प्रविण का बोध होगा है यहाँ दूसरे नाम रता का भी और हम इस पाँचवें सतार से दूर धार्यात्मिक ज्ञान में विचरनतयने हैं ।

पर इसमें लगेह नहीं कि संसार की सतत अनुपम वास्तुओं में से एक इन विरमिडों का नामा जाना सर्वथा सही निवय है किन्तु विज्ञान है ये विरमिड ।

दिलालाहों को जोड़-बीड़कर ये विरमिड बनाये गये हैं। जब बज्रन पठाने की कैन प्रादि मशीनें न थीं तब ये दिलाखंड उठा-उठाकर कंसे इतनी ऊँचाई पर से लाये गये, यह एक ब्राह्मण से स्तम्भित कर देने वाली बात है। हमारे मार्ग-प्रदर्शक तथा यहाँ के ग्रन्थ लोगों ने हमें बताया कि पहले इन विरमिडों के बाहरी भाग संवमरमर से पड़े हुए थे। एक विरमिड के ऊपरी कुछ भाग में अभी संवमरमर लगा हुआ है, वर बाह में बाहभाह मुहम्मर अभी यहाँ का संगमरमर निकलवाकर ले गया और उस संगमरमर से मुहम्मर अभी भी उस विशाल स्तम्भ का निर्माण हुआ अतिका बर्तन पहले का थुका है। समरमर लगे हुए ये विरमिड चीनियों ने एक प्रभुभुत नजारा दिखाते होंगे इसमें सम्बेह नहीं पर संवमरमर निकल जाने पर भी ज्योत्स्ना में इनका प्रगता एक सौम्य है, यह निश्चित है।

प्रकाश और परछाईं में हर तरफ़ इन विरमिडों का निरीक्षण करने के बाद इन इन्हीं के निरुद्ध मिय वेष्ट के ग्राम बिबबबिबजात स्विंग (Swings) को देखने वाले। विरमिडों के समान ही यह भी एक महान विद्यालयकाय बस्तु है। इस स्विंग का धारी है सिंह का और केहरा है एक पुरुष का अर्थात् बाहभाह ककरन का (चित्र नं० ६)। इसका निर्माण हुआ था ईसा के लगभग तीन हजार वर्षों से पूर्व। इसकी लम्बाई है २४० फुट और ऊँचाई ३६ फुट। पार्कों को जोड़ बाकी यह समूचा स्विंग एक ही बिस्मल बहान से बना है। बाह में यह सबियों तक रेत से पुरा रहा। सन् १८१८ में इसके चारों ओर की रेत हटाकर इसे फिर से निकाला गया है।

घाज़ की इस बुवाई के बाद हमने यह तय किया कि दिन के प्रकाश में भी कम हम इन घाघबर्बनक बस्तुओं को देखें। जब हम अपने होटल को लौटते तब रात के करीब दस बजे चुके थे। होटल पहुँचते ही हम लोगों ने जाना मँगाया और जाने के बाद जब जाने का बिल हमारे पास आया तब हमें कम घाघबर्ब नहीं हुआ। हम तीनों साकाहारी थे। हमने जो जाना मँगाया था उसमें डबल रोटी मक्खन साकाहारी चुप उबने साप-मासी फल और फल का रस था। भारतवर्ष में बड़े से बड़े और घबड़े से घबड़े होटल में ऐसे जाने के तीन-चार रुपये से अधिक न लगते पर यहाँ के एक बार के जाने में लगे एक-दूध घबित के अंठी की एक-एक पाउंड के लयमग मारी करीब तेरह-तेरह रुपये। भारत के बाहर हमने घाज़ पहले-पहल भोजन किया था अतः हमने सोचा कि जिस बड़े होटल में हम ठहरे हैं वह होटल इस कीमती जाने का कारण हो सकता है वर दूसरे दिन जब हमने दोहरा का जाना एक दूसरे होटल में आया और इसका बिल भी करीब-करीब उतना ही हो गया तब हमें भारत की और भारत के बाहर की भोजनों की कीमत के अन्तर का पता लग गया। भारत में कहा जाता कि घाघ-बस्तुओं की कीमत बहुत अधिक है पर जब हम भारत

तथा अन्य स्थानों की बाँध-बस्तुओं के मूल्य का मितान करते हैं तब हमें मालूम होता है कि आज भी भारत में बाँध-बस्तुओं का मूल्य कितना कम है। अन्य देशों में यदि इतनी अधिक कीमत भी लोगों को नहीं प्रचरती और भारत में इतना सस्ता मूल्य भी प्रचरता है तो इसका कारण भारत के लोगों तथा अन्य देशों के लोगों की आर्थिक अवस्था है। इस पूरी यात्रा में हमें भारत के सभ्य सस्ता जाना कहीं भी नहीं मिला। हाँ, अन्य स्थानों से लम्बन में जाना प्रबन्ध सस्ता था, पर भारत के जाने से तो जतना भी मूल्य काफ़ी अधिक था।

दूसरे दिन प्रतःकाम ६। बजे हम भारतीय दूतावास को गये। दूतावास का यह नकल भारत सरकार का है और इसे उस समय लिया गया था जब भी संघ हुसैन मिश्र में भारत के राजदूत बनाकर भेजे गये थे। सुन्दर मकान है, सुन्दर स्वतः बर, मील के किनारे, पर मकान का बुरा प्रयोग नहीं हो रहा है यह होना चाहिए। भारत सरकार की नीति है कि विभिन्न देशों के भारतीय दूतावासों के निज के मकान ही होंगे। वे क्यों से पार्लियमेंट की बंधिखत विभाग-कमिटी का उत्तरपण्डा हैं। भेजे इस नीति का सदा समर्थन किया है। लम्बी बीरान में इससे जब भी कम बढ़ता है और बाहरी देशों में हमारी प्रतिष्ठा भी बढ़ती है। दूतावास के प्रयास सिविलरी भी नापर तथा अन्य कर्मचारी भी मुझे बड़े अच्छे जान बड़े। भारतीय दूतावास से हमें प्रभावबधर तथा अन्य स्थानों को विज्ञान के लिए एक ऐसे सज्जन को दिया गया जो निज की भावना के साथ ही संघेजी भी जानते थे। इनका नाम था भी संघ। ये घरब के एक शरलार्थी थे, जो घरबों और पट्टियों के मध्य के समय क्लिस्तीन में लासों की लम्बति छोड़कर भागकर निज में घाये थे और जब भारतीय दूतावास में काम कर रहे थे।

यों ही यूसूरी अपना राज्य बनाने का प्रयत्न बहुत समय से कर रहे थे किन्तु क्लिस्तीन में एक चलन यूसूरी राज्य की स्थापना का सुत्रात २ नवम्बर, १९१७ की उत घोषणा से हुआ जिसे बेलफर घोषणा (Balfour declaration) कहा जाता है। १९२३ में ब्रिटेन की घासन-मन्त्र्य चलाने का जो धारैघ दिया गया था उसमें यह सिद्धान्त निहित था। यह धारैघ यूसूरी पलराय्य इतरायन की स्थापना की घोषणा के साथ ही समाप्त हुआ इस पर इतरायन और घरब राज्यों में कुछ टिङ्क गया। निज ने घरब देशों को संघटित करने में प्रमुख भाग लिया। इसी उद्देश्य के लिए घरब नीब की भी स्थापना हुई जिसका प्रधान कार्यालय काहरा में है। यद्यपि इतरायन के प्रति घरब देशों बिरोधकर निज का मनमुटाव जब भी बना हुआ है, लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के कारण घरब राज्यों को चुप हो जाना पड़ा है। बंते निज इतरायन जाने बाने सामान के खेज गहर से पुकरने पर जब भी बड़ी निवराणी रहता है।

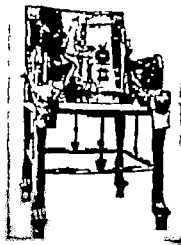
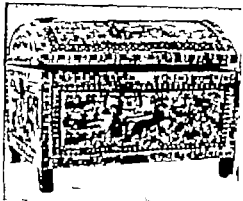
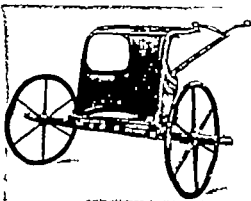
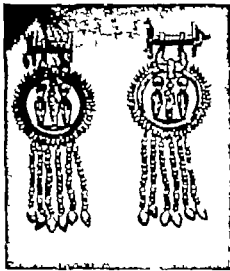
इसरायल राज्य की स्थापना १५ मई १९४८ को हुई। इसरायल और बड़ीसी धरत राज्यों के प्रत्यक्षानीन किन्तु भीवण युद्ध के पश्चात् पुनान के रोडन (Rothens) नामक स्थान में प्रस्थापी सन्धि पर हस्तक्षरत किये गये। जिन देशों ने सन्धि पर हस्तक्षरत किये उनके नाम हैं—मिश्र लेबनान जार्डन और सीरिया। सन्धि पर हस्तक्षरत विभिन्नतीय सम्बन्धी संयुक्त राष्ट्र के अध्यक्ष और संयुक्त राष्ट्र द्विनिस्तीन समझौता समीक्षण की देखरेख में किये गये। जनवरी १९४९ में पहले प्राय चुनाव हुए और डॉक्टर वीजमैन (Dr Weizmann) इसरायल गणराज्य के पहले प्रधान बने।

इसरायल सरकार इस बात के लिए बचबच्च है कि बाहर से आने वाले सभी यहूदियों को इसरायल में स्थान दिया जायगा। १९४९ में कोई साढ़े तीन लाख लोग इसरायल आये।

अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से इसरायल राज्य की संतार के अधिकतर देश स्वीकार कर चुके हैं और १२ मई, १९४९ को जनसठों संसद के रूप में यह संयुक्त राष्ट्र में शामिल हो चुका है।

इसरायल राज्य की सबसे बड़ी विशेषता एक यह है कि उन्होंने अपनी राज्य भाषा हिब्रू को बनाया। हिब्रू एक मृतभाषा है, परन्तु इतने पुराने समय में भिन्न-भिन्न स्थानों से आकर बतने वाले यहूदियों ने हिब्रू सीख ली। प्राय वहाँ के मनुष्य की सारी कार्रवाई हिब्रू में होती है। हमारे देश में जित हिन्दी को अपनी भाषा भाषा और राष्ट्र भाषा स्वीकार किया है वह हिब्रू के लक्षण मृतभाषा नहीं है। प्राय भी इस देश की प्राचीन से अधिक जनता की यह भावना है और क्षेत्र में से भी जैसे न समझने वाली की संख्या नगण्य है। क्या हमारे लिए यह सज्जा की बात नहीं है कि प्राचीन भी हमारे देश की केन्द्रीय सरकार का प्राय सारा कार्य एक विदेशी भाषा अंग्रेजी में चलता है और इसके समर्थक भी कम नहीं पाये जाते? अंग्रेजी का स्थान हिन्दी पण्डित क्यों ले लेनी यह हमने अपने लक्ष्य द्वारा घोषित किया है, पर जिस प्रति से हिन्दी को अंग्रेजी का स्थान दिलाने का प्रयत्न चल रहा है उससे तो पण्डित क्या पण्डित के ऊपर एक श्रम जोड़ने से भी संख्या हो जाती है उतने वर्षों में भी हिन्दी को उसका उचित स्थान प्राप्त होने वाला नहीं है। इस विषय में हमें इसरायल के हिब्रू प्रम के स्फूर्त और प्रेरणा मिलनी चाहिए।

भी भाषण से बिना ही भी सैबब के साथ हम लोग काहरा का प्रजायबधर देखने गये। बड़ा जारी प्रजायबधर का मकन है और उतमें जारी तथा बहुत प्राचीन संग्रह है। इन संग्रह में मूर्तियाँ हैं चित्र हैं धामुवस हैं, बरत हैं और सबसे अधिक मिनू भिष की प्रसिद्ध 'नबी' के नाम से नुकारा जाता है तथा कर्तों में



७-११ तुलएसम्भामुन की कद
से निकला हुआ कुछ सामान

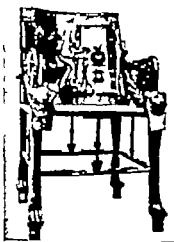
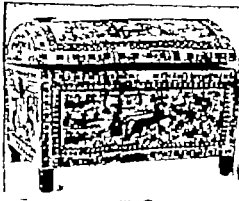
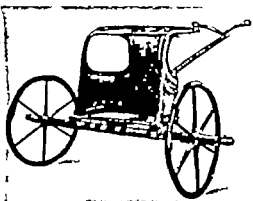
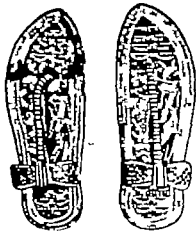
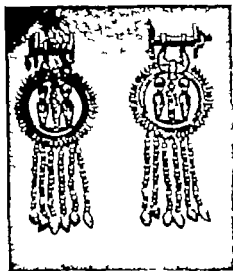
इसरायल राज्य की स्थापना १३ मई १९४८ को हुई। इसरायल और पड़ोसी अरब राज्यों के अल्पजातीय किन्तु भीखल युद्ध के पश्चात् यूनायन के रोडन (Rhodes) नामक स्थान में अस्थायी सन्धि पर दस्तखत किये गये। त्रिभू देशों ने सन्धि पर दस्तखत किये उनके नाम हैं—मिथ लेबनान जार्डन और सीरिया। सन्धि पर दस्तखत फिलिस्तीन सम्बन्धी संयुक्त राष्ट्र के मध्यस्थ और संयुक्त राष्ट्र फिलिस्तीन समझौता समीक्षण की देखरेख में किये गये। जनवरी १९४९ में पहले धाम चुनाव हुए और डॉक्टर वीज़मैन (Dr Weizmann) इसरायल गणराज्य के पहले प्रधान बने।

इसरायल सरकार इस बात के लिए बचनबद्ध है कि बाहर से आने वाले सभी यहूदियों को इसरायल में स्थान दिया जायगा। १९४९ में कोई साढ़े तीन लाख लोग इसरायल आये।

अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से इसरायल राज्य को संसार के अधिकांश देश स्वीकार कर चुके हैं और १२ मई, १९४९ को उनठहरे सदस्य के रूप में यह संयुक्त राष्ट्र में शामिल हो चुका है।

इसरायल राज्य की सबसे बड़ी विशेषता एक यह है कि यहाँनें अपनी राज्य भाषा हिब्रू की बनाया। हिब्रू एक मृतभाषा है परन्तु इतने बड़े समय में मिला मिला स्थानों के धाकर बसने वाले यहूदियों ने हिब्रू सीख ली। प्रायः वहाँ के बालतन्त्र की सारी कार्रवाई हिब्रू में होती है। हमारे देश ने जिस हिन्दी को अपनी राज्य भाषा और राष्ट्र भाषा स्वीकार किया है वह हिब्रू के सर्वस मृतभाषा नहीं है। प्रायः भी इस देश की भाषी से अधिक जनता की यह मातृभाषा है और श्रेष्ठ में से भी जितने न समझने वालों की संख्या नगण्य है। क्या हमारे लिए यह सज्जा की बात नहीं है कि यहाँ भी हमारे देश की केन्द्रीय सरकार का प्रायः सारा कार्य एक बिदेसी भाषा अंग्रेजी में चलता है और उसके सम्पर्क भी कम नहीं पड़े जाते? अंग्रेजी का स्थान हिन्दी पत्र-पत्रों में से लेगी यह हमने अपने संविधान द्वारा घोषित किया है, पर जिस गति से हिन्दी को अंग्रेजी का स्थान दिलाने का प्रयत्न चल रहा है उससे तो पत्र-पत्र क्या पत्र-पत्र के अन्त एक जूग्य खोजने से जो संख्या हो जाती है उसने क्यों भी हिन्दी की उत्तम स्थिति स्थान प्राप्त होने वाला नहीं है। इस विषय में हमें इसरायल के हिब्रू प्रेम से स्फूर्ति और प्रेरणा मिलनी चाहिए।

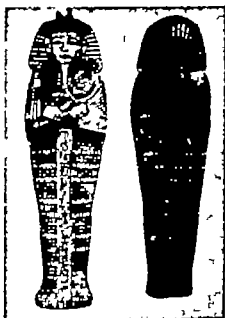
धी नायद से बिदा हो भी सँबर के साथ हम लोग काहुरा का अज्ञायकपर देखने गये। बड़ा भारी अज्ञायकपर का नवन है और उत्तम भारी तथा बहुत प्राचीन संघर्ष है। इस संघर्ष में मूर्तिर्षा है चित्र है आनुरण है अन्त है और सबसे अधिक है किन्तु मिथ की प्रसिद्ध 'मयी' के नाम से पुकारा जाता है तथा कर्मों में



७-११ तुलएम्कभामुन की कच
से निकला हुआ कुछ सामान



२ तुतन्खामुन की ममी के ऊपर का स्वर्ण का चेहरा



१३ तुतन्खामुन की ममी का स्वर्ण का डकन



१४ निफरतिती की पापाक-मूर्ति

मिता हुआ बिबिध प्रकार का सामान । इस कब्रों के सामान में सबसे अधिक संग्रह है थेस (Thabes) में मिता हुआ मिथ के बारग्राह तुतएम्ब धामुन की कब्र का सामान । तुतएम्ब धामुन की यह कब्र सन् १९२२ में मिली थी । तुतएम्ब धामुन की ममी धमी भी इसी जगह है पर उस ममी पर एक के बाद एक जो सात कपडन लगाये गये थे वे सब इस भजाबबगर में ले जाये गये हैं । ये कपडन कोई साधारण कपड़े के नहीं हैं ये हैं एक प्रकार की समूके जिन पर सच्चा सोना प्रचुर परिमाण में लगा हुआ है । ये समूके इस प्रकार बनी हुई हैं कि एक समूक दूसरी समूक के भीतर भा जाती है और इस प्रकार धस्त में सात समूकों की एक समूक हो जाती है । प्रतिम सातवीं समूक में तुतएम्ब धामुन की ममी थी । साध की छोड़ ये सातों समूके इस भजाबबगर में एक दूसरे से घलन कर, सात छोड़े के बड़े-बड़े बरतों में सजायी गयी हैं । इस कपडन के सात बरतों के प्रतिरिक्त तुतएम्ब धामुन की कब्र से निकसा हुआ न जाने कितना सामान संग्रहीत है—तुतएम्ब धामुन के बैठने की स्वन की कुतिया उसके सोने का स्वर्ण का बर्तन उसकी हिरण्य की बनी हुई पालकी उसके स्वण के तथा घनेरु प्रकार के रंगीन पत्थरों के धामूबल उसके बर्तन कपड़े घोर न जाने क्या-क्या । (बिब मं० ७ से १३ तक) जिन धिन रंगों के पत्थरों के धामूबलों में इस समय हीरे, बन्ने, मारिक धादि जिन रत्नों घोर मोतियों का प्रचार है उन रत्नों भ्रबबा मोतियों के कोई नूबल नहीं है जिससे जान पड़ता है कि तुतएम्ब धामुन के काल में ये रत्न घोर मुक्ता ईजाद न हुए थे । निरय के व्यवहार का धावद हो कोई ऐसा सामान हो जो इस कब्र में ले न निकला हो यहाँ तक कि जाने की रोटियाँ मिठाई घोर घू घने के मुर्ग बित इष्य भी निकले थे । तुतएम्ब धामन का देहास्त ईसा के १३५० वर्ष पूर्व हुआ था केवल १६ वर्ष की अवस्था में । उसकी माय की ममी बनाकर उस ममी के साथ यह सब सामान पाड़ा गया था । कब्र बड़े बिघाल रूप में बनायी गयी थी घोर उतमें ये सारे पदार्थ बड़े व्यवस्था से सजाकर तब उस कब्र की ऊपर से मिट्टी धादि ले ड़ाका गया था । यह तुतएम्ब धामुन की कब्र एक ऐसी कब्र थी जो बिलकुल पूर्ववत् ही मिली थी । इस कब्र के प्रतिरिक्त अन्य कब्रों का सामान धामुनिक काल के बहुत पूर्व ही सट्टों के द्वारा हटाया जा चुका था । फिर तुतएम्ब धामुन इकनाटन (Ikhnaton) का बामाद था घोर येस के मिथी सभ्रातों के प्रतिष्ठ राजकुदुम्ब का धमिम सभ्राट था । इस प्रतिष्ठ राजकुदुम्ब ने मिथ पर हो तो होत बच तक राज्य किया । इकनाटन इत राज कुदुम्ब का धमिम प्रजाध्यासी सभ्राट था । इसने धयन मूम में एक नवीन धर्म का प्रतिपादन किया था, जिनमें सूर्य (Afon) की सबधस्तिघासी ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठ की गयी थी । इतने सबसे पहले एक ईश्वरधारी धर्म का धारण किया था । पुरानी कड़ियों का इत मूम में धस्त हुआ था घोर प्राचीन मिथ के कब्रधारी में

समय बाद एक बार फिर स्वतन्त्र वातावरण में कला की उपासना की थी। इसी कारण इस कब्र में इकाग्रते के राज्यकाल की प्रमुख कलाकृतियों का संग्रह मिलता है और मिथ के इतिहास में इन अनुपम कलाकृतियों का एक विध्वन स्थान है। प्राचीन मिथ के स्मृति बिह्वी में इस समाधि के संग्रह का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है और काहारा के संग्रहालय में भी सबसे प्राकृतिक संग्रह यही है।

इस कब्र के सामान के सिवा प्रजापतिवध का अन्य धार्मिक सामान भी मृतकों से ही सम्बन्ध रखता है; इतना ही भेने तो इस प्रजापतिवध का नाम मुरखों का प्रजापतिवध रखा। प्राचीन मिथ में मृतक शरीर का बड़ा महत्व था। उसे इस प्रकार के मसाले लगाकर कपडन में बन्ध किया जाता था कि लाख हवाओं बर्षों के बीत जाने पर भी सड़ती न थी और सुरक्षित रहती थी। यह मसाला किन चीजों से बँते बनता था इसका पता देने के प्रयत्न करने पर भी अब तक बेला निक नहीं लगा पाये हैं। यद्यपि कब्र में लजिन की लाख की भी सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया गया है परन्तु लजिन की मृत्यु की घड़ी बहुत समय नहीं बीता है और गुना जाता है कि उसके इपर-उपर से जल होने के कुछ मक्षण भी बिखारी पड़ने लग है। फिर पुराने मिथ में लाखों की इस प्रकार सुरक्षित रखने के प्रयत्न के धतिरिक्त लाखों के लाख भीक्षित प्रवस्था के उपयोग का सामान भी पाया जाता था। प्राचीन मिथ के लोग यह मानते थे कि मृतक कब्र में इस सब सामान का उपयोग कर सकेगा। येरे मय पर तो मुरखों के इस प्रजापतिवध का बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा। मुझे मृतकों की बड़ी-बड़ी समाधियों मकरारे धारि कभी भी देख नहीं सकते फिर मिथ के इस प्रजापतिवध में तो इस मुरखान्त की बराकाम्बा है। इन समाधियों, मकरारों मुरखों से सम्बन्ध रखने वाली कभी प्रकार की वस्तुओं में मुझे प्रातक्षि-भाषना परमोत्कृष्ट रूप में दिख पड़ती है और जब ये इन वस्तुओं को देखता हूँ तब मुझे लदा हिन्दुओं का वर्णन स्मरण ही आता है। हिन्दुओं में मृतक शरीर के प्रवस्था के प्रवर्धन को भी कभी भी नहीं रखा जाता। लाख जला ही जाती है अस्म और हृदयों को कितनी पवित्र नहीं में प्रवाह कर दिया जाता है। जिस स्थान पर लाख का धमि-संस्कार होता था वहाँ भी पहले कोई समाधि या छतरी नहीं बनती थी। यह प्रथा हमने बीजों और गुलामानों से सीखी। हमारे धर्म हमारी संस्कृति में मय्यु का महत्व है बड़ा भारी महत्व है पर मृतक का नहीं। हर धार्मिक उत्कृष्ट से उत्कृष्ट आचरणों को लेकर करना चाहता है या तो इस प्रजापतिवध से छुटकारा और मोक्ष-पथ प्राप्त करने के लिए वा फिर से प्रवृत्ता जन्म पाने को। जो मर चुका है उसकी लाख क्यामत के दिन कब्र में से उठेगी या वह लाख इस संसार की पवित्र वस्तुओं का फिर से कोई उपयोग कर सकेगी, इसकी कल्पना तक हमारा वर्धन नहीं करता। इसीलिए हम

१२ तुथएम्बामुम की पापाण
मूर्ति (ईसा के १३५० वर्ष पूर्व)



१३ मिस्र के एक बालक रेमासिस
द्वितीय की समी उपर का
घाण्टाहन मोलने के बाद

समय बाब एक बार फिर स्वतन्त्र आतावरण में बना भी उपासना की थी। इसी कारण इस कब्र में इफ्नाईन के राजपकात की प्रमुख कलाकृतियों का संग्रह मिलता है और मिथ के इतिहास में इन प्रमुख कलाकृतियों का एक विषय स्थान है। प्राचीन मिथ के स्मृति बिल्लों में इस समाधि के संग्रह का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और काहरा के संग्रहालय में भी सबसे प्राकर्यक संग्रह यही है।

इस कब्र के सामान के विषय अजायबखर का अन्व्य अधिकांश सामान भी मृतकों से ही सम्बन्ध रखता है, इसलिए ये तो इस अजायबखर का नाम मुरबों का अजायबखर रखा। प्राचीन मिथ में मृतक शरीर का बड़ा महत्त्व था। उसे इस प्रकार के मसाने लबाकर कफन में बांध किया जाता था कि साध हजारों वर्षों के बीत जाने पर भी बड़ती न भी और सुरक्षित रहती थी। यह मसाना किन चीजों से कीते बनता था इसका पता देनेक प्रयत्न करने पर भी अब तक बड़ा निक नहीं मना पाये हैं। यद्यपि कब्र में लजिन की साध की भी सुरक्षित रखने का प्रयास किया गया है परन्तु भेविन की मृत्यु को अभी बहुत समय नहीं बीता है और पुना जाता है कि उसके इन्धर-उन्धर से जप होने के कुछ लक्षण भी दिखायी पड़ने लगे हैं। फिर पुराने मिथ में लोगों को इस प्रकार सुरक्षित रखने के प्रयत्न के प्रतिरिक्त लोगों के साथ भीहित अवरवा के उपयोग का सामान भी बाड़ा जाता था। प्राचीन मिथ के लोग यह जानते थे कि मृतक कब्र में इस सब सामान का उपयोग कर सकेगा। मेरे धन पर तो मुरबों के इस अजायबखर का बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा। मुझे मृतकों की बड़ी बड़ी समाधियों मकबरे आदि कभी भी देख नहीं लगेते फिर मिथ के इस अजायबखर में तो इस सुरवाचार की बराबरका है। इन समाधियों मकबरों मुरबों से सम्बन्ध रखने वाली सभी प्रकार की वस्तुओं में मुझे आसक्ति-भावना परमोत्कृष्ट रूप में दिख पड़ती है और अब मैं इन वस्तुओं को देखता हूँ तब मुझे बरा हिन्दुओं का वर्णन स्मरण ही आता है। हिन्दुओं में मृतक शरीर के अक्षय के अक्षय को भी कभी भी नहीं रखा जाता। साध बना ही जाती है, मरक और इन्डियों को किसी बरिब मरी में अबाह कर दिया जाता है। मिथ स्थान पर साध का अग्नि-संस्कार होता था वहाँ भी पहले कोई समाधि या छतरी नहीं बनती थी। यह प्रथा हमने बीड़ों और मुसलमानों से सीखी। हमारे धर्म हमारे संस्कृति, में मृत्यु का महत्त्व है बड़ा भारी महत्त्व है पर मृतक का नहीं। हर कार्य अकृष्ट से अकृष्ट आचरणों को लेकर करना चाहता है या तो इस अजायबखर से सुटकारा और मोक्ष-पद प्राप्त करने के लिए या फिर से अछा जग्न पाने की। जो पर बुका है उसकी साध अमान्त के दिन कब्र में से उठेगी या वह साध इस संसार की पारिब वस्तुओं का फिर से कोई उपयोग कर सकेगी, इसकी कल्पना तक हमारा वर्णन नहीं करता। इसीलिए हम

१२ तूतएन्खामून की पायाब
मूर्ति (ईसा के १३२८ वर्ष पूर्व)



१६ मिस्र का एक नामक रेमासिस
द्वितीय की ममी; ऊपर का
घाबदारन सोमने के बाह

समय बाद एक बार फिर स्वतन्त्र बातावरण में कला की उपासना की थी। इसी कारण इस कला में इकायें के राज्यकाल की प्रमुख कलाकृतियों का संग्रह मिलता है और विश्व के इतिहास में इन प्रमुख कलाकृतियों का एक विद्यमान स्थान है। प्राचीन विश्व के स्मृति बिल्लों में इस कलाकृतियों के संग्रह का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है और काहूरा के संग्रहालय में भी सबसे धार्मिक संग्रह यही है।

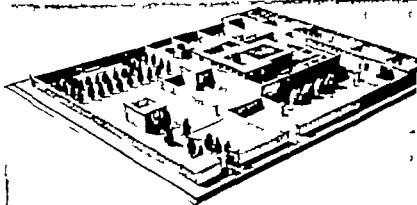
इस कला के सामान के तिका प्रजापदधर का प्रथम प्रतिकार सामान भी मूर्तों से ही सम्बन्ध रखता है; इसलिए मैंने तो इस प्रजापदधर का नाम मूर्तों का प्रजापदधर रखा। प्राचीन विश्व में मृतक शरीर का बड़ा महत्व था। इसे इस प्रकार के मतानों लवाकर कल्पन में बन्द किया जाता था कि लास हुआ है वहाँ के बीच जाने पर भी लड़ती न भी और सुरक्षित रहती थी। यह मतलब किन चीजों से कैसे बनता या इसका पता देनेक प्रयत्न करने पर भी अब तक बीजा निक नहीं लया जाये है। यद्यपि इस में लेनिव की लास को भी सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया गया है परन्तु लेनिव की मृत्यु की प्रती बहुत समय नहीं बीता है और मुना जाता है कि उसके इतर उतर से लय होने के कुछ लक्षण भी दिखायी पकने लये है। फिर पुराने विश्व में लासों को इस प्रकार सुरक्षित रखने के प्रयत्न के प्रतिरिक्त लासों के लास भीहित प्रवस्था के उपयोग का सामान भी गाढ़ा जाता था। प्राचीन विश्व के लीय यह मानते थे कि मृतक कला में इस सब सामान का उपयोग कर लकना। घेरे मन पर तो मूर्तों के इस प्रजापदधर का बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा। मुझे मूर्तों की बड़ी-बड़ी समर्थियों प्रकरी धारि कभी भी प्रकृ नहीं लपते फिर विश्व के इस प्रजापदधर में तो इस सुरक्षात्मक की पराकाष्ठा है। इन कलाकृतियों, प्रकरी मूर्तों से सम्बन्ध रखने वाली सभी प्रकार की वस्तुओं में मुझे प्राप्त-भावना परमोत्कृष्ट कला में विश्व पकती है और अब ये इन वस्तुओं की देखता हूँ तब मुझे सदा शिषुओं का दर्शन समरत हो जाता है। शिषुओं में मृतक शरीर के प्रयत्न के प्रयत्न को भी कभी भी नहीं रखा जाता। लास जाता ही जाती है मला और हृदयों को शिरो बन्धन नरी में प्रवाह कर दिया जाता है। जिस स्थान पर लास का धनि-संस्कार होता था वहाँ भी पहले कोई समर्थि या कठरी नहीं बनती थी। यह प्रवा हुनने बीजों और मुतलमालों से लीजी। हमारे धर्म हमारी संस्कृति, में मृत्यु का महत्व है बड़ा मारी महत्व है पर मृतक का नहीं। हर धर्म उत्कृष्ट से उत्कृष्ट भावनाओं को लेकर अलग काहूरा है पर तो इस आकाशमन के सूटकारों और मोल-पद प्राप्त करने के लिए या फिर के प्रकृष्ट धर्म पाने को। जो पर लुका है उन्ही लास कथामत के दिन कला में से उन्ही या बहु लास इस संसार की वाचिक वस्तुओं का फिर से कोई उपयोग कर लकनी, इसकी कल्पना तक हमारा दर्शन नहीं करता। इसीलिए हम

लाघों को न पाकते, न किसी पाबिब वस्तु को उनके साथ दृष्टनाते हैं। हमारे वर्धन में जोबितावस्था में जो कार्य किये जाते हैं उनको महत्त्व है प्रकृष्टी मृत्यु जहाँ कर्मों से होती है प्रकृष्टा पुनर्जन्म जहाँ कर्मों से होता है और भीस तक जहाँ कर्मों से मिलता है। हमारे यहाँ जीवन का परमोत्कृष्ट लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है और उस लक्ष्य को पहुँचने की पहली सीढ़ी धनातन्त्रि है। मित्र में लाघों को ममी बना उनके साथ सारा संसार पाकना मुझे धातन्त्रि की जरम सीमा जान पड़ी। फिर हमारे यहाँ मृत्यु को यदि महत्त्व है तो जीवन को भी। धरे। जीवन का तो इतना महत्त्व है कितावा किसी देश या समाज में नहीं। हमारा जीवन मृत्यु से समाप्त ही नहीं होता। मृत्यु धातना को नहीं मार सकती और धातना का पुनर्जन्म होता है धत इत पुनर्जन्म की भावना के कारण मृत्यु के निराधाकार से धातन्त्रि न हो हमारा जीवन धातना के धामुमंडल में बिचरल करता है। मोक्ष प्राप्ति से उत्तर जीवन का प्रदान लक्ष्य होता है फिर से उत्तम जन्म पाना। इसीलिए हमारे देश के विभिन्न स्थानों के संघ्र धारि ऐसी मूर्तियों, ऐसी बिब्रों, ऐसी वास्तुधों के हैं जो भावनाधों को जीवन की धोर ले जाते हैं, मृत्यु की धोर नहीं। इस धामायबकर को देश धात में एक भाव मेरे मन में और उठा। तूतएण धामुन के लक्ष्य धातन्त्रि के ज्ञान इतना पाबिब संसार इसीलिए पाक़ा पया था कि वह धरने धम्य जीवन में कसका धवेष्ट उपनोष न कर पाया था। हाय। हजारों बर्षों तक पड़े रहने के बाद भी वह लक्ष्य सब संसार जसी रूप में बापत निकल धातना। लालता रह पयी धेतो की धैती बिना तूति के प्यासी की प्यासी। हमें जो धम्य विधिष्ट वस्तुएँ दिखीं वे भी (१) बेगम निरुतरिनी की पावाल मूर्ति (बिब्र नं० १४) तूतएण धामुन की पावाल मूर्ति (बिब्र नं० १५) ऐबीसेस डितीय की ममी (बिब्र नं० १६) लक्षम ३८०० वय पुराना एक बिब्र (बिब्र नं० १७) और ३३२९ वय पुराना एक मिभो मकान का नक़शा (बिब्र नं० १८)।

हम रोपहर का भोजन करने एक रैस्टर में पहुँचे। वहाँ से हम धी नायर के यहाँ जाय के लिए धये। यहाँ धी नायर के साथ धीमती नायर तथा एक बत्र प्रतिनिधि से भी हमारी भेंट हुई। धी नायर के यहाँ से धी संघर के साथ हम फिर बिन के समय विरमिधों को देखने धामे। यद्यपि इन विरमिधों का भी मत्कों से ही सम्बन्ध था और धनी हम मूतकों के ही धामायबकर से चलकर यहाँ धाये वे तथापि मुरधों से सम्बन्ध रखने पर भी हमें इन विरमिधों में जोबित हाधों का ही धाबिब कीमत दिख पड़ा। बिन में हमें इन धरताकार विरमिधों की धोर धाधिक बिगालता बिप्रायी थी। बत्र हम विरमिधों से लौट रहे थे तब एक दिलधस्य धरना हो पयी। नील नदी के एक पुन पर जममोहनवास एक धाय की



१७ तुषमासिस तृतीय और समुद्र देवता
का ३४४ वर्ष पुराना चित्र



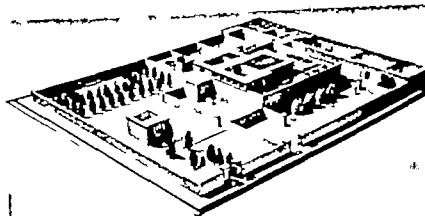
१८ ३३२६ वर्ष पुराना एक मिथी मकान का नक्शा

साधों की न पायते, न कितनी पारिव्य वस्तु की उनके साथ बहनाते हैं। हमारे बर्धन में भीखताबस्ता में जो कर्म किये जाते हैं उनको महत्त्व है अथवा मृत्यु जहाँ कर्मों से होती है अथवा पुनर्जन्म जहाँ कर्मों से होता है और भीख तक जहाँ कर्मों से मिलता है। हमारे वहाँ जीवन का बरनोत्कृष्ट लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है और वह लक्ष्य को पहुँचने की पहली सीढ़ी घनातक्ति है। जिस में साधों की ममी बना उनके साथ धारा संतार पावना मुझे घातकित की बरम घोषा जाव पड़ी। फिर हमारे यहाँ मृत्यु की परि महत्त्व है तो जीवन को भी। अरे ! जीवन का तो इतना महत्त्व है किन्तु किसी देश या समाज में नहीं। हमारा जीवन मृत्यु से समाप्त ही नहीं होता। मृत्यु घातक को नहीं मार सकती और घातक का पुनर्जन्म होता है अतः इस पुनर्जन्म की बाधना के कारण मृत्यु के निराभावात् से अल्पकालित न ही हमारा जीवन आशावाज के वायुमंडल में बिखरता करता है। मोक्ष प्राप्ति से उत्तर जीवन का प्रथम लक्ष्य होता है फिर से उत्तर जन्म पाना। इसीलिए हमारे देश के विद्वत् स्त्रियों के संग्रह आदि ऐसी मूर्तियों, ऐसे बिजों, ऐसी वस्तुओं के हैं जो बाधनाओं को जीवन की घोर से जाते हैं, मृत्यु की घोर नहीं। इस घनातक्ति को देख घत में एक भाव मेरे मन में और उठा। तुतएम्न घामुन के सङ्ग शक्ति के साथ इतना पारिव्य संतार इसलिये पाया गया था कि वह अपने अल्प जीवन में असाका अनेक उद्योग न कर पाया था। हाय ! हमारे वहाँ तक पहुँचने के बाद भी वह सचका लक्ष संतार उठी कम में वापस निकल आया। लालसा रह पड़ी बेतो की बेती बिना तुप्ति के प्यासी की प्यासी। हमें जो अल्प किन्ति अस्तुर्द्विषी के भी (२) बेयम निष्करतिनी की पापाए मूर्ति (चित्र नं० १४) तुतएम्न घामुन की पापाए मूर्ति (चित्र नं० १५) देवीतेत द्वितीय की ममी (चित्र नं० १६) लवमय १६०० वर्ष पुराना एक चित्र (चित्र नं० १७) और ३३२६ वर्ष पुराना एक मिषी मङ्गल का मङ्गल (चित्र नं० १८)।

हम सोपहर का जीवन करने एक रैस्टरी में पहुँचे। वहाँ से हम की नागर के यहाँ जन्म के लिए गये। यहाँ की नागर के साथ भीखी नागर तथा एक पत्र प्रतिनिधि से भी हमारे भेजे हुए। वहाँ नागर के यहाँ से भी लक्ष के साथ हम फिर बिज के लक्ष्य विरमिषी को देखने गये। अथपि इन विरमिषी का भी मृतकों से ही लम्बम्प था और सभी हम मृतकों के ही असावाबकार से चलकर वहाँ गये ये सचदि मुरदों से लम्बम्प रखने पर भी हमें इन विरमिषी में जीवित हाथों का ही अधिक कीमल बिज बड़ा। बिज में हमें इन कर्त्ताकार विरमिषी को और अधिक विद्यामता दिघायी ही। अब हम विरमिषी से लोड रहे थे तब एक दिनचल्य घटना हो गयी। नील नदी के एक पुन पर अयोहनात एक क्षय की



१७ तुपमासिस तृतीय घोर समुद्र बेबता
का ३४४ वर्ष पुराना बिज



१८ ३३२१ वर्ष पुराना एक सिन्धी भवन का तन्धा

सबूझ न देना उचित न समझ ज्ञाने की प्रपेक्षा तत्काल बढ़ा देना ही ध्येयकर समझा । घाब काहरा फौजी कानून का हमें भी बोझ-सा अनुभव हो गया — एक बगड़ जवमोहन हुए गिरबजार और एक जवह बुझे पटना पड़ा कुर्माता । मनोमत यही हुई कि मनीरबख जमुमब तो हमें हो नये पर कुर्माने के कुछ खपये देने के लिये हमें न तो कोई कष्ट उठाना पड़ा और न हमारे कार्यक्रम में ही कोई यड़बड़ी हुई ।

दिल्ली छोड़े हमें अभी दो दिन ही हुए थे पर इन दो दिनों में ही हमने कितना देखा और समझा था । महीनों और हफ्तों बिग यात्राओं में लपटे थे उन्हें धर्म-धर्म-उत्तरोत्तर औद्योगिकी यातायात के सामग्री में कितना सुमन बना दिया था । इन दो दिनों में हम हमारों भील डकु चुके थे । एक प्राचीनतम मित्र देश को देख कर हम एक दूसरे प्राचीनतम देश धूमन को जा रहे थे । कितनी तबय इन दोनों देशों का संतार में कितना महत्व था । घाब पुरातनवेत्ताओं या इतिहास प्रबन्ध कला प्रेमियों के लिये कितनी की कृष्टि में भी इन देशों का कोई महत्व न रहा था । पर इन दो दिनों में भी मित्र में हमने जो कुछ देखा था और उसके सम्बन्ध में घब तक जो कुछ पड़ा था उसके कारण सामुयान की रफ्तार के साथ ही हमारे मन में एक बर एक न जाने कितनी बातें उभरी लयी ।

ठीक समय हमारा सामुयान एधिन्य रबाना हो गया ।

तस्वीर उतार रहे थे। उन्होंने अपना कैमरा ठोक किया ही था कि एक पुलिस वाला पहुंचा और उसने थोड़ी कानून के अनुसार तस्वीर उतारने की मनाजिमत बता करगी। हम तब एकदम सबड़ा गये और हम सभी ने उसे कहा कि तस्वीर उतारी ही नहीं गयी है, पर वह सब माननेवाला था, हाँ सबको लेकर वह जाने चला। पाने में हम लोगों के पासपोर्ट इत्यादि देखने तथा हुताबास के भी चीप के प्रयत्न से जगमोहनबास रिहा हो सके।

सम्प्रा के सात बज रहे थे तब्यापि डॉबेरा न ही रहा था। मालूम हुआ प्राबकल बीते-बीते थाप उत्तर में जबिक प्राये बहने दिन बढ़ता ही जाया। यहाँ प्राबकल वी फरने से सम्प्रा को घंघेरा हीने तक १५ घंटे का दिन और ८ घंटे की रात चल रही थी। नारके में तो प्राची रात को सूर्य के बर्जन होते थे जिसका बर्जन कुछ बयों पहले की घंघेरी की एक प्रसिद्ध उपन्यास-सजिका भीमती मेरी करोली ने अपने एक उपन्यास में किया है। एक जमाने में मेरी करोली की बड़ी प्रतिष्ठी थी। मैंने भी उनके कुछ उपन्यास पढ़े थे। उनमें से मुझे तो कई पताच भी प्राये थे पर न जाने कैसे प्राय उन्हें कोई न जानता है और न पढ़ता है।

हमारी इच्छा प्राची काहुरा के जू को देखने की थी, परन्तु डॉबेरा न होने की तात बज रहे थे और जू ६ बजे ही बन्द हो जाता था प्रातः हम सीये ही डम्प्यू एयरलाइन के बन्दार को प्राये। काहुरा से एजिप्त की घी ए सी हवाई जहाज न जाता था इसलिए हमें प्राब हुसरी लाइन से जाना था। इस न में भी हमारा रिजर्वेशन प्राबि हो चुका था। वी डम्प्यू ए. के बन्दार से एरीट्रोम पहुँके और पचापि प्रासा यही करके गये थे कि प्राब बिना किसी विज्ञेय प्राब के ठीक समय हम एजिप्त की रबाता हो सकेंगे, पर ऐसा न हो सका। हवाई यहु पर जाते ही मालूम हुआ कि मित्र की सरकार का नया हुपम यहु प्राया है कि प्राची डॉम्पेरी प्रात्री यहीं है के बिना सरकारी प्रासा के निय यहीं छोड़ सकते। जगमोहनबास और घनश्यामबास का पासपोर्ट डेम्पेरी प्रात्री का या पर सेवा नहीं, प्रातः मेरा जाना रोक दिया गया। प्राब सी प्राबिकारियों से टेनीकोन चलना शुरू हुआ। हवाई जहाज के उड़ने को बंद निमित्त हो जाती थे। घनश्यामबास ठहर न सकते थे मैं बिना इजाजत के जा न सकता था, जगमोहन घनश्याम जाने या ठहरने के निबतान्न थे पर वे क्या करें यहु के निर्णय न कर पा रहे थे। एक विचित्र परिस्थिती भी। बंद यही हुआ कि एरोप्लेन जाने के बाद-प्राब निमित्त पहले मुझे जाने प्रासा किसी तरह मिल गयी। हाँ, पहले से जाने की इजाजत न सने के कारण प्रा एक छोटा-सा जुमाना प्रबन्ध कर दिया गया, जिसे मैंने सत्याग्रह प्राबोलेन के

अबुस न देना उचित न समझ जेल जाने की अपेक्षा तत्काल पटा देना ही बेगुनाह
समझ । आज काहरा फौजी कानून का हमें भी चोड़ा-सा अनुभव हो गया—एक अण्ड
बागमोहन हुए बिरपतार और एक अण्ड मुझे पटाना पड़ा बुर्माना । मनोमत यही हुई
कि मनोरञ्जक अनुभव तो हमें हो गये, पर बुर्माने के कुछ रुपये देने के सिवा हमें न
तो कोई कष्ट उठाना पड़ा और न हमारे कार्यक्रम में ही कोई गड़बड़ी हुई ।

किन्ती छोड़ें हमें अभी दो दिन ही हुए थे पर इन दो दिनों में ही हमने कितना
देखा और समझा था । महीली और हवती जिन बाजारों में लभते थे उन्हें घने-घने
उत्तरोत्तर शीश्यामी वातावात के साबनों ने कितना लुप्त बना दिया था । इन दो
दिनों में इन हवारी पील बड़ चुके थे । एक प्राचीनतम निभ देण को देख कर हम एक
दूतरे प्राचीनतम देण मूनाम को आ रहे थे । कितनी लम्ब इन दोनों देणों का संसार में
किताना म्हरत था । आज पुरातनदेताओं या इतिहास सबका कला प्रेमियों के सिवा
किन्ती की कृति में भी इन देणों का कोई महत्व न रहा था । पर इन दो दिनों में भी
मिथ में हमने जो कुछ देखा था और उसके अन्वय में सब तक जो कुछ पड़ा था उसके
कारण वायुवात की रपतार के साथ ही हमारे मन में एक घर एक न जाने किन्ती
बातें उठने लगीं ।

ठीक लम्ब हमारा वायुवात एबित्त रवाना हो गया ।

तस्वीर उतार रहे थे। उन्होंने अपना सैयरा ठोक किया ही था कि एक पुस्तक आता पहुँचा और उसने खोबी कानून के अनुसार तस्वीर उतारने की मुमानियत बता अपमोहनदास को तिरकदार कर लिया। हम सब एकत्रम बबड़ा गये और हम सभी ने उसे कहा कि तस्वीर उतारी ही नहीं गयी है, पर बहु कम भागनेवाला था हम सबको लेकर बहु घाने आता। घाने में हम लोगों के पासपोर्ट इत्यादि देखने तथा हम लोग पूरे-नीरे न हीकर कुछ प्रतिष्ठा रखने वाले व्यक्ति ह, यह बाल लेने और भारतीय हुताबास के भी सैयरा के प्रपल से अपमोहनदास रिहा ही लके।

सम्प्रा के साथ बज रहे वे तथापि घंबेरा न हो रहा था। मानून हुआ आरकलन बीते-बीते घाप उतार में अधिक घाने बढ़ने, दिन बढ़ता ही जायगा। यहाँ आरकलन की बदने से सम्प्रा को घंबेरा होने तक १६ घंटे का दिन और ८ घंटे की रात चल रही थी। नारवे में तो घाबी रात को सूर्य के दर्शन होते थे बिलका बर्लन कुछ बर्षों पहले की घंघेबी की एक प्रतिष्ठ अपम्याल-लेखिका श्रीमती मैरी करोली ने अपने एक उपन्यास में किया है। एक अमाने में मैरी करोली की बड़ी प्रतिष्ठा थी। मैने भी उनके कुछ उपन्यास पढ़े थे। उनमें से मझे तो कई वसम्भ भी आये थे वर न जाने कौसे आज उन्हें कोई न जानता है और न पढ़ता है।

हमारी इच्छा घाबी काहरा के लू को देखने की थी, परन्तु घंघेरा न होने पर भी साथ बज रहे वे और लू ६ बजे ही बन्द हो जाता था अतः हम तीसरे दो डब्ल्यू ए. एयरलाइन के बन्दर को घाने। काहरा से एम्पिल को घो ए सी का हुआई अहाब न आता था इसलिए हमें अब दूसरी माइन से जाना था। इस माइन में भी हमारा रिजर्वेशन आदि हो चुका था। डी डब्ल्यू ए. के बन्दर से हम एरोप्लेन पहुँचे और पछपि घाघा पही करके गये थे कि अब बिना किसी बिज्जे घटना के ठीक समय हम एम्पिल को रवाना हो सकेंगे पर ऐसा न हो सका। हुआई अहुँ पर आते ही मानून हुआ कि मिथ की सरकार का गया हुनम यह आया है कि श्री घात्री डेम्परेरी घात्री नहीं है वे बिना सरकारी आता के मिथ नहीं छोड़ सकते। अपमोहनदास और अनायासदास का पासपोर्ट डेम्परेरी घात्री का था पर नैप नहुँ अतः मैरा जाना रोक दिया गया। अब तो अधिकारियों से टेन्सीकोन चलता शुरू हुआ। हुआई अहाब के बढ़ने की खबर मिनिड ही काफी थी। अनायासदास छहर न सकते थे, वे बिना इजाजत के जा न सकता था, अपमोहन अहाब जाने या छहरने के लिए स्वतन्त्र थे, पर वे क्या करें यह वे निर्णय न कर पा रहे थे। एक विचित्र परिस्थिति थी। और पही हुआ कि एरोप्लेन जाने के चार-पाँच मिनिड पहले मुझे जाने की आजा किसी तरह मिल गयी। हाँ, वहुने से जाने की इजाजत न लेने के कारण मुझ पर एक छोटा-सा क्षुर्ना अवश्य कर दिया गया, जिसे मैंने सरवायहु आर्योबन के

सदृश न देना उचित न समझ बोल जाने की अपेक्षा तत्काल पटा देना ही अत्यन्त समझा। धाज काहरा फौजी कानून का हमें भी थोड़ा-सा धनमच हो गया—एक जगह जयभोग्य हुए पिरफतार और एक जगह मुझे पटाना पड़ा जुर्माना। गभीरत यही हुई कि मनीरजक अमुमच तो हमें हो गये पर जर्मने के कुछ रुपये देने के सिवा हम न तो कोई कष्ट उठाना पड़ा और न हमारे कार्यक्रम में ही कोई पड़बाड़ी हुई।

विन्ती छोड़े हमें घनी बो दिग ही हुए थे पर इन दो दिनों में ही हमने कितना देखा और समझा था। महीनों और हफ्तों जिन यात्राओं में लपते थे उन्हें दान-अन-उत्तरोत्तर धी-प्रमामी यातायात के साधनों ने कितना सुगम बना दिया था। इन दो दिनों में हम हजारों मील जड़ चुके थे। एक प्राचीनतम सिध देश को देख कर हम एक दूसरे प्राचीनतम देश यूनान को था रहे थे। किसी समय इन दोनों देशों का संसार में कितना महत्त्व था। धाज पुरातररवेत्ताओं या इतिहास प्रचवा कता प्रेमियों के सिवा किसी की दृष्टि में भी इन देशों का कोई महत्त्व न रहा था। पर इन दो दिनों में भी निध में हमने जो कुछ देखा था और उसके सम्बन्ध में अब तक जो कुछ बड़ा था उसके कारण बायदान की रफ्तार के साथ ही हमारे मन में एक पर एक न जाने कितनी बातें उठने लगीं।

ठीक समय हमारा बायुयात एविन्ध रबला हो गया।

मिश्र देश के सम्बन्ध में कुछ शब्द और

संसार की सभ्यता का सूत्रपात मिश्र में हुआ, आज अधिकांश विद्वान यही मानते हैं। मिश्र में ही प्रथम भौतिक संस्कृति, स्थापत्यकला, कृषि, खानदानी एवं बरत-विम्यास का विकास हुआ। वहीं पर सर्वप्रथम भौतिक धातु कर्मोत्पादन, धातु विज्ञान इन्जीनियरी आदि विज्ञानों का विकास हुआ। वहीं पर सर्वप्रथम म्यास, घासन-भ्यवस्था एवं धर्म की नींव पड़ी। यूरोप की बार में जो कुछ मूलान ने दिया उसे यूनानियों ने मिश्र से ही प्राप्त किया था। यूनानी इतिहासकारों ने स्वयं ही मिश्र की नींव पाटी के राजा मंडार के प्रति प्रामाण्य प्रकट किया है, जिसे उन्होंने मौखिक रूप में प्राप्त किया था।

जैसा पहले कहा जा चुका है मिश्र की सभ्यता का उदय प्रारंभिक काल से प्रचलित ईसा से कोई सात हजार वर्ष पूर्व मेनेस (Menes) के शासन-काल से मिलता है, यद्यपि कुछ इतिहासकार मिश्र के इतिहास को तीन हजार बार को वर्ष प्राचीन ही मानते हैं।

अत्यन्त लंबे नील घाटी प्रदेश में इस सभ्यता का वर्धित उदय हुआ यह प्रथम ही बड़े आश्चर्य की बात है। भौतिक कृषि से देखने पर मिश्र की एक लाल प्रथम या कि बहु तीन महाद्वीपों के संतर्प में था, एशिया, यूरोप और अफ्रीका। हो सकता है कि अपनी इस विशिष्ट भौतिक स्थिति के कारण ही मिश्र सभ्यता का भी कैम्ब्रिज-विशु बन गया हो। मिश्र की सभ्यता का पता उस सामान से ही तो चलता है जो कि मिश्रवासी मुरकों के साथ कब में बाढ़ दिया करते थे। अनाकृषि और मृत्त कलकामु के कारण ये वस्तुएँ आज भी सुरक्षित प्रवस्था में मिल जाती हैं।

मिश्र के इतिहास में इतने अधिक शासकों ने राज्य किया कि उनकी ३० राज्य-वंशों में गिनकर ही स्मरण रखा जा सकता है। सभी इतिहासकारों ने मिश्र के शासकों को जिन्हें करामो कहा जाता था इसी प्रकार वर्गीकृत किया है। इन करामों में से वेपत को एक महान पिरमिड के निर्माता के रूप में तीव्र मानते ही हैं। वेपत मिश्र का सबसे अधिकशासी शासक दार्शनिक तृतीय माना जाता

है। मित्र का अन्तिम बड़ा घातक रोमीतेस द्वितीय माना जाता है। उसके पश्चात् मित्र का परामात्र शुक ही गया और मित्र जब ईरानियों के अधिकांश में जाता गया जो बाद में सिकन्दर महान् के आक्रमणों से पराजित हो गये। सिकन्दर का साम्राज्य बहुत बड़े दिन चला। बाद में उसके सेनापति के एक बंस के सातक मित्र पर राज्य करते रहे और इस बंस की अन्तिम महाराजों निरुधोपेरा हुई जिसके बारे में कहा जाता है कि वह बिस्व की सबसे सुन्दर आभासी हुई है। ईसा से तीस वर्ष पूर्व मित्र पर रोमवासियों का अधिकार हो गया। सात सौ वर्ष बाद अरबों ने मित्र पर आक्रमण किया और वह उनके अधीन बना गया। १५१७ में मोटोमन साम्राज्य के घातक सलीम प्रथम ने सीरिया, जिनिल्लीन और मित्र पर आधिपत्य बना लिया। १७६८ में नेपोलियन ने भारत पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से मित्र पर आक्रमण किया और उसे अपने अधीन किया, यद्यपि अधिक समय तक उसका बड़ा अधिपत्य न रह सका। १८०१ में नेपोलियन अंग्रेजों से हार गया पर इस समय अंग्रेज भी दो वर्षों तक अधिक नहीं रह सके। इसके बाद मोहम्मद अली का युग आया। मोहम्मद अली क पीछे इस्माइल ने अपने राजसी ठाठबाज के लिए स्वेडनहर के कई रोपर ब्रिटेन सरकार की बेबकर इत्यादि करने कर लिया कि मित्र की हास्त फिर विपन्न गयो। अन्तीतर्षी घताप्री के आक्रमण में ब्रिटेन ने मित्र की राजकीय में महत्वपूर्ण भाग लिया और उसके बाद अन्तुलवादा के नेतृत्व में मित्र की स्वाधीनता का आन्दोलन चला। १९१६ में ब्रिटेन और मित्र के बीच संधि हुई जो १९४७ में मित्र सरकार ने भंग कर दी। इससे बाद रसातलुन आन्ति के कारण घातु आरम्भ की मित्र छोड़ना पड़ा। अब अन्तुल नवीय ने प्रथम अन्ती के रूप में आधुनिक की वाकशोर लम्हाती है, और मित्र की एक प्रजातन्त्र (रिपब्लिक) घोषित किया है। अब मित्र एक नये संविधान की तैयारी में है और अन्तुल नवीय बार-बार कह चुके है कि मित्र की तो भारत जैसा संविधान चाहिए।

मित्र के निवासियों में किन्त-किन्त स्वान के लोग हैं यह पहले कहा जा चुका है। ८१ प्रतिशत मुसलमान हैं। १२ प्रतिशत लोगों की आजीविका खेती है। कपास, धनाज, चीनी प्रमुख रेशाकार हैं। मित्र से निर्यात कपास, जिनोतों, प्याज और सोना-चांदी का होता है, आयात लकड़, घोट, चावल कोयला आदि और कपड़े आदि का होता है। जैता कहा जा चुका है मुसलमान कपास का ही है। मित्र का सरर बहुत खेता नहीं है यद्यपि प्रायन्तरी सेकंडरी तथा विद्याय स्कूलों का प्रबन्ध है और दो सरकारो बिस्वविद्यालय भी हैं।

१९३३ में ही मित्र में ७ से १२ वर्ष तक की उम्र के बच्चों के लिए शिक्षा अनिवार्य कर दी गयी थी। १९४४ में प्राथमिक शिक्षा मुक्त कर दी गयी और माध्यमिक शिक्षा १९५० में। १९५१ में बच्चों के लिए बिस्व मार्गन स्कूलों की संस्था

११३ बी, जिनमें ८४ हजार से अधिक विद्यार्थी हैं। सरकारी और गैरसरकारी प्राइमरी स्कूलों की संख्या ६,४८३ और सेकेंडरी स्कूलों की संख्या १७७ बी। मिथ की सरकारी भाषा धरवी है।

मिथ की प्रत्यक्षतया पर विचार करते समय यह नहीं भूमना चाहिए कि एक तो वहाँ की भाषाही बहुत धनी है और दूसरे बेकारी बहुत बढ़ी हुई है। नील घाटी के अपने अपने में जिस तरह खेती होती है और वहाँ जिसने अधिक कपास की उपज होती है उसकी तो कदाचित् दुनियाँ के किसी भाग में नहीं होती किन्तु इस पर भी मिथ के किसानों के रहन-सहन का स्तर बहुत निम्न है। स्वास्थ्य और मकान आदि की स्थिति बड़ी बुराब है। कहा जाता है कि इस समस्या का मूल कारण भूमि का अनुचित वितरण है। इसके प्रतिरोध करने के लिये भी पुराने ईश के हैं। यह हथ की बात है कि जनरल नवीन भूमि-समस्या की ओर ध्यान दे रहे हैं।

वहाँ तक मिथ में बेकारी का प्रश्न है यह समस्या बड़ी भीषण है। प्रायः के युग में तो इस ओर विशेष ध्यान दिया ही नहीं गया। यदि वहाँ मिथ में कपास की खेती इतनी प्रचंडी न होती और उसके पास नील नदी और स्वेज नहर जैसे साधन न होते तो जयवान जाने मिथ की भाषा क्या बधा होती।

प्रायः में विश्व के अधिकांश के सम्बन्ध में कुछ कहे बिना इस अध्याय को समाप्त कर देना ठीक न होगा। जैसे सुदूरपूर्व में पिछले दशक जापान, भारत और चीन इन तीन शक्तियों का विकास हुआ है उसी तरह मध्यपूर्व में मिथ और ईरान का प्रथम हो रहा है। ईरान अपने तेल के कारण और मिथ अपनी सैनिक स्थिति के कारण अधिकांश में संसार के इतिहास पर बड़ा प्रभाव डालने इतने सक्षम नहीं। दुर्भाग्य से ब्रिटेन का साम्राज्य इन दोनों ही देशों से है। किन्तु वहाँ ब्रिटेन ने ईरान में नासमझी की नीति अपनाकर अपनी रक्षितियाँ बना डाली हैं वहाँ मिथ के सम्बन्ध में अपने बड़ी सुध-बूध का परिचय दिया है। तुर्कान के सङ्घर्ष में ब्रिटेन और मिथ में जिस तरह सम्बन्धिता हो गया है, उससे यह स्पष्ट प्रकट है। तुर्कान में धाम चुनाव होने ही वाली हैं और भारत के चुनाव-अभियान की सुझुमार सेय तुर्कान चुनाव कमीशन के प्रधान होकर गये हैं। स्वेज नहर प्रवेश का मामला भी उसी तरह मिथ जाने की भाषा है। मिथ का भाषा है कि संघर्षों की वहाँ रहने का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि सब मिथी अपनी रक्षा प्राप्त करने में समर्थ है।

सास सागर की भूमध्य सागर से मिलाने वाली स्वेज नहर १०३ मील लम्बी है इसकी पहलाई ३४ फुट और चौड़ाई भीषण से १६७ फुट है। सस्ते बनाने में भी इसके निर्माण पर दो करोड़ सत्तानवे लाख पच्चीस हजार पाँच लाख हुआ था। सत्रह

नवम्बर १९६६ से इसमें होकर अहाबों का घाना-जाना हो रहा है। यह नहर बुने को बहिष्कृत के मिलाने वाली कड़ी है। ब्रिटेन सैनिक बुद्धि से धीरे व्यापार को बुद्धि से भी इस प्रदेश पर प्रमुख बनाये रखना चाहता है। किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक अंतरण को वालों में मिम की राष्ट्रीय अर्थों को नहीं कुबली जाती चाहिये। इमारा अनुमान है कि अगले अगले के अनुभव के बाद ब्रिटेन अवरवस्ती निधियों की इच्छा के विरुद्ध नहीं आया धीरे निधियों को ही इस बात का अंतरण देना कि वे अपनी रक्षा का भार अपने मजबूत कर्णों पर सम्हाल लेंगे।

कुछ लोग मिम के नये नेता जनरल नवीब को मिम का अतामुर्क कहते हैं। मिम की हाल को अन्ति में जनरल नवीब का हाथ नहीं बायह कोई नहीं कह सकता बरन्तु नहीं जनरल नवीब को सर्वोत्तम मानकर उसी के हाथ में वाली मिम का नाम मिम के इस काल के अन्त कार्यकर्ता नहीं छोड़ना चाहते। किसी भी अहान् व्यक्ति के अन्त धीरे कार्य के बाद उनके अन्त जाने पर भी एक अभाव की स्थिति आ जाती है मिम जाने चाहते हैं कि यह स्थिति उनके देश में न आने पावे; इसीलिए जनरल नवीब बिना अर्थों की ललाह के कुछ भी करने की शक्ति नहीं रखते। उन्हें छोटी से छोटी बातें लक अपने साधियों से बुझनी पड़ती है धीरे उनके वाली जनरल नवीब की अपने से केवल एक अन्त अन्त ललाह अपने साधियों को अन्त से जाने वाला व्यक्ति मानते हैं इसके अन्ति कुछ नहीं।

जनरल नवीब न तुर्की के अतामुर्क हैं न अर्जन्ती के हुइलर, न इटली के अतोनिनी, न फ्रंस के स्तालिन धीरे न स्पेन के अन्को। वे भारत के पान्नी धीरे नेहरू भी नहीं हैं।

सुकरात की ज्ञान धरा पर

हमारा बापुमान एबिस्त काहरा के समय से १२ बजे रात्रि को पहुँचा, पर एबिस्त के इस समय १ बज चुके थे। एबिस्त कुछ ऐसे स्वत पर है कि काहरा के पश्चिम में पड़ता है मत यहाँ का समय काहरा से जहाँ एक घंटा धाये रहता है।

एबिस्त में उतरते ही मुझे 'दुग्मल एण्ड डेब प्रॉक सांख्यीक' पुस्तक में कभी पड़े हुए सुकरात के संबाब स्मरण हो धाये। जिस समय यूनान अपने धर्तव्य की बरम सीमा पर था उस समय यहाँ संसार के सबसे बड़ा विचारकों में से एक सुकरात ने मानव की विचारधारा को एक बिसिध प्रवाह में बहाने का जो प्रयत्न किया था, हजारों बर्षों के बीत जाने पर, उसका अपना एक महत्व है। धात्र भी सुकरात के बर संबादों को पड़ मानव के ज्ञान की सीमा कितनी बड़ जाती है। जिस व्यायासय ने सुकरात को प्राखबंध दिया उससे जहाँने क्या धनुरोब किया बरा घौर कीजिए—

“भायसे घेरी केवल एक ही पावना है। जब मेरे पुत्र बड़े हों घौर धायको ऐसा प्रतीत हो कि उनमें बोड़ी-बहुत बर लिप्ता है धयबा उनमें घुल प्राहकता के धातिरिक्त धय कोई प्रकृति है तो धाय जहाँ बंड हैं घौर जहाँ उसी प्रकार सतार् जिस प्रकार मेने धायको सताया है। धरि ने कुछ भी न होते हुए कुछ होने का प्रपंच रचें तो धाय उनकी इसी प्रकार मर्तबा करें बँते मेने धायकी की है। धरि धाय ऐसा करें तो हम सबसे कि मुझे घौर मरे पुत्रों के साथ व्याय हुआ है। ‘घौर, धय हम सोबों का समय हो यया मरे लिए मृत्यु के धातिधन करने का घौर धायके लिए जोबन यय भोम करने का, पर हम बोनों में कीन धकठो यात्रा पर बरसर हो रहा है यह एक ईस्वर के सिवा घौर कोई नहीं कह सकता।”

ऐसा ही एक घौर उदाहरण लीजिए—

“गलत धावों का प्रयोग अपने धाय में तो एक बृदि है ही उससे धायमा भी धनुदित हो जाती है।”

सुकरात ने यूनानी धयान घौर विचारधारा को एक नयी विधा में धाता।

जैसे पहले के सभी दार्शनिक भौतिकवादी (Materialist) थे किन्तु उन्होंने उत्तम धार्मिकवाद (Spiritualism) का पुरा दिया जिसे बाद में उनके सेपाकी सिद्ध प्रकृतियों ने धर्म उत्कर्ष पर पहुँचा दिया ।

ऐसे सुकरात को उस समय के एगिप्ट के निवासियों ने प्राप्त किया था और इस प्रसंग की घोषणा के बाद जेल से भागने के समस्त साधनों के उपलब्ध होते हुए सुकरात ने जेल से भागना प्रवृत्ति नाम प्राप्त बचाने की प्रयत्न नीति की रक्षा के लिए प्राप्त देना ही उचित माना था । जेल से भागकर प्राप्त बचाना उचित है या प्राप्त देना, इस विषय पर भी सुकरात ने जेल में ही एक लम्बा वाद-विवाद किया था ।

इस विवाद में उन्होंने प्रतिपादित किया था कि धारणा धर्म है मृत्यु एक मित्र के समान है जो धरती ही है और मृत्यु को सुकरात विना देती है । इतनीए मृत्यु की अपनी धरमा में विश्वास रखना चाहिए । सुकरात के ये विचार पीला के उस प्रवेश से मिलते-जुलते हैं जो भवधान् कृष्ण ने रसभूमि में धर्म को दिया था कि यह संसार कर्मभूमि है मृत्यु के मन की दुर्बल बनाने वाली भावा समता मृत्यु को पास नहीं रखने देनी चाहिए और धनात्मक भाव से कर्तव्य रत रहना चाहिए । यह सोचना कि कोई किसी को मार सकता या आत्मा मर सकती है कोरा धर्म है । नीचे दिया गया एक संस उत्त समय का है जब सुकरात से यह प्रश्न पूछा गया कि धर्मको किस तरह बचनाया जाय—

“यदि मे धर्मको बच में पाई और बचकर न जा सकू तो धर्म मुझे बँधे बाँधे बचना है ।” — “जीतो की समझना मरे लिए कठिन है कि नहीं तो मे सुकरात हैं जो धर्म के इस समय धार्मिक कर रहा हूँ । यह समझना है कि मे तो यह हूँ जिसे सभी छोड़ी देर में नृत जाया जायया और उत्तकी प्रियता है कि यह मुझे किस प्रकार बचना है । मुझे यह धार्मिकता बिलाने के लिए ज्ञान लम्बा भाषण देना पड़ा है कि बहर का प्याला पीने हो मे यही नहीं रहूँगा बल्कि उन मुझों का उपयोग करने जाता बार्मना जो इस संसार से जाने बार्मों को प्राप्त होते हैं । किन्तु मुझे प्रतीत होता है कि धर्म को और धर्मको इस प्रकार बचाना देने का जो छोटी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा । इतनीए जिस प्रकार ग्यायाधियों के लिए जीतो मेरा बान्धन बना था उसी तरह धर्म मेरे बान्धन बनिए, किन्तु किन्तु न्य मे । जीतो इस बात के लिए बान्धन हुआ था कि मे यहाँ रहूँगा । धर्म इस बात के लिए बान्धन बनिए कि मे धर्मय नहीं रहूँगा बल्कि छोड़न और प्रकृत हो जाईगा । तब जीतो को कम रीझा होवी और जब यह मेरा शरीर बलते या बचनावे बने देवेना ती यह यह सोचकर मेरे लिए धोक नहीं करेना कि कोई दुःख बात तो नहीं हो रही है और मेरे बन्धन प्रकृत नर यह नहीं रहेगा कि इन सुकरात को बचना रहे है ।”

मरल-यान से पहले जब कीडो ने कहा कि घनी तो सुर्ष पर्वत-शिखर पर है और दिन दूरी लख लनाप्त नहीं हुआ इसलिये घाय घनी क्यों बिय-यान करते हे तो सुकरात ने उत्तर दिया—“कुछ बेर बाह में ही बिय-यान करने से क्या हाथ धायेगा ? कुछ काल घोर भीखित रहकर घोर इस प्रकार जीवन के प्रति घासक्ति विचारकर में स्वयं अपना ही तो उपहास करूँगा ।”

इस प्रकार हँसते-हँसते जब साधुजी घोर ने ईश-बंधना की घोर बिय-यान कर लिया । किन्तु कुछ बेर बाद ही यह मृत्यु पर इससे पहले ही सुकरात ने अपने साधियों से कह दिया या कि “खबरदार घाय लोगों में से कोई न रोये, क्योंकि रोना कमबोरी का लक्षण है और मुख्य रूप से इसीलिये मैंने शिष्यों को यहाँ से दूर हटा दिया है ।”

सुकरात को प्राप्तबंद दिया गया का विचार स्वातन्त्र्य के प्रकारके प्रचरण पर । सुकरात के बाद भी परिधम में इस प्रकार के घनेक मद्वापुस्वों की इसी प्रकार के बंध मिले हे जिनमें मुख्य से भीखित आइस्ट । विचार-स्वातन्त्र्य की सतिष्णुता एक बड़ी भारी सहनशीलता है । भारत में हने यह सतिष्णुता जितनी अधिक विचारबी वैती है उतनी संसार के किसी देश में नहीं । भारतवासी भारत से जो ईश्वरवासी रहे हे पर यदि कोई बिरला व्यक्ति निरीश्वरवासी भी हुआ है और उसने अपने मत का प्रचार करने का प्रयत्न किया हे तो उसे कभी भी नहीं रोका गया । जयवान राम के समय यदि एक घोर ईश्वरवासी ऋषि-मुनियों के प्राधमों की बड़ी भारी संख्या भी तो दूतरी घोर आर्बाक के इकतीसे निरीश्वरवासी मत को भी रोकने का कोई प्रयत्न नहीं हो रहा था । बाद में बीड घोर बंध मत का प्रचार भी नहीं रोका गया । विचार-स्वातन्त्र्य घोर हर व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार चलने की प्राजाधी हनारी संस्कृति की प्रधान बात रही है । भारत को छोड़ विचार-स्वातन्त्र्य की एसी उपासना किसी देश या किसी संस्कृति में देखने को नहीं मिलती ।

एशिया के हुआई चङ्ग पर भी हमारे बामधोरे, डीके के कागजों घादि की जीव होने के बाद चुंगी में हमारे सामान की जीव हुई । यहाँ भारतीय दूतावास तो था नहीं और काहरा के सङ्घ भी धो. ए. ती का भी हने कोई प्रतिनिधि नहीं मिला । इसलिये यह जारा काय हब लोगों को हो करना पड़ा । पर चुंकि बिना घादि लव चीजें भीखर भी घोर काहरा के सङ्घ एशिया में न कोई राजनेतिक घटका हुई भी घोर न भारत ही चीजी कागून के अनुसार चल रहा था, इसलिये चाहे इस सब कार्य में समय लगा हो पर घोर कोई बिचलत नहीं हुई ।

हुआई चङ्ग से हन लोप डी डकम्पू ए के हफ्तर में चहुँके घोर यहाँ से एक मुचने होइल का प्रकाय करने डी. डकम्पू ए. के ध्यरवापक से क्या । हने बिय

जात्रे होइत में अपहु मिनी धीर रात की तीन बजे के करीब हम पत्तंग की सरण ले लके ।

दुन्दरे दिन प्रात-काल दिव्य कर्मों से छुट्टी पा कोई १० बजे दिन को हम एबिस्त बैचने रवाना हुए । एबिस्त कोई बहुत बड़ा नगर नहीं है । घावाही है करीब तेरह लाख; पर यदि एबिस्त बड़ा नगर नहीं है तो यूनान भी कोई बड़ा देश नहीं । यूनान देश का क्षेत्रफल ३० हजार १४७ बगमील धीर घावाही है लगभग ७३ लाख ३३ हजार । ऐसे छोटे-से यूनान देश में सपार्थ में सारे पश्चिम का इतिहास बनाया है । यदि घाव यूनान को पश्चिम के नक़्शे में से निकाल दें तो पश्चिम में इतिहास बिचार, दर्शन कला किसी भी क्षेत्र में रह गया जाता है ? छोटे-से यूनान के लिए यह क्या बौरव की बात नहीं है ? सबसे पहले हमारा ध्यान हमारे होइत के सामने के ही एक लम्बे-बौड़े तिमैंग से पकड़े जाने हुए मँदान पर गया । यह मँदान धातुनिक एबिस्त का सबसे प्रमुख स्थान है । इसके चारों ओर एबिस्त नगर की बड़ो-बड़ो होइतों बैक, हवाई यात्रा की कम्पनियों के बपत्तर धादि सभी प्रधान-प्रधान जात्रे हैं । मँदान में लैकड़ों नहीं हजारों कुतिया लगी रहती हैं दिन पर सन्ध्या को एबिस्त के जिल-जिल भाग के स्त्री-पुरुष घाउर बैठते, बातालाप करते धीर जातै-पौतै हैं ।

इस मँदान के बाह बाह हमारी बुष्टि इस मँदान के चारों ओर तथा धन्य दूर दूर तक बिचने वाली इमारतों एवं लड़कों पर गयी तब हमें मासूम हुआ कि मिथ देश के प्राचीनतम देश होन नर भी जिस प्रकार मिथ देश की बसनाम राजपानी काहरा पर प्राचीनता का कोई प्रभाव न होउर काहरा एक सर्वथा नवीन नगर है वही हाल एबिस्त का भी है । धातुनिक एबिस्त के इस प्रधान बिभाग की इमारतें धीर लड़कें धादि सभी काहरा के लहस ही पूर्णतया नवीन हँव के थे । एबिस्त घहर भी बम्बई से बहुत-हुछ नितता-जुनता वा पर बम्बई धीर काहरा दोनों से धनिक साक-मुबरा ।

मकामों धीर लड़कों के बाह हवारा ध्यान बहूँ के नागरिकों की धीर गया । रंग में बै भारतीयों तथा मिथ के लोगों से कुछ धनिक साक है पर एकदम इबैत नहीं । उनके रंग में भी सेहुँए रंग की छाया है । केहरे धीर धंनों की बनावट में हम प्राचीन यूनान की कूनियों के कहराबित दर्शन करना चाहते थे पर यत्र-तत्र बहुत कम लोगों में हमें बुराने यूनान की बनावट नजर आयी । धंय में सर्वथा धातुनिक । पोसाक सबी धीर पुष्यों की पूर्ण रूप से यूरोपीय थी । मिथ में भी चोड़ी-बहुत तिबियां काते बुरके बहनती थी धीर कछ पुष्य यत से एड़ी तक लम्बे भीने तथा रँरने वाली लाल पुकों रोवियां बैते प्रहार के बरत्र यहाँ के लोगों के न थे । धादिर धव हव यूरोप में धा यवे थे ।

एभिस्त इतिहास-परिचयनी यूरोप के सम्य किसी नगर खैला ही है। बेह-भूषा में भी कोई विशेष परिवर्तन नहीं पाया जाता, हाँ, इनके मरम कुछ इनके व्यवय होते हैं और हटों का किनारा कुछ मोटा होता है। दो बालों से होने सम्भावना तथा तथा कि एभिस्त सम्यपूर्व की सीमा का ही एक नगर है। एक तो हमें कभी-कभी तुर्की के अरिपिया विद्यापी पढ़ी और दूसरे सड़कों पर मिठाइयों और पुष्प बादि बेचने वाले विद्यापी विद्ये को हमारे यहाँ के खेरी बालों से मिलते-जुमते हैं। छोटी-छोटी गलियों और बाजारों में धाकड़ों लुहारों, जमारों बादि को बूकानें भी पूर्व के वास्तावरण का योग करता है।

धम हममें एक ऐसी ईकती मोहर का प्रबन्ध किया, जिसका आइवर धीरे-धीरे जानता था। और इस ईकती पर हम नवीन एवं प्राचीन दोनों प्रकार के एभिस्त की पूर्ण रूप से देखने के लिए रवाना हुए।

मिथिल ही एभिस्त का सबसे सुन्दर स्थल प्राकृतिकोत्पत्त पर पार्सेनोन के अंगूर है। यहाँ एबीना का मन्दिर था जो तमरनर का बत्ता था और प्राचीन मूलनी कला का सर्वोत्कृष्ट नमूना बताया जाता है। १६८७ ई० तक यह मन्दिर खों का खों रहा, किन्तु १६८७ में भूकम्प का घमासा होने से इसे विशेष क्षति पहुँची। धार इस मन्दिर में केवल स्तम्भ मात्र है और एबीना की मूर्ति भी नहीं है फिर भी यह एक महान् उत्कृष्ट कलाकृति है। सहा में कल्पना की पाँकों पर गया और सीकने तथा खैला सम्य रहा होगा यह मन्दिर जिस समय यह अपने पूर्व मोहन पर था।

इस मन्दिर के अंगूरों से समस्त धार्मिक एभिस्त नगर विद्यापी है। सीसियम भी यहाँ विद्यापी पढ़ता है। प्राचीन मूलनी का यह सबसे अधिक सुरक्षित मन्दिर है। इस मन्दिर से हमें इसके निर्माता की वस्तुकला की कुशलता और सर्व्व सुख का परिचय मिलता है।

हम ओलिम्पियन मीघस का मन्दिर भी देखने गये। यहाँ बहुत विद्याल स्तम्भ स्थित है। यह मन्दिर बहुत दोनों मन्दिरों के साथ का है किन्तु मूलनी के सबसे बड़े मन्दिरों में से है। अनधुति है कि यह मन्दिर उस स्थल पर निर्मित है जहाँ प्रलय का बल धूम में बिनीत हो गया था (चित्र नं० १६ से १२)।

नयी चीजों में हीटल के सामने का मंदिर तो हमारा ध्यान विशेष रूप से आकर्षित कर ही चुका था इसके प्रतिरिक्त जिन दो नवी इमारतों ने हमें सबसे अधिक प्रभावित किया वे भी एभिस्त के विश्वविद्यालय और अकादमी की इमारतें। विश्वविद्यालय की इमारत की विशेषता भी उसकी चार मूर्तियाँ। इमारत के ऊपर की मूर्तियों के दोनों ओर मूलनी की पुरानी देवी 'एबीना' और एक पुरानी देवता 'अनाली' की मूर्ति बनी है। एबीना की मूर्ति बदन बहने हुए है पर अनाली के चित्त पर

११ पार्थेनॉन पर
पर पार्थेनीय खंडहरों में
रबीना के मन्दिर के स्तम्भ



२० पार्थेनीय खंडहरों
का एक भाग



२१ पार्थेनीय खंडहरों
का एक भाग



२२ मनाज का एक पुराना
स्टैडियम

एबिसस इतिहास-परिचयनी यूरोप के सम्य किसी नगर जैसा ही है। जेध भूया में भी कोई विशेष परिचरतन नहीं पाया जाता है। इनके बरत्र कुछ हल्के घरघर होते हैं और ईदों का किबारा कुछ मोटा होता है। वो बातों से हमने समझाया गया कि एबिसस मध्यपूर्व की सीमा का ही एक नगर है। एक तो हमें कभी-कभी तुर्की के जेध रोपियाँ दिखायी गयीं और दूसरे सड़कों पर मिठाइयों और पुष्प आदि बेचने वाले दिखायी दिये जो हमारे यहाँ के छोटी बातों से मिलते-जुलते हैं। छोटी-छोटी पत्तियों और बाजारों में घायली लुहारों, खमारों आदि की दुकानें भी पूर्व के बाताबरतल का बोध कराती हैं।

जब हमने एक ऐसी टैक्सी मीटर का प्रबन्ध किया जिसका इन्डिकर धंसीकी जानता था। और इस टैक्सी बर हम नवीन एवं प्राचीन दोनों प्रकार के एबिसस की पूर्ण रूप से देखने के लिए रवाना हुए।

जिधव ही एबिसस का सबसे सुन्दर स्थल प्राकृतिकोत्पन्न बरत पर पार्सेलोस के बरहर है। यहाँ एबीना का मन्दिर वा भी संगमरमर का बरत वा और प्राचीन यूनानी कला का सर्वोत्कृष्ट नमूना बताया जाता है। १६८७ ई० तक यह मन्दिर ज्यों का त्यों रहा किन्तु १६८७ में भूकम्प का बरका होने से इसे विशेष क्षति पहुँची। आज इस मन्दिर में केवल स्तम्भ मात्र है और एबीना की मूर्ति भी नहीं है और भी यह एक मज्जान् बरकृष्ट कलाकृति है। लहता में कम्पना की पाँखों पर क्या और सोचने गया जैसा सम्य रहा होगा यह मन्दिर जिस समय यह बरने पुर्न जीवन पर वा।

इस मन्दिर के बरहरों से समस्त प्राकृतिक एबिसस नगर दिखायी देता है। नीतिघन भी यहाँ दिखायी पड़ता है। प्राचीन यूनान का यह सबसे अधिक सुरक्षित मन्दिर है। इस मन्दिर से हमें इसके निर्माता की बस्तुकता की कुसलता और सौन्दर्य बुद्धि का परिचय मिलता है।

हम नीतिघन्यन नीतिघन का मन्दिर भी देखने गये। यहाँ पण्डित विमान स्तम्भ स्थित है। यह मन्दिर पहले दोनों मन्दिरों के बरत का है किन्तु यूनान के सबसे बड़े मन्दिरों में से है। बरतमूर्ति है कि यह मन्दिर जस स्थल बर निर्मित है यहाँ प्रलय का बरत भूमि में बिलीन हो गया वा (चित्र नं० ११ से २२)।

नयी चीजों में हेमेल के सामने का यैदान तो हमारा ध्यान विशेष बर के धारकित कर ही चुका वा इसके क्षतिरिक्त जिन को नयी इमारतों में हमें सबसे अधिक प्रभावित किया है भी एबिसस के विश्वविद्यालय और प्राकृतिकी की इमारतें। विश्वविद्यालय की इमारत की विशेषता भी बरतकी बरत मूर्तियाँ। इमारत के ऊपर की पुम्बज के दोनों ओर यूनान की पुरानी देवी 'एबीना' और एक पुराने देवता 'त' की मूर्ति बरी है। एबीना की मूर्ति बरत यदने हुए है पर यवानी के और बर

१६ कार्फोपोलिस पर्वत
पर पारसीय खंडहरों में
एबीना के मन्दिर के स्तम्भ



२ पारसीय खंडहरों
का एक भाग



३ मन्दिर कक्षों
का भाग



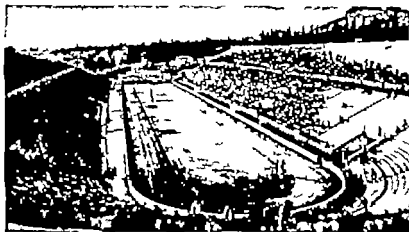
४
व
के
म
के



२४ मुकुटपत्र



२१ विश्वविद्यालय की इमारत



२६ एक नया स्टेडियम



मुकुट धीरे ऊपर के शरीर पर ऊपर-ऊपर कुछ बस्त्र के प्रबंधों के प्रतिरिक्त शेष मूर्ति गन्त है। दोनों मूर्तियाँ गयी हैं परन्तु उनके चेहरे धीरे धीरे पुरानी मूर्तियों जैसा के अनुभव हैं। मूर्तियों की मूर्ति एवं चित्र दोनों कलाओं में पुनर्जात धीरे धीरे की प्रतिरिक्त मान कर में ही प्रदर्शित किया गया है। इसका कारण मानव शरीर के सौंदर्य का प्रमाण है कोई कामुक भावना नहीं धीरे सचची कलात्मक इन मूर्तियों तथा चित्रों के बजाय ध मन में कोई विकारमय भावनाएँ उत्पन्न भी नहीं होती। नीचे की लीजियों के दोनों धीरे मुकरात धीरे अज्ञान की मूर्तियाँ भी। ये भी कोई प्राचीन काल की बनी हुई मूर्तियाँ नहीं हैं प्राकृतिक काल में ही बनी हैं पर चितने भावपूर्ण वे इनके चेहरे। मुकरात के मुख पर जो भावनाएँ चित्रित की गयी थीं उनसे जान बढ़ता था जैसे वे समस्त संसार का मजाक उड़ा रहे हैं धीरे अज्ञान की मुख से अत्यधिक पम्भीर चित्तन जिस पड़ रहा था। दोनों के बाड़ी भी धीरे शरीर पर भारतीय उत्तरीय तथा पोसी के सभ्य बस्त्र, जो प्राचीन मूर्तियों में भी पहने जाते थे (चित्र नं० २३ से २४)। अकारण की इमारत की सामने की दोवार में प्राचीन मूर्तियों के कुछ सुन्दर रंगीन चित्र चित्रित थे धीरे हमें इन इमारत की यही सबसे बड़ी विशेषता जान पड़ी।

धाम का लंब (शोहर का भोजन) हमने समुद्र के किनारे के एक रेस्टोरेंट में किया। यह स्वतः अत्यन्त रमणीय था परन्तु बम्बई धीरे मद्रास का समुद्र-तट इससे नहीं अधिक सुहावना है। परन्तु काकी भी धीरे अनेक स्त्री-मुद्रय समुद्र में नहा रहे थे तथा अनेक प्रकार की बत्त भीड़ें कर रहे थे। शिवों की बत्त बिहार की पोसाक हमें तो बड़ी प्रसन्नता जान पड़ी। गले से बहुत नीचे तक का धाम, पूरी बाहुएँ धीरे बरों से बहुत ऊपर तक बाँधे सर्वथा खुली हुई। केवल बसन्त का बोझ-सा हिस्ता धीरे ऊपर से बाँध के आरम्भ होने तक का बोझ-सा भाग डका हुआ था। स्त्री-मुद्रय संग-संग नहाते हुए इस बत्त-बिहार में मान थे। कई लोग रेस्टोरेंट में जाना भी था रहे थे धीरे समुद्र की बालू पर लटे हुए धपने रंगों को धीरे भी अधिक खीनकर धूर्य-स्नान कर रहे थे।

लंब के बाद हम कुछ समय धीरे ऊपर-ऊपर घूमकर होटल पहुँचे धीरे फिर होटल के सामने के उत्त तिरोष्ठ के मंडप में बैठकर धूमने की निकले जो मंडप धाम एजिन के नागरिकों से लबाकक भर गया था। इस धुमाई में हमें एजिन के नागरिक जीवन का बुरा बताना लगा। यह पहला यूरोपीय नगर था जहाँ इन दोरे में हम धाये थे। हमें यहाँ का तारा जीवन एकदम "ईट, ड्रिंक एंड गो बैरी"—साधो विधो मस्त रही, के अनुभव जान पड़ा। यूरोप निरव के जीवन में भी किनका भीतिरिक्ताही हो गया है इसका बहु समुद्रय प्रत्यक्ष उदाहरण था। हमारे देश की भी हमारे कुल

अध्यात्मबारी होने तथा आत्मनोत्थिता से घाँसें बन्द कर लेने से मचेष्ट हानि हुई है, इसमें सन्देह नहीं पर यदि जीवन का लक्ष्य केवल—“ईद, क्रिक एंड बी मैरी”—हो जाय तो वह भी इतना जीवन ही होया। जीवन में अज्ञात और अविभूत दोनों का अहित मिश्रण होने से ही वह पुस्तं जीवन ही सचता है।

दूसरे दिन हमने पुनाल के दो अज्ञापकदर देखे। इनमें एक का नाम था 'विनेकी स्पूडियम' और दूसरे का 'नेशनल स्पूडियम'। विनेकी स्पूडियम का संघर्ष विविध प्रकार का है—मूर्तियाँ, चित्र कपड़े आमुपस, हृदियार आदि। सारा संघर्ष बड़ी सुन्दरता से सजाया गया है, परन्तु संघर्ष में हमें कोई विज्ञेयता न जान बड़ी। नेशनल स्पूडियम देखकर तो हमें बड़ी निराशा हुई। हम धाशा करके बने से कि वहाँ हमें पुनाल की वे मूर्तियाँ देखने की मिलेगी जिनकी छोटी-छोटी प्रतिभूर्तियाँ एवं चित्र हय न जाने कितने बरों से कितने स्थानों एवं कितने कर्णों में देखते आ रहे हैं। परन्तु वहाँ जाने पर मालूम हुआ कि वह सारी सामग्री कल लड़ाई के समय बन्द करके रख बी गयी है। लड़ाई समाप्त हुए बरों बीत चुके थे और इन बरों में दुनियाँ में न जाने कितनी बरों-बरी एवं अज्ञेयपूर्ण बातें ही चुकी थीं; फिर इस सामग्री को पुनाल वालों ने एक एक बरों बन्द रखा है वह हमारी समझ में न आया। नेशनल स्पूडियम का भी संघर्ष इस समय वहाँ या वह पुनाल के प्राचीन इतिहास की बुध्ति से सर्वथा बगव्य था। इन दोनों अज्ञापकदरों में कोई विज्ञेयता न होने पर जो मिश्र के बुरों का अज्ञापकदर देखने से मेरे मन पर बीसा अभाव पड़ा था वीता बुरा कोई प्रभाव न पड़ा।

तारीख ३ की दोपहर को ? बने हमारा आयुष्य आता था। बिना किसी विशिष्ट बटना के हमने एमिस रोम के लिए छोड़ दिया और अब हय एमिस से रवाना हुए एक एक सीधने बने एमिस तथा पुनाल के सम्बन्ध में अनेक बातें।

कुछ और शब्द एथिन्स तथा यूनान पर

प्राचीन काल की तरह घात्र भी एथिन्स यूनान की राजधानी है किन्तु उतका वीरव उसके वर्तमान में न होकर उतके धनीय में है। एथिन्स के प्वात बंदरहूर हर्ने उत बेमव का स्मरण कराते हैं जो कमी वा घीर घात्र नहीं है किन्तु कला घीर संस्कृति के प्रेमी घात्र भी इस नगर के धार्कर्ण से बच नहीं सकते।

यूनान का नाम मात्र लेने से उत पुरातन देश का स्मरण हो जाता है जहाँ सर्वोत्तम शैली के साहित्य घीर कला का सुजन हुआ था। सिध चीन घीर भारत की तरह इस देश को भी मानव संस्कृति का एक उद्गम स्थल होने का पौरव प्राप्त है। वर्तमान युग में यूनान का उतना धार्बिक महत्त्व मने ही न हो किन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से घात्र भी यूनान सारे संसार को बिशेषकर पश्चिमी संसार को, घीत प्रीत प्रभावित किये हुए है।

दक्षिण की घीर यूनान प्रायद्वीप भूमध्यसागर से घिरा हुआ है। उत्तर में सम्बार्निया, युगोस्लाविया घीर बल्गारिया से तीन बास्कन देश है। यूनान का पश्चिमी तट बहुत ऊँचा घीर बहाड़ी है। इस तट पर बम्बरगाहों का सर्वत्र समार है। इसके बिचरित घुर्षो तट खाड़ियों घीर बम्बरगाहों से परिपुर्ण है। लगभग सभी बड़े-बड़े नगर घुर्षो तट पर बने हैं। इटली घीर यूनान में यही समार है कि इटली के सभी प्रमुख नगर पश्चिमी तट पर हैं जबकि यूनान के घुर्षो तट पर। यूनान में कोई २२० शायु हैं जिनमें सबसे बड़ा कोर है।

यूनान का इतिहास ईसा के जन्म के कई शताब्दी पहल का है। हीनर कबि ईसा से कोई एक हजार वर्ष पहले हुआ था। समूची यूनानी संस्कृति ईसा से पहले की है। यूनान देश की तब हीनत कइते से घीर घर्षो के निवासी हेलेनीय बहताये से। यूनान तब एक संयुक्त राज्य के रूप में संघठित न था बल्कि 'नगर राज्यों' (City States) में विभरत था। इस प्रकार के छोटे-छोटे राज्य होने का कारण भौगोलिक भी ही सक्ता है क्योंकि सारा यूनान बर्त-शैलियों द्वारा विभरत है। इस प्रकार हरएक प्रदेश में अपने अपने शासन तथा रीति-रिवाज घीर बानून रहें होये। इन राज्यों

ने प्रायः सन्तान धन-बोस नहीं पाया जाता था। पारम्परिक स्वर्ण धीर लड़ाई भूमि में ही प्रकृत में यूनान की प्रकृत का हास हो गया।

यद्यपि अतः यूनान में यूनान की प्रकृत का हास हो गया। पारम्परिक स्वर्ण धीर लड़ाई भूमि में ही प्रकृत में यूनान की प्रकृत का हास हो गया। पारम्परिक स्वर्ण धीर लड़ाई भूमि में ही प्रकृत में यूनान की प्रकृत का हास हो गया।

यद्यपि अतः यूनान में यूनान की प्रकृत का हास हो गया। पारम्परिक स्वर्ण धीर लड़ाई भूमि में ही प्रकृत में यूनान की प्रकृत का हास हो गया। पारम्परिक स्वर्ण धीर लड़ाई भूमि में ही प्रकृत में यूनान की प्रकृत का हास हो गया।

यूनान की प्रकृत का हास हो गया। पारम्परिक स्वर्ण धीर लड़ाई भूमि में ही प्रकृत में यूनान की प्रकृत का हास हो गया। पारम्परिक स्वर्ण धीर लड़ाई भूमि में ही प्रकृत में यूनान की प्रकृत का हास हो गया।

सम्बाद्ध गेहूँ और, अजीर और कपास की हैं। इसके अतिरिक्त अंगूरों के भी बड़े-बड़े बाग हैं। इधर कुछ कारखानों का भी विस्तार हुआ है जिनमें से मुख्य चीन के तेल घराब कपड़े, चमड़ा और लाइन के हैं। रेलवे साइन की सम्बाई १९६८ मील है। यूनान के पर्वतों से तांगमरमर बड़ी मात्रा में प्राप्त होता है।

यूना कि देश के भीतरी भाग में रीति रिवाज और पेशाक पुरानी ही बसी जाती है पर एचिन्स में कुछ सैनिकों को छोड़ (अन्य नं० २५) इस तरह की पेशाकें पहने हुए सौम हमें दिखायी नहीं दिये। दिन भर के परिष्म के बाद बेहातों में वहाँ यूनानी लोग एकत्र होते हैं वहाँ बड़े सौम कहानियाँ सुनाते हैं। अपने देश में बेसा औपचारिकता का बसावरण होता है अगम्य बसा ही यूनानी सामोय जीवन का समझना चाहिए। यूनानवासी अपनी प्राचीन परम्पराओं के विशेषकर नृत्य-कला के प्रेमी हैं। एक और बात में यूनानियों की आरतियों से समानता है। यूनान में विवाह मिरजावर में न होकर घर में होता है और बच्चे के साथ जाना नहीं चाहती। अन्त में घर अपने परिवार वालों के साथ आकर बच्चे को एक तरह से 'अवरवस्ती' करने साथ से जाता है।

यूनान में पुस्तों को तुलना में सित्रों का बरबा भीबा माना जाता रहा है, किन्तु इन दिनों काफ़ी अन्तर पड़ा है। यद्यपि आज भी यूनान में सित्रों मध्य कथ से पृथक्की का ही भार लम्हालती है, किन्तु अब वे समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अग्रसर हो रही हैं। अनुमान है कि सित्रों की हीनता का कारण यूनान पर तुर्कों का ४०० वर्ष तक का शासन है।

वहाँ तक शिक्षा का सम्बन्ध है साथ से आरह वर्ष तक की उम्र के बच्चों के लिए शिक्षा अनिवार्य है। ध्यापार, छवि और डेबरीकल शिक्षा का बह स्तर नहीं रहा है अतःके लिए यूनान प्राचीन काल में सारे सतार में विख्यात था।

यूनान की अिस कला का समस्त संसार भर प्रभाव पड़ा है वह स्वाभाविकता और मूलिकता है। स्वाभाविकता में वहाँ के स्तम्भों की लगाम दुनियाँ में नकल की गयी है। हमारे देश में भी ब्रिटिश साम्राज्य काल की पुरानी इमारतों, विद्यालय कनकले की इमारतों में इन स्तम्भों के लक्षण ही स्तम्भ बन हुए हैं। कनकले की इन इमारतों में वहाँ के टाउनहॉल के स्तम्भ यूनानी स्तम्भों के पूर्ण प्रतीक हैं। यूनान की मूर्तियों के अग प्रत्यम अत्यन्त सुशील रहते हैं इसलिये वहाँ की प्रतिष्ठ मूर्तियाँ गम रहती हैं। यूनान की मूर्तिकला से यदि किसी देश की मूर्तिकला स्वर्पा कर सकती है तो भारत की। यूनान की मूर्तिकला इतनी परिष्कृत रहने पर भी संसार की जो सबसे अछडी दो मूर्तियाँ जानी जाती हैं वे भारत की मूर्तियाँ ही हैं। एक नदराज की मूर्ति और दूसरी सारनाथ की बद्ध-अस्त्रिणा।

स्वाभाविकता और मूलिकता के अतिरिक्त यूनान का दार्शनिक और एचिन्स

दृष्टी-परिक्रमा

साहित्य भी परिचय के साहित्य का सर्वोत्कृष्ट साहित्य है और सारा परिचय ही साहित्य जती वर प्राकारित है। कलित साहित्य का सर्वोत्कृष्ट रूप जो नाटक है, भारत के पश्चात् उसका विकास संसार में यूनान में ही हुआ था।

बालकन प्रदेश और यूनान— बालकन प्रदेश में यूनान धर्मबानिवां, यूरोस्लाविया, हुंघरी, रूमनिया बल्गारिया और इर्की ये देश प्राति हैं। दूसरे महायुद्ध में जर्मनी ने इस प्रदेश को रॉर डाला था और उस को यन्त्रीर जतरा वीरा ही नया था। मुझ कास के दुस्तर बाद उस ने इस प्रदेश में अपना प्रभाव बनाने की कोशिश की। अपने जीवन के अन्तिम घाट वर्ष में स्तालिन ने बालकन प्रदेश पर सबसे अधिक बला डालने का प्रयत्न किया किन्तु वहीँ उन्हें सबसे अधिक असफलता मिली। उन्होंने तुर्की को डराने का प्रयत्न किया वहीँ भी बर कुठाराघात करने और यूरोस्लाविया की पुन अपने बाहुपात्र में लेने की कोशिश की, किन्तु इन तीनों स्वतंत्र बर उन्हें निरास होना पड़ा। इन तीनों ही देशों में बढ़ती हुई महुरी मित्रता न केवल इन तीनों के लिए हितकारी सिद्ध होयी बरन् संसार के लिए भी अस्वाभाविकी साबित होयी। इन तीनों देशों की एकता का बहना स्वयं १९५२ में उठाया गया जब ये देश उत्तरी एरनाटिक संघि संस्था के प्रथम प्रौढकारिक रूप में एक दूसरे की सहयता के लिए बाध्य हो गये।

किन्तु इन तीनों देशों की मित्रता होने पर भी प्रमेक कठिनाईयां अभी भी हल नहीं हो पायी हैं। उदाहरण के लिए एक कठिनाई है यातायात-अवस्था की। रेल से इन देशों में सम्पर्क स्थापित है किन्तु यह रेल-अवस्था संसार में अत्यन्त पीनी गति वाली है। संयुक्त राजा के लिए समुचित आयोजन भी प्रावश्यक है। एक समय प्रेसकों का यह भी बिचार था कि लयुक्त राजा की योजनाओं में इसलिए भी बाधा पड़ेगी कि यूनान और तुर्की तो एरनाटिक संघि संस्था के देश हैं किन्तु यूरोस्लाविया नहीं है।

बालकन प्रदेश के इन तीनों देशों की मित्रता का एक स्पष्ट परिणाम यह हुआ कि तीनों देशों की राजबानियों में अब यह कुछ बिबवाल हो गया है कि पूर्वी यूरोप के देश यूरोप में कोरिया की ती स्थिति वीरा नहीं कर सकेंगे। बल्गारिया, रूमनिया, हुंघरी अथवा रूमनिया तथा एक कोई प्राकम्पण स्वयं न कर सकेंगे जब तक कि उन्हें स्वयं म भारी सहायता प्राप्त होने की प्राता न हो।

संसार की बाकी परिस्थिति कैसी रहेगी यह बहुत दूर तक इस बात पर त है कि संसार व्यापी मुझ डाला का सफलता है या नहीं। यह सभी जानते हैं कि त को छोड़ संसार के सारे देश प्राक हो मुठों में बँट हुए हैं। यह भी तर्कबिहित है कि एक मुठ का नैतृत्व अमेरिका के हाथ में है और दूसरे मुठ का स्वयं के। बालकन प्रदेश छोटे छोटे देश भी यद्यपि इन मुठों के बाहर नहीं हैं परन्तु फिर भी इतना प्राता न देया कि अन्त अन्त में मुठ की भी हर बात पर इनके 'तबस्तु' न कहनाया का सकेया।

पश्चिम के उस देश में जो सदा कलाकारों को प्रिय रहा है

जब हमने इस यात्रा का कार्यक्रम बनाना था तभी कॅनेडा और अमेरिका की छोड़ सकते अधिक समय लम्बे और इतली देश को देने का निश्चय किया था। लम्बे को इसलिए कि ब्रेड बिडेन से हमारा युवों तक सम्बन्ध रहा था, स्वतन्त्र होने के पश्चात् प्रायः जो अपने देश के बाहर हमारा सम्बन्ध रहे बिडेन से ही सबसे अधिक है और इतली की इसलिए कि प्राकृतिक और सांस्कृतिक दोनों ही दृष्टियों से यूरोपीय देशों में इतली का घना एक विशेष स्थान है। इसीलिए दुनिया के न जाने कितने प्रकृति और संस्कृति प्रेमी वहाँ केवल जाते ही न थे पर अपने-अपने अपनी सम्पत्ति न होते हुए भी इतली को ही अपना निवास-स्थान बना लिया था। अंग्रेजी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवियों में से बाबरन खेती, कीम्स आदि इतली में ही अधिकतर रहते थे और इनकी मृत्यु भी इतली में ही हुई थी।

इतली को प्रकृति ने अतीव सौन्दर्य दिया है। वहाँ की बर्बत-भँसियाँ, बस भीतें नदियों के तट आदि सभी स्थलों पर प्रकृति के विभिन्न-विभिन्न प्रकार के सुन्दर स्वरूप अपनी अद्भुत छटा दिखाते हैं। मूलतः के बाद वहाँ की सारी संस्कृति का केन्द्र रोम ही बना था और तिब्बत के बाद रोमन साम्राज्य के सीढ़रों ने अपने राज्य-विस्तार के साथ-साथ संस्कृति का विस्तार भी प्रचुर परिमाण में किया था। रोम नगर अतामिबों तक पश्चिमी संसार का हर दृष्टि में प्रधान नगर रह चुका था। संनगरमर की जगहों के बाहुल्य तथा उन जगहों से निकलने वाले अत्यधिक शुद्ध साथ ही विभिन्न रंग के पत्थरों से वहाँ की स्थापत्य और मूर्तिकला के उत्कर्ष में कितना योग दिया था। माइकल एंजेलो, राफेल आदि चित्रकारों ने दीवारों पर तथा कैनवास पर जैसे महान् और लम्बे चित्र बनाये हैं वैसे चित्र संसार के अन्य किसी देश में किसी जगहों में भी निर्मित नहीं हुए। यद्यपि सिद्धरों के लम्बे दराजिक और इतले के समान बहुकवि भी उन भूमि पर जग से जुके थे फिर भी इतला वही बना नहीं रहा था सकता कि स्थापत्य मूर्तिकला और चित्रकला का वहाँ कितना विकास हुआ था, दर्शन तथा साहित्य का नहीं। यहाँ में भारत पूर्व साहित्य में अन्य जनक देश इतली

से कहीं घावे रह चुके थे और घाव भी हैं। इतने पूर्व में इटली बर्लिन यूरोप के मध्य भाग में एक प्रायद्वीप है। इसके पूर्व में एट्रियाटिक सागर है बर्लिन में प्रायोनियम सागर और बर्लिन में ब्राइरनियम सागर। इतनी बड़ी लड़ाई के बाद इटली के चार जिसे कांस के पास चले गये और कुछ भाग यूरोस्लाविया यूनान आर्मेनिया आदि के पास चला गया। इसी प्रकार इटली के उपनिवेशों पर भी जतना नियंत्रण नहीं रहा।

यूरोप का नक्शा देखने से इटली की प्राकृति एक बूट की-सी है जिसके पंजे के सामने लिटली एक ऐसा टिकोना पत्थर प्रतीत होता है जिसमें बहुत ठोकर मारने ही बसता हो। तबूके इटली की लम्बाई ७५ मील है चौड़ाई उसकी डेढ़ से मील से किसी भी स्थान पर अधिक नहीं है अधिकतर तो ती मील ही है। इटली का क्षेत्रफल है १३१००० वर्ग मील। वहाँ की घाबारी है चार करोड़ सत्तर लाख से कुछ अधिक। रोम अभी भी इटली का प्रधान नगर एवं वहाँ की राजधानी है। वहाँ की आबादी मात्र है। वहाँ से बहुत कम स्थानीय पर बरक निरता है और गाँवों में लकल नहीं होती। प्रायःकल वहाँ गाँवों का जोसम चल रहा था।

हमारा हवाई जहाज जिस समय रोम पहुँचा उस समय रोम के तीसरे पहर के २॥ बजे थे। रोम का समय एग्जिप्त से एक घण्टे पीछे था। हमारी पहुँच का ठार यहाँ ठोक समय पहुँच गया था अतः भारतीय हुताबास के प्रथम तबिक भी अमासंकर बाजयेई और भी बालकलन हवाई अड्डे पर मौजूद थे। वी अमासंकर गिरजासंकर बाजयेई के पुत्र है और म दिल्ली से ही उन्हें जलोर्मति जानता था। भारतीय हुताबास के लोगों के हवाई अड्डे पर रहने के कारण हमारे पासपोर्ट तथा अन्य चीजों में बहुत अधिक समय न लगा। हमारे ठहरने की व्यवस्था भारतीय हुताबास ने ही टिकले (अंग्रेजी में टायल) होटल में की थी। हवाई अड्डे से हम होटल घावे। रास्ते में हमें रोम नगर का कुछ भाग हो गया। काहुरा और एग्जिप्त के सद्युग रोम भी एक प्राचिन नगर है पर कई अण्ड विन्नी के पुराने फासकी और घाहुर बनाई के लक्ष्य यहाँ भी प्राचिन रोम के कुछ आडक तथा यहाँ-वहाँ से दूरी हुई बाहुर रोबारी के कुछ हिस्से बिल पड़े हैं। कुछ संयमरमर के प्राचीन मकान भी हैं और उन पर कुछ मूलियाँ। रोम में काहुरा और एग्जिप्त के सद्युग स्वच्छता हमें बुजियोचर न हुई। यहाँ क निवासियों में हमें वेहुएँ बाएँ की मीई और अतिक विजायी भी। एनी-बुधय लकी की बेधमया यूरोपीय थी।

अब हम होटल पहुँचे तब हमने देखा कि हमारा होटल नया न होकर पुराना है और पुराना होन के कारण पुराने मकानों में अंसी अंसी छत और बड़े दरवाजों के बड़े-बड़े कमरे होने हैं उन प्रकार के इस होटल के कमरे हैं। हम तो यह होटल अब

तक हम जिन होटलों में ठहरे थे उन सबसे अच्छा जान पड़ा। होटल में अपने सामान प्रायः रत हमने इटली जाने का कार्यक्रम बनाया। प्रारम्भिक कार्यक्रम में हमने इटली को पाँच दिन विषे थे पर इतने छोटे समय में इटली कितनी प्रकार भी न देखा जा सकता था। हमने एक दिन इटली के लिए धीरे बढ़ाया, पर इतने पर भी हम इटली के सभी प्रधान स्थानों को अपने कार्यक्रम में शामिल न कर सके। रोम क्लॉरेन्स धीरे बेनिस् में तोन ही स्थान हमारे कार्यक्रम में रखे जा सके। हमें इस बात का खेद रहा कि मेक्लिन्स धीरे उसी के समिकठ पुराने पापिग्रामी के छोड़े हुए बंडहुर हमारे कार्यक्रम में शामिल न हो सके पर कोई उपाय न था छे दिन से अधिक समय हम कितो प्रकार भी इटली को न दे सकते थे क्योंकि सम्बन्ध से कनेडा हमें एक निश्चित तारीख को रवाना होना था। एक बात हमें धीरे निर्णय करनी पड़ी। रोम से जिनोवा तक की यात्रा हमें रेल से करने का निर्णय करना पड़ा अथवा हम क्लॉरेन्स धीरे बेनिस् न जा सकते थे।

होटल से हम सोमे भारतीय दूतावास को गये धीरे वहाँ भारतीय राजदूत की प्रेमकिरण से मिल दूतावास के अन्य कमचारियों से मिले तथा वहाँ का काम देखा। वहाँ का दूतावास एक किराये के मकान में है।

दूतावास से हम फिर होटल लौटे धीरे भोजन से निवृत्त हो रात को एक मार्ग प्रशंक की पर्यटक बस में अन्य अनेक यात्रियों के साथ रात्रि के रोम को देखने चल। रात्रि को रोम सचमुच बड़ा सुन्दर जान पड़ा। बिजली के मिल्क मिल्क रंगों के दृश्यों से बने हुए बाजारों की दुकानों के साइनबोर्डों तथा अन्य प्रकार के बिजली के प्रकाश से सारा नगर जगमगा रहा था। पोपूर को हवाई अड्डे से होटल जाते हुए हमें रोम में स्वच्छता की जो कमी बुटिंगोवर हुई थी रात्रि को बह मो छिप गयी थी। पर्यटक बस चलती जाती धीरे मार्ग-प्रशंक लाउड स्पीकर द्वारा स्थानों का बयान करता जाता प्रशंगी धीरे फ्रांसीसी दो भाषाओं में।

तबसे पहले हमें एक कच्चा दिखाया गया। इसकी पानी की बाराएँ भीके लये बिजली के बरनों के कारण रंग-बिरंगी हो गयी थीं। इस कच्चे को देख मन्ने लन् १९११ की इलाहाबाद प्रबन्धी का ठीक ऐसा ही कच्चा पाव थाया। में समझता हूँ इती कच्चे को स्थान में रख इलाहाबाद की उस प्रबन्धी का बह कच्चा बनाया गया होगा। इलाहाबाद प्रबन्धी के उस कच्चे के प्रतिरिक्त् हमें मन्पुर के बन्बावन के कच्चे भी पाव थाय। यद्यपि उन कच्चारों की अपभारार्थ भी इती प्रकार बिजली के मिल्क मिल्क रंगों के बरनों से जगमगी है पर इसके निष्ठा इल कच्चे की बनावट धीरे मन्पुर के बन्बावन के कच्चारों की बनावट में कोई साम्य नहीं है बह तो इलाहा बाद की प्रबन्धी के कच्चे में ही था। इलाहाबाद की उस प्रबन्धी का वासीय बप

धीन चुके थे। इन आलीशान बरबों में मैंने इस फन्कारे के सवुध ग्रन्थ कोई फन्कारा न देखा था, नर आलीशान बरबों धीन जाने पर भी इस फन्कारे को देखते ही आलीशान बरबों पुरानी धीन मुझे याद धामनी। कितना स्मरल रहता है। मानव के मस्तिष्क को। हर धीन उठे याद रहती है। ऐसा नहीं। नर जिस वस्तु का मन नर महुरा प्रभाव नर जाता है वह धामन नहीं भूलती। मुझे याद है कि इलाहाबाद प्रबर्षनी के उस फन्कारे का मेरे मन पर महुरा प्रभाव नरुा था धतः आलीशान बरबों धीन जाने पर भी उठी के सवुध एक धीन देव मुझे उल फन्कारे का स्मरल ही धामा।

फन्कारे को भली भाँति देखते हुए हम रोम की संपरमर की प्रसिद्ध इमारत बिबर इमैनुप्रम मेनोरियल पठुके। वत पहाँ उड़ो हो धपी धीर हम सब यात्रियों ने वत से उतर इस इमारत का निष्क से परीसल किया। मार्भ प्रबर्षक ने इस इमारत का पुरा निवरल बताया जो इस प्रकार है—

सम्भ्र इमैनुप्रम द्वितीय के स्मारक के क्य में इस इमारत का निर्मल सन् १८८३ से १९११ के धीन हुआ था। यह स्मारक इतनी की एकता धीर स्वतन्त्रता का प्रतीक माना जाता है। इसका यह काम सभ्रत बिबर द्वितीय के धासन-काल में सम्पल हुआ था। इसका मानविन लकीनी नामक कलाकार ने तैयार किया था। यह सभ्रे पत्थर का बना हुआ है। एक स्तम्भ पर सभ्रत इमैनुप्रम की काले की मूर्ति है (धिन नं २९)। इस इमारत को देखने के पश्चात् हम रोम के कळ पुरल स्वानों को देखने धने। इसके बाद हम पठुके रोम के एक पुराने कए पर जहाँ धाजकल एक रेस्टर्न है।

रेस्टर्न में बाकी के यात्रियों में से धबिर्षक ने तो रोम की प्रसिद्ध सेम्पीन धबिरा पी, नर हम तीनों ने सल्लरे का धर्षत। कहा जाता है कि रोम की धबिरा सल्लार में सबसे धबिर्षी होती है धीर इतने पर भी इतनी सस्ती कि पानी से भी उतकी धीनत कम।

रेस्टर्न से हम धये रोम के एक प्रसिद्ध राजि-सल्लव में। राजि-सल्लव की लीला धीनत में हुकने सर्वप्रथम रोम में ही देवी। यह राजि-सल्लव हमें तो कामवासनाओं के उमारने तथा धबिर्षार करने का धीनता-धामता स्वल धुधियीधर हुआ। एक विद्याल मंडप में लकड़ों कुसियी पड़ी हुई धी। एक धोर वा रंगभंग जिस नर विद्याल धामलत धाबि धारे पठिबनी बाध मन्त्रों का एक धब्रम धारवेस्टा बर रहा था। मंडप की कुसियी धरी हुई धी नर धीर नाटियों से, जो धा रहे थे धी रहे थे धीरे-धीरे धालासाप धी करते हुए मस्करा रहे थे धीर हँस रहे थे। सबसे धबिर्ष पी धा रही धी धाकठी। धारवेस्टा के सामने कमी होता था नृत्य धोर कमी गान। इतनी की धावा तो हम धानते न थे धतः जब गान होता तब धायकों की स्वर-सहरी ही ह्य नुन धते तथा धन स्वरों के साथ देव धये धायकों के हावभाव; हाँ नृत्य हम बती तरह देव लकने जित

तब वह सत्य लोप । मृत्यु की अपनी एक भाषा होती है जिसे कहा जाता है मुझमें और जो मुझ-आत्म में पारंपर्य नहीं होते वे इन मुझों का एक-सा ही अर्थ लगाते हैं । फिर इस रात्रि-बनब के मृत्यों की मुझों का अर्थ समझ सकना तो बड़ा ही सरल था । उनमें भारतीय नृत्य पद्धतियों में भारत नाट्य, कथाकला गरभा, मैनपुरी और कथक नाचों में से किसी की भी सूचना न थी । उस की प्रसिद्ध नर्तकी मंडम पबलवा की इस घोषणा को कि भारत ने ही नृत्यकला और ब्रह्मानिक नृत्यकला का सर्वप्रथम प्राविष्टकार किया है और भारत की नृत्यकला ही सर्वोत्कृष्ट नृत्यकला है भ्रष्टि अनेक वर्षों की बुके से तथा भारत के प्रसिद्ध नर्तक को प्रहयप्रकर और रामगोपाल धारि की पश्चिम सराहना भी काफी कर चुका था बरन्तु इस रात्रि-बनब के इस नृत्य में उन मुझों का कोई स्वाग न था । यही के नृत्य की तो सारी मुझों का एक ही अभीष्ट था कामुकता । ये नृत्य कर रही थीं रोम की कुछ तर्कियाँ जिनके घरीर केवल दो स्थानों पर ही बूके हुए थे बसस्वत कोई चार-चार इंच आयमेटर की बोलियों से घीर बाँधों के बीच कोई तीन-तीन इंच चौड़ी पट्टियों से । घेप सारे अथ कल हुए थे । एविन्त में बल-बिहार करने वाली मुन्धरियों के घरीर पर भी हम बरबों की कमी देख चुके थे पर यह रात्रि-बनब तो इस बुद्धि से एविन्त के समुद्र-तट से कहीं आगे बढ़ा हुआ था ।

जब हम लोप यहाँ पहुँचे तो यह पीने सोलह घाना तक नल घरीरों वाला कामुक नृत्य यहाँ की छ तर्कियाँ कर रही थीं । इसके बाद हुआ एक गान और फिर एक पुरुष और स्त्री का नृत्य । यह पुरुष-स्त्री का नृत्य बसा एक बलशाली कामुक कुस्ती थी । कालकीला में बल की पराकाष्ठा तक प्रयोग का प्रदर्शन इस नृत्य का अर्थ था । और इस नृत्य के बाद रंगमंच से दिया गया दर्जनों को नाचने के लिए । मृत्यों के दर्शन से दर्शकों की भावनाएँ उत्तचित हो ही चुकी थीं उन्हें और भी महान-यता पहुँचायी होयी मरिदा में । अब दर्जनों की एक एक चौड़ी बुर नाची । हमारे साथ के दो पात्री भी उन छे नृत्य करने वाली स्त्रियों में से दो को लेकर नाचने लगे ।

अब दर्जनों का यह नृत्य भी भरकर हो चुका तब फिर से पहले वाले नृत्यों की ही द्वितीय धाबुति हुई और सारा कार्यक्रम समाप्त हुआ कोई सवा बने रात्रि की ।

यहाँ हमारा ध्यत्र रात्रि का पर्यटन समाप्त हुआ और हम लोप होडल लौटे । अब हम होडल लौट रहे थे तब मुझे याद आया सन् १९२० के पहले का वह अमाना अब हमारे यहाँ अनेक गार्डेन पार्टियाँ होती थीं और उनमें मैं भी इस यूरोपीय ईम का नाच नाचा करता था । यूरोपीय सभ्यता में इस प्रकार के नर-नारियों के सम्मिलित सामूहिक नृत्य का अपना एक स्वाग है पर उनमें तथा रात्रि-बनब में कामुक नृत्यों के परवाना भी ऐसे नृत्य होते हैं इसमें अन्तर महान अन्तर है । नर-नारियों के सम्मिलित सामूहिक नृत्यों को प्रवा तो यूरोप के सिवा भी कई देशों और समुदायों में है ।

भारत में भी बनवासी समुदायों में छे अधिकारों में ऐसे नृत्यों का बहुत अधिक प्रचार है और मेरा तो मत है कि पुरातनों में इन्द्र के जित महाराज का वर्णन है एवं जिसके सम्बन्ध में यह कहा गया है कि इन्द्र के इतने अधिक कर्म हो गये थे कि दो-दो पौधों के बीच एक-एक इन्द्र नृत्य करते थे वह महाराज भी ऐसा ही सामूहिक नृत्य होया जिसमें ऐसा समा बैठा होया कि उस रात में नृत्य करने वाले समस्त गीब इन्द्र के समान दिखने लगे। जो कुछ हो स्त्री-पुरुषों के ऐसे सम्मिलित सामूहिक नृत्यों के में बिच्छ नहीं हूँ पर राजि-कलम की जित पृष्ठभूमि में ये नृत्य होते हैं वे मेरे मतानुसार सर्वथा बर्जित होने चाहिये। ये नहीं जानता कि भारतवर्ष में भी राजि-कलम है या नहीं और यह सब कहीं होता है या नहीं यदि होता हो तो सरकार को हमारे देश में तो इन राजि-कलमों को तत्काल बन्द कर देना चाहिये।

दूसरे दिन प्रातःकाल ९॥ बजे हम फिर पर्यटक बस द्वारा रोम के प्रमाण स्थलों को देखने चले। प्रातः के पर्यटन में पहले तो हमें वही संगमरमर की विशदर इनेनुपल मिमीरिफल-इमारत दिखायी गयी और इसके बाद हम गये ईसाई रोमन कैथलिक के सबसे बड़े पादरी पांच जहाँ रहते हैं उस प्रतिष्ठ बैटिकन का प्रजापदपर तथा बैटिकन देखने। कहा जाता है कि बैटिकन का यह प्रजापदपर बुनिया का सबसे बड़ा प्रजापदपर है। सबकुछ ही हमने इसका सप्पू जितना बड़ा देखा उतना सब तक कहीं के प्रजापदपरों में नहीं देखा था। कितनी मूर्तियाँ कितने चित्र कितना विविध प्रकार का सामान यहाँ संग्रहित था। खेद की एक ही बात थी कि प्रातः हमें जो पार्थ-श्रवणक मिला था, वह बहुत ही करारा था। वह इतनी बन्दी चलता तथा इतनी बन्दी संग्रहित वस्तुओं का परिचय देता कि उसका अधिकार कब हमारी संपन्न में हो न पाता। फिर अधिकारों की भी वह बतलाता तक नहीं घरे बताना दूर रहा उन संग्रहों के मध्य ही छोड़ देता। मैं यह मानता हूँ कि यह प्रजापदपर इतना बड़ा है और संग्रह इतना अधिक कि जितना समय हमारे पास था उस समय के भीतर उस सारे संग्रह को कोई भी पार्थ-श्रवणक हमें न बता सकता था, पर यदि जोड़ा समय भी वह अधिक देता, जोड़ा घरे चलता तथा अपनी ज्ञापन-बलि भी छोड़ी मन्व रखता और उज्जने घणना कार्य को १२॥ बजे समाप्त कर दिया वह पूर्व-निदधय के अनुसार १ बजे समाप्त करता तो कब से कम हम संग्रह के सारे मार्गों में घूम लेंगे। फिर जोड़ भी हमारे साम इतनी अधिक थी कि सबको इच्छा रखना भी एक समस्या था। हमारे समुदाय के प्रतिरिक्त इसी प्रकार के घण्य भी घण्य समुदाय थे। ये समझता हूँ कि बैटिकन के उस प्रजापदपर में एक ही समय में कोई पांच हजार स्त्री पुरुष घूम रहे होंगे।

मेने मुना है कि यह वहाँ का मित्य का हाल है। कितने लोच घाते

प्रांशियों के रूप में और कितना पैसा मिस जाता है। यहाँ के व्यवस्थापकों की इच्छा विकटों से। इन संस्थाओं की सारी मुख्यवस्था का शायद यही प्रबन्ध कारण है। बँटिकन का प्रभाव्यधर ईकने के बाद हमने बँटिकन के दोष स्थल भी सरसरी दृष्टि से देखे गये तो दूर से ही और बँटिकन का कुछ हाल भी समझने का मल किया।

बँटिकन राज्य बोप की प्रमुखता के प्रथम एक स्वतन्त्र राज्य है। यह संसार का सबसे छोटा राज्य है। इसका क्षेत्रफल सी एकड़ से कुछ अधिक है और जनसंख्या भी एक हजार से बहुत अधिक नहीं है। पुलिस-व्यवस्था इटली की पुलिस के पास है।

१८७० में इटली के एकता स्थापित होने के बाद ११ फरवरी १८२६ में लाटेरान की संधि द्वारा बँटिकन नगर की स्थापना हुई।

बँटिकन के अधिकतर भाग को बँटिकन प्रांताद और सेंट पीटर गिरजाघर घेरे हुए है। बँटिकन प्रांताद चीन की राजपायी पोरिकय में बर्न के सम्राट के महस के बाद सत्ता का सबसे बड़ा प्रांताद है। यह पचपन हजार वर्ग मीटर में बना हुआ है, इसमें बोम भाग्य है और लगभग डेढ़ हजार ग्राम्य और कपरे घाटि है। न केवल अपने आकार के कारण बल्कि ऐतिहासिक और कलात्मक दृष्टि से भी यह महान धारणा महत्त्वपूर्ण है। १४३० में निकोलस पंचम के बाद के सभी पोपों ने इसकी अधिकारिक समुद्र बनाया है।

सेंट पीटर गिरजाघर के सम्मुख २६० फुट लम्बा और २१३ फुट चौड़ा एक चौक है। इसमें घण्टाकार चार-चार की बतार में स्तम्भ खड़े हुए हैं जिन पर छत है। स्तम्भों की लम्बा २७४ है और ऊपर महम्मदियों की १४ मूर्तियाँ हैं। गिरजाघर के लिए सीढ़ियों पर चढ़ने से पहले ही सेंट पीटर की मूर्ति के दर्शन होते हैं। कितनी लम्ब है वह मूर्ति कितना लोभ्य है सारा बुज्य।

वर्तमान गिरजाघर उस स्थल पर बना हुआ है जहाँ सेंट पीटर की कब्र के पास सम्राट काल्द्वेनटाइन का प्रांताद था।

सेंट पीटर गिरजाघर के भीतरी भाग में प्रवेश करने के लिए पाँच द्वार हैं। बाईं ओर का पहला द्वार बलिष्ठ द्वार प्रथमा जयन्ती द्वार कहलाता है। यह पश्चीन बर्य में केवल उन्नी समय खोला जाता है जबकि जयन्ती समारोह होते हैं।

सेंट पीटर गिरजाघर में रोमन कला की भ्रमक स्पष्ट है (चित्र नं० ११)। जल्दी के कारण हम सेंट पीटर गिरजाघर को उतनी घबड़ी तरह न देख सके जितनी घबड़ी तरह हमने बाद में इटली में दूसरे प्रतिष्ठ गिरजाघर सेंट पास को देखा।

बँटिकन से सीधे-थर हमने रोपहर का भोजन किया। तीसरे बहर तीन बजे इसी प्रकार की एक चर्चक बत्त से हमने ठिठ घूबने का निश्चय किया था परन्तु

प्रथम प्रसन्न-काल की इस प्रकार की पर्यटक बस का कुछ ऐसा बुरा अनुभव हुआ कि हमने पर्यटक बस के अपने रिजर्वेशन को मन्सूख करवा एक प्रथम मार्ग-प्रदर्शक के साथ एक टिकटी में जाना तय किया। हम लोग तीन व्यक्ति थे। जेनेवा के एक तथा प्रान्त के एक इस प्रकार दो सज्जन और हमारे साथी के रूप में मिल बये। इस प्रकार हम पाँच में मिलकर एक मार्ग-प्रदर्शक और एक टिकटी का प्रबन्ध किया। मार्ग-प्रदर्शक ऐसा था जो अंग्रेजी तथा फ्रांसीसी दो भाषाओं जानता था।

अब हम सबसे पहले रोम के प्रतिष्ठित सेन्ट पाल गिरजाघर की देखने गये। किताब विद्याल, मध्य और सुन्दर यह गिरजाघर है। बनावट तथा उसकी सामग्री में तो नहीं, परन्तु विद्यालता, मध्यता और सौन्दर्य में इसका पुरा मिलावट काहुरा की मुहम्मद अली की मस्जिद से हो सकता है। बीता विद्याल, मध्य और सुन्दर यह गिरजाघर है बेसी ही काहुरा की यह मस्जिद। और दोनों हे उस जगहाघार जब दीवार की बनना के स्थान। मुझे एकाएक दखिल भारत के ऐसी ही विद्याल मध्य और सुन्दर भी रंग रामेश्वर एवं भीमाजी देवी मस्जिदों का स्मरण हो आया। उन मस्जिदों के कोपूरों, मध्यों धारि में भी ऐसी ही विद्यालता मध्यता और सौन्दर्य दिखता है चाहे बनावट सर्वथा दूसरे प्रकार की ही क्यों न हो। तो स्वापरमकता की भिन्न-भिन्न प्रणालियों से इन वस्तुओं का मन पर भी प्रभाव पड़ता है, उस प्रभाव का कोई सम्बन्ध नहीं है। चाहे स्वापरमकता भिन्न भिन्न प्रकार की हो, पर धरि निर्मित वस्तु में विद्यालता है मध्यता है और सौन्दर्य है तो मन पर उस वस्तु का प्रभाव एक-ता ही पड़ेगा। हाँ, इस दर्शन से आनन्द प्राप्त करने के लिए मन को उदार होने की आवश्यकता आवश्यक है। धरि मन में संकीर्णता है और अमान्यता की इस प्रकार की भावना कि चाहे हाजी के पैर के नीचे कुछन चापो पर जैन मन्दिर में पैर न रखो तो फिर मन की कोई आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिए पान्थी की ही प्रार्थना के समय 'रघुपति राजव राजा राम' के साथ 'ईश्वर अल्लाह तेरे नाम' भी बसा जाता था। मेरे मन में काहुरा की मुहम्मद अली की मस्जिद और रोम के सेन्ट पाल गिरजाघर के दर्शन से कुछ बीते ही आनन्द की उत्पत्ति हुई बीते भारत में दखिन के विद्याल मस्जिदों के दर्शन के समय हुई जो और इस आनन्द में मुझे उस परमपिता परमात्मा की भी याद आयी जिसकी महाप्रता के स्मरण के लिए ही इन महान् वस्तुओं का निर्माण हुआ था। हाँ, काहुरा की मस्जिद और रोम के इस गिरजाघर की कब्रें मुझे बरा भी दखली न लगीं। नित्य के उस दर्शन की मन में अज्ञिततावा उत्पन्न कराने के लिए जिन ऐसी वस्तुओं का निर्माण होता है उनमें इस जल-नगपुर धर्मिय घरीर की कब्रें क्यों बनायी जाये।

सैन्ट पीटर गिरजाघर के बाद सैन्ट पाल रोम का सबसे बड़ा गिरजाघर है। १३२३ के धर्मिकीर्ष में बल जाने के बाद लयनग समूचा गिरजाघर ही फिर से बनाया गया है। यह गिरजाघर कान्स्टेन्टाइन ने बनवाया था। इसी स्थल पर सैन्ट पाल का स्तिर उत्तारा गया था। पाँचवीं शताब्दी में इस गिरजाघर को बड़ा बनाया गया। समय-समय पर गिरजाघर में धीरे भी सजावट होनी रही। अन्त में इसकी पहना सभोत्तम गिरजाघरों में होने लगी। प्रोटेस्टन्ट मतानुयायियों के सुधार-पान्थी लन से पहले यह गिरजाघर इंग्लैण्ड के बाइघाह के संरक्षण में रहता था।

यह गिरजाघर काल्डरिनी के डिजाइन के आधार पर तैयार किया गया है। इसमें १४६ स्तम्भ हैं। मध्य में सैन्ट पाल की मूर्ति है। पीछे गुलाबी पेंनाइट के बल स्तम्भ हैं।

इस गिरजाघर से हम गये उस स्थान पर जहाँ किसी जमाने में मानव से सिंहु की कुशती करावी जाती थी और उसे देखने चारों ओर तर-तारी एकत्रित होते थे।

वह स्थान फ्लैवियन (Flavian) बंग के सम्राट् वेंस्पैसियन ने बनवाया था। इसी स्थल पर नीरो के उत्थान की असाहसिक मील थी। इस इमारत को सम्राट् वेंस्पैसियन के पुत्र टीटस ने ८० ईसवी में पूरा किया। इसका उद्घाटन समारोह सौ दिन तक चलता रहा और इस बीच कोई पाँच हजार बन्धु-वसुधों का बप किया गया। मूखान मरम्मत न होने और नागरिकों के बुराव्योव के कारण यह इमारत बहुत कष्ट लष्ट हो गयो। इसे कोलोसियन कहा जाता है जो रोमन सम्राटों का चौड़ा-स्वत पा और बर्बन्ता का कैग्न भी (विश्व में ३२)। कोलोसियन नाम बड़ने का कारण था तो यह ही सचता है कि यह इमारत ही धायन्त विद्याल है अथवा यह कि पास ही में नीरो की मो मूर्ति है वह धायन्त विद्याल है। यह इमारत अग्नाकार है। इसका घेरा २७६ गज है लम्बाई २०३ गज है और चौड़ाई १७० गज है। इसकी ऊँचाई १३७ फुट है। इमारत चौबिसिली है। अन्तर अन्तर के चारों ओर ३० हजार बसकों के बैठने लायक स्थान है। अन्तर में मसीहियों पर किये गये अनेक धरपाचारों के स्मारक के रूप में बाल रखा गया है। इमारत की चार अँगुलियों में से पहली तीन में स्तम्भ हैं जो बसक अौरिक, धायोजिक और कोरिन्थियन किस्य के हैं। चौथे अँगुल पर दोबार है जिसमें कोरिन्थियन हैं।

इसके अन्तर के अन्तर की लम्बाई २४ और चौड़ाई ३६ गज है। अन्तर के अन्तर के चारों ओर पाँच गज ऊँचा बन्दर-सा है। यह स्थान सम्राट् के बैठने के लिए होता था। बड़े-बड़े धायिकारी—सिनेड के लरस्य, मजिस्ट्रेट, राजकुल पुरोहित आदि और देवदासी कमारियों को भी यहाँ स्थान दिया जाता था।

साथ प्रता-काल की इस प्रकार की पर्यटक बस का कुछ देता बुरा अनुभव हुआ कि हमने पर्यटक बस के चलने रिजर्वेशन को पशुक्त करा एक घण्टा मार्ग-प्रदर्शक के साथ एक डैक्की में जाना सम किया। हम लोग तीन व्यक्ति थे। डैक्की के एक तथा कालस के एक इस प्रकार ही सज्जन और हमारे साथी के रूप में मिल पये। इस प्रकार इन साथ में मिलकर एक मार्ग-प्रदर्शक और एक डैक्की का प्रबन्ध किया। मार्ग-प्रदर्शक ऐसा था जो अज्ञेयी तथा अज्ञेयी ही भावार्थें जानता था।

अब हम सबसे पहले रोम के प्रतिष्ठित सेंट पाल पिरजायर की देखने गये। कितना विद्याल, मध्य और सुन्दर यह पिरजायर है। बनाबद तथा उत्तरी सामग्री में तो नहीं परन्तु विद्यालता मध्यता और लौक्य में इतका बुरा कितना काहरा की मुहम्मद घली की मस्जिद से हो सकता है। अंता विद्याल मध्य और सुन्दर यह निरजायर है अंती ही काहरा की यह मस्जिद। और दोनों ही उस बनाबायर का दौरा की बनना के स्थान। मुझे एकाएक दखिल भारत के ऐसे ही विद्याल मध्य और सुन्दर की रंग, रामेश्वर एवं मीनाली देवी मस्जिदों का स्मरण हो आया। उन मस्जिदों के नोपुर्तों, मन्बनों आदि में भी ऐसी ही विद्यालता मध्यता और लौक्य विद्यालता है। आड़े बनाबद सर्वथा दूसरे प्रकार की ही क्यों न हो। तो स्वाभाविकता की भिन्न भिन्न प्रस्तावितों से इन वस्तुओं का मन कर की प्रभाव बढ़ता है। सब प्रभाव का कोई सम्बन्ध नहीं है। आड़े स्वाभाविकता जिन जिन प्रकार की हो, पर यदि निर्मित वस्तु में विद्यालता है, मध्यता है और लौक्य है तो मन पर सब वस्तु का प्रभाव एक-ता ही पड़ेगा। हाँ, इस दर्शन से आत्म प्रत्य करने के लिए मन की बहार होने की आवश्यकता प्रथम है। यदि मन में संकीर्णता है और धर्म-अंधता की इस प्रकार की भावना कि आड़े हाथी के पैर के नीचे कुचल जाओ पर भी मस्जिद में पैर न रखो तो फिर मन को कोई आत्म प्रत्य नहीं हो सकता। इसीलिए भाषी जी की प्रार्थना के समय 'उद्युपति रामच रामच राम' के साथ 'ईश्वर आस्ताइ तेरे नाम' भी गाना जाता था। सारे मन में काहरा की मुहम्मद घली की मस्जिद और रोम के सेंट पाल पिरजायर के दर्शन से कुछ बँके ही आत्म की उत्पत्ति हुई अंते भारत में दखिल के विद्याल मस्जिदों के दर्शन के समय हुई थी और इस आत्म में मुझे उस परमविष्ठा परमात्मा की भी याद आयी जिसकी महामता के स्मरण के लिए ही इन महान् वस्तुओं का निर्माण हुआ था। हाँ, काहरा की मस्जिद और रोम के इस निरजायर की कब्र मुझे बरा भी कष्टों न लगीं। जिन के उस दर्शन की मन में दखिलता उत्पन्न कराने के लिए जिन ऐसी वस्तुओं का निर्माण होता है उनमें इस जल-मंगर दखिल घरीर की कब्र क्यों बनायी जायें।

ब्रिट पीटर विरजापर के बाद सट पास रोम का सबसे बड़ा विरजापर है। १८८६ के अग्निहर्ष में बल बाले के बाद अत्यन्त बम्बू विरजापर ही फिर से बनाया गया है। यह विरजापर कान्स्टेन्डाइन ने बनवाया था। इसी स्वतन्त्र पर सट बाल का सिर उतारा गया था। चौबथीं शताब्दी में इस विरजापर को बड़ा बनाया गया। समय-समय पर विरजापर में घोर भी सजावट होती रही। बल में इसकी बरतना सर्वोत्तम विरजापरों में होने लगी। प्रोटेस्टैंट मतानुयायियों के सुधार-धार्मी लन से पहले यह विरजापर इवर्लेड के बास्पाइ के संरक्षण में रक्ता था।

यह विरजापर कालटेरिबी के डिजाइन के साधार पर तैयार किया गया है। इसमें १४६ स्तम्भ हैं। मध्य में सट बाल की मूर्ति है। पीछे मुलाबी पेनाइड के दस स्तम्भ हैं।

इस विरजापर से हम मने उस स्वान पर बहती सिखी जमाने में मानव से सिद्ध की कुछली करावी जाली की घोर उसे देखने चारों घोर नर-नारी दूषित होते थे।

बहु स्वान फ्लैवियन (Flavian) बंस के सम्राट् वेस्पेसियन ने बनवाया था। इसी स्वतन्त्र पर नीरो के उग्रान की सम्राट्पतिक मीन थी। इस इमारत को सम्राट् वेस्पेसियन के पुत्र टोटस ने ८० ईसवी में बुरा किया। इसका उद्धारण समारोह सौ दिन तक चलता रहा और इस बीच कोई भी बंधु-बन्धु-सम्पत्तियों का बय किया गया। मूबाल मरम्मत न होने और मानविकों के दुष्प्रयोग के कारण यह इमारत बहुत कल मय हो गयी। इसे कोलोसियम कहा जाता है जो रोमन सम्राटों का चौड़ा-स्वत पा और बरतना का कैण्ड भी (चित्र में ३२)। कोलोसियम नाम पड़ने का कारण था की यह हो सकता है कि यह इमारत ही घायल विमान है अथवा यह कि बाल ही में नीरो की जो मूर्ति है वह अस्वत्त विमान है। यह इमारत अग्निघार है। इसका घेरा २७६ मत्र है अम्बाई २०२ मत्र है और चौड़ाई १७० मत्र है। इसकी ऊँचाई १३७ फुट है। इमारत चौबथिनी है। समर पराड़े के चारों घोर ३० हजार दर्शकों के बैठने लायक स्थान है। अजाड़े में असीद्धियों पर पिछे मने अनेक अत्याचारों के समारक के बच में बाल रक्ता हुआ है। इमारत की चार मंडितों में से प्युली मीन में स्तम्भ है जो ममम-डोरिक, धायोनिज और कोरिन्थियन क्रिम के हैं। नीचे मंडिल पर दीवार है जिसमें चौबोर सिद्धियाँ हैं।

इसके अन्धर के अजाड़े की लम्बाई ६४ और चौड़ाई २६ मत्र है। अजाड़े के मंदिर के चारों घोर बीच मत्र ऊँचा बबुनरा-सा है। यह स्वान सम्राट् के बैठने के लिए होता था। बड़े-बड़े अर्थिकारों—सेनेट के सदस्य, मजिस्ट्रेट राजदूत पुरोहित प्रादि और देवदाली मूर्तियों को भी यहाँ स्वान रक्ता जाता था।

बहुली मंजिल बहादुर बखानों और सरदारों के लिए होती थी। बीच की मंजिल नाबरिकों के लिए होती थी और इसके उपरान्त बीच बनों के लिए बैचने का प्रबन्ध था। महिमाओं के लिए प्रत्येक वंशरी निश्चित थी।

प्राचीन काल में यह कड़ा काठा था कि जब तक रोम में क्रोनोसियम है तब तक रोम भी है इसके पतन के साथ-साथ रोम का पतन ही जायगा और रोम के पतन के साथ-साथ संसार का पतन हो जायगा।

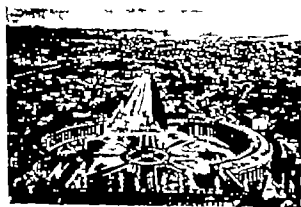
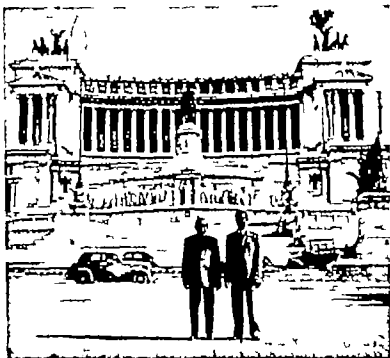
ऐसन जब किसी देश को जीतते थे तो वहाँ के निवासी गुलाम बना दिये जाते थे। बिबेता वैद्रीशियम कई जातों और विभिन्न प्लेबियम। गुलामों पर उनके मानिकों का ईसा ही अधिकार रहता बीसा पधुर्ची पर, बरन् निर्जीव लम्पति पर और पालिक गुलाम के साथ बेसा चाहे बेसा बर्तान करने के लिए धारण रहता यहाँ तक कि बरि उसे अपने गुलाम को लिहू को जिला देने में धारण मिलता तो उसे भी बहू कर सकता। मानव और बिहू की इन क्रुषितियों का धाम परिलाम लिहू द्वारा मानव का साथ जाया जाता ही तो होता और इस नीचल नीला को बैचने के लिए इस मकाम में उस बमाने में रोम का तारा सम्य वैद्रीशियम तमाक एकत्रित होता।

रोम के प्राचीनतम इतिहास से विदित है कि बमता दो भागों में विभक्त थी। वैद्रीशियम और प्लेबियम। वैद्रीशियम लोगों के बर्ग को सब प्रकार के राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे। प्लेबियम बर्ग को नागरिकता के भी अधिकार न थे।

पर बीरे-बीरे प्लेबियनों की संख्या बढ़ने लगी। ध्यावात धारि की सहायता से इनमें से बहुत से पनी भी ही गये और फिर अनेक कारणों से प्लेबियनों का प्ल बमता के पल के नाम से सम्मिश्रित हो गया।

बाद में जब कि अपनी अवल स्थिति के कारण अधिकार और महत्त्वपूर्ण स्थान बाने लगे तो वैद्रीशियनों को ईर्ष्या होने लगी। यह ईर्ष्या निरंतर रूप से उपरतर रूप धारण करने लगी। धाम में इन दोनों बर्गों के बीच बला प्राप्त करने के लिए अर्पकर अर्पव्य हुआ। ईसा से ४६४ बर्ष पूर्व प्लेबियनों ने एक बलम व्यवस्था कायम की जिसके लिए प्रतिवर्ष अधिकारी चुने जाते थे। उन्होंने एक प्रतिष्कनी भी बनायी और बीरे बीरे से इतने दक्षिणवासी हो गये कि वैद्रीशियनों के साथ उनके बिबाह धारि होने लगे। इसके बाद सेनेड में जो उनके सदस्य लिधे जाने लगे और राजनैतिक अधिकारों में समानता हो गयी। कुछ समय बाद तो यहाँ तक हो गया कि वैद्रीशियनों के लिए कुछ बाधाएँ पैदा हो गयीं। उदाहरण के लिए प्लेबियनों की परिषद् में उन्हें सम्मिलित नहीं किया जाता था। पर इन बाधाओं के कारण किसी प्रकार का जोध समाप्त में न रह गया और बाद में सीडर तथा धारणरत के धारण-काल में समान के लिए वैद्रीशियन बर से लोगों को उन्हीं प्रकार विभूषित किया जाने लगा बीसा कि

२६ इमैनुएल डिस्तीय
का स्मारक घोर
रुद्धके सामने ललक
वदा बनरयामबास



३ सण्ट पीटर क मिरजा
की मग्गज से जैसे रोम मगर
रिबायी बेता ई



३१ सण्ट पीटर मिरजापर

पहली मंजिल बहानुर बचानों और सरबारों के लिए होती थी। बीच की मंजिल मापरिकों के लिए होती थी और इसके उपरान्त बीच बनों के लिए देखने का प्रबन्ध था। महिलाओं के लिए अलग वैदरी निर्मित थी।

प्राचीन काल में यह कहा जाता था कि जब तक रोम में कोलोसियम है, तब तक रोम जी है इसके पतन के साथ-साथ रोम का पतन हो जाएगा और रोम के पतन के साथ-साथ संसार का पतन हो जाएगा।

रोमन जब किसी देश को जीतते थे तो वहाँ के विवाली गुलाम बना दिये जाते थे। बिबेता पैट्रीशियन उन्हें बाड़े और विजित जेडियन। युद्धों पर उनके मानिकों का बैसा ही अधिकार रहता बैसा मनुष्यों पर बन्नु निर्जीव सम्पत्ति पर और मानिक गुलाम के साथ बैसा जाहे बैसा बर्ताव करने के लिए धाबाव चूटा, यहाँ तक कि यदि उसे अपने गुलाम की सिद्ध को खिला देने में धान्य मिलता तो उसे भी बहु कर लगता। मानव और सिंह की इन कुशियों का धाम बरिल्लाम सिंह द्वारा मानव का जाया जाना ही तो होता और इस भीषण लीला को देखने के लिए इस यकाल में उस जमाने में रोम का तारा सभ पैट्रीशियन जनाम एकत्रित होता।

रोम के प्राचीनतम इतिहास से विदित है कि जनता दो भागों में विभक्त थी। पैट्रीशियन और जेडियन। पैट्रीशियन लोगों के वर्ग को सब प्रकार के राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे। जेडियन वर्ग को नापरिकता के ही अधिकार थे।

पर धीरे-धीरे जेडियनों की संख्या बढ़ने लगी। ध्यापार आदि की सहायता से इनमें से बहुत से बनी भी हो गये और फिर धनेक कारखों से जेडियनों का सब जनता के सब के नाम से संगठित हो गया।

बाद में जब के धरनी सबल स्थिति के कारण अधिकार और बहुसंख्यक स्थान पाने लगे तो पैट्रीशियनों को ईर्ष्या होने लगी। यह ईर्ष्या निरंतर उठ से उठकर सब धारण करने लगी। धान में इन दोनों वर्गों के बीच लता प्राप्त करने के लिए सबंध संघर्ष हुआ। ईसा से ४६४ वर्ष पूर्व जेडियनों ने एक धलय ध्यवस्था स्थापन की जिसके लिए प्रतिबंध अधिकारी चुने जाते थे। उन्होंने एक धसेम्बली भी बनायी और धीरे धीरे वे इतने शक्तिशाली हो गये कि पैट्रीशियनों के साथ उनके विवाह आदि होने लगे। इसके बाद सेनेट में भी उनके सबंध लिये जाने लगे और राजनीतिक अधिकारों में समानता हो गयी। कुछ समय बाद तो यहाँ तक हो गया कि पैट्रीशियनों के लिए कुछ बाधाएँ पैदा हो गयीं। उदाहरण के लिए, जेडियनों की बरिवद् में उन्हें सम्मिलित नहीं किया जाता था। पर इन बाधाओं के कारण किसी प्रकार का सोम लजाम में न रह गया और बाद में सीजर तथा ध्राप्टरन के शासन-काल में सम्मान के लिए पैट्रीशियन पर से लोगों की जमी प्रकार विनूचित किया जाने लगा बैसा कि

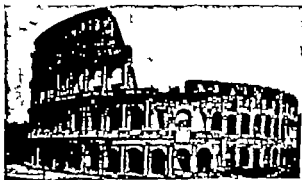
इंग्लैंड के इतिहास में लोगों को बंदन बर्ल घाबि परबियों से सुशोभित किया जाता रहा है । इस तरह इस शब्द का अर्थ ही बिलकुल बदल गया और जिस रूप में पहले कभी प्रयोग किया जाता था उससे बिलकुल भिन्न रूप में प्रयोग किया जाने लगा । कार्मस्टैट्टाइन ज्ञान-काल में पैट्रीशियन शब्द का शोध स्पष्ट रूप से यह विशेष के लिए होने लगा था । छठी और सातवीं शताब्दी में इस शब्द से जिसे सम्बोधित किया जाता था उसे एक प्रकार का रक्तक माना जाता था । यह पैट्रीशियन शब्द की आदि परिभाषा थी ।

मानव-समाज के इस पैट्रीशियन और प्लेबियन के भेद मिटने में कितना समय लगा और कितनी कठिनाई से यह भेद मिट सका । जो सोच करते हैं कि मनुष्य जहाँ का तहाँ है उसकी उन्नति नहीं हो रही है वे इस पैट्रीशियन और प्लेबियन के भेद निवारण तथा गुलामी प्रथा की समाप्ति के इतिहास को देखें । अभी भी अशिक्षित जगत में मुट्टी भर लोगों के हाथ में ही सब कुछ है और मुट्टी भर लोगों द्वारा अधिक संख्या के शोषण की पूरी समाप्ति नहीं हुई है परन्तु पैट्रीशियन और प्लेबियन के अमाने तथा अब गुलामी प्रथा प्रचलित थी उस अमाने एवं श्राव के समय में बड़ा अन्तर नहीं हुआ है । अतः यह कथन कि मनुष्य जहाँ का तहाँ है एक सर्वथा मिथ्या कथन है ।

इस इमारत को देख हम प्रसिद्ध 'रोमन कोरम' नामक स्थान की गये ।

रोमन कोरम के स्थल पर किसी समय एक इतदल वाली घाटी थी । रोमन और सैबाइत में प्रायसी संघर्ष होने के बाद जब वे मिलकर एक हो गये तो पीरे-पीरे कोरम ने जहर के राजनीतिक और व्यापारिक केन्द्र का रूप धारण कर लिया । रोम का महत्त्व बढ़ने के साथ-साथ इसका भी महत्त्व बढ़ा । रिपब्लिकन युग में बाजार घाबि को यहाँ से हटाकर सासनात की बस्तियों में ले जाया गया और उनकी अथर्व समा-अवन और न्यायालयों की स्थापना की गयी । बाद में सौजर की योजना के अनुसार, जिसे कुछ कास पञ्चात् प्रागस्त ने पूरा किया, कोरम के दक्षिण भाग का निर्माण किया गया । तीसरी शताब्दी के अन्तिम काल में अग्निकांड में यह बहुत कुछ नष्ट हो गया । बर्बरों के आक्रमणों से भूबाल जाने से और ठीक-ठीक देखनाल न होने से पीरे-पीरे इसकी कति ही पहुँचती गयी (चित्र पृ ३३ ३४) ।

रोमन कोरम से चलकर हमने रोम की कुछ प्रथम मूर्तियों को देखा और अन्त में हम पहुँचे रोम के उस पुराने कब्रिस्तान में जहाँ ईसाई मत के धारण होने के बाद सर्वप्रथम मूर्तों का पाड़ना धारण हुआ था । ईसाई मत के धारण होने के पहले रोम निवासी मूर्तों को बलते थे पाड़ते नहीं थे । जब ईसाई धर्म के धनसार मूर्तों को पाड़ना ईसाई धर्म मानने वालों ने धारण किया तब जो ईसाई धर्म के अनुयायी नहीं थे उन्होंने इसका विरोध किया और यह तबत एक महत्त्वपूर्ण धर्म



१२ कोलोसियम रोम



१३ रोमन फोरम में
मंगल का मन्दिर

१४ रोमन फोरम



१५ इटली के फोरम
का एक दृश्य



इंग्लैंड के इतिहास में लोगों को बेरन धर्म धारि परबियों से सुशोभित किया जाता रहा है। इस तरह इस धर्म का धर्म ही बिलकुल बदल गया और जिस रूप में पहले कभी प्रयोग किया जाता था उससे बिलकुल भिन्न रूप में प्रयोग किया जाने लगा। कार्लोसटाइन शासन-काल में ईश्रीशियन धर्म का बोध स्पष्ट रूप से पर बिरोध के लिए होने लगा था। छठे और सातवीं सताब्दी में इस धर्म से जिसे सम्बोधित किया जाता था उसे एक प्रकार का रक्त माना जाता था। यह ईश्रीशियन धर्म की धार्मिक परिभाषा थी।

मानव-समाज के इस ईश्रीशियन और प्लबियन के भेद मिटने में कितना समय लगा और कितनी कठिनाई से यह भेद मिट सका। जो लोग कहते हैं कि मनुष्य जहाँ का तहाँ है उसकी प्रकृति नहीं हो रही है वे इस ईश्रीशियन और प्लबियन के भेद निवारण तथा पुनर्मा-प्रका की समाप्ति के इतिहास को देखें। अभी भी धार्मिकता जगत में बड़ी मर लोगों के हाथ में ही सब कुछ है और मुझे मर लोगों द्वारा धार्मिक संस्था के शोषण की पूरी समाप्ति नहीं हुई है परन्तु ईश्रीशियन और प्लबियन के जमाने, तथा जब पुनर्मा प्रका प्रकलित थी उस जमाने एवं धर्म के समय में जोड़ा धर्म नही हुआ है। अतः यह कथन कि मनुष्य जहाँ का तहाँ है एक सर्वथा गिण्या कथन है।

इस इमारत को ईक हम प्रसिद्ध 'रोमन कोरम' नामक स्थान को गये।

रोमन कोरम के स्वतन्त्र रूप किसी समय एक दलदल वाली धाटी थी। रोमन और सीबाइन्स ने आपसी सम्पर्क होने के बाद जब वे मिलकर एक हो गये तो धीरे-धीरे कोरम ने धर्म के राजनीतिक और ध्यापारिक कैम्प का रूप धारण कर लिया। रोम का महत्त्व बढ़ने के साथ-साथ इतका भी महत्त्व बढ़ा। रिपब्लिकन युग में बाजार धारि को यहाँ से हटाकर धारपास की दस्तियों में ल जाया गया और उनकी जगह सभा-मन्त्र और म्यापारियों की स्थापना की गयी। बाद में सीजर की योजना के अनुसार, जिसे कुछ कास परचाह् धामस्वत ने पुरा किया, कोरम के दक्षिण भाग का निर्माण किया गया। तीसरी सताब्दी के अन्तिम काल में अगिन्कांड में यह बहुत कुछ नष्ट हो गया। बहरों के धारमलों से भूखाने जाने से और ठीक-ठीक ईकमान न होने से धीरे-धीरे इसकी क्षति ही पहुँचती गयी (चित्र सं० ३३ ३४)।

रोमन कोरम से चलकर हमने रोम की कुछ प्रधान मूर्तियों को देखा और धर्म में हम पहुँचे रोम के उस पुराने कब्रिस्तान में जहाँ ईसाई धर्म के धारम्भ होने के बाद सर्वप्रथम मूर्तों का पाड़ना धारम्भ हुआ था। ईसाई धर्म के धारम्भ होने के पहले रोम निवासी मूर्तों को जलाते थे पाड़ने नहीं थे। जब ईसाई धर्म के अनुसार मूर्तों को पाड़ना ईसाई धर्म मानने वालों ने धारम्भ किया तब जो ईसाई धर्म के धनपायी नहीं थे उन्होंने इतका बिरोध किया और यह सवाल एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बन गया। ईसाइयों ने एक ऐसे स्थान की खोज की जहाँ छिपे छिपे में घबने मुरबों को पाऊँ सकें। यह स्थान वही स्थान था और गुना कि यहाँ ईसाइयों के कोई एक लाख मुरबे पड़े हैं।

हमारे साथ के मार्ग-प्रदर्शक ने इस स्थान को दिखाने के लिए वहाँ के एक मार्ग-प्रदर्शक का प्रयोग किया और बड़े आस से इस मार्ग-प्रदर्शक ने हमें यह स्थान दिखाना शुरू किया। पर कुछ ही देर में प्रदर्शक के भावछ से हम तो ऐसे अन्धे कि जसका बलुन करना कठिन है। जगनीहनवास हर जस धूम-धुमाकर बुझते कि क्या घब बाहर जाने का रास्ता था गया पर वह रास्ता ही न थाता। एक लाख मुरबों के कश्तिस्तान का बड़ी कश्तिनाई के यह कर्मदन समाप्त हुआ। बार-बार हमारे मन में उठता कि बाकिर घाज हम कहीं था मये और बार-बार हमारे मन में यह भी उठता कि मुरबों को गाने की इस प्रवा से जता देने की प्रवा कितनी घबकी है।

इसके बाद हम वहाँ के एक बूतरे कश्तिस्तान को देखने गये जो प्रोटेस्टेंट लीयों का कश्तिस्तान है। यह घठारखुबी घठारखी के उत्तरार्ध में प्रोटेस्टेंट लीयों को बखाने के लिए बनाया गया था। प्राचीन और नवीन इसके दो भाग है। प्राचीन नाम में हो घठेज कवि आन कीरुत की कब्र है। समीप ही बिजकार बैसन की कब्र है जितने रोम में कीरुत की बीमारी में जतकी लहायता की थी। गया भाय १५२२ में बना। इसमें घठेज, कश्तिस्तानों जर्मनवासियों और घठेरीकियों बाकि कई बिद्वैतियों की कब्रें हैं। इसी स्थान पर घठेज कवि रोमी की कब्र है जितकी १८२२ में बूझने से मृत्यु हो गयी थी।

तीसरे दिन रोम में देखने को कुछ घेप न रहा था। जगनीहनवास कुछ खेती के घामों को देखने मये और घनदयामवास कब्र घ्यापारियों से मिलने। नै घाज घर ही पर रह इस पुस्तक के कुछ भाग लिखता रहा। घाज के इन जेजन में नै इस मिष्कर्व पर पहुँचा कि रोम इरली की राजधानी तो है ही, बीसे भी इरली में बसका लर्बबबम ही स्थान है। एक तरहू से वह घक्तराष्ट्रीय नगर है क्योंकि घपनी तीन हजार वर्ष पुरानी कला और इतिहास से जतने लम्प लंतार को बहुत कुछ दिवा है। लोगों का तो यहाँ तक कहना है कि रोम जंतार की घाम्पारिमिठ राजधानी है पर इसे कम से कम हम भारतीय और बूधोंय देसों के रहने वाले मानने की लंतार नहीं है।

चौथे दिन प्रातःकाल हुयारी जिनीबा तक रेल-यात्रा घारमन होती थी। रोम से हुमारी पाङ्गे ७ बजे प्रातःकाल चल १०॥ बजे नरगिस्त पहुँचने वाली थी। ४ बजे प्रातःकाल उठ निय कर्मों से विवृत ही हम रोम स्टेशन पहुँचे। बड़ा भारी स्टेशन था। रोम के स्टेशन के बाहर एक स्थापर है जो पाँच ती इटालियन सैनिकों की पाहवार में बनाया गया है। इस स्मारक के सामने ही स्टेशन है। इस स्टेशन का

मूल विज्ञान में जीने ने तैयार किया था। बाद में अन्य स्थापना विधियों ने इसमें परिवर्तन किये।

यूरोप में रेल से हमारी यह पहली यात्रा थी। हमें तो रोम की यह रेल कुछ बहुत अच्छी न जान पड़ी। बँटने और घुंसे के सबसे इस रेल में प्रलय के यह ठीक ही था, पर बँटने और सामान रखने की व्यवस्था अच्छी न थी। भारत की रेलों के समान यहाँ की बँटने की सीटों के नीचे सामान रखने का प्रबन्ध किया जा सकता है, पर यह न कर सीटों के ऊपर लम्बे-लम्बे बेकिट लगाये गये हैं। इन पर लकड़ों का एक ही रकवा हो कठिन है किन्तु यदि किसी तरह रकवा भी दिये जायें तो डर लगा रहता है कि रेल की चाल में वे लकड़ों किसी के तिर पर न गिर पड़ें। रेल के उभरे सीन बर्से के ये पहला, दूसरा और तीसरा। पहले और दूसरे बर्से की सीटों पर पड़ी हैं तीसरे बर्से की सीटों पर नहीं। बँटने की सीटें कुछ बहुत सुविधाजनक नहीं। लोग के उभरे प्रलय है और सोने के लिए प्रलय किराया देना पड़ता है। एक तिरे से दूसरे तिरे तक हर उभरे से पुरी टन में जाने का बीता ही रास्ता रहता है बीता बम्बई और मुम्बई के बीच चलने वाली भारत की टनों में रहता है। उभरों की चौड़ाई भी भारत की टनों से कम होन लगी। गांधियों के लिए कोई खास सुविधाएँ भी नहीं दिखायी हैं। तीसरे बर्से में भीड़ भी काफी होती है। अनेक यात्री लड़े-लड़े यात्रा कर रहे थे। किराया भी इतना यहाँ से बहुत अधिक था। मुझे तो यहाँ की रेलों से भारतीय रेलें कहीं अधिक सुविधाजनक और सस्ती जान पड़ी।

पनोरिम्स हमारी ट्रेन ठीक समय पहुँची। पनोरिम्स स्टेशन भी काफी बड़ा था। बग़ावट की रोम स्टेशन के समान। धात्र हमारा कर्मचय दिन भर सुन्दर रात की एक बजे की गाड़ी से बँटने के लिए रवाना होने का था, घण्टा किसी हीरल में ठहरने की आवश्यकता न थी। स्टेशन पर सामान रख डलकी रतीर देने की प्रथा है। घण्टा स्टेशन पर ही हमने अपना सामान रख कर ही अपने माय प्रबन्ध का काम करने का निश्चय कर पनोरिम्स के सम्बन्ध में संघेडी भावा की एक पुस्तक खरीदी। जयमोहनराम ने इन पुस्तक में से पहले यहाँ के महत्त्वपूर्ण स्थानों को छाँटा और फिर एक ईशती से हम लोग रवाना हुए।

पनोरिम्स देखने के लिए रवाना होते ही हमें जानून ही गया कि पनोरिम्स सम्बन्ध बड़ा ही सुन्दर स्थान है। यहाँदियों से पिरा हुआ यह स्थान बड़ा हरा-हरा है। सुन्दरती हरोतिमा के तिया हमारी दरबत लगाये गये हैं। बीड़ और देवदाफ के बुलों की बरवार है। लड़कों के बोलों और ऐसे घने और लीब बुलों की बंभितनी है कि लड़कें कुछ न बन गयी हैं। स्थान-स्थान पर छोटे-छोटे पार्क उनमें रच-रचने बुलों में इस इरगामी को और भी सुन्दर बना दिया है। इमारतें सबका सम्बन्धित।

अक्षय्य से उत्कृष्ट । नगर घोर उसके घास-पास के स्वामी को देखते-देखते हमारी मोटर उस स्थान को बढ़ने लगी वहाँ से तारा नगर बनी प्रकार बिछापी देता है जैसा बालकेशवर महाक से सम्बन्धी । इस बड़ाई पर जो बड़क जाती है उसके दोनों ओर के बस देखते ही बन पड़ते हैं । बड़ाई पर बढ़ने पर एक सुन्दर मैदान मिलता है घोर वहाँ से बड़ाईयों की मोड़ में बसा हुआ क्लॉरेंस नगर बौक बढ़ता है । सारा बुध्न अत्यन्त रमणीय है । इस स्थल की माइकिल एंग्लो हिल कहते हैं (चित्र नं० ३६) । माइकिल एंग्लो रोप के विस्मयिकात् बिचछार वे । जम्ही के नाम पर इस बड़ाई का निर्माण किया गया है । मैदान में माइकिल एंग्लो की एक बाँक की सुन्दर मूर्ति है घोर इस मूर्ति के चारों ओर रंग बिरंगे पुष्पों से बना हुआ एक छोटा-सा बार्क । एक रैस्टरा की सुन्दर छोटी-सी इमारत भी बनी हुई है । सारा स्थल इतना मनोहारी वा कि हमने तप किया कि क्लॉरेंस के प्रथम स्वामी को देखने के पश्चात् फिर हम यहीं घायगे घोर प्राय लग्ग्या का भोजन इसी रैस्टरा में करेंगे ।

यहाँ से हम लोच क्लॉरेंस के दो चित्रों के विद्याल बिच-संग्रहों को देखने गये जिनमें एक का नाम वा विट्टी वैनरी घोर दूसरे का उखीमी गैलरी । उखीमी वैनरी में तो कोई बिद्योय बात न थी, पर विट्टी वैनरी क सवुब बिच-संग्रह क्वाचित संसार में कहीं न होया (चित्र नं० ३७) । माइकेल एंग्लो घोर रैफिल रोम के दोनों बिच-बिख्यात बिचकारों एवं अनेक प्राचीन घोर अर्वाचीन बिचकारोंके मूल चित्र यहीं संग्रहीत हैं । अनेक चित्रों की बिद्यालता, भण्यता घोर सौम्यं देखते ही बनता है। पछपि बिच एक सतह पर बने हैं पर चित्रों की बिचकारी कुछ इस प्रकार की गयी है कि जिनमें पहुराई तल बुष्टियोकर होती है ।

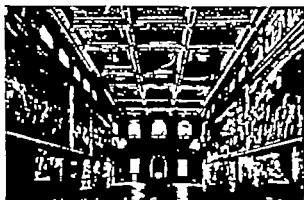
इन चित्रों को देख हमने बिचालाग्री के बजन के बाहरी भाग में मूर्तियों का अचलोकन किया (चित्र नं० ३८ ३९) ।

इसके बाद कुछ बिच एवं मूर्तियों के छोटे करीब हम एक बार्क ली गये । हम भारतीय वे यह हमारा कुइबर जान गया या घतः यह हमें इस बधीवे के उस हिस्से में ले गया वहाँ कोरहापुर महाराज की सत्रापि पर जगदी मूर्ति बनी हुई थी । कोरहापुर के इन महाराज का देहास्त क्लॉरेंस में हुआ था । फिर यहाँ से हम माइकिल एंग्लो हिल पर गये घोर वहाँ हमने अचना लग्ग्या का भोजन किया । इन पाँच-छे दिनों में अनेक आकाशारी पाछ-बस्तुओं का प्रयोग करने के बाद अज हमने अपने भोजन की एक निश्चित सुची बना ली थी घोर इन हर अथह उग्री चीजों का घावर दे देने वे । वे चीजें सुदृता से बन महज में आ भी जाती थीं । वे भी अारम्भ में किसी अज का रत बाद में मखन घोर मुरखे के साथ डबल रोडो घोर आकाशारी सुप फिर कुछ उबने हुए पाक घोर अन्त में अल तथा कोन । हरा नीबू नमक घोर कासी

११. माइकल एंजेलो द्वारा से फ्लोरेंस नगर



१२. 'विट्टो वीतरी' नामक चित्रशाला का एक भाग फ्लोरेंस



१८-१९. फ्लोरेंस के संघर्ष की दो सर्वप्रसिद्ध मूर्तियाँ

उत्कृष्ट से उत्कृष्ट । नगर घोर उसके घास-पास के स्वामी को देखते-देखते हमारी मोहर उस स्थान को चढ़ने लगी जहाँ से तारा नगर बसी प्रकार बिजली देता है जैसा बालकेश्वर पहाड़ से झम्झई । इस पहाड़ी पर जो लड़क जाती है उसके भीमों घोर के मुख देखते ही बन पड़ते हैं । पहाड़ी पर चढ़ने पर एक तुम्बर मंदिर मिलता है घोर यहाँ से पहाड़ियों की मोर में बसा हुआ क्लॉरिन्स नगर बीज पड़ता है । तारा बुध्न अत्यन्त रमणीय है । इस स्थल को माइकिल एंग्लो हिल कहते हैं (चित्र नं० ३६) । माइकिल एंग्लो रोम के बिजलिकुपल बिजकार ये । जहाँ के नाम पर इस पहाड़ी का निर्माण किया गया है । मंदिर में माइकिल एंग्लो की एक बाँज की तुम्बर मूर्ति है घोर इस मूर्ति के चारों घोर रंग बिरंगे पुष्पों से बरा हुआ एक छोटा-सा पार्क । एक रैस्टर की तुम्बर छोटी-सी इमारत भी बनी हुई है । तारा स्थल इतना मनोहारी था कि हमने तय किया कि क्लॉरिन्स के अन्य स्वामियों को देखने के पश्चात् फिर हम यहाँ घामेने घोर घास-पास का भोजन इसी रैस्टर में करेंगे ।

यहाँ से हम लीप क्लॉरिन्स के दो चित्रों के बिधान बिज-संग्रहों को देखने गये जिनमें एक का नाम था पिडूरी घोर घोर का उकीजी मंदिर । उकीजी मंदिर में तो कोई बिधोय बात न थी, पर पिडूरी मंदिर के सभ्य बिज-संग्रह कदाचित संसार में कहीं न होया (चित्र नं० ३७) । माइकिल एंग्लो घोर रैस्टर रोम के भीमों बिज-बिजल बिजकारों एवं अनेक प्राचीन घोर अर्वाचीन बिजकारोंके मूल बिज यहाँ लभ हीत है । अनेक चित्रों की बिधानता, कल्पता घोर सीम्यं देखते ही बनता है । बसपि बिज एक लतह पर बने है पर चित्रों की बिजकारी कुछ इत प्रकार की गयो है कि जिनमें यहराई तक बृत्तिमोचर होती है ।

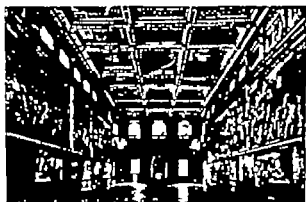
इन चित्रों को देख हमने बिजालाघों के भवन के बाहरी भाग में मूर्तियों का अचलोकन किया (चित्र नं० ३८-३९) ।

इसके बाद कुछ चित्र एवं मूर्तियों के छोटी खरीद हम एक पार्क को गये । हम भारतीय ये यह हमारा उाहवर जान गया था अतः यह हमें इस बणीके के उस हिस्से में ले गया जहाँ कोहापुर महाराज की लबाबि पर उनही मूर्ति बनी हुई थी । कोम्हा पुर के इन महाराज का वैशाल क्लॉरिन्स में हुआ था । फिर यहाँ से हम माइकिल एंग्लो हिल पर गये घोर जहाँ हमने अत्यन्त अत्यन्त का भोजन किया । इन पाँच-छे दिनों में अनेक आकाशरी आद्य-वस्तुओं का प्रयोग करने के बाद अब हमने अपने भोजन की एक निश्चित लुचो बना ली थी घोर हम हर अण्ड यहाँ चित्रों का आडर दे देते थे । ये चित्रें पुत्रता से बन लहज में था भी जाती थीं । ये भी अत्यन्त में किनी कम का रत बाद में नखन घोर नखने के साथ इतल रोटी घोर आकाशरी मूय फिर कुछ उबने हुए शाक घोर अन्त में कम तथा भीन । हुरा तीबू नमक घोर काली

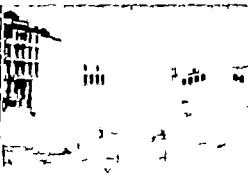
१. माइकल एंजो द्वारा की गई फ्लोरेंस नगर



२. 'पिट्टी पैलरी' नामक चित्रशाला का एक भाग फ्लोरेंस



३५-३६. फ्लोरेंस के संग्रह की दो सर्वश्रेष्ठ मूर्तियाँ



६ -४४ बेनिन क पाष हरम । बीष के बिच में एक बोंबि पर सेलक

निर्धन रूप और शास्त्र-भाषी में मिलाने की प्रथा या आते। भोजन का यह क्रम हमारे सारे बीरे में चलता रहा। लख (बोपहर का भोजन) तथा दिनर (रात्रि के भोजन) में हम ये चीजें खाते और प्रातःकाल मखान तथा मुरब्बे के साथ उबल रोटी हुए और फल। जो लोग कहते हैं कि बिदेशों में साकाहारी भोजन नहीं चलता और धराय के बिना चल ही नहीं सकता। ये बड़ी पसल बात कहते हैं। हमने इस बीरे में और इसके पहले के किसी बिदेशी बीरे में विरामिय भोजन के सिवा अन्य किसी भोजन को हाथ नहीं लगाया और न किसी तरह की धराय का ही कभी खरा किया। हाँ भोजन के मामले में बिदेशों में सुप्रासूत नहीं चल सकती सुप्रासूत को तो ये भारत में भी नहीं मानता।

जब हम माइकिल एम्पो हिन से स्टेशन सीटें तक रात्रि के १ बजे बसे में। गरमो इतनी प्रतिक्रिया की कि पत्नीया या रहा या। बीरो, एथिन्स, रोय फनरिन्स सभी कहते हैं कि एक एक परमी ही परमी मिलो की और परमी का कष्ट इसलिए और प्रतिक्रिया हो गया था कि होइल, स्टेशन के बेडियन्स में कहीं भी बिजली के पंखे न थे। पुना गया कि यहाँ गरमो बर्ष भर में इतने कम दिन पड़ती हैं कि कहीं भी पंखे लगाने का विचार ही नहीं है। जो कुछ ही इन ती ठंडे बीरों में ऐसे दिनों प्राये जब यहाँ गरमो का प्रखर रूप या और पंखे न रहने के कारण यह परमी गरम देश भारत की परमी से भी हमारे लिए प्रतिक्रिया ही बनी। फिर हमें इस परमी में कुछ और कष्ट इसलिए हुआ कि हम ठंडे बीरों को या रहे हैं इस विचार के कारण हम घरने सारे कपड़े उनी बनाकर ले गये थे, जिनका उन दिनों बर्बास्त होना एक समस्या हो गयी थी। और प्रायः हमें यह देखकर हुआ कि यहाँ के निवासियों में प्रतिक्रिया उनी कपड़े ही पहनते हैं। गायर इसका कारण यह था कि थोड़े घरने के लिए इन्हे कपड़े क्यों बनाये जायें। प्रायः पत्नीया स्टेशन के बेडियन्स में हम परमी का सबसे प्रतिक्रिया कष्ट हुआ।

पत्नीया से बेडियन्स बाड़ी १ बजे रात के लगभग जातो थी। गाड़ी जाने तक का समय हमने स्टेशन के बेडियन्स में बिज कष्ट से काटा वह हम कभी न भूलेंगे।

ठीक समय पर बाड़ी पत्नीया प्रायो पर बाड़ी में इतनी प्रतिक्रिया थी कि हमारे सीटें बचाव के दिष्ट हमें अर्द्ध बलास के करम पड़े। १ बजे प्रातःकाल हम बसिप पहुँच गये।

जब हम बेडियन्स पहुँचे तब मुझे घरने एक प्रंग्रेज मिन्सिपिट की याद आयी। मुझे यादिर कभी कूल या कालेज में पढन के लिए नहीं भेजा गया परन्तु इन बात का सदा ध्यान रखा गया कि मेरे निरास बड़ी उपकरोटि क हों। मेरे बिद्यायी जीवन के समय प्रंग्रेजी भाषा का हमारे देश में बड़ा बीर बीरा या और

अपने के लकड़ों के लोग अपनी समान को धोनेकी भावा की ऐसी प्रिया देने का प्रयत्न करते थे कि उनकी धोनेकी धोनेकी के समान हो। मेरा धोनेकी-अवधारण भी धोनेकी के लकड़ों बनाने के लिए लकड़ों बनाने में। दिनचिह्न नामक एक धोनेकी शिक्षक रचे गये थे। मि० दिनचिह्न बेनिस नगर के बड़े लकड़ों थे। उनके पास बेनिस के बच्चों का एक बहुत बड़ा संरक्षक था। कुछ बड़े-बड़े बिना लकड़ोंकर उन्होंने अपने कपड़े में लकड़ों के धीरे छोटे-छोटे बच्चों के कई एक बनाने दिये थे। जब कभी किसी प्राकृतिक दुर्घटना या कभी किसी नगर के सौन्दर्य की बात निकलती तो मि० दिनचिह्न बेनिस की बात बताने करते धीरे कहते कि बेनिस दुर्घटना का स्वर्ण है।

स्वर्ण के बाहर धोने की धोने बेनिस का सौन्दर्य हीक पढ़ने लया। लकड़ोंक बनिस एक बिचित्र नगर है धीरे उसकी लकड़ों बड़ी बिचित्रता है धोनेकी पानी की लकड़ों तथा पत्तियों। बेनिस का सारा पाताप्यात बच्चों धीरे मोटर बोटों द्वारा होता है।

बेनिस उन धोनेकी नगरों की तरह नहीं है जिन्हें प्राकृतिक बरदान प्राप्त होता है। उसकी को कुछ प्रदान किया है मानव ने ही अपने मन से प्रदान किया है। बिचरीत परिस्थितियों का सामना करके भी समुद्र को कुछ कर सकता है। बनिस इसका स्वर्ण उदाहरण है।

बेनिस नगर बड़े धोनेकीपित रूप से बसाया गया है। यह साठे इक्कीस मोल नम्बरा है धीरे तथा तेरह मोल छोड़ा।

हम एक बॉय पर बैठ, उसी पर अपना सामान रख किसी होटल की ओर में रहना हुए। हमारा बॉय धोनेकी पानी की लकड़ों धीरे पत्तियों को पार करता हुआ पानी के ही उस बरदान में पहुँचा था जिसके चारों धीरे बेनिस की प्रदान इमारतें बनी हुई हैं। जिस पानी की लकड़ों धीरे पत्तियों को पार करता हुआ हमारा यह बॉय इस पानी के बरदान में पहुँचा था, उनमें से धोनेकी लकड़ों धीरे पत्तियों का पानी बहुत बड़ा ही गया था धीरे कई इमारतों पर तो बरबू भी था रही थी। बच्चों तक पानी के एकत्रित रहन का ही यह परिणाम था। धीरे यह बच्चों कि लकड़ों की कोई व्यवस्था न हो, यदि लकड़ों की कोई व्यवस्था न होती तो नगरों का यहाँ रह सकना ही कठिन हो जाता।

बेनिस के पानी के इस बरदान की इमारतों में से धोनेकी में होटल भी है। बड़ी कठिनाई से हमें 'द्रीनिंग' नामक होटल में जगह मिली।

मिश्य कब से विभूत हो हम मार्ग-प्रदर्शक के एक समुदाय के साथ बेनिस देखने रहना हुए। इस मार्ग प्रदर्शक की व्यवस्था धीरे धोनेकी मार्ग-प्रदर्शकों में यही अन्तर था कि धोनेकी मार्ग-प्रदर्शक मोटर बोट में धोनेकी की ले जाती थे धीरे यह मार्ग

प्रदर्शक बार्कों को शोंवों में लेकर जाता ।

बेनिस में हम सड़ मार्क का विरजापर डोगेज का प्रासाद ललित कला प्रका-
शनी और सार्वजनिक बाग देखने गये । सड़ मार्क के विरजापर जैसी सुन्दर इमारत
तो नतीही बर्न बाने क्षेत्र में इनीगिनी मिलेपी और जिस प्रकार धार्मिक क्षेत्र में
सैट मार्क की इमारत अण्ड और सुन्दर है उसी प्रकार डोगेज का प्रासाद पौरव और
ऐश्वर्य का केन्द्र है (चित्र नं० ४ से ४४) ।

सन्ध्या को अपने होटल के पीछे के कुछ भागों को हमने पैंदल ही घूमकर देखा ।
जब हम होटल में रात्रि का भोजन कर रहे थे तब बिजली की बलियों से लगी हुई
एक नाब हमारे सामने से निकली । इस नाब में एक सुनीला धारबेस्ता बज रहा था
और एक चुबली गा रही थी । सुना कि इस पानी के संभाल में हर दिन रात्रि को यह
नाब गाना प्रकार के बाद्य-यन्त्र बजाती और गाती हुई निकलती है ।

दूसरे दिन तीसरे पहर की गाड़ी से हम स्विटजरलैंड जाने वाले प परम्तु रास्ते
में इटली क्षेत्र का एक प्रधान व्यापारी केन्द्र मिलान नामक नगर पढ़ता था । घनध्याम
हाल और जगमोहनदास दोनों इस नगर में ठहरना चाहते थे अतः हमने ता० १ अगस्त
का दिन मिलान को देना तय कर लिया था । दोपहर को ३ बजे हमारी गाड़ी बनिस से
रवाना होकर ५ बजे के लगभग मिलान पहुंची । मिलान में हम लोप रैलिस नामक
होटल में ठहरे । होटल एकदम नया बना था और हर प्रकार की नवीन सुविधायें होटल
में मौजूद थीं । मिलान में कोई विशेष बात न थी पर व्यापारी केन्द्र होने तथा एक
नवीन ग्रहर होने के कारण अब तक देखे हुए इरली के सब ग्रहरों की अपेक्षा मिलान
हमें अधिक सम्पन्न दिखाई दिया । बड़े-बड़े नये मकान और लाक-सुधरी सड़कें । रात्रि
को हम एक इटैलियन तिनेमा देखने गये । किन्तु मैं इटैलियन भाषा के सिवा और
कोई नयी बात न थी ।

दूसरे दिन घनध्यामदास और जगमोहनदास शहर में घूमने गये । मैंने फिर
अपना समय इस पुस्तक में लगाया ।

मिलान से हमारी गाड़ी ३ बजे के लगभग रवाना हुमी थी और ज्विनीका
पहुँचती थी रात्र को ६ बजे के करीब । रास्ते में हम अस्पत पैंदल धेरी को पार करने
बाने थे और इस घाटा के कि स्विटजरलैंड के रजलीय दृश्य देखन को मिलत है हमारे
मन अत्यन्त उत्साहित थे ।

अधना सामान से हम स्थान पहुँचे और डीक समय हमने इरली देश से स्विट
जरलैंड को प्रस्थान किया ।

इटली देश और उसकी समस्याएँ

भूमध्यसागर में इटली देश की स्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण है। समूचे भूमध्य सागर को मानों बहु दो क्षेत्रों में विभक्त करता है। पश्चिम में कोई सवा तीन लाख बर मील लम्बा है और पूर्व में लगभग इसका दूना। इसके अतिरिक्त इटली का दक्षिणी छोर और सिचली लगभग प्रायद्वीप पश्चिमीय को छूते हुए हैं। इस केन्द्रीय स्थिति के कारण किसी युग में रोम का प्रभुत्व लगभग सारे यूरोप और प्रायद्वीप के उत्तरी भाग पर छाया हुआ था।

महान् रोमन साम्राज्य का विकास इटली की केन्द्रीय स्थिति और इस देश के उस काल के अत्यन्त कर्मक ईसासिद्धियों के कारण ही सम्भव हुआ। पाँचवीं शताब्दी तक ही रोम का प्रभुत्व भूमध्यसागर के अर्धेस यूरोप के कुछ भाग और निकटपूर्व में बना रहा। सामाजिक अर्थ-पतन और उत्तर व पूर्व से होने वाले बहर आक्रमण रोमन साम्राज्य के पतन के बल कारण बने।

इटली की अन्तर्गत बहने भी लिका है एक ऊँचे पर्वतदार भूत की भी है जो एक तिफोने पापाएल सिचली को मानों छोकर लगाने वाला हो। अफिरकाय इटली पार्श्वय प्रदेश है। उत्तरी भाग में वो नदी बरबाल दिख हुई है। उत्तर में आल्प्स पर्वत इटली की आरिद्र्या स्थितकरलैंड और अन्त से अन्त किये हुए हैं।

त्रिजल समय आन्तक देश संसार की एक महान् शक्ति माना जाता था उस समय इटली के दक्षिणी भाग में कई भूनामी उपनिवेश थे। उपर उत्तर में कुछ लैटिन भाषि के लोगों ने रोम की स्थापना की। इस छोटे देश पर पहले कनेस राज्य करते थे, फिर इतने साम्राज्य का रूप धारण किया और रोम की सत्ता संसार में छात हुई। चौथी शताब्दी में रोम पूर्वी साम्राज्य और पश्चिमी साम्राज्य में बह गया। पूर्वी साम्राज्य त्रिजली राजधानी कुरनुवतुनिया को एक हजार बर तक अक्षता रहा। गीब बाइल हुई और मोम्बार्डी के आक्रमण और बराज्य होने पर ही रोम की शक्ति का ह्रास न हुआ और बीरे-बीरे लीडर का यह संभवशाली नगर लतीही पर्व का कैम्प तथा गोप का निवात स्थापन बन गया। १५३३ में कुरनुवतुनिया का पतन होने पर तुर्की से आने वाले विद्वानों

का इटली में कारण मिली और बाद में बौद्धिक जायति का वह महान् प्रान्थोलन बना जिसे 'रिनास्सि' कहते हैं ।

पन्नीसवीं शताब्दी में इटली की एकता और उसके संघटन का प्रारंभ हुआ । इटली की स्वतन्त्रता और एकता के निर्माता हैं मेडनी येरीब्राड्री और केसूर । इन दोनों व्यक्तियों की चर्चा बिना इटली का कोई भी इतिहास पूरा नहीं कहा जा सकता । मेडनी की नीतिधरा येरीब्राड्री के बल-प्रयोग, केसूर की राजनीतिक सूझबूझ से इटली ने वह रूप धारण किया जिसके कारण बाद में वह संसार के शक्तिशाली राष्ट्रों में गिना जाने लगा ।

इटली के इतिहास में मेडनी का बड़ा महत्त्व है । इस बात को समझनेवाला वह पहला व्यक्ति था कि इटली की एकता प्रयत्नताम्ब है । अपने इस विश्वास को अन्य व्यक्तियों में भी फूँकने में वह सफल हुआ । परिणाम यह हुआ कि इटली का नवयुवक रूप देश-प्रेम में मग्न हो उठा । इस प्रकार मेडनी इटली की स्वतन्त्रता और एकता का वेगम्बर सिद्ध हुआ । मेडनी का जन्म १८०५ में हुआ और मृत्यु १८७२ में ।

येरीब्राड्री ने तत्काल के दौर से इटली को एक करने का प्रयत्न किया । उसने सित्तली और नेपल्स पर विजय प्राप्त की और रोम पर भी थाबा बोसने की डानी, किन्तु इससे फ्रांस के साथ युद्ध धारम्भ हो जाने का खतरा था । यहाँ केसूर की राजनीतिक दूरबीनता न सहम्यता की । पहले नेपोलियन तृतीय के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित किये । इसका बिस्वास प्राप्त किया और सहायता भी और ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दो कि फ्रांस में रोम भी इटली का संघ बन गया । रोम की स्वतन्त्र और संपुष्ट इटली की राजधानी बनाया गया । और इस प्रकार मेडनी का स्वप्न साकार हुआ ।

येरीब्राड्री एक कुशल सेनापति था । मेडनी ने जो जीवनदायिनी दक्षिण अपने विचारों से उत्पन्न की थी और केसूर ने जिसे अपनी राजनीतिधरा से सुरक्षित बनाया उसे येरीब्राड्री ने बहुत ही तर्क नूतंरूप प्रदान किया ।

केसूर राजनीति शास्त्र का प्रकांड विद्वान् था और इटली के देश-भरतों में केवल इसी में यह अनुमान लगाया था कि बिदेसी सहायता के बिना इटली का उद्धार सम्भव नहीं ।

इटली की एकता और संघटन का काम बिस्टर हर्वनुमल के शासन-काल में सम्पन्न हुआ । वह १८६१ ईसवी में शासनाखंड हुआ था ।

घाटिया और जर्मनी के साथ बचाव सन्धि कर लेने पर भी इटली १८१२ में मित्रराष्ट्रों की और से बहुत महानुद्ध में सम्मिलित हो गया । बर्ताइल की सन्धि के पश्चात् इटली को काफी निराशा हुई क्योंकि न तो उठे भूतन्त्रतापर में मनोवाञ्छित

निष्पन्न लु स्वतः प्रकृतं हुयु धीर न कते उपनिवेशं बङ्गाने की ही सुविधा यिती । मुञ्जोतिनी ने इदली के इत प्रसभ्योप से लाम उकाकर १९२२ से १९४३ तक के समय में कते एक काठित्त राज्प का क्य ई रिया । पङ्कने पङ्क काठित्त राज्प काडी लङ्गिन्नु रङ्गु धीर बसने राष्पसंघ (लीन डॉक मेंघरत) के साथ काकी सङ्गयोग नी किय, पर बाद में कर्मनी की सङ्ग बाकर इदली साभ्राज्यवादी होने लवा । द्वितीय महायुद्ध में इदली ने कर्मनी के कापी के क्य में बवेश किय । धारम्भ में तो इदली धीर कर्मनी पक्ष की विजय होती रही किन्तु बाद में पीसा कसत कवा धीर १९४३ में इदली ने मित्रराष्ट्रों के सामने धारम्भसमर्पण कर रिया । इदली की हार का नी मूल कारण यही था जो अतसे दूसरे लानी देशों की हार का प्रयात् साधनों का प्रचुर न होना । अर्धनाम युग में युद्ध का तिलंब बाहुबल कसवा संभव्यता से नहीं होता, ही कुछ काल के लिए इनका प्रभाव अत्यन्त अतक ही तकता है । कर्मनी के पास प्रचय धेती की लेना थी और हकिवार भी धातुनिकसतम में किन्तु कब सङ्गई लङ्गी विजयने लगी तो धीरे-धीरे अतके साधनों में नी कसवा दे रिया । इकर मित्रराष्ट्रों के पास साधन का बाहुबल था । सङ्गई में माल लेने वाले प्रमुख देश थे—कत ब्रिटेन अंत धीर अमेरिका । कत अत्यन्त विद्याल धीर साधन सम्पन्न देश है । ब्रिटेन के अपने साधन कस प्रचय है पर उसे राष्ट्रमंडल धीर अपने अपीन उपनिवेशों से लव कुछ प्रचुर मात्रा में अत्यन्त हो जाता है । अंत का ह्रास लनी को विदित है जो बाहुत कुछ अपीनी कसबोरी धीर नेताधों की अतिविशत मनोबुलि के कारण अत्यन्त अीप्र कर्मन एकी के नीचे धा मवा था । अमरीका नी अत की तरह बहुत साधनों काता देश है । इत प्रकार इदली, कर्मनी धीर अतके हिवायती देशों के साधनों की तुलना में मित्रराष्ट्रों के साधन कहीं अधिक थे । इसलिये युद्ध के अन्त में विजय किलती होती इधमें तो किली को लगेह ही नहीं था ।

यहाँ किली भावी युद्ध की अन्नावना के सम्बन्ध में कुछ विचार प्रामुख करना अनुचित न होय । विद्वानों धीर दूरदर्शों लोपो का मत है कि यदि अविश्य में कोई युद्ध हुपा तो वह लोवल युद्ध होवा कर्नात् अमूची पृथ्वी को अपनी लपटों में लिये रिया न रहेय । पूरी सम्भावना इत मत की है कि इतसे पृथ्वी का विनाश ही हो जाय । इतका कारण लम्पता धीर विज्ञान के प्रगति के साथ-साथ युद्ध का क्य कद लते जाता है । पहले युद्ध बाहुबल पर निर्भर होता था । अतके धरीर में अत अीक होता था वह कस बलमाती को इबोच जालता था । अिद राश्रों का युव धाया अतके माल धात्र अणठे होते थे वह अिकम्मे धात्र धाश्रों को परास्त कर तकता था । स्मरल रहे कि भारत वर युगत साभ्राज्य ङा काने का एक कारण यह थी था कि धावे धाश्रों के पास धात्र धीर लीनिक सामान अतिक उपयुक्त था । इतके अथराल यह विधि ही

नयो कि जिसके सावन घबिक हूँ धरत में सड़ाई बही बीत सकता हूँ । दूसरे महायुद्ध के समय यही स्थिति थी । किन्तु अब धरत सस्त्रों का युग हूँ । अब बात की बात में घरूर के घरूर समाप्त किये जा सकते हूँ घोर कृमि कीड़ाहूँ खेसाकर दूर-दूर तक लोयों की निरिक्म बनाया जा सकता हूँ ।

अब हम फिर अपने मुख्य विषय पर आते हूँ । इटली भूमध्यसागर के तुर्की प्रांत घोर स्पेन आदि देशों से घाकार में छोटा हूँ । दोनों महायुद्धों के पश्चात् उसकी क्यरेखा में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ । द्वितीय महायुद्ध के पूर्व जर्मनी की तरफ इटली भी बहुधा बगहूँ की कमी की सिफायत करता था । मुसोलिनी हिटलर के स्वर में स्वर मिलाकर कहते थे कि हमारे पास जगह कम हूँ और हमारी आबाही अधिक हूँ । मेरे विचार से इटली के अग्य अभाव अधिक बढ़ने वाले हूँ—कैसे कि साधनों की कमी बुरी बलवायु, देश के अधिकतर भाग का पठारी होना और बदरगाहों का अभाव । इसके अभावो संनिक दृष्टि से भी उसकी स्थिति काफी अतरनाक हूँ ।

इटली की अर्थ-व्यवस्था पर विचार करते हुए उस भीषण विनाश को याद रखना आवश्यक है जो द्वितीय महायुद्ध के कारण हुआ । इटली युद्ध का एक प्रमुख स्वतल का घोर घनी आबाही होने के कारण विनाश की विभीषिका हिमुलित हो गयी थी । इसके प्रतिरिक्त केन्द्रीय स्थिति होने के कारण इटली मित्रराष्ट्रों के आक्रमण का शिकार हुआ घोर अनु राष्ट्रों के आक्रमण का भी ।

युद्ध से पूर्व इटली में उसकी आवश्यकता का २४ प्रतिशत भाग पैदा होता था । युद्धकाल में इस उत्पादन में काफी कमी हो गयी और अब तक भी स्थिति को पूरी तरह सुधारा नहीं जा सका हूँ । इटली के उद्योग की स्थिति घोर भी वितात्मक है । युद्धकाल में विजली उत्पादन करने के अनेकों केन्द्र बन्द हो जाने से अब कारखानों के लिए काफी विजली प्राप्त नहीं होती । ऊपर इटली की भूमि-समस्या भी बढ़ित हूँ । जली के तरीके भी आयुनिक्रम नहीं हूँ और भूमि की उपजाऊ अस्थि में भी कमी हूँ । किन्तु इतका यह तात्पर्य नहीं कि इटली के उद्योग व्यापार घोर कृषि के विकास की अधिक्य में भी अत्राचना नहीं । पर यह स्पष्ट हूँ कि आर्थिक स्थिति में सुधार किये बिना राष्ट्र को संकटमुक्त नहीं किया जा सकता । संयुक्त राष्ट्र इटली की काफी सहायता कर सकेया इसमें सन्देह नहीं ।

आज इटली यूरोप का साम्य सबसे गरीब देश हूँ । इसके प्रतिरिक्त इटली की राजनीतिक स्थिति बिता का कारण बनी हुई हूँ । यद्यपि एन तरफ इटली प्रांत से अधिक सोमाध्यतामी है क्योंकि जहाँ प्रांत में आये दिन सरकारें बदलती रहती हूँ वहाँ इटली में युद्ध-काल के पश्चात् सीमोर जो नास्पेटी की ही सरकार बनी हुई हूँ किन्तु सामाजिक अस्तित्व से लाभ उठाकर विभिन्न राजनीतिक पार्टियों

की उन्नतता के प्रयत्न में रहती हैं। पिछले दिनों होने वाले चुनावों में यद्यपि सीनोर की पास्वेदी ही बिजयी रहे और उन्होंने सरकार बनायी किन्तु उनकी बहुत कम शक्ति प्राप्त नहीं हुई। इटली की कम्युनिस्ट पार्टी भी अधिक प्रबल है। कहा जाता है कि इटली की कम्युनिस्ट पार्टी दुनिया में तीसरे नम्बर की पार्टी है। इसके नेता सीनोर बोबसियाटी हैं।

धरत में हम लते हैं इटली की अन्तर्राष्ट्रीय नीति को। संश्लेष में इटली अल्प सभ्यता की नीति पर चलता रहा है। जब भी उसे अपने विकास का अपने को धरत बढ़ाने का अवसर मिला उसने उसे हाथों से निकलन नहीं दिया। इटली का मत तीन हजार वर्ष का इतिहास पत्तन और परवान, उत्पादन और पत्तन की ही कहानी है। कसा और विज्ञान का कदाचित ही ऐसा कोई क्षेत्र हुआ जिस पर इटली की प्रतिभा का चिह्न प्रकृत न हो। चाकिर की इटली बंते मार्को पोलो लियो नावो वा बिंसी, गैस्तोलियो और मारकोनी का देश है। इटली बहु देश की सत्ता के कलाकारी की सदा ही श्रिय रहा है।

यूरोप के उस देश में जिसे प्रकृति ने सबसे अधिक रमणीयता दी है

मिलान से चलकर जब हमारी ट्रेन रिब्रज्जरलैंड की तरती पर घायी एक कैम्पोकोलोमो स्टेशन पर रेल के डब्बों में ही यात्रियों के पासपीठों घाटि की बाँध हुई। हमारे पासपोर्टों घाटि की बाँध भी हमारे डब्बों में ही हुई। इस काम में बैसी देर नहीं लगी बैसी हुआई घड़्यों पर लपती हूँ और इसके बाद ही ब्रास्पस् की पर्वत चोलियाँ धारम्भ हुईं। यद्यपि ये चोलियाँ कुछ पहले से ही मिलने लगी थीं पर अब इनकी उँचाई और पहलता बढ़ने लगी। हम समझते थे कि मिल प्रकार भारत में मिलता दार्जीलिंग घाटि की रेलें बहाड़ों पर घूम-घूम पर चढ़ती हूँ और कभी-कभी तो रेल की पाली के घुमावदार चार चार रास्ते एक साथ बीछ पड़ते हैं वैसा ही रिब्रज्जरलैंड के मार्ग में होना पर यहाँ बसा न हुआ। मैदानों के सङ्घ मार्ग सीधा था ही मुकामें बार-बार मिलती थीं और इनमें कई काफी समी थीं। दोनों ओर पर्वत-चोलियाँ थीं कहीं ऊँची कहीं नीची कहीं बूतों से ढकी हुई लपन हरी कहीं बिना एक भी वरण के एकदम नयी। बहुत ऊँची चोलियों के झररी तिकरों पर बरक के भी बघन हुए, जो घनेक स्वर्णों पर सूर्य की इबेत किरणों में हीरे के डेरों के सङ्घ चमक रहा था। कभी कभी बल प्रबल भी बुद्धिबोधर हो जाते थे और कभी कभी पर्वतों के चरणों में बहुती हुई पहाड़ी तरिताएँ। एक स्थान पर ऐसी ही एक नदी का तीर इतना लछेर था कि जान पड़ता था कि बहु तीर की नदी न होकर और की नदी है। रेल बिजली से चलने वाली होने के कारण तेजी से चली जा रही थी और रेल की उस तेज चाल के कारण जान पड़ता था कि दोनों ओर के पहाड़ हमारे पीछे की ओर ओर से भागे चले जा रहे हूँ। सारा दृश्य अत्यन्त मनोरम था इतमें लगेह नहीं, बरन्तु इस दृश्य में विशाल प्लोतों के मिलने तक हमें कोई नवी बात न मालूम हुई। भारत में काश्मीर प्रबला मसुरी, दार्जीलिंग घाटि के बहाड़ी दृश्य भी ठीक ऐसे ही हैं काश्मीर की उपत्यका के तो कई स्थानों पर इन दृश्यों से भी बहो घाँक।

कुछ समय पहले तक इस बात पर कई बार विचार चल पड़ता था कि काश्मीर अचिक सुन्दर है या स्विट्जरलैंड पर बिन्नीने दोनों स्थानों को देखा है उनमें से अचिकलॉय लोय अब यह मानने लगे हैं कि काश्मीर स्विट्जरलैंड से अचिक रमणीय है। हाँ, काश्मीर में जो कुछ किया है प्रकृति ने मानव ने प्रकृति की देन को और अचिक परिष्कृत करने का बहुत थोड़ा प्रयत्न किया है। स्विट्जरलैंड में प्रकृति से मानव को जो कुछ मिला है उसे मानव ने और अचिक सुन्दर तथा रमणीय बना दिया है। ली जिनीवा भील अथवा लोमान भील मिलने तक हमें सारे दुश्म में उसके अत्यधिक सुन्दर होने पर भी कोई नवीनता दुष्प्रिगोचर नहीं हुई पर ज्यों ही जिनीवा भील के दर्शन हुए त्यों ही सारे दुश्म में एक नवीनता आगयी। यद्यपि काश्मीर को उपत्यका में भी अनेक झीलें हैं पर इतनी बड़ी कोई नहीं। जिनीवा भील की लम्बाई २५ मील और अचिक से अचिक चौड़ाई २ मील है। यह अग्राकार है। भील के सब घोर डेँबी-डेँबी पहाड़ियाँ हैं जिनमें से कई के शिखरों पर सदा बरफ जमा रहता है। अचिकलॉय पहाड़ियाँ हरे नीले घोर देखाव तटधर्मों से आच्छादित हैं। ऊपर के शिखरों पर जमे हुए श्वेत बरफ घोर उसके नीचे हरी लच्छ; इन पहाड़ियों के भील के जल में प्रतिबिम्ब पड़ने से दुश्म अत्यन्त सुहावना था। लम्बा ही रही थी। आकाश के विमल न होने के कारण दुश्म को और अचिक सुन्दर मिला गयी थी, क्योंकि बालों को अस्त होते हुए अचिक की मण्डलों ने कहीं अस्त घोर कहीं सुनहरी बना दिया था। इन रंगों का प्रतिबिम्ब बरफ से डके हुए श्वेत शर्वतों के शिखरों, हरे तटधर्मों और भील के नीले नीर पर अनीका रंग बरसा रहा था। कुछ घोर शंभेरा होने पर भील के उस वार बसे हुए छोटे-छोटे गाँवों में बिजली का प्रकाश जाता। अब तो हमारे केप के चलती हुई ट्रेन की चाल के कारण घारा दुश्म एक स्वप्न भूमि-ता जग पड़ने लगा। हम सब तक इस दुश्म को निमित्त दुष्प्रि से देखते रहे जब तक रॉबेरी की काली आवर ने लारे दुश्म को अककर हमारी आँकों से अकल न कर दिया।

हमें लुलान स्टेशन पर गाड़ी बदलनी पड़ी। यहाँ से जिनीवा पहुँचने में केवल कुछ ही मिनट लगे। जिनीवा पहुँचते ही स्टेशन पर हमें एचर इण्डिया इन्टरनेशनल के प्रतिनिधि मिले जिन्हें हमारे जिनीवा पहुँचने की लुलाना स्विट्जरलैंड के भारतीय लुलाना ने बर्न के अजी भी घोर किसी अचिके होटल में हमारे अहरने का प्रबन्ध करने की कहा था। इन सगुन से मालूम हुआ कि लो रॉबेरी होटल में हमारे अहरने की अचिकता की गयी है क्योंकि भील के किनारे के होटलों में जो जिनीवा का अचिके अचिकता स्वाग माना जाता है कोई अचिक नहीं मिल सकी।

अब हम अचना अस्तबाव लेकर स्टेशन से बाहर निकल रहे थे उस लमब यी अनीककाय अस्तबाव को हमारे स्वागत की लुलाना यथे। यी अस्तबाव बर्न से अहर

यूरोप के बस देरा में जिसे प्रकृति ने सब से अधिक रमणीयता दी है ७६

द्वारा लगभग १०० मील दूर यहाँ प्राये से घोर भारतीय बुताबास का पत्र ली लाये। लक्रे द्वारा स्विटजरलैंड में हमारा स्वागत किया गया था। इस स्वागत में घोर : विप्रेयता इसलिये प्रा यवी थी कि वी प्रप्रवाल अपमोहनबास के मित्र से घोर :य बुताबास के राजदूत वी भारतकथली (जिनकी प्रा मत्पु हो चुकी है) से पत्र :यों से राजनैतिक क्षेत्र में कार्य करने वाले मेरे साबियों में एक।

यहूने हम लोय होडल पहुँचे। इस समय रात के १० बज रहे थे। मानूम कि होडल का रैस्टराँ ट।। बने ही बग्न हो जाता हूँ घत हुमें किसी प्राय्य बग्न : की जाना होया। प्रायना सामान होडल के कमरों में जमा कर हम वी प्रप्रवाल :व एक प्राय्य रैस्टराँ में भाजन को पहुँचे। भोजन करते-करते ही हम लोपो ने :प्रवाल की सहायता से स्विटजरलैंड घूमने का प्रायना कार्यक्रम बनाया।

वी प्रप्रवाल की हुतरे दिन प्रायने प्राकित्त बना था। घत से हुमें रात्रि :जिनीबा के कुछ प्रायों में घुमर होडल में पहुँचा, रात को हो बने लीट प्राये। :प्रवाल ने अपमोहनबास की मित्रता के कारण ही बने से जिनीबा ली मील :भाने का पत्र कप्ट उठाया था।

हुतरे दिन से हुमने स्विटजरलैंड घूमना आरम्भ किया। देरा का कुछ विस्तार :प्रायतः मनोरम हिस्सों में एक, हम मार्ग में रेल से देखते हुए प्राये से, घेय में :हुक प्राय ह्य प्रायने कार्यक्रम के तीन दिनों में देख सकते थे।

सबसे पहूने हमने जिनीबा नगर देखा। प्राकृतिक दृष्टि से नगर प्रायतः :य स्वात नर बना हुआ है। चारों तरफ की पहाड़ियों के बीच एक समतल भूमि- :। नर प्राय नगर बनाया गया है। इस भूमि-बग्न की घोना चारों घोर की सघन :पानी तथा बीच की भूत के कारण बहुत बड़ नहीं है। इमारतें एकदम प्रायु :। बंग की हूँ। सड़कें ली काफ़ी चौड़ी घोर लाफ हूँ। घाहूर में घुरी सफ़ाई रखने :घुरा-घुरा प्रायन रखा जाता है। नगर बहुत बड़ा नहीं, छोटा ही है।

भूत में एक स्वात नर पानीका एक कम्बारा बना करता है (विषय नं० ४३)। :कम्बारे की देख नूने न्यूजीलैंड में बग्न की भूत में से कमी-कमी बीच बीच ली :ईने उठनेवाले कम्बारे प्राह प्रा गये। जिनीबा की भूत का बहु कम्बारा न्यूजी- :के इन कम्बारों के समान ही वा प्रातर इतना ही वा कि न्यूजीलैंड के से कम्बारे :। नहीं बनते थे, बीच-बीच में बनने लगते घोर इस कम्बारे से कहीं ईने उठते घोर :। बग्न हो जाते। ये प्रायने प्राय बनते, किसी मानव निर्मित नमीन से नहीं। :मीबा की भूत का बहु कम्बारा मानव की लृष्टि हूँ घत नरा बना करता है। :रेलिय इते देखने की बतनी उलकषा भी नहीं चूती जिनीबा कमी-कमी उठनेवाले :मीलैंड के कम्बारों की।

जिनीवा की घाबारी सवा लाख से भी कम है। यों तो स्विट्जरलैंड ही बहुत छोटा देश है। क्षेत्रफल है १५ हजार २४० वर्गमील और घाबारी है ३२ लाख २२ हजार १६४। ऐसे छोटे से देश के नगर तो और छोटे होने चाहिएँ, पर देश की घाबारी को देखते हुए यहाँ के नगरों की जनसंख्या अधिक कही जा सकती है। स्विट्जरलैंड के सबसे बड़े नगर है जिनोवी घाबारी एक लाख से अधिक है। इनमें से राजधानी बर्न की घाबारी १ लाख ३० हजार, बूरिच की घाबारी ३ लाख ३६ हजार, बेसल की घाबारी १ लाख ६२ हजार और जिनीवा की घाबारी १ लाख २४ हजार है। जिनीवा का नाम स्विट्जरलैंड के बड़े नगरों में तीसरा आता है। यह न इस देश की राजधानी है और न व्यापारी केन्द्र, परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय बुद्धि से जिनीवा का बड़ा महत्व है। इसका कारण है यहाँ लीप फॉक मेथान का बयों तक बज्जतर रहना और अन्तर्राष्ट्रीय अनेक परिषदों का होना। फ्रांस के समीप होने के कारण यहाँ के प्रवेश में ऑब-मापी अधिक रहते हैं। बेसल जर्मनी और स्विट्जरलैंड के बीच सम्पर्क और आदान प्रदान का मार्ग है। जिनीवा उसी प्रकार फ्रांस और स्विट्जरलैंड के बीच आदान प्रदान का मार्ग है। दोनों ही नगरों एक-एक मुनिबलितरी हैं। बूरिच का महत्व व्यापार तथा रेल-केन्द्र होने के नाते है। बूछरा कारण यह है कि यहाँ स्विट्जरलैंड की अकेली डेमिनकन मुनिबलितरी है। सारे यूरोप में यह निराली बात स्विट्जरलैंड में ही है कि बर्न देश का सबसे बड़ा नगर न होते हुए भी यहाँ की राजधानी है।

जिनीवा में हमें कोई पुराने कण्डहर आदि नहीं मिले परत एक घंटे के भीतर हमने सारा नगर ब्रून जाना। पुराना प्राकृतिक लीग्वर्म और नदीन इमारतें तकड़ें इत्यादि तथा इनकी स्वच्छता के प्रतिरिक्त अन्य कोई बर्जनीय स्थान देखने को न था। यहू की पुमाई समाप्त कर हम लीप फॉक मेथान का बज्जतर देखने चहुँके। यह इमारत और यहाँ का सारा कार्य देखने योग्य था (चित्र नं० ४६ ४७)।

सबसे पहले यहाँ पहुँचकर हमने रोप्हर के भोजन से निवृत्त होने का निश्चय किया। एक बज रहा था परत यहाँ के नियमानुसार बज्जतर का काय १२॥ बजे से २॥ बजे तक बन्द रहता है। यह भी एक कारण हुआ हमारे भोजन से निवृत्त होने की इच्छा का। इस इमारत में ही रैस्टरी का परत भोजन के लिए किसी अन्य अप्पु जाने की भी आवश्यकता नहीं थी।

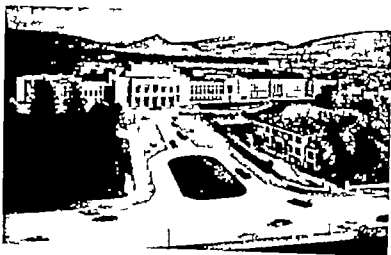
ठीक साईं बजे एक मार्ग-प्रदर्शक के साथ जो एक बड़े-ले समुदाय की भवन दिखाने से जा रहा था हम लीप भी हो गये।

इस माप प्रदर्शक का काम समाप्त होने पर हम लोगों ने कुछ लोगों से मिलने और यहाँ का पुस्तकालय देखने का विचार किया। अब हम लोगों ने अपना

४१ विनीषा की नीस
का प्रसिद्ध पार्कार



४२ सींग फ्रीड मेण्डस
की इमारत विनीषा



४७ विनीषा में सींग फ. मेण्डस की इमारत के सामने का विचित्र मन्दिर—

जिनीवा की धारावाही तबा नाब से भी कम है। यों तो स्विटजरलैंड ही बहुत छोटा देश है। क्षेत्रफल है १५ हजार २५० वर्गमील और धारावाही है ३२ लाख ५२ हजार १६४। ऐसे छोटे से देश के नगर तो और छोटे होने चाहियें, पर देश की धारावाही को देखते हुए यहाँ के नगरों की जनसंख्या अधिक कहीं जा सकती है। स्विटजरलैंड के सबसे बड़े चार नगर हैं जिनकी धारावाही एक लाख से अधिक है। इनमें से राजधानी बर्न की धारावाही १ लाख ३ हजार औरिच की धारावाही ३ लाख ३६ हजार, बेसल की धारावाही १ लाख १२ हजार और जिनीवा की धारावाही १ लाख २४ हजार है। जिनीवा का नामर स्विटजरलैंड के बड़े नगरों में तीसरा आता है। यह न इस देश की राजधानी है और न व्यापारी केन्द्र बरन्तु अन्तर्राष्ट्रीय बुद्धि से जिनीवा का बड़ा महत्व है। इसका कारण है यहाँ लोग प्रौद्योगिक नैदान का क्वों तक उत्तर रहुवा और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध बरिपरों का होना। फ्रांस के समीप होने के कारण यहाँ के प्रदेश में प्रौद्योगिकी अधिक रहते हैं। बेसल बर्न की और स्विटजरलैंड के बीच सम्बन्ध और आवागमन का मार्ग है। जिनीवा उसी प्रकार फ्रांस और स्विटजरलैंड के बीच आवागमन का मार्ग है। दोनों ही नगरों में एक-एक प्रतिनिधि है। औरिच का महत्व व्यापार तथा रेल-केन्द्र होने के नाते है। इसका कारण यह है कि यहाँ स्विटजरलैंड की एकैली डेलिगफल प्रतिनिधि है। सारे यूरोप में यह निरासी बात स्विटजरलैंड में ही है कि बर्न देश का सबसे बड़ा नगर न होते हुए भी यहाँ की राजधानी है।

जिनीवा में हमें कोई पुराने सभ्यता के प्रमाण नहीं मिले आता एक घंटे के भीतर हमने सारा नगर घूम आता। पुराना प्राकृतिक लोचर्ष्य और नवीन इमारतों सड़कें इत्यादि तथा उनकी स्वच्छता के प्रतिरिक्त अन्य कोई बर्णनीय स्थान देखने को न पा। सहर की बुवाई समाप्त कर हम लोग प्रौद्योगिक नैदान का उत्तर देखने पहुँचे। यह इमारत और यहाँ का सारा कार्य देखने योग्य था (चित्र नं ४६ ४७)।

सबसे पहले यहाँ पहुँचकर हमने बोचर के भोजन से निवृत्त होने का निश्चय किया। एक बन्न रखा था आता यहाँ के निमामानुसार उत्तर का काम १२॥ बजे से ३॥ बजे तक बन्न रहता है। यह भी एक कारण हुआ हमारे भोजन से निवृत्त होने की इच्छा का। इस इमारत में ही रैस्टो या आता भोजन के लिए किसी अन्य व्यवस्था की भी आवश्यकता नहीं थी।

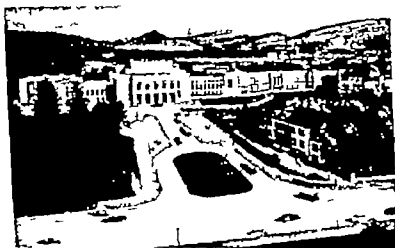
ठीक डार्क बजे एक मार्ग प्रदर्शक के साथ जो एक बड़े-से समुदाय की भजन बिकाने से आ रहा था, हम लोग भी हो गये।

इस मार्ग प्रदर्शक का काम समाप्त होने पर हम लोगों ने कुछ लोगों से मिलने और यहाँ का पुस्तकालय देखने का विचार किया। अब हम लोगों ने अपना

तीरा की श्रील
विद्युत् पत्थाण



सीय प्रौड निगम
इमारत तिमोबा



१७ तिमोबा में सीय प्रौड निगम की इमारत का सामन का विचित्र मन्दिर



४८. प्रकृति की गोद में प्रकृति के दो मनोहर प्राणी स्विट्जरलैंड



४९. बर्न के प्रसिद्ध भालू

वरिष्ठ के देना जबतक समझा। क्योंकि वहाँ के लोगों को जयमोहनदास का धीर मेरा वरिष्ठ-वत्त मिला, उन्होंने तत्काल हमें बुला लिया और लोग फ्राँक नेदरल तथा यू एन ओ के सम्बन्ध में उनकी धीर हमारी काफ़ी लम्बी बातचीत हुई।

इस बातचीत के अन्त में जब हमने उनकी अपनी पुस्तकालय देखने की इच्छा प्रकट की तब उन्होंने पुस्तकालयाध्यक्ष को फोन कर था। बने उनसे हमारा एपाइन्डमेन्ट कराया। धमी करीब ४ बने थे। इस घाबे घष्टे में उन्होंने हमें नीय फ्राँक नेदरल की ऐतिहासिक घटनाओं के संग्रह को देखने की सलाह दी।

ठीक था। बने पुस्तकालयाध्यक्ष घाबे धीर उन्होंने हमें पुस्तकालय दिखाया। यहाँ ऐतिहासिक राजनैतिक और धार्मिक तीन विषयों की पुस्तकों का बड़ा सङ्ग्रह संग्रह है। कितने ही प्रकार के विश्वकोश यहाँ संग्रहित हैं और सारे संसार के कितने ही देशों के उपर्युक्त विषयों पर पत्र-पत्रिकादि घाबे हैं। पुस्तकालय की सारी व्यवस्था विशेषकर पुस्तकों की सूची रखने का तरीका भी बर्दाभीय है।

यूरोप के अब तक के बारे में प्राचीन स्थायी को छोड़ हमने को स्पान और बस्तुएँ देखी थीं उनमें इस पुस्तकालय का स्थान तर्जोपरि था।

नीय फ्राँक नेदरल की इस इमारत और पुस्तकालय को देखने के पश्चात् जब इन अपने होमल को लौट रहे थे तब समय हमें नीय फ्राँक नेदरल की स्थापना से लेकर अब तक अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक प्रयत्नों का तथा उनकी अक्षमताओं की एक के बाद एक घटनाओं का स्मरण घाया। सन् १९१४-१५ के युद्ध के बाद अमेरिका के उस समय के प्रेसीडेंट श्री वुड्रोविल्सन की राय का परिणाम नीय फ्राँक नेदरल की स्थापना थी। अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक का यह पहला व्यापक प्रयत्न था इतने सन्नेह नहीं। पर इसकी सबसे बड़ी धारमिक टु बिडी यह हुई कि जिस देश के राष्ट्रपति की राय के अनुसार इस संस्था की स्थापना हुई बही देश इस संस्था में सम्मिलित नहीं हुआ। नीय फ्राँक नेदरल ने बिश्व में धार्मिक स्थापित रहे इसके कम प्रयत्न नहीं किये, पर इन प्रयत्नों के बावजूद सन् '१९ में सन् १९१४-१५ से भी कहीं बड़ा धीर नैबल सपाम किर हुआ और नीय फ्राँक नेदरल समाप्त हो गयी। इस युद्ध के बाद नीय फ्राँक नेदरल के सङ्ग ही यू एन ओ. की स्थापना हुई है। यदि बारीकी से देखा जाय तो नीय फ्राँक नेदरल और यू एन. ओ. में नाम के सिवा अन्ध अन्तर अन्त कम है। ह्रीं एक अन्तर अन्ध है—नीय फ्राँक नेदरल में अमेरिका सम्मिलित नहीं हुआ था पर यू एन ओ. में तो बही सम्मिलित है। जो कुछ ही, प्रश्न यह है कि यदि नीय फ्राँक नेदरल अक्षम नहीं हुई तो क्या यू एन ओ. को सफलता मिलनी? उत्तर सरल नहीं है। अब तक यू एन ओ. को भी सफलता नहीं मिल रही है। यू एन ओ. के रहते हुए ही कोरिया की लड़ाई हुई और धार्मिक के अन्धक यू एन ओ.

ने उत लड़ाई में सबसे अधिक अग्रगण्य भाग लिया। क्या उतनें यही कि शांति को स्थापित रखने के लिए ही वह कोरिया का युद्ध कर रहा है पर धात्र को भी युद्ध में सम्मिलित होते हैं। सब अपना बहु बहुधन खताते हैं। वह समय जब भीत पपा जब युद्ध विजय के लिए लड़ा जाता या और किसी को विजय करना एक महान् वस्तु मानी जाती थी। धात्र युद्ध होता है शांति के लिए। यू एन जी के पहले हुए बहिल्ल दक्षिण में वहाँ के धरदेश निवासियों को मानवोचित अधिकार नहीं मिल रहे हैं और भी मानवोचित अधिकारों के लिए शांतिमय सत्याग्रह करना चाहते हैं उन पर बोल जयाने जाने की लजा ही जाने लगी है। इस समय सभ्य कहे जाने वाले काल में अमीका के सभ्य श्वेत यह बर्बर दण्ड देने की व्यवस्था कर रहे हैं। क्या इससे अधिक कोई बर्बरता, महान् से महान् बर्बरता सम्भव है? हमारे देश के कदमीर मदन का भी यू एन जी. कोई हम नहीं निकाल सका है। क्या आत्मा भी युद्ध की यू एन जी. टोक लकैमा? कौन इसका उत्तर दे सकता है? पर इसी के साथ वह बात भी माननी होगी कि यदि विश्व का पूर्ण संहार नहीं होना है तो तीव्र प्रोक्त नैदान व्यवस्था यू एन जी किसी भी ऐसी संस्था का होना भी अनिवार्य है। संहार के विचारक सारे संसार की एक सरकार की सम्पना कर रहे हैं। विश्व-समाज के लिए सारे संसार की सरकार के अतिरिक्त अन्य मार्ग भी नहीं हैं। और यदि यह नहीं होता है, युद्ध नहीं करते हैं, तो धात्र नहीं तो कल और कल नहीं तो बरसों हमारे इस जगत का नाश व्यवस्था पावे है। जिस दिन बाबर ईसाई हुई थी, कौन जानता था कि इस छोटे से विस्फोटक बर्बर के पश्चात् धीरे-धीरे मानवता कृष्ण और हाइड्रोजन बमों तक पहुँच जायगा। ऐसा भी कोई बल बनना क्या किन्तु प्रत्यक्ष न ही कि जिससे हमारा भुवधल ही टुकड़े-टुकड़े हो जाय। क्या जाता है मानव-मन का निर्माण प्रकृति ने इस प्रकार का किया है कि युद्ध अनिवार्य है। मानव ने वास्तविक भाववार्त् प्रकृति की देन है यह से जानता है। राम-देव से रक्षित जीवन-मुक्त मानव ही हो सकता है वह भी मुझे स्वीकृत है। बरन्तु राम-देव व्यक्तियों के बीच होते हैं। व्यक्तियों के अन्तर्ग मानव समाज में लडा रहेने यह मुख्य मान्य है। लेकिन आधुनिक युद्धों में जो राम-देव प्रकृति से मानव को मिले है उतका कितना शंभ्र रहता है यह विचारणीय है। सेनाओं के बोझा जब एक दूसरे से लड़ते हैं तब क्या उनकी कोई व्यक्तिगत शान्ति रहती है? एरोपन जब जब बरतते हैं तब क्या किसी व्यक्तिगत राम-देव के कारण? न युद्ध की स्वाभाविक न मान एक अत्यन्त धरवाभाविक वस्तु मानता है और मुझे तो धात्रवर्ष है कि सभ्य कहलाने वाले मानव-समाज में जब तक यह मारकट कैसे हो रही है?, क्या जाता है युद्ध लडा से होता जाया है। जो बात होगी रही है वह लडा होती रहेगी ऐसा तो नहीं है। एक समय या जब मानव को मानव का

यूरोप के उस देश में जिसे प्रकृति ने सबसे अधिक रमणीयता दी है ५३

जाया था, धात्र तो यह नहीं होता। एक काल फिर धाया जब युनाय-प्रवा के समय मानव शरीर के धीरे धीरे बने बने थे। धात्र भी बने धोपल ही, परन्तु धात्र मानव-शरीर का क्या विकास तो नहीं होता। यदि मानव को उन्नति हो रही है धीरे धीरे संसार का भाग नहीं होता है तो बने मानव-मन में राग-द्वेष की भावनाएँ प्रकृति में ही हों, बने मुझ भव तक होता रहा हो एक न एक दिन ऐसा धात्र ही चाहिए जब जिस प्रकार मानव द्वारा मानव का ज्ञान का मानव-शरीर की धीरे धीरे बनी, बनी प्रकार मुझ की सदा के लिए समाप्त होनी। इसके लिए लीग ऑफ नेशन्स, यू एन को सबसे संसार में बने भव तक बार-बार मतफल क्यों न होती रही ही ऐसी संस्थाओं की आवश्यकता रहेगी। धीरे धीरे ज्ञान में भी इस विद्या में हम तकम न हुए तो? पर मैं तो बड़ा धात्रावादी व्यक्ति हूँ। मैं तो मानव उन्नति कर रहा हूँ इसे माननेवाला हूँ। मुझे संसार का भाग न बिककर जलका कम्पास बिकता है।

दुसरे दिव हम जिनोवा से ग्रेन्चेन होकर बने तक जाने बने वे धीरे बने से भी धात्र कुछ बड़ाई स्थलों की देखने। ग्रेन्चेन (Grenchen) में पढ़ी के कार जाने है, जो पद्योव स्विट्जरलैंड का मुख्य पद्योव है। नेडीरोवा धात्र-कम्पनी के धात्रिक धी नेकतमोडर से धी धात्रात का धात्रिकत धीरेधय या धात्र धी धात्रात ने धीम धारा इत धीरेधरी को देखने की धात्राी धात्राका कर ही धी। धात्रा पढ़ने कहु का धुका है धन स्विट्जरलैंड को धात्रधानी है धीरे बहू है भारतीय धात्रावात। धीरे धात्रकम धात्रा के धात्रधुत धी धात्रकधली धे, धे स्विट्जरलैंड धात्रर धिना धात्राीय धात्रावात धेसे धीरे धी धात्रकधली धे धिने स्विट्जरलैंड धीरे धोड़ सकता धा? फिर एक ऐसा पहाड़ भी मैं देखना चाहता था बहू धात्रर में कुछ धुना-धात्रा धा सके।

धा० १३ धात्रर के धात्र-काल १ बने की पढ़ी धे धी धिने के इस धीरे के लिए हम रवाना हुए।

धात्र धीहम्ल धात्राधमी धी। धिना बहूधधुलु का धात्र का धिन धात्रे धेध के लिए। धिने हम धात्राध का धुलुधिनात धात्रे है धे धात्र के धिन धात्रा की धुधधुनि धर धात्रधीर्ल हुए धे। धात्राधीर्ल धीत धात्रे धर धी धारा धात्रा धुध से धीरेधय धीरे धात्रर धे धात्रेध तक धात्र के धिन धात्रा धात्रर के उल्लभ धनाता है। धरन्तु बहू धात्र हम धे बहू न ही इस धिन को धी धीरे धात्राता धा धीरे धिनाधी की धोड़ न धीरे धात्राधु हए धी ही। धुधधधल में धुध धात्रा धात्र धात्रे के धात्रने धात्राी धुधधी धिनाधी धोधी-धी धीरे है धीरे धात्र धुधधधल के धुधे तथा उधके धीरेध धात्रे के धात्रने धात्रा धुध तथा उधके धे धिने धीरे धे। धरन्तु इधने धर धी धात्राी इध धोधी-धी धुधधी के धे धिना-धिना धीरे-धीरे धेध,

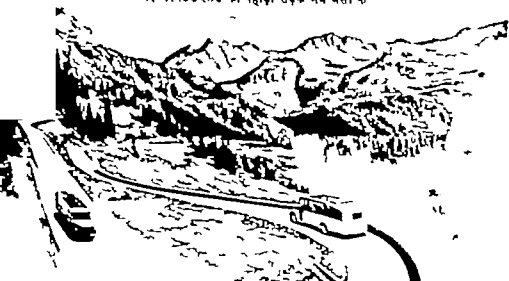
घाब के प्रत्यक्ष तीव्रतामी बातायात के सामनों के होते हुए भी एक दूसरे से कितने दूर है कि एक दूसरे के बर्न, संस्कृति, इतिहास किसी से भी तो परिचित नहीं। बातायात के इन सामनों के कारण हमें बाह्य एक स्वान से दूसरे स्वान को जाने में लक्ष्य समय क्यों न लगे भीषोलिक बुद्धि से बाह्य हम एक दूसरे के कितने ही अभि-
 क्त क्यों न या पये ही लेकिन जब तक मानसिक क्षेत्र में भी हम एक दूसरे के निकट जाने का प्रयत्न न करेंगे तब तक संसार में घापस का लक्ष्य प्रेम लक्ष्यी लक्ष्यी, लक्ष्यी सहाय्युक्ति कदापि न हो सकेगी, जिसके बिना एक दूसरे के लिए सहिष्णुता और एक दूसरे के प्रति धारण की भावना न आयगी। एक दूसरे के समीप जाने के लिए हमें एक दूसरे के बर्न, संस्कृति, इतिहास लक्ष्यी समझने का प्रयत्न करना हीना और इसके लिए सबसे बड़ा साधन है साहित्य। संसार के समस्त देशों के साहित्य के साव्य-
 प्रदान का प्रयत्न संसार के लोगों को समीप से समीप जाने का सबसे बड़ा उपाय है। क्लिषा के लीम धीक लेखन का भजन देखने और क्लिषा के कर्णों को बचाने के बार इस समय मेरे मन में संसार की समस्याएँ और है किन्त प्रकार हम की कार्य से ही प्रथम उठ रहे थे। भारत से इतने दूर रहने पर भी हमने हर वर्ष के लघुग्रह इस बर्न भी लक्ष्यमी क्त करने का निश्चय किया। वे एक धार्मिक संघर्ष कुल में बना है और जैसे ही आयुष्यल में पस्ता गया है। वैश्व संस्कारों का धर्म भी मेरे मन पर बोझा नहीं पूर्ण प्रभाव है। मेरी समस्त का भी नहीं हल है। मेरे साम्य प्रभावनागत का सुमुख भी वैश्व सुमुख ही है। धर्म क्यों का लक्ष्यमी क्त हम लोच प्रपने देश में ही करते थे, क्लिषा घाब के दिन विविध प्रकार के उत्सव हुआ करते है घतः घत के कारण कोई दिन या घटना विशेष कर से स्मरण रहती है इसका हमें धनुष न हुआ था। स्विटजरलैंड में लक्ष्यमी का घत करने से हमें मसुन हुआ कि इस प्रकार के घत विविध विना और घटवालों की स्मृति के लिए कितना काम करते है।

हमारी बाड़ी कैलेंडर स्पेस कोई ११॥ बने रहूँगी। क्लिषा से रोमों जाने के लिए हमें राते में एक स्वान पर बाड़ी बचतरी भी पड़ी थी। कैलेंडर स्पेस रहूँगी ही जित पड़ी के कारणने को हम यहाँ देखने प्राये से उसके मालिक भी मैक्सनीडर (Max Schneider) की हमने जोन किया। वे लक्ष्यमी घवनी जोडर में हमें लेने रहूँगे जब तक हम इनकी कैडरों रहूँगे तब तक रोपहर के बारह बज चुके थे। स्विटजरलैंड में ही क्लिषा पर तारे युरोप में १२ बजे से दो बजे तक घट्टी का समय रहता है घतः घट्टी की कैडरों जब हो चुकी थी। धी मैक्सनीडर ने हमें लंच के लिए कहा। हमने प्रपने घत का हाल बता केवल कम खा लेना रबीकार कर लिया। अब तक भी इनीडर लंच तथा हम क्लिषा से निरते तब तक २ बज चुके थे। जैसे ही

२ स्विट्जरलैंड की पहाड़ी
दुम का उस्ता मय दुम के



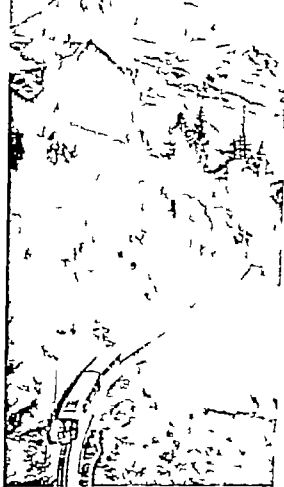
२१ स्विट्जरलैंड की पहाड़ी सड़क मय बसों के



प्रायः के प्रथम तीव्रपामी वातायत के सघनों के होते हुए भी एक दूसरे से कितने दूर है कि एक दूसरे के बर्न संस्कृति, इतिहास कितनी से भी तो परिचित नहीं। वातायत के इन ताबनों के कारण हमें चाहे एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने में नगण्य समय क्यों न लगे, भौतिक बुद्धि से चाहे हम एक दूसरे के कितने ही सभ्रि कट क्यों न घा पये हों, लेकिन जब तक मानसिक क्षेत्र में भी हम एक दूसरे के निकट जाने का प्रयत्न न करेंगे तब तक संसार में आपस का सच्चा प्रेम, सच्ची मैत्री, सच्ची सहानुभूति कदापि न हो सकेगी, जिसके बिना एक दूसरे के लिए सहिष्णुता और एक दूसरे के प्रति आदर की भावना न प्रायनी। एक दूसरे के समीप जाने के लिए हमें एक दूसरे के बर्न, संस्कृति इतिहास सबको समझने का प्रयत्न करना हीवा और इसके लिए सबसे बड़ा साधन है साहित्य। संसार के समस्त देशों के साहित्य के धारा-प्रवाह का प्रयत्न संसार के लोगों को समीप से समीप जाने का सबसे बड़ा साधन है। जिनीवा के तीव्र प्रांत मेघन का भवन देखने और वहाँ के कार्यों को समझने के बाद इस समय मेरे मन में संसार की समस्याएँ और वे किस प्रकार हल की जायें ये ही प्रश्न उठ रहे थे। भारत से इतने दूर रहने पर भी हमने हर बर्न के समुद्र इस बर्न की आभासी बत करने का निश्चय किया। मैं एक प्रांतिक वैश्व काल में जन्मा हूँ और जैसे ही वायुमण्डल में पता पड़ा है। वैश्व संस्कारों का प्रती भी मेरे मन पर बोझ नहीं पूर्ण प्रभाव है। मेरी सत्तिका का भी यही भाव है। मेरे आचार धन्यायवास का मुद्रम भी वैश्व मुद्रम ही है। प्रथम बर्न का जन्माधनी प्रत हम जोम अपने बिस में ही करते थे वहाँ प्रायः के दिन विविध प्रकार के उत्सव हुआ करते हैं प्रत बत के कारण कोई दिन या घटना विशेष रूप से स्मरण रहती है इसका हमें अनुभव न हुआ था। स्विटजरलंड में जन्माधनी का बत करने से हमें मान्य हुआ कि इस प्रकार के बत विशिष्ट दिनों और घटनाओं की स्मृति के लिए कितना काम करते हैं।

हमारी गाड़ी वेग्रेन स्टेशन कोई ११॥ बजे पहुँची। जिनीवा से प्रेमीन जाने के लिए हमें रास्ते में एक स्थान पर पाड़ी बसनी भी पड़ी थी। वेग्रेन स्टेशन पहुँचते ही जिस बड़ी के कारखाने की हम यहाँ देखने चाये थे उसके मालिक श्री मैक्स स्नीडर (Max Schneider) को हमने कोन किया। वे तत्काल अपनी मोटर में हमें लेने पहुँचे जब तक हम इनकी कंपनी पहुँचे तब तक बोसहूर के बाह्य बज चुके थे। स्विटजरलंड में ही नहीं पर सारे यूरोप में १२ बजे से दो बजे तक छुट्टी का समय रहता है प्रत पाड़ी की कंपनी बज हो चुकी थी। श्री मैक्स स्नीडर ने हमें लंच के लिए कहा। हमने अपने बत का हाल बता केवल बत का लेना स्वीकार कर लिया। जब तक श्री स्नीडर लंच तथा हम कलाहार से निपटे तब तक ९ बजे चुके थे। जैसे ही

२० स्विट्जरलैंड की पहाड़ी
दुन का रास्ता मय ट्रम के



२१ स्विट्जरलैंड की — — — — — ज बगा क



प्रायः के अत्यन्त लोडभागी मातापिता के लोडों के होते हुए भी एक दूसरे के कितने दूर हूँ कि एक दूसरे के धर्म संस्कृति, इतिहास किसी से भी तो परिचित नहीं। मातापिता के इन लोडों के कारण हमें चाहे एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने में समर्थ समय क्यों न लगे भौतिक बुद्धि से चाहे हम एक दूसरे के कितने ही अलिखित कवि न या कवे हों, लेकिन अब तक मानसिक क्षेत्र में भी हम एक दूसरे के कितने ही अलिखित कवि न करेंगे जब तक संसार में प्रायतः का सच्चा प्रेम, सच्ची मैत्री, सच्ची सहानुभूति कदापि न हो सकेगी जिसके बिना एक दूसरे के लिए सहिष्णुता और एक दूसरे के प्रति धारणा की आवश्यकता न प्रायगी। एक दूसरे के समीप जाने के लिए हमें एक दूसरे के धर्म, संस्कृति, इतिहास सबको समझने का प्रयत्न करना होगा और इसके लिए सबसे बड़ा साधन है साहित्य। संसार के समस्त देशों के साहित्य के आदान-प्रदान का प्रयत्न संसार के लोगों को समीप से समीप जाने का सबसे बड़ा उपाय है। जिनका के लोडों को नेत्रों का अवन देखने और वहाँ के व्यर्थों को समझने के बाद इस समय मेरे मन में संसार की समस्याएँ और वे किन्हीं प्रकार हुए भी चायें वे ही प्रेम उठ रहे थे। भारत से इतने दूर रहने पर भी हमने हर वर्ष के सङ्ग्रह इस वर्ष भी अन्तर्देशीय बात करने का निश्चय किया। मे एक प्रास्तिक अल्पसङ्ख्यक में आना है और जैसे ही सम्मुखता में जाता गया है। अल्पसङ्ख्यकों का धर्म भी मेरे मन पर बोझा नहीं पुराण प्रभाव है। मेरी समृद्धि का भी यही हाल है। मेरे सामर्थ्य अल्पसङ्ख्यकता का अल्पसङ्ख्यक ही है। अल्पसङ्ख्यकों का अन्तर्देशीय बात हम लोग अपने देश में ही करते थे वहाँ प्रायः के दिन विविध प्रकार के अल्पसङ्ख्यकता करी है अल्पसङ्ख्यक के कारण कोई दिन या घटना विशेष कम से कम रहती है इसका हमें अनुभव न हुआ था। स्वित्जरलैंड में अन्तर्देशीय बात करने से हमें मान्यता हुआ कि इस प्रकार के अल्पसङ्ख्यकता विचारों और अल्पसङ्ख्यकों की समृद्धि के लिए कितना काम करते हैं।

हमारी बाड़ी प्रेम्पेन स्टेशन की ई ११। बने पुरुषों। जिनका से प्रेम्पेन जाने के लिए हमें रास्ते में एक स्थान पर बाड़ी बसतानी जी पड़ी थी। प्रेम्पेन स्टेशन पहुँचते ही अल्पसङ्ख्यकता के कारणों को हम वहाँ देखने चाये वे अल्पसङ्ख्यकता की अल्पसङ्ख्यकता (Max Schneider) को हमने जोन किया। वे अल्पसङ्ख्यकता अल्पसङ्ख्यकता में हमें लेने पहुँचे, अब तक हम इनकी अल्पसङ्ख्यकता पहुँचे तक तक रोपट्ट के अल्पसङ्ख्यकता अल्पसङ्ख्यकता में ही नहीं पर सारे यूरोप में १२ बने से दो बने तक अल्पसङ्ख्यकता का समय रहता है अल्पसङ्ख्यकता की अल्पसङ्ख्यकता अल्पसङ्ख्यकता है। यो अल्पसङ्ख्यकता ने हमें अल्पसङ्ख्यकता के लिए कहा। हमने अपने अल्पसङ्ख्यकता का हाल बता के अल्पसङ्ख्यकता का अल्पसङ्ख्यकता कर लिया। अब तक भी अल्पसङ्ख्यकता अल्पसङ्ख्यकता से अल्पसङ्ख्यकता अल्पसङ्ख्यकता अल्पसङ्ख्यकता है। जैसे ही

कैन्टरी बुनी थी इन्डर ने हमें कैन्टरी दिखायी । इस कारखाने में घड़ियाँ बनती न थीं, घड़ियों के विविध भाग घाते घोर से इकट्ठे किये जाते थे । यथार्थ में स्विटजरलैंड का घड़ी का उद्योग गृह-उद्योग है । घड़ी के प्रसंग-प्रसंग हिस्से कारीगर अपने घरों में तैयार करते हैं । घड़ी के ये कारखाने उन भिन्न-भिन्न भागों को खरोबते घोर पुरी घड़ी बना देते हैं । कुछ कारखानों में इनमें से कुछ हिस्से भी बनते हैं पर ऐसे कारखाने बहुत कम हैं घोर पुरी घड़ी के समस्त भाग किसी एक कारखाने में बनें ऐसा तो कोई कारखाना है ही नहीं । घड़ी के भिन्न-भिन्न हिस्सों को इकट्ठा कर पुरी घड़ी बना देना भी कम हुनर का काम नहीं । हुनर इस कैन्टरी में देखा कि कितने कारीगर कित्त तारीफी से यह काम करते हैं । मीनीकाइन काँचों की छोटी-छोटी बुरखों को छोटी छोटी चीमटियों, स्क्व आदि यंत्रों की सहायता से इन विविध भागों को एक छोटी-सी हथ-बड़ी में, घोर स्त्रियों को तो प्रयत्न ही छोटी हाथ घड़ी में ठीक बिठाले हुए इन कारीगरों के काम का निरोसाए सचमुच एक बर्षनीय वृत्तय वा । एक ही कारीगर इन सब भागों को न बँटाता, एक कारीगर एक प्रकार के हिस्सों को बूसरा बूसरे प्रकार के हिस्सों को घोर तीसरा तीसरी प्रकार के । इस प्रकार अनेक कारीगरों के हाथों से गुजरने के बाद घड़ी पुरी घड़ी बनती घोर घड़ी के पुरी घड़ी बन जाने के पश्चात् बहु ठोक समय देती है या नहीं इसकी कई प्रकार से जाँच होती तथा इस जाँच में समय ली कोई पड़बड़ी निकलती तो बहु ठीक की जाती । कारखाने में अनेक प्रकार की घड़ियाँ बन रही थीं—कोई साबो केबल घंटों घोर सेकण्डों का समय देने वाली कोई घंटों घोर सेकण्डों के साथ-साथ तारीख घोर बार बताने वाली कोई इन सब के साथ चन्द्रमा की बढ़ती घोर बढ़ती हुई कमाई भी दिखाती घोर कोई तारीख, बार चन्द्र न बताकर केबल एलार्म देती । कोई ऐसी बनती जिसमें चाबी देने की आवश्यकता न होती कमाई पर बारण करने के बाद कमाई के हिलने-डुलने से उसकी चाबी भरती जाती । कोई 'घोंकपूक' बनायी जाती यानी गिरने से भी बन्द न होने वाली तथा पानी पड़ने पर भी चलती रहने वाली । घड़ियाँ सोने की स्टोस की तथा घोर भी कई धातुओं की बन रही थीं । यों की तो कोई-कोई घड़ी इतनी छोटी थी कि उसका समय मुझे तो बिना मैग्निफाइंग ग्लास के देख सकना ही सम्भव न था ।

स्विटजरलैंड में दुनियाँ की सबसे अच्छी घोर सबसे अधिक घड़ियाँ बनती हैं । संसार के समस्त देशों को यह छोटा सा देश घड़ियाँ देता है । प्रति वर्ष विविध प्रकार की अनेकों घड़ियाँ तैयार होती हैं । इनमें से स्विटजरलैंड की आवश्यकता के लिए तो बोझो ही घड़ियाँ वहाँ रची जाती हैं शेष संसार के अग्य देशों में बेच दी जाती हैं । घड़ी के उद्योग में काम करने वाल हर कारीगर को मजदूरी भारत के रूपों में समयम घाठ ली अथवा महीना पड़ता है ।

बहुते स्थलचरलेख में सुत और रैशन-उद्योग प्रमुख थे, किन्तु बीसवीं शताब्दी में मशीन उद्योग बर्धमान हो गया। पड़ी-बचीन मशीन उद्योग का अत्यन्त महत्वपूर्ण भय है। इसके लिए कहीं अधिक कुशल और बारीक काम कर सकने वाले कारीगरों की आवश्यकता होती है। स्थलचरलेख में पड़ी-उद्योग का सुवर्णात सोलहवीं शताब्दी में हुआ। जिनीवा और जूरिख इसके प्रमुख केन्द्र थे। बोरे बीरे प्यु उद्योग बेसन प्रदेश में भी जैन गया। १६९६ में इस उद्योग में काम करने वाले कर्मचारियों की संख्या ४८,६०१ थी। यह वर्ष पञ्चायु यह संख्या बढ़कर ६६,६३६ हो गयी किन्तु उद्योग युद्ध के पश्चात् संसार भर में स्थलचरलेख की पड़ियों की माँग बढ़ जाने के कारण इस उद्योग में कर्मचारियों की संख्या भी बहुत बढ़ गयी। हीरा-मवाहुरात उद्योग पड़ी बनाने के उद्योग से महत्ता सम्पन्न रहता है, क्योंकि पड़ी बनाने में भी उनकी आवश्यकता पड़ती है।

स्थलचरलेख में आजकल चार उद्योग प्रधान हैं—पड़ियों का रासायनिक पदार्थों (कैमिक्स्ट) का मशीनरी का और सेती का। चारों उद्योगों में स्थलचरलेख के निवासी करीब-करीब बराबर संख्या में जाते हुए हैं। पड़ियों के लक्षण यहाँ बने हुए रासायनिक पदार्थ और मशीनरी भी अन्य देशों को निर्यात होते हैं। यह छोटा-सा देश संसार के सम्पन्न से सम्पन्न देशों में एक देश है और इसका प्रधान कारण यहाँ के उद्योग चारों उद्योग हैं। पड़ी का उद्योग इन चारों में सर्वप्रथम है।

जब रेलपड़ियों की विजली से चलाने की व्यवस्था करने में स्थलचरलेख ने लक्ष्य ही बहुत बड़ा काम किया है। इसके प्रतिरिक्त रेलगाड़ी के हुस्के और पम्पा इन के इन्धे बनाने की विद्या में भी यहाँ काफी काम हुआ। भारत में ऐसे इन्धे मपाकर बर्जात भी किये गये हैं और भारतीय रेलों के विकास में इनसे लाभ उठाने का भी विचार है।

वर्तमान शताब्दी के आरम्भ में स्थलचरलेख औद्योगिक उन्मादन का एक तिहाई भाग बाहर भेजता था द्वितीय महायुद्ध छिड़ते न छिड़ते यह मात्रा कुन्नी होगयी। पड़ी का कारखाना देखने के पश्चात् हमने कुछ पड़ियाँ करीबी को करीबी लगी कीमत में मिली।

सगबम ४ बजे हुबारी पाड़ी बिन स्टेसन से बर्न जाती थी। रोन्डोन से बिन बाहर रेल में बँटने से बर्न जाते हुए बर्न में जो गाड़ी बजती थी वह लगातार बज जाती थी। रोन्डोन से बर्न करीब १० मील ही पड़ता है अतः भी वैकसमनीडर घननी मोडर में हमें बिन स्टेसन जावे और डीक लमप हम बिन के लिए रवाना हो गये। आज भी जिनीवा से बर्न तक हम स्थलचरलेख के रमणायी युव देखते हुए जावे थे। रास्ते में हमने कई नगर देखे, जो बचाव में बबर न होकर

कस्त्रे से पर लारी प्रायुक्तिक सुविधाओं से युक्त तथा अत्यन्त सम्पन्न ।

बर्न हमारी पार्की बिना किसी विशिष्ट घटना के ठीक समय पहुँची। श्री धोमप्रकाश अग्रवाल हमें लेने स्टेशन पर मौजूद थे। बर्न में हम केवल रात पर रहने वाले थे घरा बर्न के एक होटल में हमारे ठहरने का प्रबन्ध श्री अग्रवाल ने किया था। सामान होटल में भेज हम लोग श्री आसफ़ख़ली से मिलने वाले क्योंकि उनके हमारे मिलने का समय ७ बजे नियुक्त था।

श्री आसफ़ख़ली के यहाँ जाते हुए श्री अग्रवाल हमें उन दीर्घों की रिश्ता से प्य जिनके कारण इस नगर का नाम बर्न पड़ा था (चित्र पृ० ४६)।

जब हम श्री आसफ़ख़ली के यहाँ पहुँचे तब वे हमारा रास्ता ही देख रहे थे। आसफ़ख़ली साहब जिस बंगले में रहते थे वह भारत सरकार का है। इसे श्री पीक भाई देसाई ने खरीदा था जब वे यहाँ भारतीय राजदूत होकर आये थे। श्री पीक भाई की याद आते ही मुझ उनके पिता श्री भूमाभाई के समय की न जाने कितनी बर्से स्मरण आयीं। काल के कराल गाल से कौन बचा है? आज न भूमाभाई वे न पीक भाई। जब भूमाभाई तो बुढ़ापेवाले थे, पर पीक भाई? कौन जानता है किसे जब तक रहता और जब जाता है?

श्री आसफ़ख़ली मुझ से बैसे ही प्रेम और उत्साह से मिले जिस प्रकार कीर्ती तथा भाई सने भाई से मिलता है। उन्होंने अनमोहनदास और धनश्यामदास को एक पितृत्व के समान प्राचीनार्थ दिया। कितनी बातें किन्त-किन्त बचाने की नभे याद आयीं श्री आसफ़ख़ली से मिलकर। आसफ़ख़ली साहब ने बर्न में हमारा होटल-निवास किन्तो तट्ट भो स्वीकार न किया। हमारा सामान तत्काल होटल से उनके यहाँ नयाया गया और हम लोग वहीं ठहरे। हमारी सब तक की इस यात्रा में ऐसा सौजन्यपूर्ण व्यवहार किन्तो में न किया था। करता भी कौन? आसफ़ख़ली साहब के लघु पुराना सम्बन्ध मेरा सब तक मिले हुए किस ध्यस्त से था?

श्री आसफ़ख़ली के यहाँ प्रायः रात्रि के भोजन का निर्माण मुझ फोन से पहले दिन ही जिनोबा में मिल चुका था। मने-अम्पायमी के बत का हवाला देकर केवल इन ज्ञाने की स्वीकृति ही थी। रात को भोजन के लिए श्री एन. सी मेहता भी आये थय अपनी पानी के। श्री मेहता आसफ़ख़ली रिश्ताकारपद अपने पुत्र श्री प्रमोद मेहता और उनकी पत्नी श्री अग्रसेवा के साथ आये हुए थे। श्री एन. सी. मेहता को मैं भारत से ही जानता था बिच्यकर उस समय से जब महक-प्रतिप्रभन प्रथम का नेहरू जी की जीवनी से सम्बन्ध रखने वाला भाग श्री मेहता न लिया था। श्रीमती अग्रसेवा से भी उनकी बात श्रीमती बिजयालक्ष्मी बंडित के कारण बरा परि चय था, पर श्री एन. सी. मेहता की पत्नी और श्री अग्रसेवा से मैं पहले कभी न

मिमा था। हाँ इतना मैं जानता था कि श्री घासकभसी मेहता धर्म के भारतीय क्रांति-वादी के प्रथम सचिव हैं।

राजि के भोजन के समय श्री एन सी मेहता और श्री घासकभसी से साहित्यिक तथा सांस्कृतिक विषयों पर बहुत सी बातें होती रहीं। घासकभसी ने हमें यह भी घासकभसी का सांस्कृतिक बातों के परिचय का हाल मालूम हुआ विशेषकर उनके भारतीय समीक्ष-शास्त्र का परिचय। इसी समय श्री घासकभसी ने हम लोगों के बुद्धि के दिन बुद्धि का कार्यक्रम भी बना दिया। हमें यह देखकर खेद हुआ कि हमें से हम स्वित्जरलैंड के जिस प्रसिद्ध बरक के महान की देखने जाने का विचार कर पाये थे वहाँ समय की कमी के कारण हम न जा सके। इसी में नेक्सिस और पापियाई न देख सकने के कारण जेता खेद हमें हुआ था वैसे ही यह भी था।

इसके बाद हम राजि को ही बर्न देखने निकले। वैसे ही सुन्डर, लाफ-मुन्डर, घासकभसी इमारतों और सड़कों वाला बिजली की रोशनी से जयमयाता हुआ तथा रमणीय पहाड़ियों से घिरा हुआ नगर था वैसे ही बिना। जिस चीज ने वहाँ हमारा ध्यान सबसे अधिक आकर्षित किया वह वही वहाँ की एक अद्भुत घड़ी।

यह घड़ी एक प्राचीन घण्टाघर पर है। पहले यह नगर के द्वारों में से एक था। अब-अब घड़ी में घण्टा बजता है उसके सुन्डर डायल के सम्मुख कठपुतलियों का अनुत्-सा निकलता है जिनमें रौख तो बराबर ही उपस्थित रहता है। इससे पर्यटकों और बच्चों के लिए एक प्रमोद की सामग्री मिलती है।

रात को श्री घासकभसी साहब के यहाँ लौट राजि भर दिखान कर दूसरे दिन प्रातःकाल हमने अपने जग्याटमी बत का पारला किया श्री घासकभसी साहब के यहाँ की डबलरोटी घासि आकाहारी सामग्री से, और घासकभसी के लिए मोटर में बर्न नगर श्री घण्टाघर के साथ छोड़ दिया। श्री घण्टाघर को घासकभसी नगर की छुट्टी श्री घासकभसी ने इसलिए दे दी थी कि वे हमें बर्न के चारों ओर का पार्वत्य प्रवेश भली भाँति दिखा दें।

हमारे घासकभसी के कार्यक्रम में यद्यपि कई स्वान रखे गये थे, पर हमारा सात दिन केवल एक जगह ही बीत गया। इत जगह का नाम था इन्टरलाकन। इन्टरलाकन स्वित्जरलैंड के घग्ग छोटे-बड़े नगरों के समूह एक सुन्दर पहाड़ी नगर है। नगर के चारों ओर घासकभसी की ऊँची ऊँची श्रेणियाँ हैं जिनमें घनेक के ऊपरी शिखरों पर बरक जमा रहता है। नीचे के शिखर हरित तटवर्ती से व्याप्त हैं, जिनमें चीड़ और देवदार के वृक्षों की बहुतायत है। थुन (Thun) और ब्रीन्ज (Brienz) नामक दो शीतलों के बीच में बसे रहने के कारण इस नगर का नाम इन्टरलाकन है। इन्टरलाकन में घनक सुन्डर स्वान हैं (चित्र नं० २४ २५)। घनेक उद्यान देखते ही घन पड़ती



२४ इटलाफन क विषट का एक छोटा-सा भाग

२५ इटलाफन की घाटी





२६ इन्टरलाकन का एक बाग



२७ उपर्युक्त बाग में वनस्पतियों की बनी बड़ी या बराबर
समय देकर बंटा बजाती है

यूरोप के उस देश में जिसे प्रकृति ने सबसे अधिक रमणीयता दी है ८८

है। ऊँचे ऊँचे सघन जल घोर उनकी भीड़ में रंग-बिरंगे फूलों से घरी हुई श्यारिपा बर्धनीय है। एक बाग के एक घोर एक फूलों की घड़ी बनी हुई है जो चतती घोर बसती है (चित्र नं० २६ २७)। इस पुष्प-बड़ी को देख मझे ग्युजीलैंड की ठीक ऐसी ही एक घड़ी का स्मरण प्राया। इन दोनों घड़ियोंमें इतना अधिक साम्य था कि यह जानना ही पड़ा कि या तो इसी देश ग्युजीलैंड की घड़ी बनायी गयी है या ग्युजीलैंड की घड़ी देखकर यह घड़ी पर जोक स्विटजरलैंड ग्युजीलैंड से कहीं पुराना देश है इसलिए स्विटजरलैंड की ही यह घड़ी देखकर ग्युजीलैंड की घड़ी बनी होगी।

इष्टरलाकन पहुँचते हुए हम रास्ते में जूब घूमते तथा प्राय के छोटे-छोटे गाँवों को देखते हुए प्राये थे। इष्टरलाकन में भी हम जूब घूमे। यहीं हमने लंब घी प्राया घोर इष्टरलाकन से बर्न लौटते हुए भी हमने रास्ते में घूमने की कसर नहीं रखी। प्राय हमने स्विटजरलैंड के घनेक गाँव घोर कस्बे देखे। सहरों घोर कस्बों तथा गाँवों में उनकी छुलाई-बड़ाई के घतिरिक्त घोर कोई विशेष घस्तर नहीं है। इमारतों में घहरों की इमारतें कुछ बड़ी घोर गाँवों की कुछ छोटी है। लड़कों का भी यही हाल है। परन्तु जोबन की तारी प्राबुनिक मुडिघाएँ बिबली पानी का नल पत्तघ वाले बाढाने, डाकघर घोर तारघर प्रादि-प्रादि अंते घहरों में है बंधे गाँवों में भी। घहरातियों घोर बेहातियों को देखभूवा रहन-सहन प्रादि में भी कोई घस्तर न बिबली दिवा।

सपभय ६ बजे सप्या की हम इष्टरलाकन से बर्न प्राये। बर्न से जिनीवा हमारी गाड़ी ७ बजे के लगभग जाती थी। यी प्रातकपली साहब से मिल-भेंट हम स्वेघन प्राये। हमारी गाड़ी डीक समय बर्न से रवाना हो गयी।

बर्न से जिनीवा पहुँचने में ट्रेन की सपभग दो घण्टे लगे। जिनीवा स्टेशन से हम जसी होडल में गये जहाँ इतके पहले ठहरे थे।

जिनीवा से वेरिस जाने का हमारा कार्यक्रम फिर हवाई जहाज से था। हमारा बिमान तारीख १२ को ३ बजे के लगभग चलना था। तारीख १२ को इयर-अपर घूमने के तिवा हमें कोई काम न था। डीक समय हमारा प्लेन जिनीवा से रवाना हो ही घंटे में वेरिस पहुँच गया। प्राय बाबतों के कारण बॉपिंग काओ हुधा, पर बॉपिंग इसलिए बिशय कष्ट न दे सका कि जपमोहनरास घोर घनप्यामबात से प्राय वेरा फिर एक संबाव हो गया स्विटजरलैंड पर।

छोटे-से स्विटजरलैंड के महत्त्व के कारण

काश्मीर की तरह स्विटजरलैंड भी भूतलक का स्वर्ण है। काव्य-जय प्रकृति के लीनी ने इसकी तुलना मुक-मरीचिका से की है। ऊँची ऊँची पर्वत-श्रेणियों से हिमाच्छादित शिखर मुसुराती-खिलखिलती खीलों बुन्दों और हरियाली से लहलहाते खरागाह बने छायादार बंगल धीरे लघे-पुराने पाँच व छह लक्षमुक ही स्विटजरलैंड को इतना सुन्दर और आकर्षक बना देते हैं कि वह एक मुक-मरीचिका बनकर वर्षदरक को स्मृति में सदा ही उलझा रहता है। जिन्होंने स्विटजरलैंड देखा है उसकी तो यह वसा है पर जिन्होंने उसे नहीं देखा उसकी कल्पना में वह मृग-मरीचिका की तरह झोकता है। जीवनसा ऐसा वर्णक है जो प्रकृति के प्रदर्शनीय सौन्दर्य को भूल सके ? अरब-काल में अफँ से इकी खोदियाँ कितनी बसल स्वच्छ और मानव-जीवन की सुकृता का बोध कराती हुई प्रतीत होती हैं। प्रकृति के इन कितने लभीय चरुण बने हैं। सपता है कि परमात्मा यहाँ-वहाँ कभी फूल और बरें-बरें में निवास करता है। मानवीय लक्षरता और प्रकृति की प्रगाधि प्रगत प्रबल समुतभारा का कैसा सम्बन्ध और बेमुक करनेवाला बोध होता है हमें। इसलिए कहना बसता है कि स्विटजरलैंड लरीखा बुनियाँ में प्रायः काश्मीर के सिवा अन्य कोई देश नहीं है। स्विटजरलैंड समस्त यूरोप का बड़कता हुआ कलेजा है। वेता पहले कहा जा चुका है स्विटजरलैंड का क्षेत्रफल कुल १५,६५० वर्ग मील है फिर भी वहाँ क्या नहीं है। इसलिए घेरा यह बत हुआ कि आगर में सागर' वाली की उल्लि हम कवि बिहारी के लिए काम में लाते हैं उसे क्यों न स्विटजरलैंड के लिए भी काम म लाया जाय।

स्विटजरलैंड के प्राकृतिक दृष्टि से तीन भाग किये जा सकते हैं। दक्षिण और पूर्वी भाग में पर्वतगत प्राकृतिक पर्वत हैं। उत्तर और पश्चिम में भीची जूए श्रेणियाँ हैं। बीच में उचकाऊ मैदान है जहाँ सभी बड़ बड़ नगर हैं।

प्राकृतिक सौन्दर्य के सिवा स्विटजरलैंड की अल बिशेषता में मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया यह है उचका प्राणि और र्वातंत्र्य प्रेम। यूरोप में स्विटजरलैंड के निवासियों ने सबसे पहले यह दिखता दिया कि विभिन्न जातियों, धर्मों भाषाओं और

संस्थितियों वाले लीग लक्ष्य लक्ष्माय से साप-साप यह सकते हैं।

स्विटजरलैंड की स्थापना बहुतो घण्टा १९२१ की हुई थी। स्विटजरलैंड के बतमाल संबिधान की दो विशेषताएँ हैं—सोकसंत्र की जपातना घीर बिदेसी संघर्षों में तयस्वता की नीति बरतना। ये दोनों सिद्धांत १८४८ में प्रतिपादित किये गये। इन दोनों सिद्धांतों की रक्षा करना घीर उगहें किमान्वित करना तरत काम नहीं रहा है; कई बार स्विटजरलैंड को बड़-बड़े बिरुध करने पड़े हैं कई बार उसके पाँच डयमगावे भी हैं किन्तु इन दोनों सिद्धांतों को स्विटजरलैंड भाव भी लीने से लपाय हुए हैं। स्विटजरलैंड में मनुष्य द्वारा स्थापित स्वतन्त्रता भी मौजूद है घीर ईश्वर-बल प्राकृतिक स्वतन्त्रता भी।

स्विटजरलैंड में बिभिन्न जाति के लोग निवास करते ह घीर बिभिन्न देशों का उत बर आगत रहा है। लीतहुवी घलाम्मी से पूर्व ली उतका इतिहास घेप मध्य यूरोप के इतिहास की तरह रोमन साम्राज्य का इतिहास पा। १८१५ में स्विटजरलैंड में कनफ़ेडरेसन की स्थापना की गयी। इसके बाद १८४७-४८ में एक युद्ध-युद्ध होने के प्रसिद्धित स्विटजरलैंड का इतिहास धान्तिपुल रहा है। १८४८ में स्वीडन उतके संबिधान में बोझ-सा परिवर्तन १८७४ में किया गया। स्विटजरलैंड कनफ़ेडरेसन में २२ राज्य सम्मिलित हैं। बहों की समू म दो सबन हैं—रहेड कौलिन घणवा राज्य परिषद् घीर नेसनल कौलिन घणवा राष्ट्रीय कौलिन।

स्विटजरलैंड में एक साक से अधिक प्राबन्धीबाने बार नयर है घीर उत हुजार से अधिक की प्राबन्धी बाने २३।

भाषा की लपराबा की स्विटजरलैंड में धात्रघपत्रनक सकलता के साथ बिब टाबा है। बहों के ७२ प्रतिशत लोग जर्मन या इतसे मिलती-जुलती भाषा बोलते हैं, १० प्रतिशत फ्रेंच-भाषी हैं, ९ प्रतिशत इटालियन घीर एक प्रतिशत रोमॉन-भाषी है। बारीं ही भाषाएँ राज्य की स्वीकृत भाषाएँ हैं। बार भाषाओं के रहने बर भी स्विटजरलैंड एक बयुक्त घीर बकष्य राज्य है। भारत की भाषा सम्बन्धी बकष्य सलपबा की निबडाने में स्विटजरलैंड के जबाहररए से कुछ लक्ष्माता बकष्य बिल कलसी है।

स्विटजरलैंड में लता ही बिदेसी बहुत बड़ी बकषया में उपस्थित रहते है। कुछ लोपों का बत है कि स्विटजरलैंड में इत तरह बिदेसियों के बने रहने से किली भी लपय राजनीतिक, प्रारिक बकषया किरी प्रकार का सामाजिक संघट बरपन हो सकता है। बरगु बहों की इत बिशेषता की हम नहीं मूजना बाहिए कि लीब बड़ी बकषी घावल में घुलमिल जाते है।

समतापीय भावनों में तरसक रहने का मूय स्विटजरलैंड की कान्घे बुकाला

बड़ा है। विद्यमान युद्ध के समय अन्तर्की सीमा से मिलने हुए चारों राष्ट्रों में पड़कड़ भी। तटस्थ रहने के नाते स्विट्जरलैंड के लिए बड़ी विस्तारजनक स्थिति उत्पन्न हो पये, क्योंकि स्विट्जरलैंड में आधान का अभाव रहता है और वह अन्य भी कई राज्यों से सम्पन्न नहीं है। इसलिए स्विट्जरलैंड को सब तरह का अभाव सहन करना पड़ा। अर्मनी का तो उसके ऊपर बराबर विरोध बचाव रहा।

तटस्थ रहने की अपनी नीति को स्विट्जरलैंड इसलिए भी निभा पाता है कि १८१५ के सम्झौते के अनुसार उस विदेन और पूर्ववाल प्रांति इस बात का आस्थापन के चुके हैं कि आक्रमण होने पर वे उसकी रक्षा करेंगे।

तटस्थ देश होने की वजह से युद्ध-काल में अनेक शोक बर्हा जाकर धरल मेंते रहे हैं। युद्ध-काल में सभी देशों के हथारों बच्चे बर्हा पहुँचाये गये। अन्त में कहा जा होया कि स्विट्जरलैंड एक सफल तटस्थ देश रहा है और आज तो स्विट्जरलैंड नाम-श्राव से तटस्थता का मोक्ष होता है। इसीलिए अब कभी सम्पन्नता के लिए किसी तटस्थ देश की चुनने की बात चलती है तो स्विट्जरलैंड का नाम अनिवार्य रूप से लिया जाता है। आज के अर्थकारमय त्तर म स्विट्जरलैंड प्राता की एक किरण है और हम सोचते हैं कि क्या सभी देश स्विट्जरलैंड की तरह अतिप्रिय नहीं बन सकते? यदि ऐसा हो सके तो फिर मानवता को प्राप्त ही मिल जाय।

स्विट्जरलैंड को अपने देश की राजनीति में एक और विशेष बात है। बर्हा राजनैतिक बल न हों, ऐसा नहीं परन्तु मन्त्रिमण्डल प्रायः सर्वदलीय बनते हैं और अपनी विधान-सभा के प्रति उत्तरदायी होते हुए भी यदि मन्त्रिमण्डल के किसी मन्त्र को विधान-सभा स्वीकार नहीं करती तो वे इस्तीफा नहीं देते वरन् उनके मन्त्र के विच्छेद भी यदि विधान-सभा का कोई निर्णय होता है तो तिर भुजाकर स्वीकार कर उस निर्णय को कार्यक्रम में परिणत करते हैं। इसीलिए स्विट्जरलैंड में बर्हा से नहीं पर दुर्गों से वे ही बर्हा बने प्राते हैं।

शिलासिता के वैभव में पाँच दिन

जब हमारा हुआई अग्रिम पेरित पहुँच रहा था तब बचपन और बचपन के बाद की भी पेरित के सम्बन्ध में सुनी हुई प्रनेकी बातें बाव धाहीं। इनमें तबसे पहले एक बात का स्मरण थाया, वह थी अग्रहणीय आश्विन के समय की वं० मीठीताल की मेहुक के सम्बन्ध में एक कर्त्ता। पेरित मोतीताल की मेहुक का जीवन बड़े आली डंग से बीता था। उनकी सौकीनी के कई किरते प्रकलित थे। जब वे अग्रहणीय आश्विन में अम्मिलित हुए तब उनके स्थाय का बर्लव करते हुए प्रायः बहु कहा जाता था कि ब्रिज की ऐसे स्थित है, जिनके कपड़े पेरित से बूतकर आते थे। एक बार जब मोतीताल की के सामने बहु बात निकली तब वे ठकाकर हूँत पड़े और उन्होंने इस विषय में जो कुछ कहा उसका आशय इस प्रकार था। यदि यह बात सही होती तब तो वो बोप में उनके कपड़ों पर उतनी ही कीमत और बड़ जाती जितने में वे बन जाने सके थे। मुताई के लिए कपड़ों की पालन भारत के पेरित भेजना, पेरित की महुँकी मुताई देना फिर भारत से कपड़े वापस भारत भेजना यह सब हास्यास्पद बात थी। बोप में आश्विन कित-कित के लिए क्या-क्या बख और विषय दोनों में कह जाया करता है।

पेरित प्रवेश का सबसे अधिक सुन्दर, सबसे अधिक बलापुल सबसे अधिक लम्प मगर माना जाता है। वो-वो भीपल मुद्धों के बाद भी उनकी इस कीर्ति में कोई अन्तर नहीं था। और जब मरने पेरित के इस मय का स्मरण थाया तब मुझे जरा सीसी कान्ति तथा आँस की एक समय की बीरता और दूसरे समय की कायरता भी याद आयी। करालीनी कान्ति के पूव शिष महान लेखकों में अपने साहित्य द्वारा कान्ति का वाचुभक्त बनाया था वे जलो और वास्तुकर स्मरण प्राये। करालीनी कान्ति विरह के प्रापुनिक काल की बहु कान्ति है जितने सबसे पहले घाम बनता के हित सम्बन्धी कुछ बिन्दुधारे जायाये थे। ये थे—“स्युतप्रता, समानता और भावुत्य”। इसी का यह अर्थ बचपन सोचों की नल-नल में लबा गया का—

“अनुपम स्वतन्त्र जगत् जन्म लेता है पर सर्वत्र परतन्त्र है, इतिहास सभी के जगत् में परतन्त्रता की बेंड़ियाँ तोड़ डालने की इच्छा प्रकट हो उठी है।”

इन गारों के अनुकूल ही वहाँ की क्रांति हुई थी, जिसका बिना भी क्रांतियों में एक प्रधान स्थान है।

फरासीसी क्रांति और उसके बाद के क्रांत के इतिहास से यूरोप का इतिहास एक रीस का, एक घटना का, एक व्यक्ति का इतिहास बन गया। वैश्व है क्रांति, घटना है क्रांतीयुगी क्रांति व्यक्ति है नीपोलियन। फरासीसी क्रांति से घटेने क्रांत का ही नहीं सारे यूरोप का आसन डोल पड़ा था। संगीनों और तलवारों का युद्ध तो था ही बिचारों का युद्ध भी कम नहीं था। फरासीसी क्रांति ने सरकार, समाज और व्यक्ति के अधिकारों के सम्बन्ध में नये बिचारों को जन्म दिया था जिससे सारा यूरोप लड़नहुड़ा उठा था और नये बिचारों की प्रतिष्ठित झगड़ते ही है बहु सैनिक बन से भी अधिक होती है।

फरासीसी क्रांति के समय यूरोप में राजसी ठान-बाद था। निर्दुशा का नाम मृत्यु ही रहा था। जनता राजतन्त्र के प्रत्याचारों से ऊबने लगी थी। सामन्तवाद की अड़ मुक्ति लगी थी। घातक न केवल मनमानी करते थे बरन् घातक-व्यवस्था में बेईमानी और भ्रष्टाचार फैले हुए थे। धर्मही, आसिद्धि प्रथा इतनी तेज आदि निर्बलता के शिकार हो चुके थे इतिहास किसी विदेशी व्यक्ति ने भी फरासीसी क्रांति के मार्ग में कोई अड़बल नहीं डाली। बड़े-बड़े सामन्त और बड़े-बड़े पादरी समाज पर प्रभाव रखने वाले दो प्रतिशाली संघर्ष थे। जनता कर-मार से बची जाती थी। लोगों से बेगार फरासी जाती थी और निर्बल की पशु से भी नीचा समझकर बर्तव किया जाता था। यह तो हास का निम्न वर्ग की जनता का। मध्यवर्ग की जनता के पास पन था और बौद्धिक बेतना भी किन्तु उच्चवर्ग के गिरावर के कारण हीन काच पन ही पन काठता रहता था।

१७८९ में आसबिक क्रांति से पहले बौद्धिक क्रांति हुई। यह कार्य फरासीसी दार्शनिकों नीटेश्वयू, वॉल्टेयर और रुसो ने सम्पादित किया। जनता सेवक नियों में एक अतन्त्र और भीड़ा को मूर्त मुबार कर दिया जो जनता के एक वर्ग को छोड़ बाकी सभी वर्गों के मन को पने डालती थी। नीटेश्वयू ने इस सिद्धान्त का अर्थ किया कि घातक गरीब को बिचारा ने अपना हूत बनाकर लेता है। यह सिद्धान्त के वैधानिक राजतन्त्र का पक्का समर्थक था। वॉल्टेयर ने लर्क की घटना प्रारंभ बनाया और यह प्रतिपादित किया कि तक अर्धवत् किसी भी बात पर बिचारा मत करो। उसने घातक वर्ग और पादरी वर्ग के कामें कारनामों और भ्रष्टाचार का संशोधन किया। इन दोनों दार्शनिकों ने क्रांति की तत्कालीन व्यवस्था की अड़ों पर मुठारा-घात किया और उसके बिना में लड़ायता थी। रुसो ने दुर्ननिर्गत का मानबिच

प्रस्तुत किया। कत्ती का उद्देश्य सुमार मात्र नहीं, समाज की नये तिर से रचना करना था। कवि वंश के घरों में उनका सिद्धांत था

“गूँजे बज-स्वनि से घातमान
सब मानव मानव है समान।”

कत्ती का यह विचार लोकतन्त्र का मूल मंत्र था। इससे सिद्ध हुआ कि पतझा जनता का मारी है, सत्ता जनता की धरोहर है और जविष्ण की कपरेखा बनाना व वतनें कपकला के अनुसार रंज भरना जनता का ही अन्वयित्त अधिकार है।

इन धार्मिकों के विचारों से क्रांति का अन्तःकरण ही बदल गया फिर भी केवल उनके शेरों को करातीती क्रांति का मूल कारण समझना भूल है। उनका महत्व इसमें है कि एक अद्वैत समाज को तैभी से इतने में उनसे सहायता मिली और नये विद्या का आवास हुआ।

क्रान्ति के लिए सबसे बड़ी बात यह थी कि क्रांति की आर्थिक दृष्टा अत्यन्त हीवाक्या में थी, कत्ती का यह पुराने और विपन्न हुए मंत्र की तरफ घतनें कोई सुधार होता विज्ञापिका न होता था। क्रांति नई चीजों द्वारा नई नये युद्धों के कारण अलग नार के रवा का रहा था। नई पत्रों के अन्वयित्त के कारण यह सब और बढ़ ही गया था घटा न था। इस बीधालियेन का मुख्य बंधारे नई सोचों को चुकाना पड़ा। अमेरिकी उपनिवेशों के विद्रोह का समर्थन करना क्रांति के लिए अत्यन्त सिद्ध हुआ क्योंकि ऐसा करने से इसे ब्रिटेन के साथ युद्ध में पड़ना पड़ा। जनता का राजतन्त्र में विश्वास अलग बनाने और विद्रोह को लचकें बनाने लगीं। इन प्रकार क्रांति के कारण मूलतः आर्थिक थे।

घारमन में करातीती क्रांति को प्रेरणा मध्यमर्ष से मिली थी किन्तु बाद में ब्रिटेन भी विद्रोह कर उठे। और क्रांति कि कत्ती का चुका है करातीती शेरों के नये-नये विचारों से जनक्रान्ति को एक नये विद्या मिल रही थी। यद्यपि करातीती क्रांति से ब्रिटेन में भी बोझी-बहुत उन्नत-न्यूनत हुई किन्तु अन्तका स्वल्प केवल राज मन्तिक था।

नई सोचों को करातीती क्रांति की बलि दना, ईमानदार तथा जनता घारमी था और जनता की लम्बी हृदय से सेवा करना चाहता था। अपने समय की आर्थिक कठिनाइयों को बह दूर करना चाहता था, किन्तु बह जनयोर घारमी था और हुतरे के प्रभाव में बहुत कत्ती का जाता था। अपने दरबार के ऐसे लोगों के चुकनों से भी बह नहीं बच जाता था जो अन्वयित्त के अन्तारे हुए भी अत्यन्त अन्तिक घाली थे। आरिष्या की निरिष्याकेरता की बेटी केरो एम्पायनेट की बलकी कत्ती की उन्नत नर बड़ा प्रभाव रखती थी। बह अत्यन्त सुन्दरी और लोकाचारिणी थी किन्तु

घपने वृत्ति की भाँति अनुभव और संकल्प बुद्धि की उत्तमों की कमी की इसलिये पति पर उसके प्रभाव ने पति की आज्ञा ले ली और अंत में उपलब्ध-सुधत भी कर डाली।

बेकारे लुई ने पहले टर्गोट (Targot) और बाद में नेकर (Neker) की अहाय्या से आर्थिक स्थिति को सुधारने का प्रयत्न किया था पर उसे सम्मत्ता न आ सका। उसके बरबाद लुई को स्टेट्स जनरल (अंत की मारतना) की बुलावा पड़ा। इसका बुलावा था कि लुई के परो-सले की जमीन खिलक बयी। स्टेट्स जनरल ने राष्ट्रीय संसदों का रूप धारण कर लिया। उधर बरबारियों के डबाब में आकर पहले तो लुई ने राष्ट्रीय संसदों का विरोध किया पर बाद में मुझने डिक दिवे। राष्ट्रीय संसदों के स्वीकार किये जाने के बाद ही जनता हर्ष-गमल और रोयोममल हो उठी और उत्तम बेस्टाइल को बोर लिया। सरकारी संसदों के साथ मुठभेड़ के बाद १४ जुलाई १७८९ को बेस्टाइल का पतन हो गया। बेस्टाइल अंत का बन्धोगुहू था और अत्याचार का केन्द्र माना जाता था इसलिये बेस्टाइल के पतन को सारे अंत में जनता और स्वतंत्रता की जीत समझा गया।

फ्रांसीसी अन्ति के दो अमर व्यक्तिव हूँ बिराबो और रैबेस्पियर। बिराबो ने अन्ति की लक्ष्यो लयन की। जब लुई ने राष्ट्रीय संसदों की संघ करने की कोशिश की तो उसने लुई का विरोध किया। परन्तु बिराबो शासक वर्ग के विरुद्ध लड़ रहा था फिर भी राजतन्त्र से उसका कोई बँर नहीं था। वह अंत में बिराबो के संघ के सामाजिक लोकतांत्र की स्थापना करना चाहता था। लुई को बहु बता देना चाहता था कि राजसी ठाठबाद और स्वेच्छाचारिता के बिन लव गर्धेपीर उसे नये मुख की बुझुनी की सुनना चाहिए। इससे भी अधिक बहु तो यह चाहता था कि लुई स्वयं अन्ति का नेतृत्व करे। जतने कई बार लुई को परामर्श दिया था पर लुई ने उसकी एक न सुनी। बिराबो ने अन्ति के सम्बन्ध में इतनी सही-सही बखिषबाणी की कि उसे देख छात्र अंतर्भव होता हूँ किन्तु बुझुनिय से उसकी बात लोगों को बखिष न हुई। एक और तो अंतर्भव उसे सबेह की बुद्धि से देखता था और इतरी और लोकतांत्र के समर्थक भी उस पर पूरा बिस्वास न करते थे। अन्ति परिषद से और बिराबो की अन्ति में १७९१ में उसकी मृत्यु हो गयी।

रैबेस्पियर बकील था। वह अन्ति और संकुचित बुद्धिकील वाला था किन्तु लोकतांत्र के सिद्धांत का बहु भी-ज्ञान से प्रचार करता था। वह अन्तिविषय बतव का नेता था और बाद में तो उसका अवलम्बू पर अन्तिविक प्रभाव ही गया था।

जब लुई ने अपनी स्थिति बिमझती ही देखी तो आपने का प्रयत्न किया, किन्तु उसे विफलता कर लिया गया। बिराबो की मृत्यु के कारण राजतन्त्र का कोई समर्थक भी नहीं बचा था। अंत में २१ जनवरी, १७९३ को लुई को कत्ती दे दी गयी।

सुई का मृत्युदंड पुरित्त कार्य तो या ही वह भारी भूत भी सिद्ध हुआ। क्रॉस में रक्तपात, अत्याचार और मृत्युदंड का ऐसा भीयल तांडव हुआ कि उसका वृत्तान्त वरु पात्र भी रोकरे जाड़े हो जाते हैं।

परन्तु ऐसी करालीली क्रांति के बाद जो जनताग्रघातन-पद्धति छापी वह वहाँ सिद्ध न लकी और कुछ समय बाद ही वहाँ नेपोलियन का उत्थान हुआ। करालीली क्रांति के लघु क्रांति के इतने बड़े समय के बाद उस क्रांति के सिद्धान्तों के ठीक विपरीत सिद्ध अथवा क्रांति हुई थी वही नेपोलियन का उदय विश्व की विचित्र घटनाओं में से एक घटना है। इस पर अनेक इतिहासकारों ने विस्तार से अपने अपने कारण दिये हैं। मुझे तो सबसे अधिक मनोवशय एक ही कारण जान पड़ता है। यह क्रांति हितात्मक क्रांति थी। जनता के हृदय परिवर्तित नहीं हुए थे। मृत्यों में भी कोई रद्दोबदल नहीं हुआ था। क्रांति के सिद्धान्त कुछ व्यक्तियों के द्वारा समूची जनता पर लागे गये थे। इन्होंने परिवर्तित में जोड़-सा परिवर्तन हुआ उसी जनता ने जिसने करालीली आघात लोलाह्वे सुई का तिर काटा था नेपोलियन को फिर अपना आघात बनाया। क्रॉस की क्रांति के बाद भी वही अमर्त्यवारी समाज रचना नहीं हो रही है अनेक विद्वानों का मत है कि वही व्यवस्थाओं के राज्य (मैने जीरियल स्टेट) की रचना हुई है। तो स्वामी क्रांति द्वारा कुछ नारे जाने से नहीं हो सकती। विश्व का इतिहास हमें यही बताता है। स्वामी क्रांति के लिए हृदय-परिवर्तन और मृत्यों के रद्दोबदल की आवश्यकता है। और हृदय-परिवर्तन तथा मृत्यु-परिवर्तन की नींव पर ही क्रांति हीनी और ऐसी क्रांति के लक्ष्य जो सामाजिक रचना होगी उसमें हिंसा का कोई स्थान नहीं हो सकता। ऐसी ही क्रांति के द्वारा समाज रचना स्वामी हो सकती है। करालीली क्रांति के बाद अने नेपोलियन के समय की करालीली बीरता का स्मरण आता और इस बीरता के लक्ष्य में कुछ में करालीली कायरता का। जिस क्रॉस ने नेपोलियन के समय यूरोप के इतिहास में प्रथितीय बीरता दिखायी थी वही गल कुछ न इतना कायर कैसे ही गया? अपने सौम्य अथवा अथवा सम्पत्ता और इसके अन्तर्भव विनास और अन्त में निप्त क्रॉस को अपनी इन सब बीरों और इसके अन्तर्भव की अथवा के लिए कुछ न हार जान लगा स्वीकृत था। स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए अर पिछले की अथवा धीर के इन नारे अथवा की रक्षा का उसे बीना जोड़ हो गया था। इस जोड़ में वह एता लक्ष्यकाया कि अन्त अन्त के प्रभाव अथवा की अथवा के इन प्रस्ताव तक को अन्तने हृदय दिया कि क्रॉस और इपनिस्तान के विनास साम्राज्य अर क्रॉस का भी बीना ही अथवा हो अथवा कि इपनिस्तान का है अथवा के अथवा एक राज्य के अथवा अथवा अथवा। अथवा के इन प्रस्ताव के समय विद्वि साम्राज्य अथवा

छोटी-मोटी वस्तु नहीं थी। ऐसा प्रस्ताव मानव-इतिहास में कभी भी क्वाचित् किसी देश ने किसी देश के सामने न रखा था। पर फ्रांस तो ऐसा बचका गया था कि उसने बायें-बायें प्रागे-पीछे क्रम-नीचे किसी और भी न देश बनने की प्रणय ली। मेरे मन में एकाएक उठा, चौखर्य क्या, लभ्यता प्रादि यदि एक सीमा के बाहर जमी बायें तो वे कायरता उत्पन्न करती हैं। पर फरासीसी क्रान्ति और नैपोलियन के समय में क्या प्रसंग इतना सुन्दर, इतना कलापूर्ण और इतना सभ्य नहीं था? जो कुछ ही मत्त महापण्ड में तो इन्हीं वस्तुओं की रक्षा के मोह में फ्रांस को कायर बनाया। और जब न यह सब लीज रहा था तब मैंने निर्लज्ज किया कि इस समय के फरासीसी जीवन के लारे पशुओं का मुँह निरीक्षण करने का प्रयत्न करना चाहिए और यह देखना चाहिए कि प्रायः फरासीसी राष्ट्र को क्या प्रबन्धना है।

हमारा हवाई अड्डा वरिष्ठ के हवाई अड्डे पर तारीख १५ अगस्त की घाम को ५ बजे पहुँचा। जब हम हवाई अड्डा से उतर रहे थे तब मैंने पाव धाया कि प्रायः तो भारत का स्वातन्त्र्य-दिन है। तबियों की परतात्रता के बाद सन् '४७ के १५ अगस्त को भारत स्वातन्त्र्य हुआ था। प्रायः हम लोग भारत से हवारों नील दूर थे। भारत में किस उत्साह से मनाया जा रहा होया प्रायः का दिन दुर्ब से वरिष्ठ और उत्तर से वरिष्ठ तक हर जगह। मुझे प्रायः के दिन प्रायः में न रहने का खेद-सा हुआ। अभी तक हम हवा में थे। पंडित अमरुत का स्वातन्त्र्य दिवस हमें पाव धाया था फ्रांस की भूमि पर उतरते-उतरते। हमने प्रसंग को परतो पर ही बड़े ही पूर्व की घोर मुँह कर भारत-भूमि को प्रस्ताव किया।

हवाई अड्डे पर हमें भारतीय वृताभास के प्रतिनिधि मिले। पाठपोट प्रादि की रस्मी कार्रवाई समाप्त होने के पश्चात् हम उत होटल में पहुँचे जहाँ हमारे उतरने का प्रबन्ध था। लम्बा हो चुकी थी। प्रायःकार फेल रहा था। प्रायः अवर-अवर वरिष्ठ पुनः वरिष्ठ देखने का कार्यक्रम बना दूसरे दिन पुनः वरिष्ठ देखने का विचार किया।

प्रायः लम्बा की घुमाई में हमने वरिष्ठ को एक 'पाइड' खरीदी और पुनःकर भोटने के बाद वरिष्ठ देखने का कार्यक्रम बनाया। वी काका साहब कालकर के पुनः वी सतीश कालकर वहाँ के भारतीय वृताभास में थे यह हमें प्रायः था। उन्हीं की काका साहब के कारण से जतीर्नाति जानता था और वे बन्धे। प्रायः इत कार्यक्रम को धनितन रूप में उनकी जताह से देना तय किया और इसके लिए उन्हें दूसरे दिन कोल पर बुसान का।

दूसरे दिन प्रायः-कर्मों से निवृत्त हो कोई १॥ बजे मैंने वी कालकर की कोल किया बड़े उत्साह से प्रायः की जहाँने कोल पर ही घोर इसके बाद में सुरम्त ही हमारे होटल में प्राये। बड़ी घबड़ी तरह हमारी बेंड हुई। प्रायःबिक लीज्यता

विज्ञापिका की कालेसकर ने। उन्होंने हमारा कार्यक्रम कुछ घोर डीक कर दिया और फिर एक दिन हमें अपने यहाँ भोजन करने का भी निमन्त्रण दिया। यह निमन्त्रण कार्य रूप में परिवर्तित हुआ ता० १८ को जब श्रीमती कालेसकर की कुपा से १८ दिन बाद हमें भारतीय भोजन-साजवी प्राप्त हो सकी। कितना संतोष हुआ आज हमें कई दिनों के बाद हमारे संघ का भोजन बाँटकर। भोजन का सामान भी बड़ा विशिष्ट है। जितने मिल प्रकार के भोजन की मागत होती है उसे वही भोजन प्रकटा सकता है।

ता० १६ से १९ तक ४ दिन हम पेरिस में खूब घूमे उन बसों में जो रात के समय पेरिस की सैर कराती हैं और उन बसों में जो पेरिस की सैर दिन में कराती हैं स्वतंत्र रूप से ईश्वरी में और पेरिस भी। इन चार दिनों में हमने पेरिस की वर्तनीय इमारतों की देखा, वहाँ के प्रजासत्तवों की देखा वहाँ के नाटकों और नाट्य-कलाओं की देखा, वहाँ के जीवन की देखा। मैं समझता हूँ चार दिनों के छोड़े समय में हमने जितना पेरिस देखा उतना कम लोग देख पाते होंगे।

पेरिस बसमुख बड़ा सुन्दर नगर है। बड़ी ही श्ववस्था से बताया गया है। तबले इस तरह निकाली गयी है कि आज पड़ता है भारत के जयपुर नगर के समुद्र यहाँ काहर का पूरा लक्ष्मी बनाकर तब काहर बताया गया है। यद्यपि ऐसा हुआ नहीं है। मुना पया कि काहर बीरे बीरे बड़ा है पर जब-जब बड़ा तब-तब इस प्रकार बड़ाया गया कि बसने में सम्भवता न होने वाले। इमारतें बहुत सुन्दर हैं पर पुराने संघ की, प्रजासत्तव सिमेन्ट कॉन्क्रीट के जैसे मकान बनते हैं, जैसे मुझे पेरिस में नहीं बीचे। मैं समझता हूँ कि पुराने संघ के मकान, जिनमें कहीं सुन्दरों होती हैं, कहीं बिबिध प्रकार के स्तम्भ कहीं फरोके तथा कहीं गहराएँ और कहीं मकानगी, वे बर्तमान समय के सिमेन्ट कॉन्क्रीट के लकावट मकानों से कहीं अधिक सुन्दर होते हैं। एक बात वहाँ की ऐतिहासिक इमारतों, मूर्तियों आदि को देख मझे बहुत आश्चर्यजनक मानून हुई। इनमें से अधिकतर ऐतिहासिक इमारतें और मूर्तियाँ धेनी डीकर काली और चितकवरी हो गयी हैं और यह इसलिए कि वे कभी ताक ही नहीं को जाती। इसके ताक न करने का यह कारण बताया जाता है कि इनकी प्राचीनता की रसा हो। प्राचीनता की रसा मिट्टी मूल लोबड़ और बिबिध प्रकार के मल से होती है यह माना जाना मुझे तो बरा भी पुस्तक-संगत न जान बड़ा। भारत के पुराने मूल ताकमहल सिकावरा आदि की सभरवर की इमारतें मूल ताक रती जाती हैं पर इस लकाई के कारण इनकी प्राचीनता को कोई क्षति नहीं पहुँचती। इन ऐतिहासिक इमारतों के मल के कारण तारा पेरिस नगर बीना-ता नगर जान बड़ता है और बेरी मूर्ति से यह संभावना पेरिस के महान् शोभन का बाधा पहुँचता है। तबले

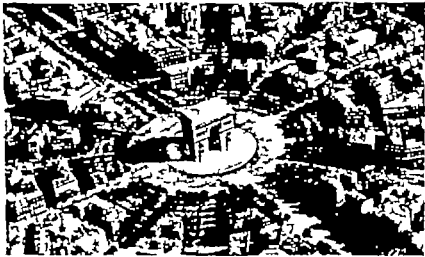
बहुत चौड़ी नहीं है पर कुछ लम्बा है। धनेक सड़कों के दोनों ओर फुटपाथ है। ये रास्ते काफी चौड़े हैं और इन रास्तों की सबसे बड़ी विशेषता है इन रास्तों के दोनों ओर धनेक चिह्नों की कतारें। इस प्रकार धनेक सड़कों के दोनों ओर के पैदल रास्तों के दोनों तरफ इन चिह्नों की पंक्तियाँ होने के कारण सड़कों के दोनों ओर हरकतों की बार-बार पंक्तियाँ हो पायी हैं जिनके कारण इन सड़कों की जोता देवते ही बनती है। स्पान-स्वान पर छोटे-बड़े बगीचों की भरमार है। इन बगीचों में रंग-बिरंगे विविध भाँति के पुष्प इस प्रकार बिखरे रहते हैं कि ये बान मिन्न मिन्न बरतों के कुसुम कालीन बान बड़ते हैं।

हमने यहाँ के जिन प्रधान प्रधान स्थानों की देखा उनका कुछ प्योरेवार वर्त्तन अनुक्युक्त न होगा।

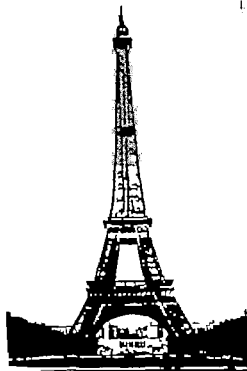
मैंने सबसे पहले पैरिस के अस्त-पुर से जनस्य आरम्भ किया। सीन नदी की दो बाहुओं से घिरा हुआ भाग की अकल का यह एक द्वीप-ता है। इसे नपर-द्वीप (Isle of city) कहा जाता है। पैरिस का यह अत्यन्त ही प्राचीन भाग है। यहीं पर ग्याप अवन की इमारत है। यहीं पर प्रतिष्ठित मार्टीडम गिरजाघर है। ग्याप-अवन से ही रोमन कानून का जालन किया जाता था और यहीं से नैपोलियन की राजाओं की पुरा किया जाता था। ग्याप अवन के एक भाग में बहु प्रतिष्ठित बन्धीपुह है जहाँ रानी एडायमेट रोबोस्पियर और फ्रांसीसी अगति के अग्य महारकडूयुं लीपों की बन्धी रखा गया था। कोने की मीनार पर बड़ी आर्ग पंचम ने १३७० में लपबायी थी। कई सड़क बार-बारके मार्टीडम गिरजाघर जाता है। सीन के पश्चिमी तट पर यूनीवर्सिटी की इमारतें हैं। लवसेनरय बग़ाट भी बहुत बुर नहीं है। सीन के दूसरी ओर लोवरे (Louvre) है जहाँ विअबिख्यात कला-कृतियाँ संवृहीत हैं। सँकड़ों कनरे हैं। डाइविन राबेन टिन डोरडुो ईटोनीय विमोडा का एंबेलिको बोडि जसी बान ग्राहक अरि के स्मरलीय चित्र है। जँच अताविपों में अस्त के भातकों ने इसकी काफी बुद्धि की है। लोवरे की इमारत भी अत्यन्त आलवंक है। अस्त के मरारज्य अवन से पहले यह स्थान अराभीती राजाओं का अहून था। मार्टीडम गिरजाघर को छोड़ पैरिस में ऐसी और कोई इमारत नहीं है जितकी लोवरे से तुलना की जा सके।

पैरिस बड़े सुन्दर अंन से बसाया गया है। मोनाकार प्लेस डी एडोनी से बारडु मार्ग विभिन्न स्थानों को जाते हैं (चित्र न० ३८)।

लोवरे के समीप ही दिबलियोविक नेशनस है जहाँ जनअवन अनीत लाप पुस्तकें हैं और जो अनुसन्धान विद्याविदों के लिए अमूम्य संवृह कैग्र है। यहाँ से मत्रदोक बोर्स की इमारत है जहाँ पैरिस का डेयर बाजार है। पैरिस का एक आलवंक



१८ पेरिस शहर का एक भाग (विहंगम दृष्टि में)



१९ पेरिस की प्रसिद्ध 'एफेल' नामक
लोहे की मीनार

१ पेरिस का प्रसिद्ध प्लाटक मार्क की ट्राम्प
जिनके नीचे एक भव्यत सैनिक की कब्र है



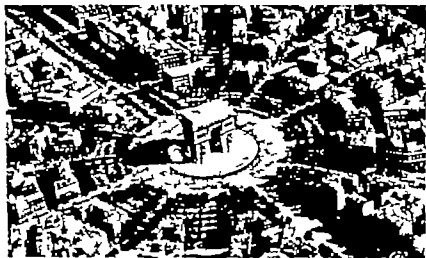
बहुत बड़ी नहीं है पर कुछ लम्बा है। घनेक सड़कों के दोनों ओर प्युपाय हैं। वे रास्ते बायीं ओर हैं और इन रास्तों की सबसे बड़ी विशेषता है इन रास्तों के दोनों ओर बने बिड़पों की कतारें। इस प्रकार घनेक सड़कों के दोनों ओर के पैदल रास्तों के दोनों तरफ इन बुड़ों की संविस्था होने के कारण सड़कों के दोनों ओर इकठों की चार-चार संविस्था ही मयी है जिसके कारण इन सड़कों की घोना बेघते ही बनती है। स्वान-स्वान पर छोटे-बड़े बपीचों की भरमार है। इन बपीचों में रंग-बिरंगे विविध जाति के पुष्प इस प्रकार बिभे रहते हैं कि ये मान बिन्न बिन्न बलों के सुसुम कामीन मान पड़ते हैं।

हमने यहाँ के जिन प्रबान-प्रधान स्वानों की देखा उनका कुछ प्योरेवार चलन अनुपपुस्त न होया।

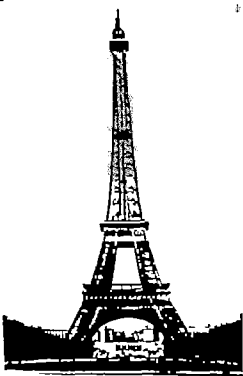
मने सबसे पहले वैरित के घन्तपुर से प्रबल प्रारम्भ किया। तीन मरी की वो बामुलों से मिरा हुआ मान की प्रकल का यह एक हीप-ता है। इसे नगर-द्वीप (Isle of city) कहा जाता है। वैरित का यह घन्तपुर ही प्राचीन भाग है। यहाँ पर म्याय-भवन की इमारत है। यहीं पर प्रतिष्ठ नमूनीकन मिरजाघर है। म्याय-भवन से ही रोमन कानून का पालन किया जाता था और यहीं से मैकोनियन की राजाओं को पुरा किया जाता था। म्याय भवन के एक भाग में बहु प्रतिष्ठ बामुण्ड है जहाँ रानी एदायनेट, रोडोस्वियर और करालीसी जालि के अग्र्य बहुकबुलें तीनों को बारी रखा गया था। कोने की पीमार पर यहाँ चारों पक्ष में १३०० में लखबायी थी। कई सड़क वार करके नमूनीकन मिरजाघर जाता है। लोन के बरिबमी तट पर मनीकतिटी की इमारत है। लसेमरग बबाटर भी बहुत दूर नहीं है। लोन के इतरी ओर लोवरे (Louvre) है जहाँ बिबबिस्पाठ कन-कतिपा संपुहीत है। सड़कों कन्दे है। टाइडियन राजेन जिन होरदो बरीभोज मिमोटा का एमलियो, कोरि जमी मान डाइक प्रादि के स्मरलीय बिब है। बीच मतागिरियों में प्रात के पाकधी में इतकी बायी बुदि की है। लोवरे की इमारत भी घन्तपुर पाकयक है। प्रात के मल्लराज्य बनने से पहले यह स्वान करालीसी राजाओं का महल था। नमूनीकन मिरजाघर की छोड़ वैरित में ऐसी ओर कोई इमारत नहीं है जिसकी लोवरे से तुलना थी की जा सके।

वैरित बड़े सुन्दर रंग के बसाया गया है। पीलावार म्लेत की एरोमी से बाग्य मार्ग बिबिन्न स्वानों को जाता है (बिब न० ३५)।

लोवरे के लयीप ही बिबलियाजिक मेशमल है जहाँ लययय जालीत लाक पुस्तकें हैं और जो अनुसन्धान बिद्यार्थियों के लिए अमूम्य संग्रह केन्द्र है। यहाँ से नकदोक बोर्स की इमारत है जहाँ वैरित का रोमर बाजार है। वैरित का एक पाक्यक



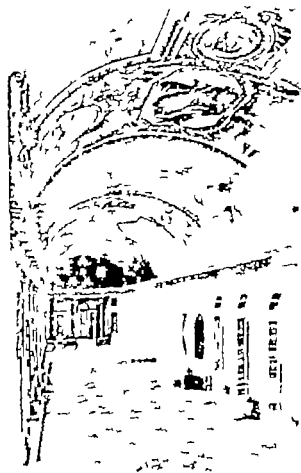
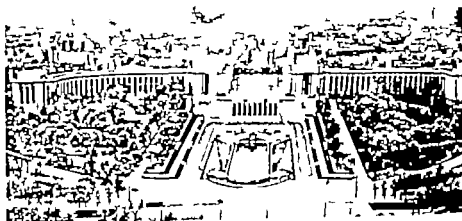
१८ पेरिस नगर का एक भाग (बिहंगम दृष्टि में)



१९ पेरिस की प्रसिद्ध 'एफेल' नामक लोहे की मीनार

२० पेरिस का प्रसिद्ध फाटक धाक की दुबाल्ल जिसके नीचे एक सजावट सैमिक की कला है





११-१२ बसहिल्ल के रामम
के दो हषय

मल बंटाइस है जहाँ प्रसिद्ध बंबीगहू या घौर जिते फरासीसी व्यक्ति के धारम्भ-
 बाल में लपट कर दिया गया था। इसके प्रतिरिक्त लोहे की बनी प्रसिद्ध एफ्लन टावर
 है। यह भीमार १८८६ में बनायी गयी थी और ६५४ फुट ऊँची है। इसे प्रथम प्रसारण
 के लिए काम में लाया जाता है। जहाँ जाने पर मुझे टास्टाय घौर महात्मा पाण्डी
 के विचार याद आये। दोनों ही इस टावर की मानव की मूर्खता का स्वतन्त्र प्रमाण
 मानते थे (चित्र न० ६६)।

‘प्लेस डी ला फानकार्ड’ पेरिस का ऐसा स्थावर है जो प्रायतन सुन्दर
 और ऐतिहासिक स्मृतियों से भरपूर है। हमने पेरिस में फ्रांसीसी विद्यार्थियों के विभिन्न
 बौद्धि-स्तम्भ भी देखे जिनमें ‘थार्क डी टार्वक’ नामक फाटक प्रमुख है (चित्र न० ६०)।

विष्णु ‘बाइरु डी बोम पीब’ और उसके चिड़ियाघर, युद्धबोर्ड के मैदान कुसी
 छत का चियेटर और बर्साइस के महल घौर बाय देखे बिना पेरिस की यात्रा अधूरी
 ही रह जाती है इसलिये हम जहाँ भी देखने गये (चित्र न० ६१ ६२)।

जब रात हो जाती है तो पेरिस की बलियाँ हीरे-जवाहरात-सी चमकने लगती
 हैं। जब समय या तो घाय कोई चियेटर देखने का सकते हैं या अगिरा हाउस या
 माइर-नगर। इसके प्रतिरिक्त ऐसे सेकड़ों कंठे भी हैं जहाँ परिवार के बरिबार
 आकर लचील मुनते ह लोकी बर्बत, घराब घाबि पीते ह। पेरिस की लक्ष्मी तस्वीर
 का बहुरक एक घौर यहि आकर्षक है तो दूसरी घौर धासील थी कम नहीं।

हमने यहाँ के बाइकों घौर माइर-नगरों को भी देखा प्रधानतया ‘फालीज
 बरजेरि’ (Folies Bergere) घौर ‘कैसीनो’ (Casino) की। जो धासीलता हम
 रोम में देख चुके थे वह यहाँ घौर बड़ पयो की। लिबियों के बहुरसयत पर रोम में
 जो बार ईष लोड़ी खोली थी वह भी यहाँ गायब हो गयी थी घौर लिबियों के बल
 तर्बका नग्न थे। बाइकों के बीच केवल सामने की घौर तीन ईष की एक पट्टी थी पर
 वह भी लोडे की खोर नहीं। इस एक छेटी-सी बट्टी को छोड़ लिबियाँ लचका नग्न थीं।
 परन्तु इस नग्नप्राया के बाव मूख प्राबि के समय के हाब भाब रोम के देते ही मूख
 के बहुत बालुब नहीं थे। बरकत वाली बाते यहाँ के मूर्खों में भी थीं घौर मूख भी
 इस प्रकार का न था कि हुरप घू लके। हाँ, एक बात यहाँ के फालीज बरजेरि घौर
 कैसीनो माइरों में विजेब की, वह थी विविध प्रकार के अत्यन्त सुन्दर घौर नग्न
 बुर्यों को ध्यस्तबा। कुछ बुरय तो एक्कल बकित कर देने वाले थे। फालीज बरजेरि
 के एक बुरय की वृष्कृमि में मुन्दर पबंत-ओली और उल पर तथा उसके घाल-पात बल
 दिवाया गया था। कामने एक भील थी। भील में पानो का कुजिम बुरय न विलाकर
 लचका वाली करा का जो इतना गहरा था कि उसमें नमूय बली भाँति डूब सकता था।
 भील के किनारे एक धारबचर बूबि नहीं हुई थी। पबंत-ओली की तराई में एक महिला

कोई लीला न रही । वायुमाल धायरलंड के एक छोटे-से हवाई घबूड़े शैमान (Shannon) पर उतरा । उतरते ही हमें सूचना मिली कि इस एरोड्रोम पर हवाई जहाज की घबूड़े इसलिए ठहरेना कि मशीन की मरम्मत हो जाय । दिन भर लगन में मरम्मत होने के बाद ही जहाँ से एरोप्लेन चला जा और चलने के आगे घबूड़े बाद ही फिर से लंघायत आरम्भ हो गयी थी । जब दिन भर की लगन की मरम्मत भी सफल न हुई थी तब दो घबूड़े की धायरलंड की मरम्मत कहीं तक सफल होनी, सभी यह सोचने लगे । फिर यहाँ से चढ़ते ही तो प्रस्ताविक महासागर की उड़ान आरम्भ हो जाती है, अतः रात की किली के भी जाने की इच्छा न थी । बोड़ी ही बैर में हुत्तरी सूचना भी मिल गयी कि प्लेन का इंजन ठीक होने में काफ़ी समय लगेगा अतः हुत्तरी दिन प्रातःकाल ही जाना हो सकेगा इती के साथ ही यह खबर भी मिली कि चीन द्वारा लगन से बात कर यह प्रयत्न किया जा रहा है कि हुत्तरी हवाई जहाज का जाय । हाँ, रात को सोने का कोई प्रबन्ध न हो सकता था । या तो हवाई जहाज में सोना ही सफ़टा था या हवाई घबूड़े के लाज की सुविधों पर । इस हवाई जहाज में ऊपर की ओर सोने के लिये कुछ खान भी थे, पर वह बहुत बोड़े से घोर थे स्थियों तथा बूड़े धारमियों को लिये जाने वाले थे । पर रात को सोने का कब्य होगा यह जानने पर भी रात की हवाई जहाज में न चलना पड़ेगा वरन् हुत्तरी हवाई जहाज भेगवाने का भी प्रयत्न हो रहा है, इस खबर से सभी को संतोष हुआ ।

जैसे लाज की धरैसा वायुमाल की अपनी लीड पर ही अंशया तय किया और जब से प्लेन में अपनी लीड पर बैठे तब कित्त देश की भूधि पर से इस समय या यह स्वरुध धाते हो जिस अंश के लिए न हवाई जहाज पर गया था वह अंश भी भाय गयी ।

धायरलंड एक ऐसा देश है जिसमें अपनी भाषाही के लिए जितने लम्बे समय तक और जित्त प्रकार का प्रयत्न किया जतने लम्बे समय तक और उतत प्रकार का प्रयत्न बुनिया के धायर किली देश ने नहीं किया ।

धायरलंड और ग्रेट ब्रिटेन के बीच समुद्र होने पर भी बारहूनी और चौबहूनी शताब्दी के बीच धायरलंड पूरी तरह चीत लिया गया था । जिलकुन रश्चिम जाने कुछ भाय को छोड़ बाकी समस्त धायरलंड में धंरैबी भाषी उच्चवर्ग की स्थापना हो गयी थी । अतर्क्यीय पुत्र और 'बार घाँड रोडड' के समय में ब्रिटेन धायर विप्रायों में इतना अधिक बलभू गया था कि धायरलंड पर नियंत्रण बनाये रखना उसके लिए सम्भव नहीं रहा गया था । उतर धाइटिध लोभ भी इतने अधिक समठित न थे कि वे एक राज्य की स्थापना कर तर्के और स्वाधीनता प्राप्त कर लें ।

बाद के हुत्तरी घातकों ने धायरलंड पर बिजय प्राप्त करने का हुत्तरी प्रयास

लिखा ; जैसा कि सर्व विदित है बाब के दूबुद्धर भातक प्रोटेस्टेंट महासुभायी से । उपर कायरलैंड में रिवाजनाम का कोई प्रभाव नहीं पड़ा था और वे लोग प्रोटेस्टेंट न होकर सब भी कैथोलिक मत में ही पड़ा रहते थे । बरिछाम यह हुआ कि द्वितीय विजय से वही कड़वाहट पैल गयी जो किसी भी धार्मिक मुद्दे से पैल जाती है । इस बार भी अंग्रेज कायरलैंड में बतने के लिये गये ; उपर जलरी नाम में कुछ स्काच का बसे । उन्होंने वहाँ पर एक ऐसी सांस्कृतिक धन्य धक्या की नींव डाली जिसने आज तक भी एक समस्या का रूप धारण कर रखा है ।

१६२० में कायरलैंड को स्वशासन दिया गया । उसी समय उत्तर के ६ काउंटियों को सेव कायरलैंड से अलग कर बिटेन के धार्मिक नियम बना लिया गया । १६२२ में इन सेव ६ काउंटियों को छोड़ २६ काउंटियों में दुनीविषय सरकार की स्थापना हुई । ऐसा बेट बिटेन से उसी प्रकार स्वतन्त्र प्रतिस्थाप रकता है बिना प्रकार कैनेडा धपका बखिल धकीका । उत्तरी कायरलैंड में धातन-तला स्वयं वहाँ के लोगों को प्राप्त है बिटेन द्वारा एबनेर-अगरल नियुक्त किया जाता है । सेनेट है धीर लोक-तना है । बिदेसी नामनों को धीर कुछ धन्य बिधियों को छोड़ बाकी सभी के सम्बन्ध में बिबाल यही बिधानमंडल तैयार करता है ।

ऐसा धीर उत्तर कायरलैंड के बीच सम्बन्ध धकके नहीं रहते ; बिटेन उत्तर कायरलैंड का समर्थन करता है कि वह धपकी अर्थनाम बिबति बनाये रखे, पर ऐसा चाहता है कि उत्तर कायरलैंड उसका धंग है इसलिये उसे मिल जाना चाहिए । द्वितीय महायुद्ध में उत्तर कायरलैंड ने बिटेन को लक्ष्योण बिबाबब कि ऐसा तटन बना रखा । ऐरा स्वतन्त्र गणराज्य है ।

कायरलैंड के आबादी के इतिहास से, उसके स्वयं के भारत की अरबी स्वतन्त्रता के युद्ध में सदा प्रेरणा मिली है । इन लीय आबादी के युद्ध के समय के धपने धाबलुँ, धपने सेवों धादि में कायरलैंड के फिलने बुध्यागत दिया करते थे । वं० एबिशकर भी सुकल ने ही कायरलैंड के इतिहास पर एक पुस्तक लिखी थी जेव की बात है कि वह प्रकाशित नहीं हुई ।

कायरलैंड एक छोटा-सा देश है इपतिस्तान के अल्पना समीय । आज वह स्वतन्त्र है, पर स्वतन्त्र कायरलैंड कामनवेल्थ में शामिल नहीं । कायरलैंड का भी भाग कामनवेल्थ में है यह तो यह भाग है जितने कायरलैंड की स्वतन्त्रता में क्या बाधा डाली । इतना छोटा होने पर भी कायरलैंड क्यों कामनवेल्थ में नहीं है ? उत्तर बहुत ही सरल है । स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए कायरलैंड को भी कुछ करना पड़ा है धीर बसे बिना तटन स्वतन्त्रता मिली है उसके कारण अंग्रेजों के प्रति उसकी अविश्वस्य भाव भी बढता है सरी नहीं है । अतएव न ही कायरलैंड कायर

रहा, इंग्लिस्टान का निकटतम पड़ोसी होने पर भी उसने लड़ाई में कोई भाव नहीं लिया। भारत को भी सन् '४७ में परि संघों ने इतनी बदारता-पूर्वक स्वराज्य न दिया होता, तो स्वतन्त्र होने के बाद भारत कभी कामगर्हत्व में यह सकता था ? और आज भी इस सम्बन्ध में भारतीय नेताओं की कुछ शीघ्र कितनी आलोचना किया करते हैं। प्रायरसेड के सम्बन्ध में धर्मक भारतें सोचते और उसके एवाच के कारण उन्हें बार-बार तमस्कार करते हुए ऊँचे के स्थान पर मुझे नीचे धावपी और बैठे-बैठे ही म कोई ३ घण्टे धक्की लागू हो लिया।

प्रत्येकाल मामूज हुआ कि बम्बई से दूसरा हुआई बहाज आना सम्भव नहीं है और न। बने इसी हुआई बहाज पर चलना होया। बी सी ए. सी पर कोच तो कई मोर्षों को बहुत प्राया पर किया गया था सकता था। बेबी-बेबताओं को मनाते हुए हम शीघ्र था। बने प्रती प्लेन से रवाना हुए।

कितनी लम्बी उड़ान थी। कितना समय सपनेवाला था। और उड़ान तथा समय की लंबाई एते वायुयान पर जाने से कहीं अधिक हो गयी थी पर किया गया जाता। मात्रियों में अधिकांश की मानसिक अवस्था प्रत्यक्ष शुष्क थी। कितनी तरह एवलाधिक महात्वापर तो बार करने यही सब लीच रहे थे। तारा रास्ता अधिकांश मात्रियों ने एरी प्लेन के चारों ईकन देखने-देखते बिताया कोई ईकन फिर से बंद तो नहीं हो रहा है सबके मन में यही धारणा थी। ऐसे अवसरों पर मानव-मन की क्या अवस्था होती है इसका हमें आज अनुभव हो गया। एरीप्लेन पड़ा चला जा रहा था। ऊपर आकाश और नीचे अवयव समुद्र था। कई बार वास्तव मिलते। कुछ डेर कुछ न मिलता। जब फिर दिखायी देता तबते एहमें इच्छि वायुयान के ईकनों पर पड़ती। वायुयान की उड़ान के साथ ही समय भी उड़ा चला जा रहा था पर कितना पीरे वायुयाव चलता जान पड़ता और कितने पीरे समय बीतता। एक केवल एक इच्छा सबके मन में थी—कितनी तरह एवलाधिक तो पार हो।

एकाएक एक लम्बन बीने—“जित्त पुर्ब के मोर्षों में अधिकांश का पुनर्जन्म पर विश्वास है वे मृत्यु से कितना डरते हैं उतना परिचय के शीघ्र भी नहीं, की जानने हैं कि इसी जन्म में सब कुछ समाप्त हो जाता है।

क्या यह बात सचची थी, क्या सबमुच धारतीय मृत्यु से जन्मों की अवस्था अधिक डरते हैं ? बहुत सोचने पर भी मुझे यह डीक न जान पड़ा। मे सम्बन्धता है सच्चे धार्मिकों की छोड़ मृत्यु से सभी समान रूप से डरते हैं। पुनर्जन्म पर बिनकी विश्वास है वे कम इतलिए नहीं डरते कि इस जन्म से सम्बन्ध रखने वाली सब चीजों की स्मृति तो इसी जन्म में समाप्त हो जाती है और बीजन्म में स्मृति का स्थान बहुत पड़ा है। कितनी भावनायें, कितने कामों की यह स्मृति प्रेरक रहती है। हयें कितनी

न-किसी दिन मरना है यह हम में से कौन नहीं जानता ? बिना कष्ट की मृत्यु भी सभी चाहते हैं । मरने के समय भी कई कितने साहस से मरते हैं । वर भारतीय मरना चाहते हैं स्वाभाविक रूप से अपने घर में, या किसी तीर्थ-स्थल पर अपने कुटुम्बियों के बीच । प्रकृत मृत्यु हम नहीं चाहते और हवाई अड्डा इत्यादि के एक्सीडेंटों में मरना हम अकाल मृत्यु मानते हैं । फिर हवाई अड्डा यात्रि बीजे हमने नहीं निक्कासी है । जिन्हींने यह बीजे ईजाज की है उन्हें अजान में ही इन बीजों से एक प्रकार का ऐसा प्रेम है कि इनके एक्सीडेंटों की भी उनको इतनी बरबाद नहीं रहती जितनी हमें ।

अब हमारे हवाई अड्डा ने कनेडा के गैरडा हवाई अड्डे वर बतरना धारण किया तब यद्यपि हमारी पड़ियों ने १ बजा दिने के पर गैरडा के धारी १ ही बजे के बत दिन बड़े होने के कारण धारी भी लग्ग्या का प्रकाश वा । फिर उत्तर की धोर प्रा जाने के कारण दिन धोर बड़ गया वा । अचौरा न होने की बजह से हमें अमीन रिक्कायी ही । अमीन देखकर तब के बेहरे घित-से मये । इस हवाई अड्डे पर बंदोल प्रावि लेने हम ४१ मिनिट ठहरने वाले थे । ठीक समय हम रवाना हो हुए पर उड़ने के पहले अमीन पर एरोप्लेन थोड़ी ही देर बला होवा कि एक इजन फिर बर हो गया धोर हमें लुचता मिली कि इजन ठीक करने फिर हमें एक घण्टे धोर इडरना होवा ।

एडमंड्रिक वार कर घाने के कारण अब हम बिनित्त तो उतने नहीं हुए, वर अवेह हममें से अनेक की घाया । प्राकिर यह तब गया हो रहा है ? धोर इजन पड़बड़ भी होता है तो अमीन पर ही क्यों ? अवेह के कारण हम यह भूम मये कि मनीमत भी कि इजन अमीन पर ही बिगड़ता वा प्रासमान में नहीं । हम यही सोच कर प्लेन से उतरे कि कल के समान प्राज की रात भी हमें इस हवाई अड्डे पर बिताती होगी लकिन ऐसा न हुमा । एक घण्टे के भीतर ही इजन ठीक हो गया, हम फिर उड़े धोर अचकी वार बिना किसी घटना के हम मंड्रयल पहुँचे गये । अब हम मंड्रयल पहुँचे तब यहाँ रात के १ बजे के वर यहाँ का लवय लग्गन से १ घण्टे बीछे वा प्रबत्ति भारत के समय से १० घण्टे पीछे । लग्गन से यहाँ तक हम १० घण्टे उड़ चुके थे ।

मंड्रयल पहुँचकर सबसे प्राति की साँस ली । मानुम हुआ प्लेनों के इन्जनों में इस प्रकार की अराबिया कई वार हो जाया करती है धोर अब तक यह निश्चित नहीं हो जाता कि कोई भय नहीं है तब तक उड़ान बची रहती है । हमारे वायुयान के सम्बन्ध में भी तो यही हुआ वा । चाहे हमने चिन्ता कितनी ही क्यों न की हो, वर प्राकिर २४ घण्टे देर से पहुँचने के तिया धोर कौन ली बात हुई थी ? जो कुछ ही, वार-वार इजन की यह अराबी चिन्ता का विषय तो वा ही । हम सोचों में से कई इन निश्चय पर भी पहुँचे कि आईई प्लेन से साधारण प्लेनों की मात्रा अक्किर पुच्छित होती है क्योंकि वे रोक उड़ते हैं जो आरड प्लेन नहीं ।

कामनवेल्थ पार्लियामेन्टरी परिषद् के पूर्व के आठ दिन भीलों वाले देश में

उत्तरी अमेरिका के उत्तर का देश कॅनेडा के नाम से प्रसिद्ध है परन्तु मैंने इसे 'भीलों का देश' नाम दिया है क्योंकि छोटी-बड़ी जितनी भीनें इस देश में हैं उतनी घनत्व कहीं नहीं। इन भीनों की इस बहुतायत का कारण यह बताया जाता है कि यहाँ आड़ों में जितना बरक पिरता है उतनी उत्तरी ध्रुव धीरे-धीरे प्रत्यक्ष समीप की छोड़कर अन्य कहीं नहीं पिरना। कभी-कभी धीरे-धीरे-धीरे तो इस बरक की मुड़ाई १५-१५, २०-२० फुट तक हो जाती है। इस बरक के मतलब पानी बनने तथा उसके भूमि के चट्टानों में बरने के कारण अपने आप इतनी अधिक भीलों का निर्माण हो गया है। इन भीलों से अनेक बड़ी-बड़ी नदियाँ निकली हैं जिनमें से कुछ प्रसन्न महासागर धीरे-धीरे कुछ एडलाटिक महासागर की धीरे-धीरे वह इन समुद्रों में मिली हैं जो समुद्र कॅनेडा के पूर्वी धीरे-धीरे पश्चिमी भागों को स्पष्ट करते हुए समुद्राया करते हैं। इस देश के उत्तरी भाग में अनेक द्वीप हैं कॅनेडा बहुत बड़ा देश है। सारे देश का क्षेत्रफल ३०४५,१४४ बर्ग मील है जो कि सबसे पुराने के क्षेत्रफल से भी अधिक है। बर्लिन-ब्रेस्लियाँ बहुत अधिक धीरे-धीरे हैं किन्तु भीनें से अनेक बर्लिन-ब्रेस्लियाँ भी बनी हैं १६,०५० फुट। देश की उत्तरी अधिकतर तक है। अंगलों की लूब बरमार है धीरे-धीरे अंगलों में बरबराक छोड़ जोअपन पादि के वृत्तों की बहुतायत है। लूड के वृत्त तो इतने अधिक हैं कि कहीं-कहीं लूडों नील तक जाने जाने पर भी लूड बिट्टों के लिका धर्म्य जितनी जितनी के बरबराक इच्छियोवर ही बड़ी होते। वनों में सिद्ध, व्यापारिक हिलक पशुओं का निवास नहीं है किन्तु पशुओं में केवल मनु धीरे-धीरे हैं। अन्य पशु-वर्गी भी कम ही हैं। देश लूड हरा-हरा है। भीलों नदियों पर्वतों वनों धीरे-धीरे समुद्रों में सारे देश बर प्राकृतिक लौहवर्ध की बर्तों को कर दी है।

कॅनेडा के इतने बड़े देश होने पर भी यहाँ की आबादी कुछ एक करोड़ जालीत मात्र है अर्थात् प्रेड बिडेन भारत प किस्तान चीन आबाम पादि देशों में कहीं वर्गनील बोछे पाँच ती से अधिक अनुप्य रहते हैं, बड़ी कॅनेडा में केवल चार। इती

अमनमैत्र्य पार्लियामेन्टरी परिषद् के पूर्य के आठ दिन भीसों वाले बेरा में १४७

लिए यहाँ प्राकृतिक तापनों का पूरा उपयोग नहीं हो रहा है। जमीन को ही नीबिए। समूचे बेरा की केबल बारह प्रतिशत जमीन में खेती होती है। यह इलाका सबमय १०२०,०००००० एकड़ है इसमें से भी विकसित ९,२०००,००० एकड़ है। सेव भूमि का तो अंश है या बहु पड़ती बड़ी है।

घाबासी की कमी के कारण इस बेरा में बड़े-बड़े नगर नहीं हैं। बड़े से बड़ा शहर मांट्रियल है जहाँ की घाबासी ताड़े बारह लाख से कुछ अधिक है। एक लाख के ऊपर की जनसंख्या के १० नगर हैं। इनके नाम हैं मॉन्ट्रियल, टोरंटो, क्वेबेक, बिन्नीयेग न्यूब्रेक हैमिस्टन, ग्रैंडबा, एडमोन्टन विडतर धीर कालपरी। ग्रॉन्डबा कॅनेडा की राजधानी है। ग्रैंडबा की घाबासी एक लाख साठ हजार के लगभग है। इन शहरों को छोड़ बेरा में शेष छोटे-छोटे नगर धीर कस्बे हैं। जिस प्रकार यहाँ बहुत बड़े शहर नहीं वसी प्रकार बहुत छोटे गाँव भी नहीं। सभी नगर, कस्बे गाँव में बिजली तथा सब प्रकार की आधुनिक सुविधायें मौजूद हैं। सभी खूब साफ-सुन्दरे और आरामदायक सम्पन्न बिल बड़ते हैं। तारा बेरा इस प्रान्तों में धीर दो प्रदेसों में विभाजित है। ये प्रान्त इस प्रकार हैं—

पेट्रोलियम सागरवर्ती प्रांत—नोवास्कोशिया न्यू ब्रुन्सविक, प्रिंस एडवर्ड आइलैंड और न्यू फाउण्डलैंड।

मध्यवर्ती प्रान्त—न्यूब्रेक धीर ओन्टारियो।

प्रेयरी प्रान्त—मनीटोबा सस्केववान, धीर एलबर्टा।

पश्चांत पेट्रोलियम प्रांत—ब्रिटिश कोलम्बिया।

उत्तरी प्रदेरा—यूकीन और उत्तर-ब्रिजनी प्रदेरा।

बेरा प्रजासाम्यिक आसन से साक्षित होता है। केन्द्र की धारा-समा है धीर वहाँ प्रान्तों की सब धारा-समा है। केन्द्र धीर वहाँ प्रान्तों में पंक्तिबद्ध है जो आरातभागों के प्रति जिम्मेदार है। परन्तु हर प्रान्त में प्रजासाम्यिक आसन होते हुए भी हर प्रान्त का आसन-विधान एक-सा नहीं है। केन्द्र धीर प्रान्त में अनेक राजनीतिक बल हैं और बिशेषता यह है कि सब प्रान्तों में एक-से नहीं। कॅनेडा की प्रमुख राजनीतिक पार्टियाँ दो हैं—(१) लिबरल पार्टी और (२) कॅन्जरवेटिव पार्टी जो अब अपने को प्रगतिशील कॅन्जरवेटिव पार्टी कहती है। संयुक्त कॅनेडा की स्वायत्ता के बाव से आसन की बाबकोर इन्हीं दो पार्टियों के हाथ में रहती आयी है। अब ही नयी पार्टियों की स्वायत्ता की यमी है। इन पार्टियों के नाम हैं कोन्सर्वेटिव कामनवेल्थ कॅन्जरवेटिव (सी. टी. एफ.) और सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी। गत चुनाव में लिबरल पार्टी की बिजय हुई है। इस पार्टी के नेता वी नुई सेंड लौरा प्रधान मंत्री हैं।

लोगों के व्यवसाय अलग-अलग प्रकार के हैं पर अधिकतर लोग खेती और

पञ्च-वासन से पुनः-वसर करते हैं। यद्यपि भूमि के बितरण के सम्बन्ध में इत प्रकार का कोई कानून नहीं है कि कोई स्थिति इतने अधिक भूमि नहीं रख सकती, क्योंकि भूमि की कोई कमी नहीं है, पर प्राचिन्दाय धर्म से वेद से एकड़ के हैं। कोई-कोई तीन से चार से एकड़ तक के भी हैं परन्तु ऐसे कम। इन धर्मों में हर प्रकार की खेती होती है। धनाज साप-मात्री प्रादि सब उत्पन्न होते हैं इनके सिवा पास होता है। गार्से रहती है। कहीं-कहीं पायों के साथ भेड़ें सुगर, मुर्गी और चिन्नों के करकोट जिनके धमड़े से बनते हैं वे लोमड़ियाँ और 'मिक्' नामक जानवर। सुना कि प्राचिन्दाय एक लोमड़ी का धमड़ा करीब पन्द्रह डालर याने लगभग सतर रुपये और एक मिक् का धमड़ा करीब पचीस डालर याने लगभग १२० रुपये में बिकता है पर करीब दो वर्ष पहले इन धमड़ों की कीमत बहुत अधिक थी। नीले रंग की मिक् का धमड़ा तो साढ़े तीन से डालर तक बिकता था। मिक् का यह धमड़ा कोई एक फुट लम्बा और ६ इंच चौड़ा होता है और एक कोट में इस तरह के लगभग साठ धमड़े लगते हैं। ये लोमड़ियाँ और मिक् हर करवरी और धर्म के बीच बच्चे होते हैं। लोमड़ियों के तीन से चार और मिक् के दो से तीन बच्चे होते हैं। मिक् का बच्चा तीन इंच लम्बा पैदा होता है और इतनी जल्दी बढ़ता है कि दिसम्बर तक ८ २ महीनों में ही एक फुट लम्बा हो जाता है। पैदाइश के लिए बच्चे जानवरों को छोड़ देवे लोमड़ियों और मिक् का उनके जन्म के केवल ८ २ महीने बाद दिसम्बर में बच कर दिया जाता है क्योंकि इनके धमड़ों के बाल सभी समय सर्वोत्तम स्थिति में रहते हैं। बच्चे देने के योग्य जानवर चार-पाँच वर्ष तक जीवित रखे जाते हैं। सुना गया कि चिन्नों के करकोट अधिकतर इन्हीं दो जानवरों के धमड़े से बनते हैं पर प्राचिन्दाय इनका बाजार ईस्टों प्रादि के कारण बहुत मड़ा हो गया है और कई जगह के धर्मों में इस्पाकीड का यह काम बढ़ किया जा रहा है। कैनेडा के सिवा गार्से-स्वीडन प्रादि धर्म बहुत ठंडे देशों में भी लोमड़ियों और चिन्नों के वे धर्म हैं। गार्से चार जाति की है—हालस्टीन करली, ग्वाइन्ली और एधीयर। पायों का रूब की दिन पीतल से बल से पन्द्रह सेर है पर किसी-किसी का सवा बल तक। गार्से/दिन में तीन बार बुझी जाती है। भेड़ें यहाँ से न्यूजीलैंड में कहीं अधिक हैं। गार्से भी यहाँ से न्यूजीलैंड में बहुत ब्यादा है। साथ ही दोनों जानवर कैनेडा से न्यूजीलैंड के कहीं प्रचल हैं। इतका कारण यह है कि न्यूजीलैंड के निवासियों का प्रयास यथा जो डेरी और भेड़ों के धर्म हैं वह कैनेडा के लोगों का नहीं। यद्यपि यहाँ के लोगों का भी प्रयास रोज़वार में धर्म ही है, पर इन धर्मों में खेती भी होती है याने कैनेडा के वे धर्म विरलध धर्म प्रबन्ध मिने-जुने धर्म कहलाते हैं न्यूजीलैंड के मुख्यतः डेरी और भेड़ों के धर्म हैं। इसीलिए न्यूजीलैंड के



७१ सेण्ट जोसेफ माट्रबल



७८ लोद्रेडम पिरबापर माट्रयल



७५ सनलाइक बिलिडय,
माट्रयल

पत्र-पालन से बुझ-बसंत करते हैं। यद्यपि भूमि के वितरण के सम्बन्ध में इस प्रकार का कोई कानून नहीं है कि कोई व्यक्ति इससे अधिक भूमि नहीं रख सकता क्योंकि भूमि की कोई कमी नहीं है, पर अधिकाराज्य जर्मनी से डेढ़ सौ एकड़ के हैं। कोई-कोई तीन सौ से चार सौ एकड़ तक के भी हैं, परन्तु ऐसे कम। इन जर्मनों में हर प्रकार की खेती होती है। घनाब साब भाजी धानि सब उत्पन्न होते हैं इसके सिवा घास होता है। बाघें रहती हैं। कहीं-कहीं बाघों के साथ भेड़ें, सुघर, मुर्गी और स्त्रियों के फरफोट बिनके जमड़े से बनते हैं वे लोमड़ियाँ और 'मिंक' नामक जानवर। मुना कि प्राजकल एक लोमड़ी का जमड़ा करीब पन्द्रह डालर वाले लगभग सतर रुपये और एक मिंक का जमड़ा करीब पचवीस डालर याने लगभग १९ रुपये में बिकता है, पर करीब दो वर्ष पहले इन जमड़ों की कीमत बहुत अधिक थी। नीले रंग की मिंक का जमड़ा तो साढ़े तीन सौ डालर तक बिकता था। मिंक का यह जमड़ा कोई एक फुट लम्बा और ६ इंच चौड़ा होता है और एक कोष्ठ में इस तरह के लगभग साठ जमड़े लवते हैं। वे लोमड़ियाँ और मिंक हर फरवरी और अप्रैल के बीच बच्चे देते हैं। लोमड़ियों के तीन से चार और मिंक के दो से तीन बच्चे होते हैं। मिंक का बच्चा तीन इंच लम्बा पैदा होता है और इसकी जन्मी बड़ता है कि वितम्बर तक ८-९ महीनों में ही एक फुट लम्बा हो जाता है। पैदाइश के लिए बच्चे जानवरों को छोड़ देव लोमड़ियों और मिंकों का जबकि जन्म के केवल ४, ६ महीने बाद वितम्बर में बच कर शिवा जाता है क्योंकि इनके जमड़ों के बाल उसी समय सर्वोत्तम स्थिति में रहते हैं। बच्चे देने के योग्य जानवर चार-पाँच वर्ष तक जीवित रखे जाते हैं। मुना गया कि स्त्रियों के फरफोट अधिकतर इन्हीं दो जानवरों के जमड़े से बनते हैं पर प्राजकल इनका बाजार डेस्तों धानि के कारण बहुत बढ़ा हो गया है और कई जगह के फार्मों में इत्याकांड का यह काम बर किया जा रहा है। कॅनेडा के सिवा नार्थ-स्वीडन धानि धान्य बहुत ठंडे देशों में भी लोमड़ियों और मिंकों के ये कार्म हैं। गार्मे चार जाति की हैं—हालस्वीन भरती, एडाइन्सी और एजीयर। बाघों का दूध की दिल् प्रीतत से इस से बन्धु हर है पर किली-किली का लबा मग तक। पार्मे/दिल में तीन बार बुही जाती है। भड़ें यहाँ से न्यूजीलैंड में कहीं अधिक है। पार्मे भी यहाँ से न्यूजीलैंड में बहुत ब्यादा है। साथ ही दोनों जानवर कॅनेडा से न्यूजीलैंड के कहीं धरके हैं। इसका कारण यह है कि न्यूजीलैंड के निवासियों का प्रधान धंधा जो डेरी और भेड़ों के कार्म है वह कॅनेडा के लोगों का नहीं। यद्यपि यहाँ के लोगों का भी प्रधान रोडवार ये कार्म ही है, पर इन फार्मों में खेती भी होती है याने कॅनेडा के ये कार्म निरसद कार्म धरवात् मिले-जुले कार्म बन्धुजाते हैं न्यूजीलैंड के मुख्यतः डेरी और भेड़ों के फार्म हैं। इसीलिए न्यूजीलैंड के



७३ सेण्ट जोसेफ मंदिर

७४ मेट्रोडम गिरजाघर मंदिर



७५ समलक्ष्य बिल्डिंग
मंदिर

पशु-पालन से मुक्त-वसर करते हैं। यद्यपि भूमि के बितरण के सम्बन्ध में इस प्रकार का कोई कानून नहीं है कि कोई व्यक्ति इससे अधिक भूमि नहीं रख सकता, क्योंकि भूमि की कोई कमी नहीं है, पर अधिकारों का अर्थ ही से बड़े ही एकड़ के हैं, कोई-कोई तीन ही से चार ही एकड़ तक के भी हैं, परन्तु ऐसे कम। इन कामों में हर प्रकार की खेती होती है। घनात्र साग-भाजी प्रादि सब उत्पन्न होते हैं इसके सिवा घास होता है। पार्से रहती है। कहीं-कहीं पापों के साथ भेड़ें, गुधर, मुर्गी घोर रिजों के करीब बिलके जगड़े से बगते हैं वे लोमड़ियाँ घोर 'मिर्क' नामक जानवर। मुना कि धातुकल एक लोमड़ी का बमड़ा करीब पन्द्रह डालर वाले लवण्य सतर रुपये घोर एक मिर्क का बमड़ा करीब पचबीस डालर वाले लवण्य १२० रुपये में बिकता है पर करीब दो वर्ष पहले इन बमड़ों की कीमत बहुत अधिक थी। लोमड़े रंग की मिर्क का बमड़ा तो साढ़े तीन सौ डालर तक बिकता था। मिर्क का यह बमड़ा कोई एक फुट लम्बा घोर ५ इंच चौड़ा होता है घोर एक कोट में इस तरह के लवण्य छान बमड़े लपते हैं। वे लोमड़ियाँ घोर मिर्क हर करबीरी घोर घरेल के बीच बच्चे देते हैं। लोमड़ियों के तीन से चार घोर मिर्क के दो से तीन बच्चे होते हैं। मिर्क का बच्चा तीन इंच लम्बा पैदा होता है घोर इसकी बच्ची बढ़ता है कि बिलम्बर तक ८ २ महीनों में ही एक फुट लम्बा ही जाता है। पैदाइश के लिए बच्चे जानवरों को छोड़ छेप लोमड़ियों घोर मिर्कों का उनके बच्चे के केवल ८, २ महीने बाद बिलम्बर में बच कर दिया जाता है क्योंकि इनके बमड़ों के बाल उसी समय प्रबोतम स्थिति में रहते हैं। बच्चे देने के योग्य जानवर चार-पाँच वर्ष तक जीवित रखे जाते हैं। मुना गवा कि रिजों के करीब अधिकतर इन्हीं दो जानवरों के बमड़े से बगते हैं पर धातुकल इनका बाजार ईरानों प्रादि के कारण बहुत बढ़ा हो गया है घोर कई जगह के कामों में हथपाका का यह काम बर किया जा रहा है। कैनेडा के सिवा मार्न-स्वीडन प्रादि धन्य बहुत ठपे देशों में भी लोमड़ियों घोर मिर्कों के ये काम हैं। पार्से चार बालि की हैं—हालसीन बरती, ग्वाइन्ती घोर एजीयर। पार्से का बूब की बिल प्रोतत से बस से पन्द्रह सैर है पर किसी-किसी का लबा मग तक। पार्से/बिल में तीन बार हुड़ी जाती है। भेड़ें यहाँ के न्यूजीलैंड में कहीं अधिक हैं। पार्से भी यहाँ से न्यूजीलैंड में बहुत ब्यादा है। साथ ही दोनों जानवर कैनेडा से न्यूजीलैंड के कहीं परक है। इसका कारण यह है कि न्यूजीलैंड के निवासियों का प्रधान पंपा जो डेरी घोर भेड़ों के काम हैं, वह कैनेडा के लोगों का नहीं। यद्यपि यहाँ के सोयों का भी प्रधान रोजवार ये काम ही हैं पर इन कामों में खेती भी होती है याने कैनेडा के ये काम बिलसत फार्म प्रबत्ति मिले-जुने काम कहलाते हैं न्यूजीलैंड के मुख्यतः डेरी घोर भेड़ों के काम हैं। इसीलिए न्यूजीलैंड के

कामनवेल्थ पार्लियामेन्टो परिषद् के पूर्व के आठ दिन भीलों वाले दौर में १४६

इस प्रकार के कार्यों में बेसी घने घाल की हरीतिमा की शोभा दिखायी पड़ती है बेसी पहाँ की नहीं। और न्यूजीलैंडवाले तो जाने का अनाज तक बाहर से मँगाले है। कॅनेडा में वहाँ के लोगों के ही जाने के योग्य अनाज पैदा नहीं होता पर बाहर मँगाने के लिए भी होता है। न्यूजीलैंड के समान कॅनेडा में दोरी की शीतल कृत्रिम बर्मायात के नहीं होती। वहाँ इतका प्रचार ही नहीं है।

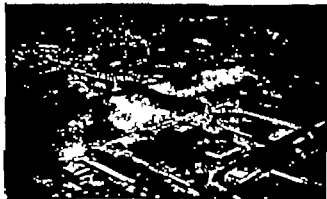
इन फार्मों के सिवा कॅनेडा में अन्य उद्योगों का भी काफी विकास हुआ है। कॅनेडा वालों ने अपने देश में सबसे पहले बिजली पैदा की है, जो सारे उद्योगों की बड़ है। इसके बाद एस्पुनीनियम, पक्ककारी कायम इत्यादि इत्यादि के कारखाने हैं। सीमागत से कॅनेडा में तेल भी मिल गया है और लोहा भी।

संसार का ८ प्रतिशत अन्नकारी कायम कॅनेडा में तयार होता है। संसार में सबसे अधिक शिक्षित रेडियम प्लेडिनम और एल्युमिनियम कॅनेडा में पाया जाता है। लकड़ी का मूरा तयार करने और एस्पुनीनियम व सोदा निकालने में इसका दूसरा नम्बर है।

द्वितीय महायुद्ध के पूर्व संसार के व्यापारी देशों में कॅनेडा का चौथा नम्बर था। १९४२ में कॅनेडा ने तीसरा स्थान प्राप्त कर लिया।

कॅनेडा इस समय संसार का सबसे सम्पन्न देश है। वहाँ अभी देश में घोर व्यक्तियों के पास अमेरिका के समूह घन अनाज न हुआ हो वर वहाँ की अन्न का मुख्य अमेरिका की अन्न से भी जोड़ा अधिक है।

देश के निवासियों का जीवन-मोहल बहुत ऊँचा है। बहुत अधिक अन्नवाले भी पहाँ नहीं है परीच तो कोई है ही नहीं। मन्चल घेरती के लोच ही अधिक है। शीतल आनवनी है लगभग जो लो अन्नर वाले पैदाशील भी कच्चा लकड़कारी। इसीलिए पहाँ की पार्लियामेन्ट के सदस्यों का वेतन दुनियाँ के हर देश की आरम्भना के सदस्यों से अधिक है। वे सब हजार अन्नर वाले पचास हजार रुपये प्रति वर्ष पाले हैं। अर्थियों का वेतन सदस्यों के वेतन से केवल दुगुना है। कॅनेडा में सभी सम्पन्न हैं सिद्धित हैं मुकी हैं समुद्र है इसीलिए निरोपी और बीर्यजीवी भी है। नये देशों की नयी आबादी के बहुत जोधीने है परन्तु न्यूजीलैंड के निवासियों के समूह बहुत सीधे और बहुत उदार नहीं। इसीलिए वहाँ न्यूजीलैंड के देशों ने वहाँ के आदिवासी नागरिकों को समान अधिकार के, उन्हें अपने में मिला लिया है वहाँ कॅनेडा के देशों ने आस्ट्रिया के देशों के समान वहाँ के मूल निवासियों का संहार किया है और इन मूल निवासियों की संख्या इतने बड़े कॅनेडा देश में केवल अनाज तक रह गयी है।



७६ माटुयल का बिर्हाम हस



७७ बेवर घील माटुयल



७८ धाम्पूरबेसन कार माटुयल

अमनत्रैश्वर्षि पार्श्वामेष्टरो परिपद् के पूय के आठ दिन कीसों वाले देरा में १४६

इस प्रकार के कामों में बेती घने घास की हरीतिमा की सोना बिखायी पड़ती है, बेती बड़ी की नहीं। घोर म्यूजीमेंडवाले ती जाने का घनात्र तक बाहर से मँपाते हैं। कॅनेडा में बहाँ के लोगों के ही जाने के योग्य घनात्र पैदा नहीं होता पर बाहर मँजने के लिए भी होता है। म्यूजीमेंड के समान कॅनेडा में डोरों की प्रोत्साह कुत्रिम परमात्रा से नहीं होती। यहाँ इसका प्रकार ही नहीं है।

इन कामों के सिवा कॅनेडा में अन्य उद्योगों का भी काफी विकास हुआ है। कॅनेडा वालों ने घनम वेद्य में सबसे पहले बिजली पैदा की है जो सारे उद्योगों की बड़ है। इसके बाद एस्मूमीनियम का खनारी काम, इसका इस्वादि के कारखाने हैं। सीमात्र के कॅनेडा में तेल भी मिल गया है और सोडा भी।

संतार का २० प्रतिशत सख्तारी काम कॅनेडा में तयार होता है। संभार में सबसे अधिक बिजिल रेडिबन, प्लमिनम और एसबेस्टस कॅनेडा में तयार जाता है। लकड़ी का मूरा तयार करने और एस्मूमीनियम व सोना निकालने में उत्तका उतता मन्बर है।

द्वितीय महायुद्ध के पूर्व संतार के ध्वापारी देशों में कॅनेडा का चौथा मन्बर था। १९४२ में कॅनेडा ने तीसरा स्थान प्राप्त कर लिया।

कॅनेडा इस समय संतार का सबसे सम्पन्न देश है। बाड़े घनी वेद्य में और स्थितियों के बाव धमेरिका के सङ्घ घन काम न हुआ ही, वर बहाँ की डालर का मूय धमेरिका की डालर से भी चौड़ा घबिक है।

देश के निवासियों का जीवन-शौर्य बहुत ऊँचा है। बहुत अधिक जनघन भी बहाँ नहीं है। बरीब तो कोई है ही नहीं। घणघन जेस्ली के लोक ही घबिक है। प्रीमत घाबदनी है। तयत्रय नी ली डालर घाने पैतालीक नी बघवा मङ्घुबारी। इतीलिए यहाँ की पार्श्वामेष्ट के मररयों का वेतन दुनिया के हर देश की चारसमा के सदस्यों से घबिक है। वे इस हजार डालर घाने बघात हजार धववा प्रति बर्ष घाने हैं। मंत्रियों का वेतन सदस्यों के वेतन से केवल दुगुना है। कॅनेडा में सभी सम्पन्न हैं। बिमित है सुखी है। लम्बुय है। इतीलिए निरोगी और दीर्घजीवी भी है। नये देशों की नयी धाबारी के सङ्घ बोधीसं है। परन्तु म्यूजीमेंड के निवासियों के सङ्घ बहुत तीमे और बहुत बहार नहीं। इतीलिए बहाँ म्यूजीमेंड के इबेतों ने बहाँ के प्रादिवासी मन्बरियों को समल घमिघार से उगुँ घपने में मिला लिया है। बहाँ कॅनेडा के इबेतों ने धारदु लिया के इबेतों के समान बहाँ के मूल निवासियों का संहार किया है और इन मूल निवासियों की संघवा इतने बड़े कॅनेडा देश में केवल सवा लाख रह बनी है।

कॅनेडा की सरकार ने भी वहाँ की ऊँची-नीची भेरियों को समान स्वतन्त्र पर सामने तथा जनता की सुरक्षा के कानूनों की बंसी व्यवस्था नहीं की बंसी म्यूजीसेड में है, बंसे म्यूजीसेड में किसी को भी पाँच कमरे से अधिक का मकान बनाने का अधिकार नहीं, वहाँ बरेलू नौकरों की संख्या ही समाप्त हो गयी है ऐसा वहाँ नहीं है। वुडी की पॉलिटी सिमों की सुरक्षा प्रादि के बंसे कानून म्यूजीसेड में है बसे भी यहाँ नहीं।

कॅनेडा का इतिहास एक हजार वर्ष प्राचीन है। उस समय मार्सेवाली भी लीकप्रिकसन प्रोनसेड आते हुए तुकान के पयेडों में प्राकर कॅनेडा-तट पर पहुँच गये थे। इसके बाद कौलीय छाताधियों में मार्से के विभिन्न उपनिवेशों की स्थापना हुई। बीडहर्षी छाताम्बी में ये सभी बस्तियाँ गुप्त हो गयीं और कॅनेडा की केवल गार्बार्प मुनायो पड़ने लयीं।

क्योलन्स ने जब पश्चिमी लठार का पता लगाया तो १४९७ में डिस्डल से चलकर भी जोन बीडड म्यू फाउण्डलड पहुँचे और उन्होंने वसे डिडिड प्रदेस घोषित किया। जब उन्होंने यह सूचना दी कि वहाँ के समुद्र-तट में बहुत अधिक मछलियाँ पायी जाती हैं तो यूरोप के कई देशों के बड़े कॅनेडा की ओर आकृष्ट हुए। बाद में कर व्यापार पर आधिपत्य करने के लिए यूरोपीय बस्तियों में होड़ चल पड़ी।

१६०४ में वहाँ फ्रेंसीसियों ने पहली बस्तियाँ स्थापित करनी प्रारम्भ की। १६०८ में क्यूबेक नगर की स्थापना की गयी। फिर फ्रेंचों और फ्रेंसीसियों में लक्ष्य होने लगा। कॅनेडा में फ्रेंचोली शासन १७६ तक चला। उधर १६७० में फ्रेंचों ने हडसन बे कम्पनी की स्थापना की थी। कर के व्यापार से भ्रमणत्व बढ़ता ही जाता था। फ्रेंचोली छाताम्बी में यूरोप में फ्रेंच और डिटेन के संपन्न का प्रभाव उत्तर अमेरिका पर भी पड़ा। १७२९ में प्रवाहम के मंदान की लड़ाई के पश्चात् क्यूबेक फ्रेंचों की प्रत्य हो गया। इस युद्ध में लठार-अच्छिड योद्धा मोडकाय और मुफ़ बोगों ही बहादुरी के साथ लड़ते हुए मारे गये थे।

प्रायः इन दोनों भागों का एक ही स्मारक इस प्राय का स्मरण दिलाता है कि कित्त प्रकार कॅनेडा में दोनों ही बरन्धरों का सम्मिश्रण हुआ है। १७६३ में लड़ाई समाप्त हो गयी। प्यारु वर्ष पश्चात् १७७४ में क्यूबेक कानून पाठ किया गया जिसके अनुसार फ्रेंच का स्वाय-विधान लागू रहने दिया गया और इपसेड का इण्ड-विधान स्वीकार कर लिया गया। भूमि की फ्रेंचोली धर्म-सामंतवादी व्यवस्था को भी मान्यता दे दी गयी।

इसके पश्चात् वर्ष अमेरिका की स्वाधीनता कान्ति प्रारम्भ हुई जिससे बकिरु क तैरहु ब्रिटिश उपनिवेशों में संयुक्त राज्य अमेरिका की स्थापना हुई। कॅनेडा को भी

कामनवेल्थ पार्लियामेन्टरी परिषद् के पूरे के आठ गिन मीलों वाले देश में १५१

इस क्रान्ति में तत्पिहित होने का धारणासन दिया गया लेकिन कनेडा प्रिटेन के अधीन हो बना रहा । उपर अमेरिका की स्वतन्त्रता के बाद लगभग चालीस हजार ऐसे व्यक्ति जो ब्रिटेन के बकादार वे बहूँ से प्राकर कनेडा में बस गये और इस प्रकार कनेडा में पंचेजों का प्रभाव अधिक दृढ़ हो गया । बीरे-बीरे कनेडा में जन प्रतिनिधि सरकार की स्थापना की जाी होने लगी । १७६१ के वैधानिक कानून के अधीन कनेडा उत्तर और दक्षिण इन दो भागों में विभक्त हो गया और विधान सभाएँ बन गयीं । १८१३ और १८७० के बीच ब्रिटेन से और बहुत से लोग प्राकर कनेडा में बसे । १८३६ में 'डरहम' रिपोर्ट में यह सिफारिश की गयी थी कि उत्तर और दक्षिण कनेडा को मिलाकर बहूँ पर पूर्ण तता प्राप्त जन-प्रतिनिधि सरकार की स्थापना की जाय । १८४० के एथियन कानून के द्वारा उत्तर और दक्षिण कनेडा की वैधानिक एकता का प्रयत्न किया गया, किन्तु कनेडा तप की स्थापना की दिशा में बहुत कम १८६४ में उठाया गया । धार कनेडा में तत्कालीय डंग की संघ सरकार है ।

इस में इस मीलों वाले देश में प्रवेश किया यहाँ के सबसे बड़े नगर मांट्रियल है । मांट्रियल इस ता २६ अक्टूबर की रात की पहुँचने वाले थे पर बीते पहले कहा है हमारे मन में गड़बड़ी होने के कारण हम पहुँचे ता० ३० की रात को २४ घण्टे देर से । ता० ३० की प्रस-काल ११ बजे मांट्रियल के मेयर की घोर से हम कामन वेल्थ पार्लियामेन्टरी परिषद् के प्रतिनिधियों का स्वागत रखा गया था पर हमारे न पहुँच सकने के कारण वह संभू कर दिया गया । मांट्रियल पहुँचने ही हम बहूँ के 'विन्डसर' होटल में ठहराये गये । हर प्रतिनिधि को एक-एक कमरा मिला जाई जहाँ एक पर्यटन का स्वागत हो प्रपचा हो का । होटल बड़ा आनदार और स्वच्छ था । धारण की व्यवस्था में किसी प्रकार की कमी न थी । फिर कनेडा की कामन-वेल्थ पार्लियामेन्टरी एसोसियेशन की धारण ने हमारे स्वागत और धारण का जो प्रबन्ध किया था वह अत्यन्त सराहनीय था और यह प्रबन्ध जो मांट्रियल से धारण हुआ, वह कनेडा छोड़ने तक एक-ता चलता रहा । इसी प्रकार के सुन्दर प्रबन्ध का अनुभव मैं तथा अन्य कुछ प्रतिनिधि न्यूजीलैंड की परिषद् के समय भी कर चुके थे और यह कह सकता हूँ कि दोनों में से किस स्वागत का इन्तजाय प्रकटा था, मैं तो समझता हूँ कि दोनों जगह का एक-ता ही था ।

इसके दिन प्रस-काल ११ बजे से हमारी धुमाई धक हुई जो ता० ७ सितम्बर को मध्याह्न में धरईया पहुँचने तक कहीं बतों में कहीं ट्रेन में और कहीं मोटरों पर बराबर चलती रही ।

ता० ३१ की हमने बतों में कोई ८० मील का पक्कर लगाया । इस प्रबन्ध

दिन की घुमाई से ही हमें कैनेडा देश के सौर्यमण्डल का पता लग पया। बिंडसर होटल से रवाना हो पहले तो हम कुछ देर मांट्रियल शहर में घूमे। सर्वथा प्राकृतिक तथा शहर। विद्यालय मकान चौड़ी सड़कें। यहाँ के दिन वर्तनीय स्थानों को हमने देखा वे निम्नलिखित थे—

स्टेट जोबोफ का स्मारक—यह इमारत प्रायणत नम्य है और धनी की बुरी नहीं बन पायी है। यहाँ सेंट जोबोफ की कब्र भी बनी हुई है और यह उन उद्देश्यों की भी प्रतीक है जो सेंट जोबोफ के सम्मुख थे (चित्र नं० ७३)।

मात्रे वाम—यह मांट्रियल का मुख्य विरजाघर है। मूल विरजाघर १६३९ में बना था उसके बाद १९०२ में बढ़ाया गया। वर्तमान विरजाघर का कुल क्षेत्र १८२५ में बना। इसमें बारह हजार व्यक्ति प्रार्थना कर सकते हैं। इसमें एक घण्टा इतना बड़ा है कि बलुआ बज्र २४,७८० चौखंड है। गिरने का भीतरी भाग लकड़ीदार लकड़ी से बना हुआ है (चित्र नं० ७४)।

सेंट जैम्स गिरजाघर—यह रोम के सेंट पीटर विरजाघर के समूने पर बना हुआ है पर धातु के पत्थर का बना है। इसका निर्माण १५७० में आरम्भ हुआ था और यह सोलह वर्ष में पूरा हुआ था।

मांट्रियल शहर का बरकर लगा हमारी बत्तें कैनेडा के हरे भरे पार्षत्य प्रदेश में बूझते हुए कैम्ब्रिज होटल पहुँची। पर्वत-मैली की तराई में सुन्दर भूमि के किनारे एक प्रयत्नरमणीय स्थान पर यह होटल बना है। रोवहुर का भोजन यहाँ कर तीसरे पहुँच हम बायत मांट्रियल सौदे और कोई ६ बजे सन्ध्या की मांट्रियल के बिचतर स्टेशन के रेल द्वारा क्यूबेक शहर की रवाना हुए। रेल पार्सी की चौड़ाई पूरे पारसीय रेलों से कुछ कम जान पड़ी। रेल में दिन की यात्रा करने के उद्योग थे। घण्टी टूट थी। पर टूट में कोई बात बात नहीं। सन्ध्या का हमारा भोजन रेल में हुआ और क्यूबेक पहुँच लगभग १० बजे रात की पहुँचे। यहाँ हम मांट्रियल के बिचतर होटल के सम्मुख ही कैम्ब्रिज होटल में ठहराये गये।]

रा १ सितम्बर को हम बत्तों पर कोई ३०० मील दूर। घाम हमने क्यूबेक नगर देखा और सिमश्रा नदी का बिजली उत्पन्न करने का कारखाना तथा घर बिदा की संसार की सबसे बड़ी एस्पूमीनियम की फैक्टरी में से एक फैक्टरी। यात्रियों के लिए कैनेडा में क्यूबेक प्रथम एक विशेष स्थान रखता है। नदीन संसार की अग्रण यहाँ कुछ प्राचीनता की अन्तक दिखाती है। क्यूबेक पुनः को नगर से कुछ ही मील दूर सेंट लारेंस नदी बना है संसार में घने जंगल का सबसे बड़ा पुनः है।

अन्तर-पूर्व और पश्चिम दिशा में क्यूबेक नदी लारेंसियन पर्वतश्रृंखला से बिदा हुआ है। प्राचीन-परीव के इच्छुक और प्रकृति के उपासक निरन्तर इस पार्षत्य प्रदेश

अमनपैत्र्य पार्लियामेन्टरी परिषद् के पूर्व के आठ दिन मीलों वाले देश में १५३ की ओर आकर्षित होते रहते हैं ।

हमारा घात्र बोधहर का मोहन प्रभुमीनियम कारखाने के संभालकों ने दिया था । रात की हल फिर ब्यूबेक लोट आये ।

ता० २ की प्रातःकाल ६ बजे ब्यूबेक के प्राग्तीय पार्लियामेन्ट हाउस में हमारा घड़ी के प्रयाग मन्त्री श्री धारा-सभा के अध्यक्ष की ओर से स्वागत था । घात्र हम सब भारतीय प्रतिनिधि अपने राष्ट्रीय बीमारू में इस स्वागत में गये । कुछ भाषण हुए, कुछ आना-बीना । ३ बजे ब्यूबेक प्रातः के गवर्नर के यहाँ हमारा स्वागत हुआ । श्रीर इसके बाद हम सब प्रतिनिधियों की दो टुकड़ियाँ बना ही गयीं, एक मरी हुंती फेंस नामक नगर की श्रीर दूसरी चारलोटी टाउन की । भारतीयों में से श्री माबलंकर श्रीमती माबलंकर, श्री रंभा श्री मुकरजी, श्री कौत श्रीर श्री छोखपर हुंतीफेंस की टुकड़ी में गये श्रीर श्री अनन्तसयनम् धर्ष्यनार, श्रीमती काने श्री कुच्छे श्रीर श्री चारलोटी टाउन की टुकड़ी में । हम लोग रवाना हुए २॥॥ बजे की ट्रेन से श्रीर हुंतीफेंस जाने इसके कुछ देर बाद ।

घात्र हम कौनका की रात की ट्रेन से जाने से श्रीर इस ट्रेन में रात की सीन जाने उम्मे लक्ष्मण हर्षनीय थे । इन उम्मे में से जिन उम्मे में मुझे अपहृ ही गयी थी वह जिन कारीनरी से बनाया गया था वह तो हर अपहृ की रेलों के लिए अनुकरणीय है । मुना है कि वह लंकार की रेलों का सबसे गमे इन का उदा था । उम्मे की लम्बाई की कोई ४० फुट श्रीर इतने से उम्मे में २४ मुताफिरों के हरेक के लिए अलग-अलग कमरे बने थे । कमरों की दो कतारें थी श्रीर बीच में ३ फुट चौड़ा रास्ता । एक-एक कमरा था सिर्फ ४ फुट ६ इंच लम्बा श्रीर ३ फुट ६ इंच चौड़ा । इतने से कमरे में बैठने श्रीर सोने दोनों का प्रबन्ध था । सोने का प्रबन्ध तो बड़े विचित्र तरीके से किया गया था । घामने-सामने के दो कमरे कुछ नीचे श्रीर ऊपर बाद के दो कमरे कुछ ऊँचे इस प्रकार १२ १२ कमरों की एक-एक पंक्ति में ६ ६ कमरे कुछ निचाई श्रीर ६ ६ कमरे कुछ ऊँचाई पर थे । कमरों में सोने के लिए जो पर्तों थे वे मय बिस्तर के जिसमें गद्दा, तकिये धोड़ने की चादर, कंबल सब कुछ था कमरों की निचाई तथा ऊँचाई के बीच की जो पोल थी उसमें रूठे, सोने के समय नीचे के कमरों में वे बिच आते बैठने की सीट के ऊपर तक श्रीर ऊँचाई के कमरों में ऊपर से लिचते बैठने की सीट पर, सब पोल के भीतर पर पधारने के लिए स्थान ही जाता । बहुत प्रयत्न करने पर भी इस सोने के प्रबन्ध का जो बदलन मने किया है उससे भी इस प्रबन्ध का ठीक समझ सकना कठिन होता । वह तो बीता मने ऊपर लिखा है एक विचित्र ही प्रबन्ध था । उसकी तस्वीर मिली नहीं श्रीर वह कतारी-नी जाती तो भी डीक न उतरती । गपोरे में बसका घामर मरवा ही बन्-

सकता है। सोने और बँठने के इस प्रबन्ध के सिवा जित्य की आवश्यकता की कोई ऐसी चीज न थी जो उस ४ फुट ३ इंच लम्बे और ३ फुट ३ इंच चौड़े कमरे में न हो। कमोड उसमें था। बूते रखने का बाँस उसमें था। हाथ-मुँह धोने का बतन उसमें था। पीने के ठण्डे पानी का घलप प्रवाह और हाथ-मुँह धोने के ठण्डे और परम पानी का घलप। इसके सिवा बिजली के सेल्सीरेयर का प्लग पंखा, एयर कंडीशन करने का स्विच रही ब्रेकने का बाँधा रही ब्लेड उँठने का घर दो ब्राइने, लपड़े टाँगने की बूँदियाँ, एक रोशनी रात की मही रोशनी लौकर बुलाने की पंखी एरा-ड्रे सभी कुछ तो था। कमरे की प्रबल सम्पत्ति के सिवा पानी पीने के लैमोलाइड के गिलास कमोड का कायब माचिस की डिब्बी चार तीलिये, ताबुन सभी किये हुए कपड़े टाँगने के हंवर, यह सब बल सम्पत्ति भी थी। रेल के इस तबोलतम डब्बे का नाम कुम्भेस्त कमर है।

इस सिलसिले में कॅनेडा की रेलों का जो कुछ हाल लिखना अनुम्युक्त न होना।

कॅनेडा में दो मुख्य रेलें हैं—एक 'कॅनेडियन ग्रेटवेस्ट' और दूसरी 'कॅनेडियन पैसिफिक'। पहली सरकारी है और दूसरी कम्पनी की। भारत की भी घाई-पी घीर थी. थी एण्ड ती घाई के लघुध कई जगह दोनों लाइनें की हैं। कॅनेडा की रेलों में दो बलास हैं—एक कस्ट बलास और दूसरी कोब बलास। दोनों बलासों में बँठने की जगह मिलती है। सोने के लिए घलप जगह लेकर उठका किराया पृथक रूप से बना पड़ता है। कोब बलास को दूरिस्त बलास भी कहते हैं। दोनों बरजों के किराये में कोई बहुत अन्तर नहीं है।

कॅनेडा की रेलवे लाइनों की लम्बाई २० ६२७ मील है। इससे अधिक लम्बी रेलवे लाइनें अमेरिका और रूस केवल इन दो ही देशों में हैं जिनकी जनसंख्या कॅनेडा की जनसंख्या से कहीं अधिक है।

कॅनेडा में रेलवे लाइनें जिनाने पर बहुत अधिक खर्च आया, किन्तु उनके बन जाने से घबड़-घूर-घूर के प्रदेसों का सामान आ-जा सकता है। इन रेलों के भाड़े की दर इतिहास के कितने ही देशों की बरों से कम है।

ता ३ की घाम को हथ न्यूरक से रवाना हुए थे। ता० ४ के तीसरे बहर ४ बजे हथ बोरडन पहुँचे। बोरडन से चारलीटी टाउन जाने के लिए हमें समुद्र का ६ मील का मार्ग पार करना पड़ता था। यह हिस्ता एक नाव पार करती है, जितने ईगलिश बेनल के लघुध पूरी दुन के डब्बे सब जाते हैं। इस नाव में १६ मासगाड़ी के डब्बे न लघारीपाड़ी की बोगियाँ ६० मोटर्स और ६६० नुताकिर एक लाम समुद्र के एक पार से दूसरे पार पर उतारे जात हैं। भाड़े के दिनों में समुद्र के इस

क्रमनचैन्य पार्लियामेण्टरी परिषद् के पूरक आठ दिन म्हेसों वाले दौरा में १३५

हिस्से में बरफ बहुत रहता है। यह नाब बरफ को तोड़ते हुए भी चलती है और कहा जाता है कि बरफ को तोड़ते हुए चलने वाली बुनिया की यह सबसे बड़ी नाब है। इतना बोझा होने और बरफ को तोड़ने वाली प्रतिष्ठानती नाब की 'ग्रिप' ब्रह्म की संज्ञा न देकर 'ब्लैकरो' नाब की संज्ञा में ही रखा गया है। इंपरियल ब्रेनस की टू न नाब द्वारा किस प्रकार उतरती है यह देखने की मेरी बड़ी इच्छा थी पर परिसर से सम्बन्ध वायुयान से जाने के कारण मैं उते न देख सका था। यहाँ उते देख सिया। और जब उते में देख रहा था तब मुझे याद आयी हिन्दो की एक कहावत— कभी नाब गाड़ी पर और कभी गाड़ी नाब पर'। यहाँ तो पूरी रेलगाड़ी ही नाब पर लद कर जा रही थी। रेल से उतर हम सोप इत नाब के ऊपरी डेक पर पहुँचे। बैठने का सुन्दर कमरा, रेस्टरॉम, बूकानें आदि सभी उस नाब पर थीं। घाज एक और इम्प र्बर्गीय था। नाब के चारों ओर समुद्री पक्षी जिन्हें घण्टी में 'सी गस्त' कहते हैं उड़ रहे थे। ये भुण्ड में थे। कभी इनका भुण्ड का भुण्ड उतरकर पानी में बैठ जाता और कभी नाब पर बैठने लमता। इनमें लठेर और भूरे दोनों रंग के पक्षी थे। जब ये नाब पर बैठते तब कई तो घपने दोनों पंख फलाकर बिना पंखों को हिसाये हुलाये या फटफटाये हुआ में स्थिर खड़े-से रहते जैसे कोई बड़ा घण्टा तराक बिना हाथ-पैर हिसाये कभी-कभी पानी पर स्थिर सेटा रह जाता है। हुआ में इन समुद्री पक्षियों की पंख फैलाकर स्थिर अवस्था देखने योग्य थी।

लगभग ६ बजे पूरे बीबीस घण्टे की रेल की यात्रा कर हम आरमोटी टाउन स्टेशन पर पहुँचे। यद्यपि हम २४ घण्टे यात्रा कर चुके थे पर हमें कोई खास बकाबद न जानूम हो रही थी। इसका कारण रेल में यात्रा के लारे सुभीते भोजनों की व्यवस्था आदि था। रेल के डब्बे ऐसे बन्द बने हुए थे कि डब्बे के भीतर न घूल जाती थी और न कौयला। वर इस प्रकार के डब्बे का प्रबन्ध कर्नेडा के लघु लठरे डेक में ही सम्भव है भारत के सबूद गरम डेक में नहीं। भारत में तो एयर कन्डीशन डब्बों में ही यह इन्तजाम हो सकता है।

आरमोटी टाउन स्टेशन पर उस प्रान्त के प्रबन्ध मंत्री तथा अन्य अधिकारियों ने हम लोगों का स्वागत किया और हम लोग आरमोटी टाउन होटल में ठहराये गये।

दूसरे दिन प्रिंस एडवर्ड आइसलैंड तथा बर्मा की कुछ चीजें हमें दिखायी पयीं। प्रिंस एडवर्ड आइसलैंड कर्नेडा का उद्योग द्वीप माना जाता है।

सबसे पहले हम यहाँ के प्रान्तीय पार्लियामेण्ट भवन को गये जहाँ यहाँ के प्रबन्ध मंत्री ने हमारा स्वागत किया। यद्यपि पार्लियामेण्ट भवन में कोई खास बात न थी वरन्तु इसका ऐतिहासिक महत्व बहुत बड़ा था। सन् १८६४ की पहली सितम्बर को इसी भवन के एक भालय में कर्नेडा के घनेक प्रान्तों के प्रतिनिधियों ने अपना होकर

वर्तमान संयुक्त कॅनेडा को जन्म दिया था ।

१८६४ में मोन्ट्राल-प्रिया, प्रिंस एडवर्ड आइलैंड और न्यू ब्रिटेनिक की सरकारों ने आरसोटी राज्य में एक समा बुलायी । उत्तर और दक्षिण कॅनेडा को युनियन कानून के अधीन पहले ही संयुक्त हो सके थे जिनसे सम्मेलन में कॅनेडा-संघ की स्थापना के बारे में अपने विचार बताने को कहा गया था । इस सम्मेलन में यह निर्णय किया गया कि जो कनफ़ेडरेसन बनाया जायगा वह ब्रिटेन के अधीन रहेगा । उसकी एक लोक-सभा होगी और एक सेनिक ।

प्रायः १८६७ में न्यू ब्रिटेनिक मोन्ट्राल-प्रिया, प्रिंस एडवर्ड और न्यू ब्रिटेनिक को जोड़कर एक संघ बना लिया । धीरे-धीरे कॅनेडा का बड़ी तीव्रता से विस्तार होने लगा । १८७० में मन्डी-घोषा और १९ ५ में सतकेचवान और एलबर्टी इसमें सम्मिलित हो गये । १९४९ में न्यूफ़ाउंडलैंड कॅनेडा का दसवाँ प्रांत बन गया ।

कॅनेडा के कनफ़ेडरेसन बन जाने के बाद उसका विकास भी तेजी से होने लगा । कॅनेडा के पहले प्रधान मंत्री सर जॉन मैकडोनाल्ड थे । बिस्व-व्यापी वत दोनों मुद्दों में कॅनेडा ने ब्रिटेन और मित्रराष्ट्रों का साथ दिया और एक आत्मभार ढंग से ।

बालियामन्ड हाउस से हम यहाँ के प्रधान मंत्री का काम देखने वाले । प्रधान मंत्री स्वयं हमारे साथ गये । उन्होंने सारा काम खुद हमें दिखाया । यह काम मुख्यतः डेरी-कार्य है । करीब ३५० एकड़ रकबा है और कुल जमीन में घास तथा गावों के कामों की कई जब हरवारि बस्तुएँ पैदा होती हैं । फार्म में ८ गावें हैं सड़-की-सड़ हासस्टीन नस्ल की । गावें और तांड इंग्लैण्ड हैं । बड़े-बड़े जनों वाली धरती में बरी बुरी गावों के से तो बर्तन ही करता रह गया । यहाँ की एक नाम को बुनिया की सर्वश्रेष्ठ नाम मानकर प्रमाण-पत्र दिया गया था । यह गाव प्रत्येक दिन ९ पैसन पाने २० पाउण्ड दूध देती हैं । मिला बर्ष इसे बुनिया की सर्वश्रेष्ठ गाव होने का प्रमाण-पत्र मिला था उस समय बर्ष में इसने बर्षीस हजार पैसन दूध दिया था । गावों के प्रतिरिक्त इस फार्म में मुर्गी लीबड़ी और चिक के काम भी हैं पर मुख्यतः यह है डेरी फार्म । जब मैंने स्वयं प्रधान मंत्री से यह पूछा कि इस फार्म में प्रायकी कितनी मुर्गी लगी है तब उन्होंने लज्जते-लज्जते बताया कि कॅनेडा के दो लाख डालर पाने करीब दस लाख रुपये और इसके बाद जब मैंने पूछा कि इस फार्म की आमदनी क्या है तब उन्होंने कहा कि आमदनी काफी अच्छी है । पर वे आमदनी लेते नहीं हैं इसी फार्म में लयाते जाते हैं, जो बँक में रखा रखने से नहीं अच्छा है । फार्म की आमदनी मुख्यतः दूध मरकज और जानवरों की बिक्री से है । कुछ प्राय बुनिया के तथा लोभकियों और मिनी के फार्मों से भी हो जाती है ।

यहाँ के प्रधान मंत्री मुझे बड़े बर आमदनी जान पड़े । उनका नाम है श्री

अमनसैक्य पार्शियामेन्ट्री परिपद् के पूर्व के अ्याठ दिन भीलों वाले देश में १५०
 में बन्दर बोनत । प्रबन्ध है ७५ वर्ष की, पर देखने में ३० से भी कम के जान पड़ते हैं ।
 धनु ५२ से य ही इस प्रान्त के प्रधान मंत्री बने चले हैं । मुना कि यह तारे प्रान्त में
 बड़े लोकप्रिय हैं ।

इस प्रान्त से हुाने होयल में लौट होपहर का भोजन किया जो प्रित एडवर्ड
 हीप की सरकार के द्वारा दिया गया था ।

हो बने हम सरकारी काम देखने गये जो अन्ध लोगों से मिलता-जुलता
 ही था ।

सम्भा को बहों के शोध कठिना ही कैम्ब्रिज कीर जबकी पत्नी ने अपने
 प्रीम्-निवास में हुने पाटीं ही थी । यह प्रीम् निवास सभमुख ही बड़े सुन्दर स्थान
 पर और बड़ी सुन्दरता से बनाया गया है । स्थल का हुरी नरी बहाइकों से घिरा
 हुआ, जिसके सामने नदी बह रही थी । निवास बना है छोटे-छोटे कमरों की
 चौकड़ लवा चीज़ की लकड़ी काग में लकड़ । इस पहाड़ी बोटुङ से स्थल पर यह
 प्रबन्ध परबरी कीर चीज़ की लकड़ी का निवास उच तारे बुइय का प्रतिनिवास-ला
 करता जान पड़ता है । यहाँ हम में से कुछ प्रतिनिधि नही में तरे भी ।

रात को भोजन बटेन होप बीच इन नामक होयल में प्रित एडवर्ड धारनेत्र
 की बारा-समा के लक्ष्यों द्वारा दिया गया, जिसके बाव हुन लोग होठ ८ लीये ।

ता २ को प्रातःकाल ७ बजे की रेल से हुने सँट जान नगर की रवाना होना
 था । घण्ट ४ बज ही लोयों ने बठकर लैवार होना धारम्भ किया और ठीक समय
 हुन लोग चारलौट्री टाउन से रवाना हो गये । प्रित एडवर्ड हीप से लौटते हुए प्रातः
 हुने फिर लनुइ की वती प्रकार नाव में पार किया जिह प्रकार प्रित एडवर्ड
 धारनेत्र बाले हुए किया था । लक्षमय १० बजे हुन कैपटार मेंडाबून पहुँचे और
 वहाँ से बस पर बैठ लेकबिली का चाकात्रवाली केन्द्र देखा जो कैनेडा की चाकास
 वाली का सबसे बड़ा धारनेत्र केन्द्र है और वहाँ से अमेरिका, यूरोप, अष्ट्रीका आदि
 देशों की १५ भाषाओं में बाइकास्ट किया जाता है । भारत के स्वातन्त्र होने के बाद
 यह हिन्दी में भी पढ़ी से बाइकास्ट करने की बात लोकी जा रही है । देखें यह बिचार
 कब तक कार्य कम में परिणत होता है । इस बिचार की जितना अधिक प्रोत्साहन
 दिया जा सकता या प्रतना देने देने का प्रयत्न किया ।

होपहर का भोजन मार्सेनेइस इन में वहाँ के व्यापारी लैप द्वारा दिया गया,
 जिसने भी अकलधवनम् धर्मवार का एक छोटा सा बिडलापुर्ल सुन्दर बनाए
 हुआ ।

भोजन के बाद बस से ही हम माकडन स्टेशन पर पहुँचे और करीब था। बने
 वहाँ से रवाना हो १।।। बजे सँट जान नगर पहुँच गये । यहाँ ठहरे एडवर्ड

बीटी होटल में। कुछ देर बाद हँसार्केस गयी हुई हमारी टुकड़ी भी वहाँ पहुँच गयी। रात की इती होटल में सेंट जॉन नगर के मेयर द्वारा हमें भोज दिया गया।

हमारी जो टुकड़ी हँसार्केस गयी थी वह सेंट जॉन से ता० ३ की ही रात को, रात के भोजन के बाद फंडरिक्शन नामक नगर को चली गयी, पर हमारी टुकड़ी रात की सेंट जॉन नगर में ही ठहरो। रात को हम नगर घूमने निकले। कैनेडा के प्रत्येक नगरों के समान ही यह नगर था। कोई नयी बात यहाँ नहीं थी। घाबारी थी ४४ ६०३।

दूसरे दिन प्रातःकाल हम भी सेंट जॉन से फंडरिक्शन के लिए बलों में रवाना हुए। सेंट जॉन से फंडरिक्शन समय ८० मील था। पूरे रास्ते के बीचों घोर हरा मरा कैनेडा का नुमाय देकने की मिला बीसा हम सब तक देखते पा रहे थे।

रोपहूर की १२ बजे हम फंडरिक्शन पहुँचे घोर बहों के मार्ग बेहर बुक होटल में ठहरे जहाँ हमारी ६ (ीकेस वाली टुकड़ी पहले से ही ठहरी हुई थी। हमारे पहुँचते ही प्रतिनिधियों की बोलों टुकड़ियाँ मिलकर यहाँ के प्रान्तीय पार्लियामेण्टरी भवन को गयी जहाँ इस प्रान्त के प्रयाग मंत्री श्रीर पार्लियामेण्ट अध्यक्ष ने हमारा स्वागत किया। पार्लियामेण्ट का भवन एकदम नामुली था और बसका कोई प्रभाव मन पर न पड़ता था।

पार्लियामेण्ट भवन से यहाँ का एक प्रतिष्ठ गिरजाघर देख हम यहाँ का सरकारी काम देखने बच जहाँ हमारे रोपहूर के भोजन की रिक्तिक संघ के बच में व्यवस्था थी। मांसाहारी भोजन के सम्बन्ध में तो मैं कुछ नहीं जानता पर घाकाहारी भोजन में आज मनके के भुट्टे एक विशेष वस्तु थी। खूब बरे हुए पीले दानों के मोटे-मोटे बचने भुट्टे, कितने मुलायम थे। जबामने के बाद मक्खन लपाकर उनकी मुलायमता और बढ़ायी गयी थी। इस प्रकार के नरके के भुट्टे सन् १६३८ में ईने बलिख घसीका के एक भोज में खाये थे इसके बाद कभी नहीं। मांसाहारी और घाकाहारी दोनों ने ये भुट्टे खूब रुचि से पैद करकर खाये। आज का यह जनजीवन लक्षमच ही अनेक बुद्धियों से प्रबली एक विशेषता रखता था।

यहाँ हमें कैनेडा की खेती के सम्बन्ध में कुछ बातें मामूम हुई। यहाँ मेहें का ऐसा बीज निकासी गया है जितने रोबघा नहीं लगता। मेहें के साथ ही घामू भी यहाँ बहुत होते हैं घोर घामू का भी ऐसा बीज निकासने का प्रयत्न हो रहा है जितने कोई बीमारी न लगे। कैनेडा की घामू की उपज संसार में सबसे अधिक होती है। बरक के कारण साल में यहाँ घामू की एक ही कसल होती है। जो एकड़ २४००० से ३९००० पाउण्ड घामू निकलता है। इस काम का बपीका भी बड़ा मुन्दर है। कैनेडा

काममन्त्रिय पार्लियामेन्टरी परिषद् के पूर्व के आठ दिन भीलों वाले देश में १५६

में यह बहुत शत्रुता थी, घात-कूत्ने हुए लोगों की सारे उद्यान में भरमार थी। दो नये बोबे यहाँ देखने की मिले जो अब तक कहीं न देखे थे। एक की भी बगड़। इसकी पत्तियाँ छोड़ के इलों की पत्तियों के समान थीं, पर कुछ घनी घोर उन पत्तियों में बड़ी तेज गुण्य थी। दूसरा पोषा वा एक जेबा पूरा बृक्ष जिसमें छोटी छोटी मकोह के सवृक्ष पर एक हम गुर्भ कूत्नों के घमणित मुरके लगे हुए थे। इन लाल मुरकों की सख्या बृक्ष की हरी पत्तियों से भी अधिक थी। मुझे इस फार्म में जगमोहनदास का स्मरण आया। यदि वे साब होते तो इस फार्म के सम्बन्ध में न जाने कितनी बातें मोट करते और अपने बीमरा के रबीन किन्म में यहाँ की विकसित कुत्तुमों से मरी बमारिषों और लखरों की न जाने कितनी तस्वीर उतारते।

फार्म से हम लोगों में से कुछ तो बापस होटल चले गये और कुछ यहाँ का विश्वविद्यालय देखने गये जो कैनेडा का सबसे पुराना विश्वविद्यालय है। धातुकल छुट्टियों के कारण यह विश्वविद्यालय बन्द था इसलिए हम इसकी इमारतें नर देख लके जिनमें कोई आस बात न थी।

विश्वविद्यालय से हम यहाँ की छवि प्रदर्शनी देखने चले जो धातुकल यहाँ ही रखी थी। इस प्रदर्शनी में प्रदर्शन की वस्तुएँ तो कम थीं पर मनोरंजन की अधिक। प्रदर्शनी क्या यह एक तरह का मेला वा बहाँ होने गये कैनेडा की नयी मानव जाति का उत्साह पूर्ण और प्रगल्भ-सा जीवन देखने की मिला। प्रदर्शनी की वस्तुओं में नाना प्रकार के धातु-नामी कम-कूल आदि थे। सब वस्तुएँ हमारे देश के ही सवृक्ष कोई इनमें नयो चीज हमें न दिखी। कुछ हाथ की कारीगरी की वस्तुएँ थीं सबकी सब मितान्त साधारण। खेती की मशीनरी सबसे अधिक थी पर यह मशीनरी भी हम अपने देश में कहीं-न-कहीं देख चुके थे। मनोरंजन की वस्तुओं में अधिकतर भाँति भाँति के मूने थे जैसे प्रायः कानिबाल में होते हैं। पुरी प्रदर्शनी में हमें नयो चीज केवल एक दिखी, वह भी एक नद का तमाशा। इस खेल की देखने के लिए बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठा थी इस प्रान्त के लैफ्टिनेन्ट गवर्नर भी आये हुए थे। तमाशे का धारण महिसार्यों और पुख्यों के एक समूह द्वारा बजाते हुए बाघों से हुआ। चूँकि गान न था जिसे हम न समझ सकते थे और रागनियॉ बाघों द्वारा निकल रहीं थीं, इसलिए धातु का यह बाघ हमें बड़ा मुहाबता लगा। इसके बाद नद का प्रदर्शन हुआ। यह नद नीले बमकदार रेद्यमी कपड़े पहने हुए था। उस पीजाक में उसका जुला हुआ गुलाबी चेहरा और हाथ-पैर बड़े सुन्दर दिखने थे। नद एक झुन्नी हुई नसेनी से कोई आलीस फूट ऊँचे एक ऐसे स्थल पर बड़ा, जिसमें कोई दो ईंच मीठे और सामान्य आलीस फूट लंबे एक नल के बीचों बीच कोई बाँध-छः कुछ चौड़ा तार का एक घेरा बना हुआ था। इस घेरे में धातु-धातु कुछ का कोई एक ईंच नल का एक डंडा, तार की एक कुरसी, एक बाइतिकिन, किरलिन के

घूमने तक ऊँचे जूने घीर बेहरे की डाँकने का एक कमडोपा टँवे हुए थे। यह नद पहले तो उस खालीत फुट समूचे नम पर इबार से उबार घीर उबार से इबार बसा फिर उस नम के उँडे की से कई कियारुँ की। इसके बाद उस कुरली पर बैठ इबार से उबार घीर उबार से इबार उँडे घूमा। फिर बाइसिकिल हूडिल छोड़ घागे घीर पीछे कई प्रकार से बसायी। घन्त में उसने उस कमडोप से बेहुरा मय घाँकों के घन्टी तरह डाँक घन किरमिब के जूतों की पहन उस नम के उँडे की हाप में से कई तबारी बताये। इस प्रदर्शन का घन्त उस नद ने किया उस नम पर तिर के बल ऊँडे होकर। इस तारे खेल में कई बार बहु पिरते-गिरते बचा। यदि बहु खालीत फुट ऊपर से पिरता तो बेचनेवाला न बा क्योंकि नीचे न तो कोई खाली ही नमी थी घीर न रेत प्रबवा पानी ही भरा बा। किली तरह का डर उसे घू न गया बा। पर उसका खेल देखने वाले बर्सेक भयभीत थे। जब-जब बहु गिरने के निकट पहुँचता, बघकों के बीच बीच बिस्लाहू होती। हम सबको हू अल जान पड़ता कि बहु बिरा प्रब बिरा। तमागे के घन्त में लैपिउनेड पबर्नर ने घीर हम सभी से एक स्वर से यह कहा कि नद का ऐसा प्रदर्शन इससे पहले किली ने कहीं न देखा बा।

१॥ बजे हम होटल लोडे घीर सम्पदा के भोजन के बाद स्टेशन चल दिये जहाँ से हमारी स्पेशल ट्रेन ८॥ बजे रात को छाँटबा रवाना होती थी। स्टेशन पर प्रायः सभी को लग्न से जाने वाले स्पेशल प्लेन की यात्र प्रायी। घनेक ने एक घुमरे से मुँकटाकर कहा कि स्पेशल प्लेन की लीबा तो हम देख चुके हैं प्रब देखना है कि स्पेशल ट्रेन की तो कोई नमी लीला नहीं होती। पर बम्पबाव है अपवानु को कि बिना किली नमी लीला के इतरे दिन बीबहुर को हम छाँटबा पहुँच गये। प्रायः सितम्बर की ७ तारीख थी। कल से कामनवैरुव पालिपामेखरी काग्नेल का काम चुक होने वाला बा, जिसके लिए पबार्ब में हम यहाँ प्राये थे।

ता० १० प्रास्त की रात को हमने इस खीलों वाले देश में बँर रखा बा। इस एक सप्ताह में हम इस देश के घीरारियो, क्यूबेक घोर प्रित एडवर्ड प्राइलेड इन तीन प्रास्तों में घूमे। इस यात्रा में हम ने इस हरै-भरे देश के किलने नपर किलने करके किलनी खीमें किलना जीवन देखा।

छाँटबा पहुँचते ही सबसे पहले मेरा प्यान जिन दो बस्तुओं ने प्रार्कषित किया उनमें पहली थी बहु होटल जितने छाँटबा में हमारे ठहरने की व्यवस्था की गयी थी। दृष्ट होटल का नाम पर ग्रेटु कारियड। होटल की विद्यालता भय्यता लच्छाई घादि खीमें तो बर्तनीय थी हूँ इस बीरे में हम जितने होटलों में ठहरे उन सबसे इन सभी बास्तों में यह होटल धाबद प्राये बा, वर सबसे बड़ी बस्त जित वर प्यान गया बहु थी इस होटल का रेतने स्टेशन से सम्बन्ध। छाँटबा के मुख्य स्टेशन घीर इस होटल के

अमनवैद्य पार्सियामेस्टरी परिषद् के पूर्व के आठ दिन भीलों वाले देश में १६१

बीच केवल एक सड़क को घीर इस सड़क के नीचे से सुरंग के रूप में स्टेसन से होकर तक एक रास्ता आया था । स्टेशन से बिना किसी सड़क या बिना को पार किये पानी सब बड़े से बड़े सामान के इस इंटल में आ सकते थे । मामूम हुआ कि यह होकर तथा बीनेडा के सभी मुख्य स्थानों के होकर रेलवे के हूँ घीर रेलवे के प्रथम में ही चलते हैं । दूसरी बात जिस पर ध्यान बर्तना बहू भी तारों की बर । यहाँ के तारों में बहूँ तार भेजा जाता है उस स्थान का पता बड़े कितना ही बड़ा क्यों न ही, उस पते के सधों घीर प्रेसमें वाले के नाम के बान नहीं लपते ।

आये चलकर हमने अमेरिका में भी इसी प्रकार के होकर देखे ।

कामनवेल्थ पार्लियामेन्टरी परिषद्

कामनवेल्थ पार्लियामेन्टरी परिषद् का अधिवेशन ता० ८ दिसम्बर से १३ दिसम्बर तक होने वाला था ।

कामनवेल्थ पार्लियामेन्टरी परिषद् का यह अधिवेशन लण्डन से बर्मी के शहर से होता है । न्यूजीलैंड का अधिवेशन सन् '५० के २६ नवम्बर से १ दिसम्बर तक ६ दिन चला था । यह अधिवेशन भी पहले ही दिन के लिए रखा गया था । परन्तु शहर यह था कि न्यूजीलैंड के अधिवेशन में पहले दिन को छोड़ दोष पाँच दिनों में पाँच दिनों पर विचार हुआ था । यहाँ हुआ तीन दिनों पर । न्यूजीलैंड में दिन पाँच दिनों पर विचार किया गया था वे थे—(१) कामनवेल्थ देशों का धार्मिक सम्बन्ध और विकास (२) पार्लियामेन्ट प्रथा के अनुसार चलन वाली सरकारें, (३) अग्रान्त महासभार के देशों का सम्बन्ध और सुरक्षा (४) कामनवेल्थ देशों में एक देश से दूसरे देश में जनसंख्या का तबादला और (५) वैश्विक नीति । कनेडा में होनेवाली परिषद् के तीन विषय थे—(१) आबादी का तबादला (२) धार्मिक सम्बन्ध और (३) अन्तर्राष्ट्रीय विषय तथा सुरक्षा । न्यूजीलैंड की परिषद् का अग्रान्त महासभार के देशों का सम्बन्ध और वैश्विक नीति यहाँ के धार्मिक सम्बन्ध और अन्तर्राष्ट्रीय विषय तथा सुरक्षा के अन्तर्गत आ गये थे परन्तु पार्लियामेन्ट प्रथा के अनुसार चलनेवाली सरकारें इस विषय पर कोई विचार-विनिमय नहीं रखा गया क्योंकि न्यूजीलैंड की परिषद् के पाँच दिनों में से चार दिनों पर ही यहाँ विचार होनेवाला था । एक बात यहाँ और होनेवाली थी । न्यूजीलैंड की परिषद् की तीसरे दिन और पाँचवें दिन की कार्रवाई अचवार बार्नों के लिए खोल दी गयी थी । यहाँ की जारी कार्रवाई दोपनीय रहनवाली थी । इसका कारण यह हुआ गया कि न्यूजीलैंड की परिषद् में मेरे भाव्य पर जो दक्षिण अफ्रीका के एक प्रतिनिधि के उठकर जाने का लारे लतार के अचवारों में प्रचार हुआ वेही इस बार यदि कोई घटना ही आवे तो बतका प्रचार न होने पावे ।

न्यूजीलैंड की परिषद् में भाग लेने विटेन कनेडा प्रान्त सिवा, दक्षिण अफ्रीका युनिवर्स, भारत, पाकिस्तान, लंडा, दक्षिण रोडेसिया, जमनायड, बरन्ड, आरबेरीत,

बाइमन्स, पोल्डकोस्ट, ब्रिटिश मायना उत्तर रोडेसिया भारतीय सिपापुर ब्रिटिश हींदुराल, ब्रिडबाइं प्राइलैंड, नाइजीरिया मलाया फेडरेसन और म्यूजीसेड—इन २२ देशों के प्रतिनिधि प्राये थे। इनकी संख्या इस बार बढ़ गयी थी। इस परिषद् में भाग लने ब्रिटेन, कॅनेडा प्रास्ट सिवा म्यूजीसेड इतिलि एन्टीका युनिवर्स, भारत पाकिस्तान लका इतिलि रोडेसिया, मॉस्टा, जमायका बरमूडा बारबेडोस बाइमन्स मिनीडाइ और होवानो, पोल्डकोस्ट, नाइजीरिया ब्रिटिश मायना भारतीय हीनिपा उत्तरी रोडेसिया, सिपापुर ब्रिटिश हींदुराल ब्रिडबाइं प्राइलैंड मलाया फेडरेसन और ब्रिजिया इन २६ देशों के प्रतिनिधि प्राये। एक बात धोर हुई। इस परिषद् में हिस्ता लेने अमेरिका और आयरलैंड ने भी प्रतिनिधि भेजे यद्यपि ये दोनों देश कामन वेल्थ में सम्मिलित नहीं हुए थे तथापि इन्होंने अपने-अपने देशों में कामनवेल्थ एंथोसिपेसन की सहयोग देने के लिए कुछ बनबाये थे और इन देशों के प्रतिनिधि कॅनेडा प्राये थे।

भारतीय प्रतिनिधिमंडल समेत इस परिषद् में १०० प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

परिषद् के इस अधिवेशन की कार्रवाई ता० ०० सितम्बर को कॅनेडा के पार्लियामेन्ट हाउस के सीनेट चेंबर में आरम्भ हुई। एंथोसिपेसन के समापति प्राबन्धन प्राल्मिना के मंत्री श्री हूरोन्ड होन्ड थे। उन्होंने समापति का आदेश बहूत कर अपने भावण में मत्त हो बचों के काम का सिद्धान्तोक्तन कराया। उन्होंने जो कुछ कहा उसके तारांश की वही बातें यहाँ दी जा सकती हैं थी एंथोसिपेसन के मंत्री सर हाउर्ड ईथरिंग बर्मी में प्रकटानार्थ दे चुके हैं, क्योंकि परिषद् की कार्रवाई मोक्षीय थी।

सबसे पहले मन्त्रीय भी होन्ड ने अवस्थित प्रतिनिधियों का प्रतिपादन किया और कहा कि सम्मेलन के आयोजन के लिए कॅनेडा सरकार ने जो सहयोग दिया है उसके लिए मैं इसे अग्र्यकार देता हूँ। इसके पश्चात् उन्होंने संस्था के इतिहास और पदोप्य बताया। श्री होन्ड ने कहा—यद्यपि इस संस्था का उदयगत १९११ में लार्ड बंचम बार्ड के राजतिलक समारोह के पश्चात् ही मानना चाहिए फिर भी अँकि मिरा बन्स १९०० का है और मैं इस तिथि की बराबर स्मरण रखता हूँ, मैं निश्चय करता हूँ कि उस वर्ष ब्रिटिश साम्राज्य की कुल अतसक्या का केवल इस प्रतिपात भाग कुछ मुक्तार अथवा स्वाधीन था। उस समय ब्रिटिश साम्राज्य की जनसंख्या ४५ करोड़ थी जिसमें करने प्राय अथवा आतन करनेवालों की कुल संख्या साढ़े बार करोड़। १९४० में यह अनुपात २ प्रतिपात हो गया। इस वर्ष ब्रिटिश कामनवेल्थ की जनसंख्या ५५ करोड़ थी जिसमें के अनुमुक्तार लोगों की संख्या ४६ करोड़ ही गयी। अनुमान हीया कि १९०० से १९४० तक भारतीय वर्ष में अनेक अतिकारी वैधानिक कथन प्रकट

गये जिनके कारण ही यह सफलता प्राप्त हो सकी।

१९४४ के बाद की प्रगति बताते हुए श्री होस्ट ने कहा कि इस समय सम्मेलन में भाग लेनेवाली विभिन्न देशों की संतुष्ट संख्या ३६ थी और अब इस सम्मेलन में ४८ है।

श्री होस्ट ने आगे बतकर कहा कि कामनवेल्थ की परिभाषा करवा सरल कार्य नहीं है किन्तु एक बात तो स्पष्ट रूप से कही जा सकती है और वह यह कि कामनवेल्थ एक परिवार के समान है जिसके समान धर्म, समान इतिहास और समान हित हैं। कामनवेल्थ के सदस्य देश सामाजिक न्याय और व्यक्तिगत स्वतन्त्रताओं में विश्वास करते हैं और मानते हैं कि इन धर्मों की इस संतुष्टीय लोकतन्त्र-परम्परा की सहायता से प्राप्त कर सकते हैं जो संसार में संतुष्टों की जननी ब्रिटेन की संतुष्ट से बनी है। कामनवेल्थ का दूसरा आधार मूल सिद्धांत यह है कि विश्व भ्रातृत्व की भावना को ही स्वीकार नहीं है। उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन में भी विभिन्न जातियों के, विभिन्न परम्पराओं के, विभिन्न धर्मों के लोग उपस्थित हैं।

जो कुछ अब तक ही चुका है उस पर सन्तोष प्रकट करते हुए श्री होस्ट ने यह प्रकट किया कि अभी बहुत कुछ काम होना बाकी है। उन्होंने कहा कि हम सबके सामने गिरान्तार बदलित चरित्र है। धार्मिक और व्यापारिक समस्याएँ तथा धर्मिता का सबाल भी सब हमारे सामने रहता है।

श्री होस्ट ने कहा कि इंग्लैंड और भारत जैसे कुछ देश तो ऐसे हैं जिनकी जनसंख्या उनके सामने की भयंकरा अधिक है और कैनडा, फ्रान्स तथा न्यूजीलैंड धार्मिक देश ऐसे हैं जिनके साधनों की तुलना में उनके पास अनुसूचित जाति का समान है। उन्होंने कहा कि इस व्यवस्था को एक समुचित योजना के आधार पर सुधारना सम्भव है।

श्री होस्ट ने कहा कि हम इस सम्मेलन में कामनवेल्थ के प्रति और यशुरी धारणा लेकर आये और कुछ निश्चय करें कि उसे और अधिक सफल बनायेंगे।

धरम के कारणों के कारण श्री होस्ट ने कैनडा के हाउस ऑफ कॉमन्स के अध्यक्ष श्री एनी थोर्नबार्क की समावृत्ति का समान पहलु करने की प्रार्थना की।

न्यूजीलैंड की परिषद के सदस्य श्री हुर विन के अध्यक्षता के तहत विभिन्न अध्यक्ष होनेवाले ने और बहुत ही भी बड़ी ही व्यवस्था रहनेवाली की धर्मिता हुर विन की बहुत का प्रातःकाल एक महाप्रय और भोजन के बाद तीसरे पहर एक धर्म महाप्रय उद्घाटन करें। वे पाया गया नोले। इन दो बरताओं के प्रतिरिक्त बरता-सम्बन्ध हुर प्रतिनिधिमंडल की और से एक-एक बरता नोले। इन्हें पत्र हुर विन का समय मिले। धर्म में विन सम्बन्ध में प्रातःकाल का उद्घाटन मन्त्र विना ही उनके

संश्लिप्त भाषण के तत्काल उत्तर दिन की कार्रवाई समाप्त हो । इन परिवर्तनों में केवल विचार विनिमय होता है कोई प्रस्ताव जारी नहीं ।

पहले दिन आबादी के तत्काल पर बहुत विविधता की गयी थी । प्रातःकाल का उद्घाटन भाषण म्यूजीमंड के प्रतिनिधिमंडल के नेता श्री बिलब्रेड हेवरी औरपुन ईनेबाले से प्रारंभ तीसरे बहुर का उद्घाटन भाषण भारत के श्री मावलकर श्री । आबादी के तत्काल पर ही म्यूजीमंड से सं जोला पा । क्यों से मेरा वह स्थिति रहा पा प्रतः प्रातः ही भारतीय प्रतिनिधिमंडल की ओर से सं भी बोलनेवाला था ।

यहाँ भी प्रातः के अधिवेशन की वही कार्यवाही लिखी जा सकती है जो सर हावर्ड क्यों को दे चुके है ।

प्रातः के समापति की मे एक अत्यन्त संक्षिप्त भाषण दे प्रातः की कार्रवाई का उद्घाटन करने वाले श्री बिलब्रेड हेवरी औरपुन को उद्घाटन भाषण देने के लिए बुलाया ।

श्री औरपुन का भाषण प्रातः प्रातः बना प्रारंभ उन्होंने अपने भाषण में कहा— म्यूजीमंड के पास एक लाख वर्गमील भूमि है और वहाँ की आबादी कुछ बीस लाख है । हमें म्यूजीमंड के विकास के लिए बाहर से 'अधिशक्ति' के स्थिति चाहिए ।

श्री औरपुन ने कहा कि ब्रिटेन का पुनर्निर्माण होना चाहिए । उन्होंने अपने सारे भाषण में म्यूजीमंड की अफजलाओं के ही पुनर्निर्माण के लिए कहा कि सड़क के बाव से ५० हजार लोग म्यूजीमंड में आ बसे है और इस वर्ष हम बीस हजार और बुलाया जायते है ।

इसके बाद दोबहर के भोजन के लिए बठने तक के भाषण प्रारंभ हुए और दोबनोपरांत श्री मावलकर का उद्घाटन भाषण हुआ । श्री मावलकर ने कहा— मे अत्यन्त के शुभ संकल्पों प्रारंभ उनके विचारों की सराहना करता हूँ और अपने बहुत ही तक सहमत हूँ । पर अत्यन्त रूप में बीसा ही नहीं होता बीसा हमने प्रावर्ष अपने सामने रखा है । वहाँ तक आबादी के तत्काल की बात है सं प्राणता हूँ कि कुछ ही तक उसे सीमित करना अनिवार्य है, किन्तु यह भी प्रावश्यक है कि प्राति सं प्रावर्ष वर्ष के प्रावर्ष पर प्रोत्साहन व करता जाय । हमारा उद्देश्य राष्ट्रों की एक रूप में विरोधा है और इसके लिए हमें समान स्तर का अत्यन्त सामने रखना होगा । वहाँने कहा कि आबादी के तत्काल के अत्यन्त में मे यह कहा गया जायता हूँ कि प्रावर्ष से ही अत्यन्तप्रारंभ होना प्रावश्यक है ।

दूसरी बात श्री मावलकर ने यह कहा कि विरम-प्राति के मारे के साथ विरम प्राणति का मारा भी बड़ा हुआ है । दोनों एक दूसरे से सम्बन्ध है वृक्षक नहीं । विरम

जाति के लिए परमावश्यक है कि बुनियाँ के सभी देशों की प्रगति भी हो। जब तक विषमता रहेगी संघर्ष का कारण भी बना रहेगा।

उन्होंने कहा कि पश्चिमी देशों के विचारों और उनके रहन-सहन के उच्च स्तर की हम बड़ी सराहना करते हैं किन्तु एशिया के तथा उत्तर के घनेक अन्य भागों के, वैसा दमित है और पिछड़े हुए है। इसलिए स्थायी हल ढूँढ़ने के लिए हमें इस विषयता की भी ध्यान करना होगा और एक समान स्तर की नींव डालनी होगी। उन्होंने कहा कि साम्यवाद की रोकथाम के लिए इतनी चिंता करने की आवश्यकता नहीं। ऐसा करने से साम्यवाद स्वयं निष्क्रिय हो जायगा।

अंत में श्री मावलकर ने कहा कि कामगर्भक का धारण स्पष्ट होना चाहिए और रंग, धर्म व जाति का कोई संबंध नहीं उठना चाहिए। उन्होंने कहा— धर्मन में जो धार्मिक अपने भावना में रखे वे उनसे मुझे भिन्नता एवं ठुम्हा का अतीती ही मुझे कुछ सबस्यों के भावनों से निरस्तता हुई। प्राया है कि कई चुमती हुई बसों करने के लिए आप मुझे कामा करने और यह मालों कि अपनी स्थिति को स्पष्ट कर देना मेरा भी कर्तव्य था।

श्री मावलकर का भावस्य बड़े ऊँचे स्तर पर भारतीय परम्परा के सर्वथा अनुकूल हुआ।

श्री मावलकर के पश्चात् श्री होस्ट बोले। श्री होस्ट ने न्यूजीलैंड परिषद् की इस विषय की कार्यवाही का उद्घाटन किया था। वरन्तु उनके बहों के और यहाँ के मायल में काफ़ी अन्तर था। न्यूजीलैंड में श्री होस्ट के मायल के पश्चात् तीसरे पहर का उद्घाटन भाषण भारतीय प्रतिनिधिमंडल के नेता की हस्तिलत से मेने दिया था और मेरे उस भाषण का श्री होस्ट तथा अग्यों पर ऐसा प्रभाव-सा पड़ा था कि कार्यवाही के अन्त में श्री होस्ट ने जो कुछ कहा था उस सिलसिले में वे निम्नलिखित बातें भी कह गये थे—

‘तब से पहले मैं भारत के सैठ गोविन्ददास के भाषण की चर्चा करके जिन्होंने अपना मत अस्पष्ट स्पष्ट बलशाली और प्रभावशाली रूप से रखा है। मैं यह कहना चाहता हूँ और मेरे कथन से चाहे प्राप्तचर्च ही क्यों न हो कि यह बहरी है कि सैठ गोविन्ददास ने जो विषय इतनी योम्यता के साथ उठाया है उस पर मुझे विस्तार के साथ विचार करना चाहिए। यदि मुझे ज्ञान होता कि सैठ गोविन्ददास द्वारा उठाये गये विषय पर लोगों की इतनी अधिक दिलचस्पी होती तो मैं इस विषय पर आस्ट्रेलिया के दृष्टिकोण के सम्बन्ध में आज अधिक समय लेता कि चाहे मझे इस सम्मेलन के सामने कुछ अन्य बहुमुख्य सामग्री प्रस्तुत करने का समय मले ही न मिलता, पर मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं सुमराहू हो गया।’

मान भी मे मीमूब वा घोर भी होस्ट के बाह हो मे बोलने वाला वा घत घाव के म्यूजीलेड की घपेला बहुत अधिक तक वे, घाप ही बहुत ही मुनामय ।

भी होस्ट के बाह मेरा भायल हुआ । मेरे भायल के भी म उती भाय के सम्बन्ध में कुछ कह सकता हूं जो प्रकाशित हो चुका है । म्यूजीलेड में तो जित दिन आबादी के तबाहने वर विचार विनिमय हुआ वा बहु दिन अखबार वालों के लिए खुला हुआ वा घत म्यूजीलेड के मेरे भायल की वर्षा भी बहुत हुई की घोर उत विषय पर मे घबनी मुहूर दक्षिण-पूर्व की पुस्तक में काफी लिख भी सका वा । कनेडा की कर्मवाही अखबार वालों के लिए खुली न रहने के कारण यह सम्भव नहीं है ।

मेने अपने भायल में आबादी के तबाहने के सबाल को प्रकृत विचार-इस्त बता यह कहा कि अन्धा कामनवेस्व तो लमी ही सकता है जब कामनवेस्व में रहने वाले देशों के विचारितियों को एक देश से आकर दूसरे देश में चलने का समान रूप से अधिकार हो घोर इत सम्बन्ध में जाति भेद घोर रंग-भेद की नीति की समाप्ति हो । मेने भारत पाकिस्तान पेट ब्रिटेन आदि देशों का एक घोर तथा कनेडा आस्ट्र लिया म्यूजीलेड आदि देशों का दूसरी घोर उदाहरण दे यह बताया कि वहाँ प्रथम प्रकार के देशों में बर्न मीमूब जोध तीन ली से पांच ली आबमी रहते हैं वहाँ दूसरे प्रकार के बर्नों में चार से घाट । यदि अधिक आबादी वाले देशों को घबनी आबादी अन्य देशों में भेजने की आवश्यकता है तो कम आबादी वाले देशों को अधिक आबादी की शक्ति विवा अधिक आबादी के न तो इन देशों के नैसर्गिक बल का उपयोग हो सकता है घोर न इन देशों की सुरक्षा । घोर अन्त में मेने यह कहा कि जब तक जाति-भेद घोर रंग भेद का अन्त न होया तब तक बहु प्रश्न हल नहीं हो सकता, जो प्रश्न न संसार के इस काल के लव प्रश्नों से अधिक महत्व का मानता है । जाति भेद घोर रंग भेद का अन्तना मुक्ति का रूप ही बया है इसके लिए मेने दक्षिण अफ्रीका का दृष्टान्त दिया घोर कहा कि वहाँ के ली लोग इत बल को निजाने के लिए जातिपुर्न उत्पादक कर रहे हैं उन्हें बँत घोर कोड़ों की लजा दी जा रही है । इस बर्बर लजा की व्यवस्था की है घबने की लभ्य घोर सुलभता कहने वाले इवैतों ने । बर्बर अन्ध मेरे मुँह से निकलते ही दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधियों के अघ का कोई पार ही न रहा । म्यूजीलेड के लमान इत बार बघपि कितो ने 'बाक घाट' का प्रदर्शन नहीं किया, पर इसके बाह जो भायल दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि का हुआ जलने ऐसी कोई बात बाकी नहीं रही जो जलने भारत के विच्छ न कही हो । अन्त में यहाँ तक कह जाता कि असुभ्यता जानने वाले भारतीयों को अघ लोभी के लिए 'बर्बर' अन्ध का उपयोग न करना चाहिए । मेने अकाल बीच में बोलकर कहा कि 'असुभ्यता' की हम अपने संविधान में चुर्म बना चुके हैं । धाव की बहुत का अन्त हुआ भारतीय प्रतिनिधिमंडल की एक सदस्या

धीमती धनसुया बाई काले के भावसु से । सुन्दर नभसु भा उनका भी ।

मुझे प्रायः एक नयी बात जान पड़ी । पश्चिमी सभ्यता के अनुयायी बनने की सबसे अधिक सभ्य और सुनसुकुत जानते हैं । पश्चिमी सभ्यता का जितना फलान्व हुआ है उतना प्रायः किसी भी सभ्यता का मानव इतिहास में न हुआ था । पश्चिमी सभ्यता के अनुयायियों की यदि कोई बात सबसे अधिक बोट पहुँचती है तो उनकी किसी प्रकार की भी बर्बरता का पराक्रान्त । दक्षिण अफ्रीका की बेंत और कोड़े की दण्ड-मयबन्धा निःशयपूर्वक बर्बर है । पश्चिमी इस्तेमाल में नहीं कर दक्षिण अफ्रीका के इस्तेमाल में भी घनेक दक्षिण अफ्रीका की इस समय की मजान सरकार द्वारा बरती जानेवाली नीति का विरोध कर रहे हैं और प्रायः सब संसार के २६ देशों के १०० प्रति निधियों के सामने उनकी इस बर्बर नीति का पराक्रान्त हुआ तब से अपना समुलन की बैठे । जिस प्रकार म्बुवीर्नब परिवर्ष में दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि ने बाकघाउट कर मेरे भाषण की उस अधिवेशन का सबसे महत्वपूर्ण भावसु बना दिया था 'मेरे बर्बर' सभ्य के विरोध में उन्होंने भी अपना समुलन बोध्य उतके कारण यहाँ भी बड़ी हुआ । पर एक बात मन और देखी । दक्षिण अफ्रीका की वर्तमान नीति की इतनी भस्ती हो चुकी है कि सभ्य देशों के इस्तेमाल का भी साहस न हुआ कि वे दक्षिण अफ्रीका के प्रति निधियों का सम्पन्न करें ।

इससे दिन परिवर्ष की जो बर्बों के काम की रिपोटें और प्रायः-सभ्य के लक्षे पर विचार हुआ । प्रायः के प्रप्यल भी भी होस्ट ही रहे । प्रायः भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सबसे भी प्रो० रंया ने प्रायः के काम के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिये । इन सुझावों में सबसे मुख्य था साम्बन्धी प्रकार के उत्तर में प्रजातन्त्रवादी प्रकार की योजनापूर्वक व्यवस्था । श्री रंया के सिवा भारत के बंजाल चारा-सभा के प्रप्यल भी मुकरजी का भी भावसु हुआ और उन्होंने कम दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि द्वारा उठाये गये प्रस्वुष्टता के बंजाल का जूब ही करारा उत्तर दिया । हम इस सम्बन्ध में जो स्वामी स्वामन्व सरस्वती और बापीजी की जितना भी सम्बन्ध हैं बोझा है । यदि प्रस्वुष्टता के विचारसु का इन मौनों ने इतना प्रप्यल न किया होता तो हम सम्ब सभ्य में बैठने योग्य न रहते । फिर भी हमें यह मानना ही हीया कि हम इस कालिमा को अभी भी पूर्ण रीति से नहीं जो शाये है । इस कर्मक से हमें पुरा विष धुड़ाना है और बहू प्रीम से प्रीम ।

प्रायः की बर्बा में पाकिस्तान के एक प्रतिनिधि ने भारत पर काश्मीर और नदियों के शान्ति के सम्बन्ध में धनपंत धाओए किये । यह सर्वथा विषयाभार वा और इस पर भी प्रोफेसर रंया एवं श्री नाबालकर भी ने भारत की स्थिति का स्पष्टीकरण भी कर देने का प्रप्यल किया ।

तीसरे दिन द्वायिक सम्बन्ध विषय पर चर्चा हुई। धारा के धारण में लंका के भी एम्बर्ट एक विरे। प्रातःकाल इत विषय की चर्चा का उद्घाटन किया ब्रिटेन के कर्मल डेरिक हीबर्ट एभीरी ने धीरे तीसरे पहर लंका के भी भी की पोम्बस्तन में। इस विषय पर इकतीस भावण हुए। भारतीय प्रतिनिधिमंडल के भी धनतसयनम् धर्मधार का धात्र बहुत ही सारस्यित भाषण हुआ।

चौथे धीरे पाँचवें दिन अन्तर्राष्ट्रीय विषयों तथा सुरक्षा पर विचार विनिमय हुआ। चौथे दिन सभासति का धासन पहल किया साटं लेलबिन न धीरे पाँचवें दिन भी वी भी कीकीक में। दोनों दिन जिन धार सभ्यताओं ने प्रातःकाल धीरे तीसरे पहर चर्चा का उद्घाटन किया वे वे भी ब्रुक कैम्ब्रिज, धी विघोडोर एठ धीन भी लंबरेठ सम्मोन्सन्ध धीरे भी में. एत लक्ष्मणान। इन दो दिनों में भारतीय प्रतिनिधि मंडल के भी प्रो० रंवा भी मुनटे धीरे धी मुकरजी के कई प्रश्ने मावण हुए। इन दो दिनों की कार्यवाही में अमेरिका धीरे धायरलेड के प्रतिनिधियों ने भी भाव लिया। अमेरिका का इस समय बरिचकी प्रजलन्धसम्भक रस्यों में कितना बड़ा स्थान है धयो पश्चिमी राज्य अमेरिका की किन्तनी बाटकारिता करते हैं उसे प्रस्तन करने के लिए कितनी बलिपूर्त एमुतिवा धीरे वेप्यार्, यह मने म्यूजीलड से सोचते हुए धासुंनिधा के कैबडरा की परिपद् में भी देया वा धीरे कैनेडा में भी इसी की धीरे कई मारी क्य में मुनराधुति देखी। धायरलेड के प्रतिनिधि धनी भी इंगलिस्तान के प्रति किये कट्टे हैं। आहकर उनके धायरलेड के बिभाजन कर देने के कारण इसका धा पता लगा।

म्यूजीलड में जिन प्रकार एक दिन परिपद् की सम्भकता वाकिस्तान के प्रतिनिधि मंडल के नेता भी लडीमूहीन का ने धीरे एक दिन भारतीय प्रतिनिधिमंडल के नेता होने के कारण मने की भी बीती कोई बात इस धार कैनेडा में नहीं हुई। सब धिसाकर मेरा मत है कि पूर्ण देखों की बीती प्रलिष्ठा म्यूजीलड में देखने की मिली की बीती यहाँ न थी। यहाँ अमेरिका, मुरोवीय देशों धीरे उन्हीं के उपनिषेधों की मधुरण वा। फिर भी ये इसका कहे बिना न रहूँवा कि भारतीय प्रतिनिधिमंडल का काम हर दृष्टि से लकोवजलक धीरे प्रभाबोत्पात्रक रहा। प्रतिनिधिमंडल के लक्ष्यों का अत्यन्त सम्बन्ध भी बहुत प्रमणुर्ल वा। भी काल धीरे धी संजधर के साथ धा जाने स लीने में मुण्ड धा मरी की धीरे धी माधलंकर की के साथ धीम्भी माधलंकर के बधारने से हमारे प्रतिनिधिमंडल की जोधा धीरे सिष्टता में कहीं सचिक मुडि हो गयी थी।

कैनेडा के विचारधियों की धात्रभागत में भी कोई मुडि न थी। म्यूजीलड के सद्युध कैनेडा की एक नया राष्ट्र है धीरे नये राष्ट्र का जोध यहाँ के लोनों में भी

मौजूद है। फिर केंद्र तो बहुत बड़ा ब्रह्म है। भविष्य में अपनी उन्नति के लिए उसकी उपस्थित योजनाएँ हैं। इनके कारण यह जोष और बढ़ गया है। मित्र-मित्र देशों के जो प्रतिनिधि परिषद् में आये वे उनका आपसी सम्पर्क भी हुआ, जो इस प्रकार की परिषदों का मुख्य उद्देश्य है। परन्तु इस सम्पर्क में अंता सौष्ठव स्पृहीतक में देखने की मिला या बेला यहाँ नहीं। इसका कारण यह भी हो सकता है कि परिषद् के पश्चात् प्रतिनिधियों का जो केंद्र ब्रह्म का दौरा हुआ उसमें वे सम्मिलित नहीं रह सका।

परिषद् के इन दिनों में स्पृहीतक के लक्षण यहाँ भी प्रतिनिधियों के स्वास्तार्य भीनों, प्रीतिभीनों आदि की भरमार रही।

परिषद् के पश्चात् कुछ और समय मीखो के देश में

कामनवेल्थ पार्लियामेन्टरी परिषद् का अधिवेशन ता ११ सितम्बर को घाँटवा में समाप्त हो गया था। इसके पश्चात् ता १४ सितम्बर से ता० २ अक्टूबर तक कामनवेल्थ पार्लियामेन्टरी एसोसियेशन की कॅनेडा शाखा में प्रतिनिधियों को कॅनेडा बैंग्वि विधान का कार्यक्रम रखा था। ता २ अक्टूबर को मांट्रियल से एक विशेष वायुयान द्वारा ये प्रतिनिधि उन्नी प्रकार सम्मन जाने वाले न त्रित प्रकार सम्मन से मांट्रियल आये थे। अनेक प्रतिनिधियों की इच्छा कॅनेडा से अमेरिका जाने और इत विशेष वायुयान से न आकर स्वतन्त्र रूप से यूरोप अथवा प्रशांत महासागर के रास्ते ब्रासिलिया, न्यूयॉर्क भारत आदि लौटने की थी। ऐसे प्रतिनिधियों ने एसोसियेशन की कॅनेडा शाखा से प्रार्थना की कि वे उनके लौटने की यात्रा का खर्च उन्हें दे दें तथा इस विधिष्ठ वायुयान से ही लौटने के सम्मन से उन्हें मुक्त कर दें परन्तु कॅनेडा की यह यात्रा इसे स्वीकृत न कर सकी क्योंकि यह इस विशिष्ट वायुयान का प्रयोग कर चुकी थी। इसका प्रभाव कारण यह था कि एक विशेष वायुयान द्वारा प्रतिनिधियों को ले जाने में खर्च बहुत कम पड़ता था। इस परिस्थिति में कुछ प्रतिनिधियों ने ता० १४ सितम्बर से २ अक्टूबर तक होने वाली कॅनेडा की यात्रा में से कुछ समय अमेरिका जाने के लिए निकाल ता० २ अक्टूबर को मांट्रियल पहुँच इस विशेष वायुयान द्वारा सम्मन लौटने का निश्चय किया और कुछ ने अपने निज के खर्च पर प्रशांत महासागर के रास्ते लौटने का।

य बहुते से ही प्रशांत महासागर के रास्ते भारत वापस पहुँचने का निश्चय कर चुका था। अतः मेने ता० १४ सितम्बर से ता० २ अक्टूबर तक होने वाली कॅनेडा की इस यात्रा में न रह सकने के लिए कॅनेडा की पार्लियामेन्टरी एसोसियेशन की शाखा से सजा मीखी और अमेरिका के रास्ते में कॅनेडा के जो मुख्य स्थान पड़ते थे उन्हें अपने खर्च पर देखते हुए न्यूयॉर्क पहुँचने का निश्चय किया। अथवा लौटने तथा अथवा अथवा अथवा, हर्लेड और बेसिलियम होकर ता० ११ सितम्बर को घाँटवा

पहुँच गये थे। हम लोगों ने न्युयार्क पहुँचने तक अपना कार्यक्रम नीचे लिखे अनुसार चलाया—

ता १६ सितम्बर तक घाँटबा ही धीर चला।

ता० १७ को दुरंदो।

ता० १८ धीर १९ को मद्रास।

ता० २० को न्युयार्क पहुँचना।

ता० १४ से १९ तक कॅनेडा के इस कार्यक्रम में बर्चनीय स्वामी को देखने के सिवा हमारा अन्य कोई काम न था। इन दिनों में हम कॅनेडा के घाँटबा दुरंदो धीर मद्रास खूब बूझे। अब तक हम कॅनेडा में जो कुछ देख चुके थे उसके सिवा इन ६ दिनों में दुरंदो के प्रजापक्षर को छोड़ धीर कोई ऐसी वस्तु हम में नहीं देखी जिसका कल्लेज किया जाय। सब-कुछ बीसा ही था बीसा अब तक हमने देखा था। खूब हारा मरा धीर से परिपूर्ण सुन्दर देख। पीलों तक घाबारी धीर खेती प्रजापक्षर कल-कारखानों का नामोनिशान नहीं। कहीं की भी बस्ती बनी नहीं। साफ-सुन्दरे, सुन्दर धीर मध्य नगर। अच्छी इमारतें चौड़ी सड़कें। जनता खूब सम्पन्न, पढ़ी-लिखी, सुखी धीर सन्तुष्ट, मरीची का पता नहीं।

दुरंदो का प्रजापक्षर हमारे अब तक के देखे हुए बड़े-से-बड़े प्रजापक्षरों में एक था धीर उसके कुछ संघर्ष ही ऐसे थे जैसे हम ने अब तक कहीं के प्रजापक्षर में न देखे थे। दुरंदो का यह रायल प्रोटेक्टियो न्युजियम यूनीवर्सिटी एथेम्स पर बना हुआ है। इस एक प्रजापक्षर में वास्तव में चार प्रजापक्षर हैं। लम्बन की छोड़ यह प्रजापक्षर विविध राष्ट्रोंके में सबसे बड़ा है धीर अपने बीनी संघर्षात्मक के लिए अत्यन्त विख्यात है। प्रजापक्षर के चार भाग इस प्रकार हैं—

पुरातन्त्र कनित्र आत्म भुवर्ष आत्म धीर प्राति आत्म।

प्रजापक्षर का समारंभ १८५३ में हुआ था। इस प्रजापक्षर से बीचन की पृष्ठता का प्रभाव मिलता है।

जगमोहनदास धीर जनश्यामदास की यात्रा के दिग्द सारे संसार घूमने वाले दिग्द ने पर मुझे अब अपने दिग्द का प्रबन्ध करना था। सामान हम लोगों के साथ काशी हो गया था अतः हमने तय किया कि जगमोहनदास धीर जनश्याम दास मद्रास से न्युयार्क हवाई अड्डा से पहुँचें धीर मैं सामान लेकर ट्रेन से न्युयार्क जाऊँ।

निश्चित कार्यक्रम के अनुसार मैं इन से ता० २० सितम्बर के प्रातःकाल न्युयार्क पहुँच गया धीर मैं तीन वामुपान से २० सितम्बर के तीसरे पहर।

कैनेडा पर एक दृष्टि

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में सबसे अधिक महत्त्व तीन बातों का होता है— भूमि, जल-वायु और लोग। देश की भूमि और साधनों का बड़ा के लोग कहीं तक उपयोग करते हैं और जलवायु से उन्हें कहीं तक सहायता मिलती है इसके आधार पर ही बड़ा का आर्थिक इतिहास बनता है। देश के लोग अपने संयुक्त शक्ति का देश की स्वतंत्रता के लिए और उसकी सुरक्षा के लिए जो कुछ करते हैं उतने उत देश का राजनीतिक इतिहास बनता है। किसी भी देश की सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति का अनुमान इस बात से लगाया जाता है कि उनके बलाचरण पर उन्होंने कहीं तक स्वामित्व प्राप्त किया है और अपने पूर्वजों से प्राप्त होने वाली परम्पराओं को उन्होंने कहीं तक आगे बढ़ाया है।

कैनेडा के विकास में कुछ आर्थिक कठिनाई इसलिए हुई कि बड़ा के लोगों ने भूमि और जलवायु में असाधारण विविधता और विभिन्नता नयी पायी है। फिर भी यह तीस-चारवीं शताब्दी में कैनेडा में आश्चर्यजनक प्रगति की है और वह एक निर्बल एवं शिथिल राष्ट्र से एक शक्ति एवं प्रौढ़ राष्ट्र बन गया है।

कैनेडा समुद्र राष्ट्र का लक्ष्य और कामगरेत्व का एक देश है। कैनेडा कामगरेत्व के तीन सबसे बड़े कुमीनियों में से एक है। इन तीन बड़े कुमीनियों के नाम हैं—कैनेडा आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका। यद्यपि यूजीएन भी महत्त्वपूर्ण है किन्तु वह इतना बड़ा और साधन-सम्पन्न नहीं है। कामगरेत्व में इन तीनों कुमीनियों का एक विशेष स्थान है आर्थिक दृष्टि से और राजनीतिक दृष्टि से भी। कैनेडा का क्षेत्रफल समस्त ब्रिटिश साम्राज्य के एक चौथाई भाग से अधिक है।

यद्यपि दक्षिण-पूर्व के राष्ट्रों में औद्योगिक मान संवार होता है पर कैनेडा अधिकांश रूप से कृषि-प्रधान ही है। कुछ खनिज-पदार्थ कैनेडा में बहुतायत से पाये जाते हैं जैसे कोयला निकल लोहा आदि लौह, सीसा, जिंक, यूरेनियम आदि। जल से विद्युत-शक्ति उत्पन्न करने की भी कैनेडा में विशेष सुविधाएँ हैं।

कैनेडा में एक राष्ट्र का रूप कई बातों में अमेरिका की भाँति और कई बातों

बहुत्र बचे थे। इन लोगों ने म्युपार्क पहुँचने तक अपना कार्यक्रम भीचे तिले अनुसार बनाया—

ता १६ सितम्बर तक प्राईवा ही घोर रहना।

ता० १७ को दुरेंदो।

ता० १८ घोर १९ को मांडुपल।

ता० २० को म्युपार्क पहुँचना।

ता० १४ से १९ तक कॅनेडा के इस कार्यक्रम में बर्नमोय स्वार्थों को देखने के लिये हमारा अन्य कोई काम न था। इन दिनों में हम कॅनेडा के प्राईवा, दुरेंदो घोर मांडुपल बूच घूमे। जब तक हम कॅनेडा में जो कुछ देख चुके थे उसके लिये हम ६ दिनों में दुरेंदो के प्रजापदघर को छोड़ घोर कोई ऐसी वस्तु हम में नहीं देखी जिसका अन्वेषण किया जाय। सब-कुछ बता ही वा जैसा जब तक हमने देखा था। कुछ हटा-भरा नीर से परिपूर्ण मुन्बर देखा। यहाँ तक प्रजावादी घोर छोटी प्रजावा मत-कारखानों का नामोनिशान नहीं। कहीं की भी बस्ती घनी नहीं। साक-मुचरे, मुन्बर घोर बन्ध नगर। बन्धी इमारतें चौड़ी सड़कें। जनता कुछ सम्पन्न, बड़ी-मिथी, मुन्धी घोर सम्पुष्ट नरीषी का बता नहीं।

दुरेंदो का प्रजापदघर हमारे जब तक के देखे हुए बड़े-से-बड़े प्रजापदघरों में एक था घोर उसके कुछ तपह तो ऐसे थे जैसे हम ने जब तक कहीं के प्रजापदघर में न देखे थे। दुरेंदो का यह रायल थॉटारियो म्यूजियम घुनीबाली एबेस्यु पर बना हुआ है। इस एक प्रजापदघर में वास्तव में चार प्रजापदघर हैं। लगभग की छोड़ यह प्रजापदघर विदित राष्ट्रबन्धन में सबसे बड़ा है घोर अपने भीनी तपहास्य के लिए प्रयत्न विख्यात है। प्रजापदघर के चार भाग इस प्रकार हैं—

पुरातत्व अभिलेखि घास्य भुगर्भ तारत्र घोर प्रासि धारत्र।

प्रजापदघर का तमारच १८५३ में हुआ था। इस प्रजापदघर से जीवन की बहुता का प्रभाव मिलता है।

जबमोहनदास घोर बनारामदास की यात्रा के दिवस सारे सवार घुमने वाले दिवस थे पर मुझे जब अपने दिवस का प्रभाव करना था। तामान हम लोगों के साथ काली हो गया था अतः हमने तय किया कि जबमोहनदास घोर बनाराम दास मांडुपल से म्युपार्क हवाई जहाज से पहुँचें घोर में तामान लेकर इन के म्युपार्क जायें।

विश्रित कार्यक्रम के अनुसार ये इन से ता० २० सितम्बर के प्रातःकाल म्युपार्क पहुँच गया घोर ये लोग मांडुपल से २० सितम्बर के तीसरे पहर।

राष्ट्रीय महत्त्व के सभी मामलों में सरकार के क्षेत्राधिकार में आते हैं। कैनेडा का संविधान कुछ लिखित है और कुछ अलिखित। संघ सरकार में गवर्नर जनरल, सेनेट और लोक-सभा सम्मिलित हैं। गवर्नर जनरल पाँच वर्ष के लिए ब्रिटेन के सम्राट द्वारा नियुक्त किया जाता है। इस समय गवर्नर जार्ज्स बिनसेंट थे।

आज कैनेडा दुनिया के बड़े राष्ट्रों में है। किसी समय यह बुनिया के एक छोटे पर था। आज जब कैनेडा के चारों ओर शक्तिशाली राष्ट्र हैं तो उसकी महत्त्व पूर्ण स्थिति का पता चलता है। कैनेडा के दक्षिण में समुद्र राज्य अमेरिका है उत्तर में सोवियत कस है पूरब में ब्रिटेन और पश्चिम में जपान। साबल और समृद्धि की दृष्टि से भी कैनेडा जन्मल राष्ट्रों की पहली पंक्ति में है।

में अमेरिका के विच्छिन्न भाग किया है। अमेरिका महाद्वीप के रक्तों में भी उसकी विशेष स्थिति है। जहाँ एक घोर कैंनेडा में बाहर से भीय भाये घोर उत्तम विकास अमेरिका के अन्य राष्ट्रों की तरह हुआ वहीं दूसरी घोर राजनीतिक क्षेत्र में कैंनेडा का विकास अन्य अमेरिकी राष्ट्रों की भाँति नहीं हुआ।

अमेरिका की स्वतन्त्रता की घोषणा के बाद बाने २० वर्षों में ऐसी अनेक अस्थिरता हुईं जिनसे बहुत से स्वतन्त्र राष्ट्रों की स्थापना हुई, किन्तु कैंनेडा में ऐसा कुछ नहीं हुआ। १९वीं शताब्दी में ब्रिटिश साम्राज्य में परिवर्तन होने के साथ-साथ कैंनेडा की राष्ट्रवादी भावना को मूलतः मिला घोर उसे स्वतन्त्र कुनीयम का दर्जा मिला। 'कनफेडरेसन' का सम्झौता, जिसके अनुसार १८६७ में कैंनेडा के ४ प्रांत एकत्रित हुए, एक प्राचीन कानून के द्वारा ही हुआ था। इस प्रकार कैंनेडा ने अपने शासनाधिकार एक साम्राज्य के प्राप्त किये। दूसरे अर्थों में कैंनेडा ब्रिटिश साम्राज्य में ही एक उपनिवेश से एक राष्ट्र बन गया।

कैंनेडा के लोगों के लिए भी सायब इस बात का अनुमान लगाना कठिन है कि ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत में कैंनेडा का कितना महत्वपूर्ण योग रहा है। १९वीं शताब्दी में घोर २०वीं शताब्दी में ब्रिटेन के ऐसे कितने ही उपनिवेश जहाँ रहने वह व्यापार करने मये से कामचलाय के स्वतन्त्र व्यवस्था ही मये है।

१९४ में कैंनेडा को खुदमुक्ता बनाने का भी निर्णय किया गया जाता ही निर्णय अन्त्य भी दूसरे उपनिवेशों के लिए करना एक तरह बरमान्यवक हो गया। प्राप्त किया, म्यूनीसिड, बहिल अष्टीका, भारत घोर पाकिस्तान इसी तरह अन्त्य तथा लम्हासते मये। २०वीं शताब्दी के आरम्भ में ही ब्रिटिश साम्राज्य एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या का अन्वयाता बन चुका था। प्रथम घोर द्वितीय महायुद्ध में इस अन्व में प्रवृत्ति को घोर भी तीव्र कर दिया।

कैंनेडा के भीतरी विकास में प्रांतीय घोर ब्रिटिश दोनों संस्कृतियों का सम्मिश्रण हो गया है। बपूर्वक प्राप्त पर कांसीसी संस्कृति की विशेष छाप है। कैंनेडा के समस्त जीवन पर इन दोनों संस्कृतियों की बहुरी छाप पानी जाती है। जहाँ के जीवन घोर चरित्र दोनों की ही इनने बहुत प्रभावित किया है।

दो संस्कृतियों के सम्मिश्रण का कैंनेडा का अनुभव आज के संसार में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जहाँ विभिन्न संस्कृतियों के सम्मिश्रण की आवश्यकता निरन्तर बढ़ती ही जा रही है।

कैंनेडा की सामल-व्यवस्था संघात्मक है। केन्द्रीय सरकार अस्तित्व में है। वल प्रांतीय सरकारें हैं घोर बहुत से म्युनिसिपल कारपोरेशन। संघ सरकार घोर प्रांतीय सरकारों के अधिकार-क्षेत्र ब्रिटिश मार्ग अमेरिकन एक्ट १८६७ में दिये हुए हैं।

राष्ट्रीय महत्व के सभी मामले फेडरल सरकार के क्षेत्राधिकार में आते हैं। कैनेडा का संविधान कुछ लिखित है और कुछ अनिश्चित। संघ सरकार में वक्तर जनरल, सेनिट और लोकर-सजा सम्मिलित है। वक्तर जनरल पाँच वर्ष के लिए बिडेन के सभाद्वारा नियुक्त किया जाता है। इस समय वक्तर जार्जस बिनटेंड है।

घाज कैनेडा दुनियाँ के बड़े राष्ट्रों में है। किसी समय यह दुनियाँ के एक छोरे पर था। घाज जब कैनेडा के चारों ओर घमिस्तघाली राज्य हैं तो उत्तकी महत्व बुर्ल स्थिति का क्या बनता है। कैनेडा के इक्षित में समुक्त राज्य घमेरिका है उत्तर में सोवियत कत है बुर्ल में बिडेन और बरिबम में जापान। साबल और समुद्धि की दृष्टि से भी कैनेडा उन्नत राष्ट्रों की पहली पंक्ति में है।

गगनचुम्बी प्रासादों के प्रांगण में

अमेरिका आज सारे संसार के देशों में अग्रगण्य है। जहाँ कहीं भी संसार के देशों, संसार की जनता, संसार की समस्याओं पर विचार होता है, मनन होता है, चर्चा होती है, वहाँ संसार के जो देश सबसे पहले और प्रधान रूप से ध्यान पा जाते हैं— अमेरिका और क्ल। दोनों देशों का सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक संबन्ध एक-दूसरे से ठीक विपरीत है। अमेरिका है पूँजीवादी देश और क्ल अपने की साम्यवादी कट्टा है। जैसे सभी कार्ल मार्क्स के भावनों के अनुसार साम्यवादी हुषा न हो और जैसे कुछ विचारकों के मतानुसार साम्यवाद के मार्ग पर चल भी न रहा हो। बी बी हो क्ल और अमेरिका एक-दूसरे से ठीक विपरीत दिशा के अनुगामी हैं। इसमें आगेही नहीं ही लकटा। लोचकल, आधिभौतिक नैतिकताकताकनों और आवाजी में दोनों देश समान रूप से महान् हैं। इस दृष्टि से संसार के केवल दो देश और इन देशों की समता कर सकते हैं चीन और भारत। परन्तु चीन तथा भारत हीनों में आधिभौतिक विकास के कार्य अभी आरम्भ ही हुष हैं। वहाँ में दोनों देश इस विषय में कहीं धाने बहु चुके हैं। और संसार के आधुनिक काल के अमेरिका तथा क्ल इन दो सबसे प्रधान देशों में भी अमेरिका का स्वाध क्ल से धाने हैं। इसका प्रधान कारण यह है कि आधिभौतिक क्ल में जो-कुछ धन तक काल का चुका है उसके हर सेन का अमेरिका में पूर्ण विकास हो चुका है क्ल में अभी यह ही रहा है। पूर्णता को नहीं पहुँच पाया है।

ऐसे अमेरिका देश के प्रधान नगर न्यूयार्क में जे ता० २० दिसम्बर के प्रस-काल रेल से पहुँचा। हमारी रेल जिस प्लेटफार्म पर पहुँची वह भूमि को छोड़कर तक धर के धन में बनाया गया था। और यह प्लेटफार्म ही क्या न्यूयार्क का यह सबसे बड़ा स्टेजान जो 'ग्रेड सेलुन' के नाम से प्रसिद्ध है, तारा-का-तारा एक महान् तल-धर के रूप में बना हुआ है। स्टेजान पर भारतीय हुतावाल के भी धेसधर की मुझे लेने के लिए बीकुर थे। हमारे टहरने का प्रधान भारतीय हुतावाल वालों ने किया था न्यूयार्क के सबसे बड़े होटलों में से एक 'कावेडार' नामक होटल में। स्टेजान से हम लोग

होइस जाने। लखनूब बड़ा सुन्दर और मध्य हीइस बा। इतकी सबसे बड़ी बिद्ये-
बता भी इतका ऐसे स्थान पर होना भी हूट इच्छि से म्यूबार्क का केन्द्र समझा जा सकता
है और जहाँ से म्यूबार्क के रोजगार-धर्म वाले बात स्ट्रीट की छोड़ रोड सभी स्थान
समीप पड़ते हैं।

इस होइस में भारतीय हुताबास वालों ने हन सोनों के लिए दो कमरों का
प्रबन्ध किया था एक दो व्यक्तियों के ठहरने का और दूसरा एक व्यक्ति के। दो
व्यक्तियों के ठहरने वाले कमरे में प्रचना तामसल जमा तथा नित्य-कर्मों से निवृत्त
हो इंडिया हाउस में मैं भारत के कौतलर जनरल भी प्रचार जाल से मिलने गया,
क्योंकि मे बाइता था कि म्यूबार्क का प्रचना सारा कार्यक्रम जस्टो-से-जस्टी तय कर
झारू। इंडिया हाउस म्यूबार्क में भारतीय सरकार का एक सुन्दर मकान है जहाँ
भारतीय हुताबास के कौतलर जनरल का इन्कर है और जहाँ कौतलर जनरल रहते
भी हैं। भारतीय हुताबास का प्रचान इन्कर अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन में
है। भारतीय राजदूत वाशिंगटन में रहते हैं। इस इन्कर के मातहत म्यूबार्क और
संस्थापितस्की दो स्थानों पर भारतीय कौतलर जनरल के इन्कर हैं जो अमेरिका
के इतने बड़े श्रेष्ठ होने तथा म्यूबार्क के अमेरिका के सबसे प्रचान नगर एवं संस्था-
पितस्की के अमेरिका के दुर्बी और के सबसे प्रचान इन्करवाह होने के कारण सर्वथा
उचित है।

यही जाल से मैं दिल्ली में मिल चुका था, अतः हूय दोनों एक-दूसरे की भसी
जानि जानते थे। यही जाल बड़े उत्साह से प्रारम्भ सम्मानपूर्वक मुझ से मिले। उन्होंने
मीनती जाल से भी मुझे मिलाया। इसके बाद उन्होंने भारतीय बाइस कौतलर की
भंडारी की मुलाकात और हन तीनों में बातचीत हो मेरा म्यूबार्क का सारा कार्यक्रम
निश्चित हो गया। वसु कार्यक्रम मुख्यत तीन विभागों में विभक्त किया गया—
(१) म्यूबार्क के प्रथम-प्रचान स्थानों को देखना, (२) म्यूबार्क के मुख्य-मुख्य लोगों से मिलना
(३) सार्वजनिक माध्यम प्राप्ति। कार्यक्रम की बिबिधता तथा म्यूबार्क की मूल्यता के
कारण तय हुआ कि हूय सोनों की कम-से-कम दो सप्ताह जहाँ ठहरना होया, समय पर
दो दिन इन्कर-इन्कर भी हो सकते हैं। पर ता० ३ के प्रार-काल के पहले मेरा म्यूबार्क
छोड़ना मही हो सकता था क्योंकि ता० २ अक्टूबर की रात को मापी की के जन्म-दिवस
की जो सार्वजनिक जना अमेरिका की इंडिया लीग ने रखी थी उस समा का प्रचान
बता में निवृत्त किया गया था।

म्यूबार्क में भी जाल और भंडारी से प्रचान की मुलाकात में ही मुझे मामूम
हो गया कि दोनों कितने सम्मान पूर्वक हैं और मेरे कार्यक्रम में दोनों की कितना धनु
राय है। इसके बाबाय भी भंडारी से ती मेरी नित्य ही मेट बाबाय फोन पर बातचीत

होती रही और वे मेरे कार्यक्रम की छोटी-से-छोटी बातें भी बड़े ध्यान से घोर बड़ी लगन से तय करती रहे।

इंडिया हाउस से मे भारतीय ढंग के भोजन वाले 'राजा' नामक रेस्तराँ की भोजन करने गया। प्रकृता भारतीय ढंग का भोजन या घोर यह अधिक प्रकृता इसलिए लगा कि लगन छोड़ने के पश्चात् कई दिन बाद इस प्रकार का भोजन मिला था। राजा रेस्तराँ में प्रचालक भी योगी बिहुलदास के मेरी घोंट हो गयी। बिहुलदास की हमारे प्रवेश के करवा तयार के हैं। कई वर्ष पहले मे इनसे खटबा में मिला था और वहाँ मेने इसकी कई योग सम्बन्धी क्रियाएँ देखी थीं। मुझे यह देखकर कुछ प्रसन्न हुआ कि बिहुलदास की सख्त कुट्टा घोर होती पहले हुए थे। उन्होंने मुझे बताया कि वे इसी योगात्क में प्रायः सारे विश्व का भ्रमण कर चुके हैं और यह सारा भ्रमण उन्होंने बस इन्हीं के बिना ही जो प्रयोगों को योग-क्रियाएँ सिखाने के उपलक्ष्य में बसितला के कम्प में उन्हें मिलता है। बिहुलदास की स्पूबार्ल में भी करीब डेढ़ वर्ष से रहकर गुरुर स्थान पर मिलकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ। श्री बिहुलदास की मे प्राय ही रात को उनके निवास-स्थान पर मुझे भोजन के लिए निर्मलस विद्या को मेने यह कहकर सहर्ष स्वीकार कर लिया कि मैं प्रकृता न प्राकर हम लोग तीन व्यक्ति प्रायसे, जयमोहन दास, जनश्यामदास और मैं। बिहुलदास की को जब जानस हुआ कि मेरे पुत्र और रामाव भी मेरे साथ यात्रा कर रहे हैं और वे भी उनके वहाँ भोजन के लिए पहुँचेंगे तो उन्हें और भी अधिक हर्ष हुआ।

राजा रेस्तराँ से मैं कामेडार होटल को ही गया क्योंकि कम के पहले मेरा यहाँ का कार्यक्रम प्रारम्भ न ही रहा था। होटल में ये जयमोहनदास और जनश्यामदास का रास्ता देखने लगा। इनका हवाई जहाज स्पूबार्ल के हवाई घाट पर ३ बजे घाने वाला था और वहाँ से ये लोग ४ बजे के लगभग एयर टरमीनल (हवाई जहाज की सवारियों का स्वेचन) पहुँचने वाले थे जो कामेडार होटल से २ १ बजानों के बाद ही था। कोई योगी बार बजे से एयर टरमीनल पर पहुँच गया। ठीक समय जयमोहनदास और जनश्यामदास या पहुँचे तथा अपने-अपने स्थान पर ठहर गये। स्पूबार्ल का जो कार्यक्रम तय हुआ था उसे इन लोगों ने भी देखकर पसन्द कर लिया।

प्राय रात को श्री बिहुलदास के वहाँ जाने के प्रतिरिक्त हवादा कोई कार्य-हाज से बनाया हुआ भारतीय प्रकृता की बड़ा स्वादिष्ट भोजन कराया। इस भोजन में बिहुलदास की की एक अमेरिकन प्रिया श्रीमती बेनिदा डार्लिंगटन भी सम्मिलित हुई।

दूसरे दिन प्रतल-काल से हमारा स्यूयार्क का कार्यक्रम धारणम हुआ और इस कार्यक्रम के प्रारम्भ होने के पश्चात् स्यूयार्क छोड़ने तक हम सभी बितने व्यस्त रहे। कार्यक्रम की इस व्यस्तता के कारण ही हमें स्यूयार्क ता० ७ अक्टूबर तक ठहरना पड़ा। इन १८ दिनों में हमने स्यूयार्क में क्या-क्या देखा, क्या-क्या किया, किस-किस से मिले। मेरे जीवन में तथा व्यस्तता रहते हुए भी इन १८ दिनों में बितनी व्यस्तता रही पतनी कम बार ही रही थी।

बम्बई के सद्यः स्यूयार्क एक द्वीप पर बसा है। इस द्वीप का नाम है यनहवन। यह द्वीप बहुत बड़ा नहीं है। इसकी लम्बाई है साढ़े बारह मील और चौड़ाई है ड़ाई मील। बम्बई में जिस प्रकार भूमि की कमी है वही प्रकार स्यूयार्क में भी है। इसीलिए यहाँ की इमारतें बहुत घनिक ऊँची हैं। फँसान का काम यहाँ उँचाई करती है। ये इमारतें ही स्यूयार्क में सबसे घनिक प्याग को प्राकबित करती हैं। इमारतों का स्यूयार्क वाला ढंग हम कौन्डा के मांडुयल और दुरेंडो में भी देख चुके थे, पर मांडुयल और दुरेंडो की इमारतों से यहाँ की इमारतें कहीं घनिक ऊँची थीं। इनकी उँचाई के कारण इन्हें चंपेनी मत्वा में एक नया नाम दिया गया है—स्काई स्फयर। पर इससे यह न समझा जाय कि स्यूयार्क में नीचे पकान है ही नहीं, बल्कि सब मिताकर ती घामर नीचे पकान ही घनिक है, कम-से-कम बहुत घनिक ऊँचे ती गिनती के ही है। बहुत ऊँची इमारतें उनके अनुपात से बहुत घनिक नीची इमारतों से घिरे रहने के कारण नीचारी के सद्यः बिकती है, इसके कारण चाहे बहुत ऊँची इमारतों की लम्बाई बड़ गयी हो, पर बहुत ऊँची और बहुत नीची इमारतों के इस सम्मिश्रण से नगर की सोजा मेरे मतानुसार कम हो गयी है। यद्यपि कहीं-कहीं इस प्रकार का मिश्रण सुचना लता है बस्तु विशेष में विधिध्व क्य से पर कई जगह, कम-से-कम यहाँ बस्तुएँ सामूहिक कम से बुन्धियोवर होती हैं यहाँ यह मिश्रण सुचना में समता न रह सकने के कारण दृष्टि में किरकिरापन पैदा कर देता है। मेरे मत से स्यूयार्क में इस मिश्रण की बड़ह से ऊँची इमारतों को जो मीनार-का-सा क्य मिला है उसके कारण तीव्र्य की कमी हुई है। फिर भी इतनी ऊँची इमारतें बुनियाँ के किसी घन्य स्थान में नहीं और ये इमारतें ही स्यूयार्क की सबसे बड़ी विशेषता है।

इमारतों के बाम की दूसरी ओर इस नगर में प्याग को प्राकबित करती है यह है यहाँ की सड़कें। चौड़ी और लम्बी सड़कों को यहाँ एवेस्यु कहते हैं और इन एवेस्युओं को इन एवेस्युओं से कम लम्बी और कम चौड़ी सड़कें को समाजांतर से इन एवेस्युओं को काटती हुई चलती है उन्हें कहते हैं स्ट्रीट। सारा स्यूयार्क नगर इन एवेस्युओं और स्ट्रीटों का समानांतर की चौकड़ी वाला जाल-सा है। चौकड़ियों के नाम के बीच में इमारतें हैं और चौकड़ियों के जाल की डोरियाँ ह य एवेस्यु तथा स्ट्रीट।

कंसा व्यवस्थित सांग-बाग-सा बुना हुआ है। सुना यह पया कि पहले यह नगर ऐसे व्यवस्थित बन ही बना हुआ नहीं था। नगर के कुछ पुराने बिनापों में घनी भी यह व्यवस्था नहीं है पर बोटे-बीरे छहुर को व्यवस्थित बनाने की योजना बनी और अब तो नगर के कुछ बोड़े से बिनापों की छोड़ घारा का सारा नगर एक योजना बनाकर बसाया हुआ नगर जान पड़ता है। स्काई स्केपर्ट के बाब इस प्रकार की घड़के इस नगर की सबसे बड़ी विशेषता है और पैरिस जयपुर तथा अमेरिका से ही कुछ अन्य नगरों की छोड़, जो न्यूयार्क के बच्चात् न्यूयार्क के समान ही बसाये गये हैं, संसार के किसी अन्य देश के नगरों की बसावट में ऐसी व्यवस्था नहीं है।

तीसरी धार्मिक वस्तु यहाँ के पाताशात के साधन है। मोटरों जितनी यहाँ है उतनी संसार के किसी देश के किसी नगर में नहीं। मोटरों के सिवा है ट्राम बसें और सबबे। ट्राम और बसें तो सनी जयपुर है, पर सबबे लम्बन की ट्राम रैलों के समान ही बिजली की रेल है जो न्यूयार्क और लन्डन को छोड़ बहुत कम स्थानों में है। लन्डन में ट्राम रैलों अमीन के धन्वर तलपट्टों में चलती है न्यूयार्क की सबबे अमीन के नीतर और अमर दोनों जयपुर जहाँ बड़ी सुबिधा हो। लन्डन की ट्राम रैलों न्यूयार्क की सबबे से घबड़ी है पर फिराया सबबे का जितना कम है उतना संसार की किसी लवारी का नहीं। बस छेद बर्चात् लयभय घाठ घाने पैसे में धाय न्यूयार्क के सुहुर-से-सुहुर स्थान की यात्रा कर सकते हैं। इन सबबे रैलों के प्लेडकार्न पर इस प्रकार के अटक लगे हुए हैं कि उनके एक छेद में धायके बस छेद का तिलका डालते ही यह अटक चल जाता है। अटक के नीतर बाहर धाय सुहुर-से-सुहुर स्थान को रेलें बढसते हुए चले जाइये। हाँ, एक बार जहाँ धाय अटक से निकले जहाँ फिर से घुसने के लिए धायको पुनः बहु तिलका डालना हीया। इसका धर्च यह हुआ कि यदि कोई सबबे से कहीं जाना चाहे तो चाहे बहु स्थान निकट हो या दूर उसे बस छेद लगे। धर्चात् एक देश में बिजुी या तार बेजने में चाहे बहु किसी निकटवर्ती स्थान को भेजा गया हो चाहे दूरस्थ स्थान को, जित प्रचार एक ही निरक की विच्छत लवठी है उन्ही प्रकार सबबे की मुताबिरी में भी।

न्यूयार्क की चौथी विशेषता यहाँ की राजि की बिजली की रोशनी है। हमारे देश में घनेक बिजालियाँ इकट्टी कर ही जायें तो भी कहीं भी अम्बई तक में इतनी रोशनी नहीं होती जितनी न्यूयार्क में नित्य राजि की रहती है। यह रोशनी नित्य बिन्न प्रकार के बिजालियों के कारण कई गुनी बड़ लगी है तथा कई प्रकार की हो पयी है। रोजबार-अन्वे बालों में घबनी-घबनी बुकानों की तिल-कित प्रकार से घुतिवन्त किया है। एक बुकान के बिजालय में तो लकनुच का जल-अवगत है जो बिजली की रोशनी में जूब जयकता रहता है। बिजालयों की बहु बिजली दिन की भी नहीं बुझनी,

पर शोभा तो इतकी रम्य को ही बिलती है ।

ऐसा न्यूयार्क नगर कोई बहुत बड़ा नगर नहीं है । कैंसर बताने के लिए स्पष्ट न होने के कारण मनहटन द्वीप पर बसा हुआ यह नगर बम्बई के समुद्र ही एक छोटा-सा नगर है । ऐसे छोटे-से नगर की जनसंख्या है कोई साठ लाख । फिर बम्बई के समान न्यूयार्क शहर के बाहर मनहटन द्वीप से लगी हुई दूर-दूर तक बस्तियाँ बनी लगी हैं । मनहटनद्वीपके बाहर की बस्तियों की भी यदि ध्यानिल कर लिया जाय तो कहते हैं न्यूयार्क संसार का प्रायः सबसे बड़ा नगर है क्षेत्रफल में चाहे लम्बन से कम ही पर प्रायः सभी में लम्बन से भी अधिक । अपने चारों ओर की बस्तियों के साथ न्यूयार्ककी जनसंख्या कोई एक करोड़ है ।

धीरे न्यूयार्क की यह जनसंख्या एक प्रकार के तारे महान् अमेरिका देश का प्रतिनिधित्व करती है । अमेरिका देश में तीन जातियों के लोग रहते हैं—रैड इंडियन ह्यूमो और श्वेतांग । पहले यहाँ रैड इंडियन रहते थे । जन्हीं का यह देश था । वे कहीं से घाये थे कम घाये थे इन सब बातों पर विद्वानों में एक नहीं समक मत है, पर श्वेतांगों के यहाँ आने के पूर्व वे ही यहाँ के प्रधान निवासी थे । अभी भी अमेरिका में वे हैं पर इनकी संख्या अब बहुत घट गयी है साथ ही वे पृथक बस्तियों में बसाये गये हैं जहाँ से न वे कहीं जा सकते और न बिना सरकारों द्वारा के कोई दूसरा इन बस्तियों में प्रवेश कर सकता घट रैड इंडियन तो न्यूयार्क में भी नहीं रहते । इनके जून से निधित सम्मान चाहे श्वेतांगों में कोई-कोई हो । रैड इंडियनों की रूढ़-सहज और रीति रिवाज अन्य पुरानी जातियों के समुद्र नामा प्रकार की विविधताओं से भरी थी । इनकी रूढ़-सहज की सबसे बड़ी विशेषता थी बहुत अधिक मनुष्यों का एक मकान में रहना । किसी-किसी एक मकान में वे सात-सात से तक इकट्ठे रहते थे । इंडियनों की अभी भी अमेरिका में काफी संख्या है । न्यूयार्क में भी हकी काफ़ी बुध्दियोग्य होते हैं । कुछ इंडियनों और श्वेतांगों की मिश्रित सम्मान हैं । ऐसे लोगों में अनेक श्वेतांगों के समुद्र श्वेत हैं । इन दो जातियों के सिवा अमेरिका में रहते हैं श्वेतांग । तारे अमेरिका देश में अधिकतर यही हैं और न्यूयार्क में भी । भारतीय, चीनी, जापानी आदि की संख्या तो इस देश में नहीं के बराबर है । यहाँ के समस्त नागरिकों को नागरिकता के पूरे अधिकार हैं । संविधान में वर्णभेद का कोई स्थान नहीं, पर व्यवहार में वर्णभेद का अभी भी दुर्भ घल्ल नहीं हो पाया है ।

अमेरिका देश के ये श्वेतांग यूरोप के भिन्न-भिन्न देशों से यहाँ घाये हैं । ईंग्लैंड घायलैंड फ्रांस, जर्मनी, बेनिजियम, हालैंड इस स्पेन, पोर्चुगाल आदि यूरोप का कोई देश ऐसा नहीं जहाँ के निवासी जहाँ घाकर न बसे हों । एक ऐसा समय था

कब कहीं की भी आबादी जाने के लिए यहाँ किसी प्रकार का प्रतिबन्ध न था, इमीरैलम का कोई कानून नहीं। यूरोप के देशों ने इसका पूर्ण लाभ उठाया और सभी जगह के लोग आकर यहाँ बसे। भिन्न-भिन्न देशों के ये निवासी किसी समय भिन्न-भिन्न साम्राज्य भी बोलते थे, पर अब न ये भिन्न-भिन्न देशों के निवासी रह गये हैं और न इनकी भिन्न-भिन्न साम्राज्य ही है। इनमें से अनेक सभी की जानते हैं कि इनके पूर्वज किस देश से आये थे वर अब ये ही बने हैं सब के सब अमेरिकन और इन सबकी भाषा या एक भाषा ही गयी है—अंग्रेजी। किन्तु अमेरिका देश के किसी समय अंग्रेजी राज्य के अतिरिक्त होने अथवा यहाँ के अंग्रेजों में अतिरिक्त इंग्लिस्तान के लोग रहने या यहाँ अंग्रेजी भाषा होने के कारण यदि यह सबक सिवा आये कि अमेरिकन अर्थार्थ में अंग्रेज ही तो वह बूल हीयी। अंग्रेजों तथा अंग्रेजी भाषा बोलनेवाली अंग्रेज जाति और अंग्रेजों तथा अंग्रेजी बोलनेवाली अमेरिकन जाति में बहुत बड़ा अन्तर है। जो तो ने मान्य मान्य में कोई अन्तर नहीं जानता और अमेरिका में भी यूरोपीय संस्कृति ही है वरन्तु जो अन्तर यूरोपीय संस्कृति वाले इंग्लिस्तान, फ्रांस जर्मनी आदि देशों के मान्यों में है वही इन सब और अमेरिका के मान्यों में भी। अन्तर इतना ही है कि इंग्लिस्तान, फ्रांस, जर्मनी आदि के निवासियों की भाषा यूनक-यूक्यू है, इंग्लैड और अमेरिका के निवासियों की भाषा एक ही पर भाषा एक होने पर भी इंग्लिस्तान की अंग्रेजी और अमेरिका की अंग्रेजी में भी अन्तर है।

यहाँ सब यह कहता है कि अब इंग्लैड में रहनेवाले और अमेरिका में रहने वाले दोनों ही अंग्रेज ही दोनों की संस्कृति यूरोपीय संस्कृति ही, दोनों की भाषा एक ही सब आदि अंग्रेज जाति और अमेरिकन जाति में अन्तर क्या है? यह अन्तर अन्तर-अन्तर देशों से दिखायी भी नहीं पड़ता, पर यदि थोड़ा-सा भी गहराई में अन्वेष किया जाय तो यह अन्तर दिख जाता है। अन्तर मुख्यतः है दोनों जातियों के स्वभाव का अन्तर और सब स्वभाव के कर्म की बजह से ही भाषा का भी फर्क हो गया है।

अंग्रेज जाति एक पुरानी जाति है। इसमें एक विशेष प्रकार का डोकन, नाम्नीय, आत्मसन्मान की भावनाएँ, औरत औपचारिकता आदि हैं। इनके तारे समाज में कुछ विविध रीति-रिवाज (कर्मसम) ही गये हैं। किसी भी अंग्रेज की आर्थ आरीकी से देशों तो ये आरी आर्थें भूताधिक रूप में आर्थकी उच्चमें दिख पड़ेंगी। अमेरिकन जाति एक नयी जाति है। इसमें न अंग्रेज जाति का डोकन है, न अर्थका पाण्डीय, न आत्मसन्मान की वैसी भावनाएँ, न सब औरत और न वैसी औपचारिकता आदि। अन्तः समाज में कोई विशेष रीति-रिवाज भी नहीं दिख पड़ते। पर अंग्रेज जाति की ये आरी आर्थें उसके लक्ष्युल है और अमेरिकन जाति में इन आर्थों का अभाव उसके दुर्गुल यह नहीं कहा जा सकता। अर्थकी इन आर्थों के कारण अंग्रेज जाति में

एक प्रकार का बकिमानुसी-यम भी आ गया है। जस्ताहू धीरे धुन्धकर काम करने की प्रवृत्ति गन्ध हो गयी है। घाबली सम्बन्धों में भावनाओं की कमी हो गयी है। घरे ! यहाँ तक होता है कि एक दूसरे के धामने-सामने क्यों तक रहते हुए भी बिना किसी परिचय करानेबाने के दो अघेज एक दूसरे से बात तक नहीं करते। अमेरिकन जाति में अग्रे छेत्तपन की अवह तरलता हो, अग्रे याम्भीर्य की अगह कुछ उन्नतापन उतमें अग्रे अस्तनसम्मान, पीरव धीरे धीरेचारिक्रता की भी बँती जाभा न हो अती अघेज जाति में है, पर उसमें अघेजों का बकिमानुसीपन धीरे बाबा घावम के अमाने के रीति रिवाजों पर चलने की अनुदार वृत्ति भी नहीं है। अमेरिकनों के व्यवहार में मेने भावनाओं का भी अघिक धीत पाया धीरे कँहा जस्ताहू तथा अघट अघटकर छोटे-से छोटे काम को भी करने की वृत्ति। हाँ, जस्ताहू के अतिरेक के कारण अघटकर काम करने की इत वृत्ति ने अमेरिकन जाति में एक बहुत बड़े दुर्गुल की भी उत्पत्ति कर भी है। यह दुर्गुल है हर काम में इतनी धीअता कि प्रायः यह धीअता सीमा का अमनपन कर देती है। न्यूयार्क नगर में आपको साधारण बात से चलनेबाने अघिस्ति ही अने-विने विबेये। पुषव त्रिपयै, बास, बुद्ध तखल सब इत प्रकार अतते आन पड़ेंगे अते सारे नगर में आप सब गयी हो धीरे सब इअर से उअर धीरे उअर से इअर माग रहे हों। ऐसी बीड़माय, ऐसा अघल पुअल कि क्या कहा जाय। लम्बन भी बहुत बड़ा नगर है पर न्यूयार्क अती बीड़माय लम्बन में बुद्धिबोअर नहीं होती। लम्बन का बीअन शान्त सरिता का अबाह-सा आन पड़ता है धीरे न्यूयार्क का तुअनी पहाड़ी नदी-का-सा।

अह अन्तर है एक अरु, एक संस्रुति तथा एक आया-भायी अघेज धीरे अमेरिकन जाति में। धीरे यह अन्तर अतकी एक आया रहते हुए भी उत जावा में भी आ गया है। अघेज कमी अतिअयोक्तियों का अघयोय नहीं करता धीरे अमेरिकन बिना अतिअयोक्तियों के अोल ही नहीं सकता। धीरे आया के ताप ही अतकी अेव भुवा भी अंमतेअ ही नहीं पुराने यूरोपीय अेयों से भी अिल है। यूरोपीय अम के अघे अहते हुए भी अतकी अई अायः बड़ी अमअदार रहती है। रंय-अिरंवा अया अघे एक गयी अस्तु अिलनी है। अरे, कौट तक कमी-कमी दो रंय का हीवा है। आस्तीमें एक रंय की धीरे आमना-आमना अतरे रंय का।

न्यूयार्क, अहाँ की अमार्तें अहाँ की अड़कें अहाँ की लचारियाँ, अहाँ की रोअनी, अहाँ के आनअ, अतकी अहल-अहल अतका अन अतका अंतअ, ताप अस्त अेअकर आदनी रंय-सा रह आता है उतकी बुद्धि अकाअीअ-अी हो आती है धीरे अरि अह इत अिअ के एक पहलु की धीरे हो बुद्धिपात करे ती अते यह नगर पृथ्वी का अरुन विआनी अैता है अँवा अेरे कुछ अिअों ने अुअे कहा आ। पर अिली भी अिअ

का एक बन्ध ही नहीं होता, जतसे अन्य बन्ध भी होते हैं और कोई भी प्रबन्धन तब तक पूर्ण नहीं होता, जब तक सब बन्धों को देखने का यत्न न किया जाय। न्यूयार्क में धरती धूम्रमूल विद्येयताएँ हैं इनमें लम्बे नहीं, पर इन विद्येयताओं के साथ ही जतकी कुछ मयात्मक क्रियाएँ भी हैं। न्यूयार्क के जीवन को जो बस्तुएँ चलाती हैं वे एक दूसरे पर इतनी अधिक दूर तक प्रबलित हैं कि यदि किसी एक छोटी-सी बात में व्यवस्थित ही जाय तो वहाँ के जीवन का सारा प्रवाह एक जगह में स्थित ही जाता है। वहाँ इस प्रकार की कुछ घटनाएँ हुईं भी हैं। एक बार वहाँ के बानी का एक बड़ा नल पट गया। इसके कारण जिस एयर कंडीशन प्लांट से नगर के मकान ठंडे रहते थे उसका काम बन्द गया। परती का नौसम का घट नतीजा यह निकला कि बस्तुओं में काम होना कठिन हो गया क्योंकि मकान इस तरह के बनाये गये कि गर्मियों में बिना एयर कंडीशनिंग मशीनको चले उनमें बैठकर काम करना असंभव है। अब सब लोग बस्तर और घर छोड़-छोड़कर लड़क पर बाहर निकले सब ऐसी लौढ़ हुई कि मोटर, ट्राम, बसें चलना ही बन्द न हो गया अपितु लोगों का वैचल चलना भी कठिन हो गया और घरों में ही नहीं पर बाहर भी लोगों का बम बुझने लगा। एक बार बिजली के लम्बे चलाने बानों ने हड़ताल कर ली। बीतों-बचतों और लेकड़ों मजिन की इमारतों पर चढ़ना और इन पर से उतरना कठिन ही नहीं प्रसंभव हो गया। ये ही घटनाएँ तो न्यूयार्क में ही चुकी हैं। इसी प्रकार की अन्य कोई भी घटना बहाँ हो सकती है और वह घटना वहाँ के सारे जीवन को स्थित कर सकती है। यद्यपि प्राथमिक लम्बता बाने सभी नगरों के सम्बन्ध में बोड़ी-बहुत दूरी तक यह बात कही जा सकती है, पर न्यूयार्क के सम्बन्ध में जितनी दूर तक उतनी दूर तक अन्य नगरों के विषय में नहीं।

बस्तुओं के परस्पर निर्भर रहने की इस पराकाष्ठा पर इन दिनों जितने रूप से ध्यान जाता है, क्योंकि चारों ओर लड़ाई की तैयारी हो रही है जिसे बचाव की तैयारी कहा जाता है। न्यूयार्क नगर में तो बीच-बीच में हवाई हमले की कल्पना कर उसके बचने के प्रयासों को अब-साधारण की सिखाने के आयोजन होते हैं। हम लोगों के सामने भी एक इसी प्रकार का आयोजन किया गया। लड़ाई की दृष्टि से देखने पर तो न्यूयार्क नगर बहुत कमजोर मान्य होता है। चारों ओर अत्यधिक ऊँची इमारतें, जिनमें अधिकतर काँच के बड़े-बड़े बातामन हैं। अत्यन्त प्राथमिक इमारतों में तो काँच का अत्यधिक उपयोग किया जाने लगा है। बीमारों भी काँच की ओर कमरों को एक-दूसरे से अलग करने के लिए काँच में भी काँच का प्रयोग होने लगा है। फिर मकानों के अन्दर जितनी भी मुनिपाएँ हैं वे बाहर की वो बस्तुओं पर निर्भर हैं—बानों का नल और बिजली का तार। कहीं-कहीं वैचल का नल और भाव का नल

पूर्व जमी में ईष्टिक जाती। यदि पानी का तल बन्द हुआ तो बीसा कहा जा चुका है। एयर कंडीशनिंग प्लान्ट और भीने तथा हाथ बीने का पानी बन्द। एयर कंडीशनिंग प्लान्ट बन्द होते ही मकान में रहना असम्भव है क्योंकि प्रायुनिक इमारतें इस तरह बनायी जाती हैं और उनमें वातावरण इस तरह रखा जाता है जिससे एयर कंडीशनिंग प्लान्ट के चलते रहने पर ही उनमें सुविधापूर्वक रहा जा सकता है। यदि बिजली का तार कट गया तो लिफ्ट चलना असम्भव जाना जाना असम्भव व्यवहार। अब यदि लड़ाई के समय कहीं कुछ बम म्यूयार्क नगर में मूले प्रदर्शित भी गिर जायें तो वहाँ का साधारण कार्य बिलकुल बन्द हो जाने का धम है। प्रायुनिक सभ्यता के प्रायुनिकतम नगर के निवासी कितनी दूर तक कुछ चीजों पर निर्भर हो गये हैं। प्रत्येक वस्तु का अर्थिक-सै-अर्थिक उपयोग करने के कारण ही यह निर्भरता इतनी अधिक बढ़ी है और दूसरी ओर इसी उच्चोम के कारण उन्हें अत्यधिक लाभ भी हुआ है। सबसे कम खर्च में उनका ज़रूरी कार्य हो जाता है। और म्यूयार्क के बिज के इतने एक पर अब मैं विचार करने लगा कि मुझे महसूस नहीं है कि उन उपकरणों का स्मरण प्रायः जिनमें उन्होंने हर बात में स्वावलम्बन की जिज्ञासा की थी। प्रायुनिक सभ्यता में यद्यपि पूर्ण स्वावलम्बन सम्भव नहीं है तथापि म्यूयार्क-सी-सी परावलम्बता भी इष्ट नहीं।

किन्तु म्यूयार्क में जो कुछ पराकाष्ठा की पहुँचा है वह नैतिक भ्रष्टता, भौतिक वैभव सब-कुछ नैतिक। मानव का भौतिक क्षीण होने के कारण उच्च नैतिक वस्तुओं की आवश्यकता नहीं यह मेरा कहना नहीं है। हमें नैतिक विकास से डरना नहीं बूढ़ना है। हमने नैतिक विकास से डरना बन्द कर धरने देना की बहुत बढ़ी हमी की है। हमें तो इतने और बहुत सबग रहना चाहिए। भौतिक विकास मनुष्य की उन्नति के लिए नितांत आवश्यक है इसमें शक भी सम्बेह नहीं। अब तक मनुष्य का वैश्विक क्षीण है वह तक इतकी भौतिक आवश्यकताएँ हैं, नहीं तक कि जीवन ही कुछ नैतिक आवश्यकताओं पर निर्भर है। साथ कितना भी साम्प्रदायिक विकास कर लें अब तक प्राणकी अहित भौतिक जीवन नहीं मिलेगा वह तक प्राणका काम नहीं चल सकता। इसी तरह दूसरी नैतिक आवश्यकताओं के सम्बन्ध में कहा जा सकता है। यदि प्राणके बरब डीक नहीं है यदि प्राणका रहने का मकान डीक नहीं है तो प्राण डीक तरह से अपना कार्य नहीं कर सकते। इन सारे भौतिक साधनों को कम-से-कम परिश्रम में अर्थिक-सै-अर्थिक कुटाने के लिए प्राणको यंत्रों का उपयोग भी करना पड़ेगा। सम्बन्ध के उदय से ही मनुष्य ने लक्ष्य इस बात का प्रयत्न किया कि इन साधनों को कुटाने के लिए बड़े कम-से-कम धन करना पड़े। यथार्थ में इसी प्रयत्न से सभ्यता का निर्माण हुआ। भारत में एंटा न हुआ तो बात नहीं। प्रत्येक क्षेत्र में धन बचानेवाली यन्त्रों का प्रयोग हुआ है। हाँ यन्त्रीकरण के युग में भारत पराधीन का और इस

समय को भी यन्त्रीकरण हुआ वह भारत की स्वेच्छा से पूरी तीर पर नहीं हुआ। यदि भारत स्वाधीन होता तो कहीं तक धीर कितनी शीघ्रता से यन्त्रीकरण होता यह कहा नहीं जा सकता। यदि हमें सम्पत्ता का विकास करना है तो यन्त्रीकरण आवश्यक करना होगा इतने सम्येह नहीं। हाँ, हमें उसे अपनी परिस्थितियाँ देखकर करना है नये ढंग से करना है, हम मस्तिष्कों को न करते हुए करना है जिन्हें अधिकार प्राप्त करने के लिये है। विद्युत् शक्ति से ऐसा आवश्यक प्रदान किया है जिससे पाँचों में एक, स्वयं धीरे साधक वातावरण में यन्त्रीकरण हो सकता है। फिर हमें अपनी क्षमता की धीरे इच्छा रख सकना पुरा-पुरा उपयोग करते हुए यन्त्रीकरण करना है धीरे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि हमें मानव के विकास के लिए यन्त्रों का उपयोग करना है यन्त्रों के विकास के लिए मानव का नहीं। फिर केवल भौतिक विकास ही पर्याप्त नहीं है। प्रश्न यह है कि क्या केवल भौतिक वस्तुओं से अनुभव को पूर्ण तत्वीय हो सकता है। मेरे मतानुसार नहीं। न्यूयार्क में मैंने सुना कि वहाँ के प्रमुख व्यक्ति जिन्हें सब प्रकार के भौतिक सुख उपलब्ध थे परन्तु वे न प्राप्त थे वे भी सुखी नहीं। अब मैं न्यूयार्क के सामाजिक पुस्तकालय को देखने गया तब मुझे मालूम हुआ कि भारत के वैदिक दर्शन का वहाँ न जाने कितने लोग बड़े चाव से अध्ययन करते हैं। धीरे अब मैंने यह सुना तब मुझे मालूम हुआ कि स्वामी विवेकानन्द धीरे स्वाधीनता के अमेरिका में इतना धारण क्यों हुआ था, आज भी अमेरिका वाले विविध प्रकार के भाषणों को विशेषकर धार्मिक भाषणों को, सुनने के लिए क्यों इतने उत्सुक रहते हैं धीरे जिस न्यूयार्क में प्राविश्विकता धरम बीना को पढ़ें सुकी है वहाँ प्राध्यापिकाओं को भी कितनी अधिक आवाजधता है।

न्यूयार्क ऐसा बंधनमाली नगर रहते हुए भी अभी वहाँ नवदूरों की बात (सम्पत्) योज्य है। हमने इन्हें भी देखा। यद्यपि इन जालों का हमारे देशों की जालों से मुकाबला नहीं हो सकता, परन्तु जाल तो जाल ही है। सुना गया इन जालों में ऐसे लोग रहते हैं जो बड़े धालसी हैं धीरे को अपनी कमाई का अधिकार प्राप्त करवालोरी तथा अन्य धारण-भरे कुण्डों में जर्ज कर देते हैं। हमने इन जालों में रहनेवालों को भी देखा धीरे उन्हें न्यूयार्क की अन्य आवाजी से कुछ सुख के आश्वासन दया—बड़ी हुई हुआमते, जैसे-कुर्सें कपड़े, नये में चुर चुरते धीरे लारी शिष्टाओं में धालस्य के लक्षण। इन जालों के सम्बन्ध में हम लोगों ने धीरे भी कुछ जानकारी प्राप्त करने की शिष्टा थी, क्योंकि हमें ये स्वयं अमेरिकन सम्पत्ता के लिए एक सम्बन्धक प्रतीत हुए। जिस देश में न्यूनतम वेतन निश्चित हो धीरे यह इतना जानो हो कि ज्ञान साधारणतया सम्मानपूर्वक धीरे बहुत धारण से यह सब, वहाँ बेकारी कम-से-कम इन दिनों में कोई बहुत बड़ी समस्या न हो, वहाँ

इन बातों और इन विचित्र तथ्य से रहनेवालों की क्या आश्चर्यकता है और वे क्यों हैं ? अमेरिका की जीवन-व्यवस्था स्वतन्त्र रूप से बिना किसी रोकथाम के काय होने देने और उद्योगों पर कम-से-कम नियंत्रण बर धारित है । प्रचलित समय-समय पर कई कानून ऐसे बनाये गये हैं जिनसे थोड़ा बहुत नियंत्रण रहता है जैसे 'एन्टीट्रस्ट' कानून ।

तब मिलकर भौतिक दृष्टि से न्यूयार्क का जीवन अत्यन्त सुखी जीवन कहा जा सकता है । गरीबी अज्ञानता, बीमारी धारि का बड़ा समूल नाश हो गया है यह तो नहीं कहा जा सकता पर ये सब भौतिक कुछ वहाँ न्यून से न्यून है । कुछ लोग बहुत धनी हैं इसने जितने संसार में कहीं नहीं लोग में गरीबी बहुत कम है । अविश्वीय की धारणनी अच्छी धारणनी है । फिर भी यह कहा जाता है कि अमेरिका की सम्पत्ति का ८३ प्रतिशत १ प्रतिशत धारणियों के हाथ में है बाकी १२ प्रतिशत जनता के हाथ में केवल १७ प्रतिशत सम्पत्ति है । तप्राह में लोग पाँच दिन काम करते हैं की दिन ८ घण्टे । अतिवार और रविवार दो दिन बुरी छुट्टी रहती है और सभी तबके के लोग इन दो दिन की छुट्टियों को कुछ मनाते हैं । अतिवार और रविवार को दर्शनिय स्थानों पर मैल-से लगे रहते हैं । खूब पीठे और योष्ठियाँ होती हैं । अंती उद्योग-व्यवस्था सभी उन्नति के अक्षर बर पहुँचे हुए है । प्रति घण्टे की कम-से-कम मजदूरी ७५ सेंट बाने करीब चार रुपये कानून द्वारा नियुक्त है । जीवन-वीरल्य काफी अंका है । लोग पहुँचे-से-अहुँचे और सस्ते डंग से भी रह सकते हैं । 'घाटोमेड' नामक जाने के ऐसे रैस्टराँ है वहाँ अनेक प्रकार की चीजें सबी रहती हैं और इनमें से जो आपकी पसन्द हो घाब स्वयं उठा लें और उसके पीसे देकर उसे खा लें । वहाँ न्यूयार्क में अहुँचे-से-अहुँचे होकर है वहाँ इन घाटोमेड में पैर बरनेवालों को उतना ही खर्च पड़ता है जितना हमारे बम्बई-कलकत्ते के साधारण रैस्टराँ में जानेवालों को । जो लोग आका-हारी भोजन करना चाहते हैं उनके लिए तो घाटोमेड बड़े ही उपयोगी है । न्यूयार्क का सारा सामाजिक संरक्षण पूँजीवासी है और जित प्रकार काय पूँजीवाच हर अपह कुछ हीय दृष्टि से देखा जाता है बीता न्यूयार्क और अमेरिका में नहीं । समाजवादी या साम्यवादी अथवा समाजवाच या साम्यवाच से सहानुभूति रखनेवाले वहाँ है ही नहीं यह तो नहीं कहा जा सकता पर इनकी संख्या जितनी कम वहाँ है उतनी संसार में कदाचित् कहीं नहीं । फिर ऐसे अस्थित लुके-अिमे डंग से रहते हैं, अपने मत के प्रचार का जो उनमें साहस नहीं । बड़े-बड़े कारखानों और बस-बस हजार एकड़ के फार्मों का यह है । पूँजीवाच के वहाँ लोग मुख्य संरक्षण है जो यहाँ के सारे धार्मिक अिमे का नियन्त्रण-सा करते हैं । ये संरक्षण है—(१) अमेरिकन एसोसियेशन ऑफ़ रैन्स्युर्न्सबरर्स (२) यूनाइटेड स्टेट्स वीम्बर ऑफ़ कामर्स (३) अमेरिकन बैंक एसोसियेशन । ये तीनों यहाँ के लिम्न लिखित मुख्य उद्योगों के सम्मिलित संरक्षणों को हाथ लिये हुए हैं । वे संरक्षण हैं—कील

कंबाइन, (२) प्रायस कंबाइन, (३) कोलमाइन्स कंबाइन, (४) लेमिन्टसिटी, (५) प्राटोमोबाइन्स । पुँजीबाजी आर्थिक संयोजन में हस्तागत नहीं हो यह सम्भव नहीं । वहाँ भी हड़ताओं हुई हैं, पर बहुत कम । मजदूरों के यहाँ निम्नलिखित मुख्य संयोजन हैं—(१) अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर, (२) कापिट ऑफ इंडस्ट्रियल आरगनाइजेशन और (३) यूनाइटेड माइन वर्कर्स ऑफ अमेरिका ।

न्यूयार्क में हमने विशिष्ट रूप से जो कुछ देखा अब उसका भी कुछ विवरण उपपन्न हुआ । सबसे पहले इनने यहाँ की स्वतंत्रता की मूर्ति देखी (चित्र नं० ७६) ।

संयुक्त राष्ट्र का भवन

संयुक्त राष्ट्र के भवन के निर्माण में अनेक देशों के आर्कीटेक्टों ने सम्मिलित प्रयत्न किया । बिल लयन और जस्ताह से इन इमारत का निर्माण हुआ यह संयुक्त राष्ट्र की सफलता का स्रोतक भी है । यह इमारत ५४४ फुट ऊँची और २५७ फुट चौड़ी है । अमेरिका के सबसे बड़े नगर की अन्य इमारतों से इसकी वास्तु-कला कहीं निम्न है । इस भवन के निर्माण में विभिन्न देशों के आरु आर्कीटेक्ट एक-दूसरे के सहयोग से काम करते रहे थे ।

ठीक ही कहा गया है कि यह भवन यह कारखाना है जहाँ संसार के भावी-कर्म की रचना होती है (चित्र नं० ७७) ।

एम्पायर स्टेट बिल्डिंग

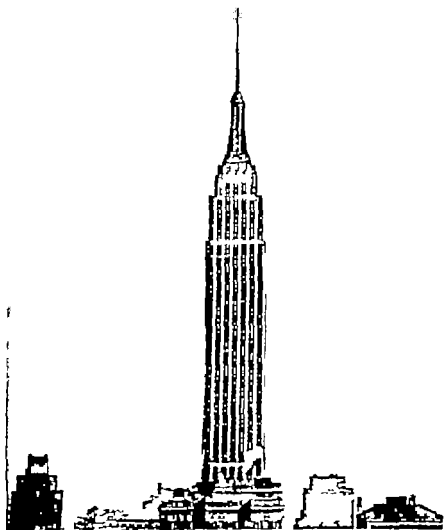
संसार की सबसे ऊँची एक तीसरी मंजिल की एम्पायर स्टेट इमारत है । इस इमारत की ऊँचाई १,४७२ फुट है । इसकी ८५वीं और १०२वीं मंजिलों में बेच-घानाएँ बनी हुई हैं । सड़क से इस इमारत को देखने पर बर्लक की एक तरह का रोनाम हो जाता है लेकिन बैचघानाओं से नगर को देखने का अनुभव ऐसा अनुभूतपूर्व होता है कि संसार में अन्यत्र कहीं भी ऐसा अनुभव होने की सम्भावना नहीं । यह इमारत १९३१ में बनकर तैयार हुई । बीसवीं शताब्दी का यह एक आश्चर्य है और अनुभव की इजीनिपरी-कुशलता का स्रोतक है ।

इस इमारत में बर्लकों की ऊपर से आने वाला एक ऐसा चक्र लगा हुआ है जो १० मिनट के भीतर मनुष्य को १,००० फुट की ऊँचाई पर पहुँचा देता है । ८५वीं मंजिल में बेचघाना पर पहुँचने के बाद, जो कि सड़क से १, ५० फुट की ऊँचाई पर बनी हुई है, बर्लक की चारों ओर तीस-तीस बालीत-बालीत मील तक ऐसे प्रवेश का दर्शन होता है जिसमें लक्ष्मण देह करोड़ व्यक्ति बसे हुए हैं । ८५वीं मंजिल से बर्लकों की एक और चक्र १०२वीं मंजिल पर पहुँचा देता है जहाँ पर बर्लक संसार में सबसे अधिक ऊँचे भवन पर पहुँच जाता है । एम्पायर स्टेट की इमारत ऐसी है जिसे एक बार देख लेने पर कोई भी व्यक्ति उसे जीवन-पर्यन्त नहीं

७६ स्वतन्त्रता की मूर्ति, न्यूयार्क



८०-८१ संयुक्त राष्ट्र
संघन दिन में धीरे-धीरे
में न्यूयार्क



८२ एम्पायर स्टेट बिल्डिंग न्यूयार्क । यह मीनार लंदी पर १२ मंजिल की अनेक बिद्याम कमरों वाली संसार की सबसे ऊँची इमारत है । अपनी पड़ोसी इमारतों से यह कितनी ऊँची है, इसका पता इस चित्र से मज आता है

मुता सक्ता (चित्र नं० ८२) ।

लीवर ब्रदर्स की इमारत

न्यूयार्क नगर की नवीनतम धीर अत्यन्त आकर्षक कार्यालय-इमारत लीवर ब्रदर्स की है। यह इमारत काँच धीर बबल इस्पात की बनी हुई है। लीवर ब्रदर्स की आकाश दुनिया के सभी भागों में पायी जाती है। इन कम्पनी के बने सामान आदि सभार के सभी देशों में काम में आते हैं। अक्स धीर साहसर्वाय सामान इसी कम्पनी के हैं।

इस इमारत को तीन अमेरिकी आर्किटेक्टों ने वर्तमान रूप दिया। वास्तु-कला के विशेषज्ञों ने इस इमारत की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इमारत का निर्माण इस प्रकार किया गया है कि कार्य-क्षमता बड़े कर्मचारियों को आराम मिले धीर उन्हें सब प्रकार की सुविधा प्राप्त हो। इस कारखाने में १२०० कर्मचारी काम करते हैं।

न्यूयार्क के अन्य पण-चुम्बी प्रासादों की तुलना में लीवर ब्रदर्स की इमारत काफी नीची है किन्तु सुन्दरता में यह अग्रणी है। इमारत में पन्नों की सहायता से डाक पहुँचाने की व्यवस्था है। हर मंजिल की डाक मशीनें यथास्थान पहुँचा देती हैं। सुविधा के अतिरिक्त इस व्यवस्था से दो-तिहाई समय की बचत हो जाती है। इस इमारत का निर्माण कर्मचारियों के लिए स्वाम का प्रयत्न करने के लिए ही हुआ है। बिनापन के लिए भी किया गया है। इमारत की सजाई बहुत-बहुत पन्नों की सहायता से घाप से घाप होती रहती है। समूची इमारत को दो व्यक्ति दो दिन के अन्दर साफ कर सकते हैं। नीचे काँच की दीवारें दिनसे पूर्व की ३५ प्रतिशत गर्मी कम हो जाती है अन्दर से रेणुमित्र जान बड़ती है। सारी इमारत एयर कण्ट्रोल है (चित्र नं० ८३) ।

सार्वजनिक पुस्तकालय

इस महान् पुस्तकालय में सबसे बड़ी बात यह है कि यहाँ १२ लाख से अधिक पुचना प्राप्त करने की (रेजेंट बुक) पुस्तकें धीर ३६,४३१ प्रकाशनों की सुविधा है जिससे सही पुचना वाले के इच्छुक व्यक्ति काम उठा सकते हैं। इस पुस्तकालय की स्थापना १८९५ में बड़े-बड़े निजी पुस्तकालय के विलय के परिणाम स्वरूप हुई थी। इसकी तीन मंजिली इमारत १९११ में २० लाख डॉलर के मूल्य पर बनी थी। सब मिलाकर पुस्तकालय के कर्मचारियों की संख्या २,६०० है। कुल पुस्तक-संख्या ४० लाख है। इसके बाचनालय में ८०० व्यक्तियों के बैठने का स्थान है।

बहुतर न्यूयार्क का कोई भी निवासी सार्वजनिक पुस्तकालय से पुस्तकें ले सकता है। पुस्तकें लेने के लिए एक कार्ड होता है। इन कार्ड को लाइब्रेरी की ६१ प्रासादों धीर उप-प्रासादों में वही भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इस

पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए किसी तरह का झुंझ नहीं लिया जाता। पुस्तकालय के लिए एक अलग इमारत ही नहीं लोगों के सैकड़ों घरों का उत्तर दिया जाता है। पुस्तकालय की दूसरी इमारत पाँचवीं एवेन्यू की दयाभीरुवीं स्ट्रीट पर बनी हुई है। कई विदेशी भाषाओं की पुस्तकें भी इसमें मौजूद हैं। इसमें संग्रहित पुस्तकालय भी है और एक छोटे लोगों का पुस्तकालय भी है।

कोलम्बिया-विश्वविद्यालय

कोलम्बिया-विश्वविद्यालय विश्व विख्यात है। विदेशी विद्यार्थी अमेरिका में सबसे अधिक इसी विद्यालय में अध्ययन करते हैं। इसकी संख्या १००० से अधिक ही रहती है। अनुमान है कि २५ विभिन्न देशों के विद्यार्थी यहाँ आकर विद्याभ्यास करते हैं।

इस विश्वविद्यालय का इतिहास २०० वर्ष प्राचीन है। पहले यह एक कानून के कक्ष में था। १८६७ के बाद यह लगभग ७० इमारतों में फैल गया। इस समय कोलम्बिया-विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या २५ ०० से अधिक है। अमेरिकी जीवन पर इस विद्यालय का गहरा प्रभाव है। इजरायल, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, आदि देशों के विद्यार्थी यहाँ आकर विद्याभ्यास करते हैं। भारत के अनेक विद्यार्थी यहाँ आकर विद्याभ्यास करते हैं। भारत के अनेक विद्यार्थी यहाँ आकर विद्याभ्यास करते हैं। भारत के अनेक विद्यार्थी यहाँ आकर विद्याभ्यास करते हैं। भारत के अनेक विद्यार्थी यहाँ आकर विद्याभ्यास करते हैं।

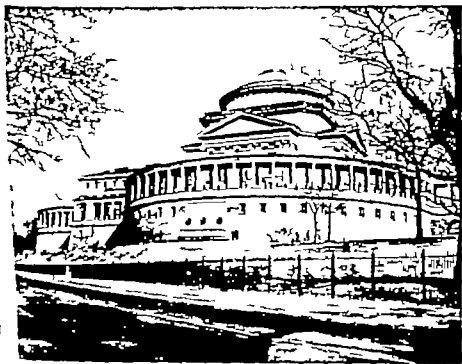
राक फेडरल सेटर

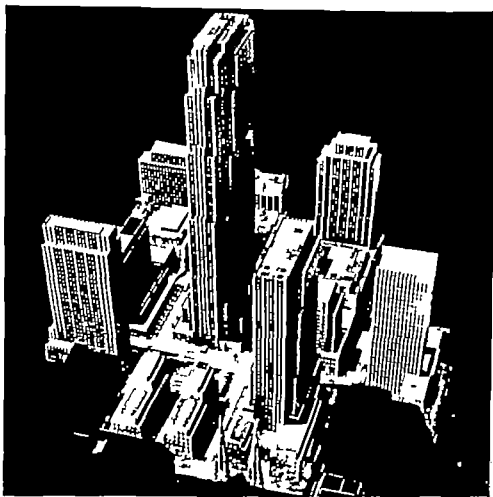
राक फेडरल सेटर के १५ मध्यमशुल्की प्रासादों से एक पुरा नगर बन गया है। यह नगर इस प्रकार विभक्त है—कार्यालय बॉय, बाजार बॉय, प्रशिक्षण बॉय और रेडियो एवं मनोरंजन बॉय। राक फेडरल सेटर के पश्चिमी भाग में रेडियो-व्यवस्था का केन्द्रिकरण है। यहाँ घाट, के घो. की इमारत है। रेडियो-सिटी का संगीत भवन (१), थियेटर-बॉय है और नेशनल डाइकॉस्टिंग कम्पनी की इमारत घाट, ती ए इमारत का विस्तार बॉय है। अठ्ठ्ठा रेडियो सिटी बॉय का प्रयोग समूचे राक फेडरल सेटर के लिए किया जाता है पर यह मूल है। रेडियो-सिटी राक फेडरल सेटर के पश्चिमी बॉय की ही कहते हैं।

राक फेडरल सेटर की वास्तु कला आत्यन्त सराहनीय है। उसमें जितने विभ, नृति-कला और वास्तु-कला आदि का मिश्रण है। घाट, ती ए अर्थात् रेडियो कॉर्पो-रेशन बॉय अमेरिका की इमारत भी बड़ी आकर्षक है।

यहाँ पर राक फेडरल काउन्सिल की भी कुछ चर्चा करना अनुपयुक्त न

८३ सीपर डवर्न की इमारत





बस, वे खिलाने नहीं हैं वे हैं राक केंसर सेटर की १५ इमारतों
का समूह । बीच की ऊंची इमारत ९० मंजिल की है

होया। राक फ़ैलर फ़ाउण्डेशन की स्थापना १९१३ में हुई थी। इसका उद्देश्य संसार में मानव-कल्याण को प्रोत्साहन देना है। पिछले ४० वर्ष के समय में इस संस्था ने ४७३ करोड़ डॉलर के लगभग की सहायताएँ और अनुदान दिये हैं। यह संस्था भौतिक, बौद्धिक कलात्मक, व्यावहारिक और धारोप्य सम्बन्धी कामों के लिए सहायता देती है। इस फ़ाउण्डेशन की स्थापना से पहले इसके संस्थापक जॉन राक फ़ैलर ने तीन लोक-कार्य प्रारम्भ किये थे। इनके अनुभव से उनकी यह आशावात्त हो गया कि समाज-कल्याण के लिए धार्मिक संस्थाओं की स्थापना आवश्यक है जो सत्कार के लिए अनुदान दे लें। प्रारम्भ में राक फ़ैलर फ़ाउण्डेशन की स्थापना २४ करोड़ १० लाख डॉलर से हुई थी।

दूसरे महायुद्ध का इस संस्था पर विशेष प्रभाव हुआ। परिणाम यह हुआ कि १९२१-२२ में संस्था के कार्यक्रम में समयानुकूल परिवर्तन कर दिये गये (विश्व नं० ६४)।

कार्नेगी नियमि

अमेरिका की एक और महत्त्वपूर्ण नगर्षि संस्था है कार्नेगी नियमि। कार्नेगी अन्तर्राष्ट्रीय छात्रनियमि की स्थापना १९१० में अमेरिका के एक प्रतिष्ठित इत्यात्त उद्योग पति एंड्रयू कार्नेगी की १ करोड़ डॉलर की भेंट के अन्तस्वरूप की गयी थी। संस्था का उद्देश्य कार्नेगी की इच्छानुसार छात्रि-कार्य को प्रोत्साहन देना है। कार्नेगी का सिद्धान्त यह था कि मुझ का क्षीप्रतिष्ठीप्र सम्पत्तन किया जाय जो कि हमारी सम्पत्ता पर सबसे बड़ा भन्ना है। १९४८ तक इसके तीन विभाग थे— शिक्षा विभाग, धर्मप्रारम्भ और इतिहास-विभाग तथा अन्तर्राष्ट्रीय विधि-विभाग। पहले दो स्पूर्वार्क में थे और विधि-विभाग वाणिज्यक्रम में था। १९४८ में विभाग-व्यवस्था समाप्त करके स्पूर्वार्क में केन्द्रीय व्यवस्था कायम की गयी। कुछ ही समय पहले यह संस्था स्पूर्वार्क ग्रहर की एक नवीनतम इंय की १२ मजिनी इमारत में बनी गयी है। अब कार्नेगी फ़ाउण्डेशन संयुक्त राज्य की विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से कार्य करता है। संयुक्त राज्य की धार्मिक और सामाजिक परिवर्त की यह परामर्शदात्री संस्था है। अमेरिका के प्रेसीडेन्ट आइजनहावर और विदेश मंत्री की उनीत शोनी ही इसके इस्टी बोर्ड के सदस्य रह चुके हैं।

वहाँ के अजायबघर

स्पूर्वार्क में बबानीत अजायबघर है। इसने अधिक अजायबघर करावित् ही संसार के किसी अन्य नगर में होये। इन ४४ अजायबघरों के अतिरिक्त गैर सरकारी संस्थाओं और कुछ विजिष्ट व्यक्तियों के अजायबघर अस्तय हैं। कुछ महत्त्व-पूर्ण अजायबघरों के नाम इस प्रकार हैं—अमेरिकन एंकेडेमी ऑफ़ आर्ट्स एन्ड लैटर्स अमेरिकन क्याप्टिकल सोसायटी अमेरिकन स्फूडियम ऑफ़ नेचुरल हिस्ट्री, बुकनिंग स्फूडियम, बुकनिंग बिलदेर/स स्फूडियम चीन सैकल आर्ब नैतरीज स्फूडियम

संयुक्त राष्ट्र की स्थापना २४ अक्टूबर १९४५ को हुई। तब से यह दिन प्रति-
वर्ष संयुक्त राष्ट्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।

संयुक्त राष्ट्र के सिद्धांत निम्नलिखित हैं—

(१) संस्था के सभी सदस्य समान हैं।

(२) संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्य-पत्र के अर्थात् राष्ट्र बनने के लक्ष्य ईमानदारी से
पूरे करें।

(३) अन्तर्राष्ट्रीय जगड़े धानि के साथ निपटारने वाले।

(४) संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों के विरुद्ध न तो किसी तरह के बल प्रयोग की
बननी ही जाय और न बल प्रयोग किया ही जाय।

(५) उद्देश्य-पत्र के अर्थात् संयुक्त राष्ट्र को कार्यवाही करे तबस्य वेस उसमें
बरसक सहायता है।

(६) संयुक्त राष्ट्र किसी भी राष्ट्र के धरमू नामसे में बल न है किन्तु
यहाँ धानि को बल ही बहाँ यह व्यवस्था स्वीकार नहीं की जायगी।

संयुक्त राष्ट्र के लिए दुँबी सभी राष्ट्र जुटाते हैं। इस सम्बन्ध में निरुंन
अनरत घतेन्वली प्रति बर्ष करती है।

संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों के नाम इस प्रकार हैं—

अल्बानिया, अर्जेंटीना, आस्ट्रिया बेल्जियम बोस्निया, ब्राजील,
बाङ्गलादेश बर्मा, कॅनेडा, फ्रांस आइना कोलम्बिया कोस्टा राइका क्यूबा, चॅकोस्लो
वाकिया डॅनमार्क डोमिनिक रिपब्लिक इण्डोनेशिया विष इजिप्टोविया, फ्रांस युना
गाम्बिया हंगरी, होङ्गकाङ्ग आइसलैण्ड, इसरायल सँवतान भारत इंडोनेशिया, ईरान,
ईराक, लाइबीरिया, लक्सेम्बर्ग मेक्सिको, नीदरलैण्ड, न्यूजीलैण्ड, नाइजरिया, नार्वे,
पाकिस्तान पनामा परमू वेस्ट, फिलीपीन्स पोलेण्ड, सॅलवॅडोर लाइबी अरब स्वीडन
स्वीट्स, फ्राईलैण्ड, इरॉ, यूक्रेन इजिप्ट अर्जीका युनियन बल, ब्रिटेन, अरबीका
अरमू बेनेजुला युनाय और यूरोपेलिया।

संयुक्त राष्ट्र का ऋडा मोना है जिस पर सकेर म्मोड का बिज संकित रहना
है। इस बिज में बलर प्रुष दिखायी देता है और म्मोड के दोनों ओर बसियों की दो
बाहुँ-सी बिरी रहती है।

संयुक्त राष्ट्र के प्रमुख संघ इस प्रकार हैं—

(१) अनरल घतेन्वली अर्थात् महामन्त्रा

(२) लिक्वोरिटी कोसिल अर्थात् सुरक्षा परिषद्

(३) इकोनोमिक एण्ड सोशल कोसिल अर्थात् आर्थिक और सामाजिक
परिषद्।

- (४) इन्डोसिया बौद्ध धर्मार्थ संरक्षा परिषद्
- (५) इंडरनेशनल बोर्ड ऑफ़ क्लिबल धर्मार्थ अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय; और
- (६) अक्सर राज्य का प्रधान कार्यालय को म्यूचार्क में है।

संयुक्त राज्य की महासभा संयुक्त राज्य की प्रमुख संस्था है। इसमें सभी सदस्य देशों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं। किसी भी देश के अर्थिक से-अर्थिक प्रतिनिधियों की संख्या २ हो सकती है। लेकिन प्रत्येक देश को एक ही वोट प्राप्त है। महासभा की कार्य में एक बार पानी छिड़कने में बँटक होती है। इसके अतिरिक्त उसका विशेष अधिकार भी बताया जा सकता है। महत्वपूर्ण मामलों पर निर्णय दो-तिहाई बहुमत से होते हैं। साधारण महत्व के मामलों पर केवल सामान्य बहुमत ही पर्याप्त होता है।

सुरक्षा परिषद् के ग्यारह सदस्य हैं जिनमें से ५ स्थायी हैं और शेष ६ महासभा द्वारा नियुक्त किये जाते हैं। इसका काम शान्ति और सुरक्षा बनाये रखना है। परिषद् ऐसे सभी मामलों को जांच करती है जिससे अन्तर्राष्ट्रीय संधि होने की आशा हो।

सुरक्षा परिषद् का अधिकार सारे बंध रहता है और दो सप्ताह में इसकी एक बैठक हो जाती है। सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्य देशों के नाम इस प्रकार हैं— चीन, अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रान्स और रूस।

आर्थिक और सामाजिक परिषद् में अक्सर सदस्य हैं। इसका उद्देश्य है अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक और सामाजिक समस्याओं को सुलभाना।

सुरक्षा परिषद् ने उन प्रदेशों के विकास का काम अपने ऊपर ले रखा है जो पहले राष्ट्रकष धर्मार्थ नीम ऑफ़ मेचेंन क संरक्षण में बंधनवादी द्वितीय म्यूचार्क के अन्तर्गत धर्मार्थ से प्राप्त किये गये।

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय हैम में है। इसमें पन्द्रह न्याय होते हैं जिनमें महासभा और सुरक्षा परिषद् में स्वतंत्र महान द्वारा चुना जाता है।

संयुक्त राज्य की विविध संस्थाएँ इस प्रकार हैं—

- (१) अन्तर्राष्ट्रीय धन संस्था
- (२) अन्तर्-अर्थिक दृष्टि संस्था;
- (३) विश्व विज्ञान और संस्कृति संस्था
- (४) अन्तर्राष्ट्रीय विमान संचालन संस्था
- (५) विश्व बैंक
- (६) अन्तर्राष्ट्रीय महा कोष
- (७) विश्व स्वास्थ्य संस्था;

- (८) अन्तर्राष्ट्रीय डाक संघ
- (९) अन्तर्राष्ट्रीय सुदूर संचार संघ;
- (१०) अन्तर्राष्ट्रीय शारदाधी संस्था
- (११) विश्व बेवधमता;
- (१२) अन्तर राज्य नौ-परिष्ठा परामर्श संस्था
- (१३) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संस्था ।

न्यूयार्क अमेरिकन पूंजी का सबसे बड़ा केन्द्र है। अमेरिका के सबसे प्रतिष्ठित बैंक उद्योग और व्यापार के अधिकांश कार्यालय न्यूयार्क के बाल स्ट्रीट और उसके पासपास के हिस्से में स्थित हैं। न्यूयार्क में जिन लोगों से बैंक हुई उनमें कई राष्ट्र के लोग थे जिनका जीवन निम्न निम्न क्षेत्रों से सम्बद्ध था। अमेरिकन पूंजी के प्रतिनिधियों से बैंक करने का मेरा कोई इरादा नहीं था किन्तु जगमोहनदास को अमेरिकन पूंजी के भारत में उपयोग से कुछ बिलबस्वी थी और इसीलिए उन्होंने प्रतिष्ठित अमेरिकन बैंकों के कुछ प्रतिनिधियों से मुसाकत की। बाल स्ट्रीट पर ही अधिकांश बैंकों के कार्यालय हैं। अल्पविक्रम बैंक और मध्य इमारतों में ये स्थित हैं। कुछ इमारतों तो पचास से भी अधिक मंजिलों की हैं। प्रत्येक इमारत एक छोटा मोटा मुहल्ला मान्य होती है। उसमें नीचे की मंजिलमें कुछ दुकानें भी रहती हैं, जिनमें प्रावश्यकता का धारा सामान मिलता है। अनेकों लिफ्ट रहते हैं। कुछ विभाग करने की जगह सार्वजनिक ईली-फोन टायलेंट-रूम इत्यादि कमों की व्यवस्था रहती है। इन इमारतों से अमेरिका के व्यापारिक और औद्योगिक जीवन का सूत्र संचालन होता है। इन इमारतों के एयर कंडीशनिंग मध्य और सबसे हृदय कमरों में अमेरिकन जीवन के अधिकांश परिवारों और व्यापारिक कार्यों की योजना बनती है और उसे कार्य रूप में परिवर्तित करने के प्रयत्न का निरीक्षण होता है। यहाँ जो लोग कार्य करते हैं अधिकांशतः उनमें भावनाओं का प्रभाव रहता है यदि प्रभाव न भी रहता ही तो कम-से-कम भावनाएँ उनके कार्यों की प्रभावित नहीं करतीं। प्रायः यदि पूंजी लगाने का प्रश्न घायब तो उसे यहाँ केवल उसकी लागत-हानि की दृष्टि से देखा जायगा। सर्वप्रथम तो उसे संयुक्त राष्ट्र में लगाने का प्रयत्न होगा फिर यदि किन्हीं कारणों से संयुक्त राष्ट्र में लगाना सम्भव न हो तो फिर बुनियाद के किसी ऐसे देश में वह लगायी जायगी जहाँ से वह अधिक-से-अधिक कमाई कर सके। कबल इसी दृष्टिकोण से पूंजी लगायी जाती है और किसी भी दृष्टिकोण से नहीं। यहाँ के लोगों का यह विश्वास है संसार की धार्मिक उन्नति निम्न उद्योग के द्वारा ही हो सकती है। निम्न उद्योगों पर किसी राष्ट्र का कोई नियंत्रण नहीं होना चाहिये। नियंत्रण से उद्योगों की कुशलता में अन्तर पड़ जाता है। किसी भी उद्योग की शीक सफलता और जनताधारण के लिए उतका



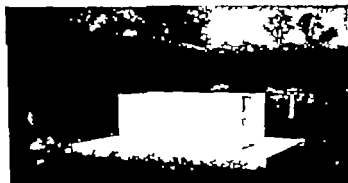
८१ म्युसाक की वाचिपटन बाइमार । मूर्ति के पास सेक्टर और बनस्पामबाम लड़े हें



८७ म्युपार्क में इन्वैस्ट यादगार में इन्वैस्ट की मूर्ति क सामने सेक्टर



८८ इन्वैस्ट यादगार का बाहरी दृश्य



- (७) अन्तर्राष्ट्रीय डाक संघ;
- (८) अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा संघार संघ;
- (१०) अन्तर्राष्ट्रीय शारदाओं संघ
- (११) विश्व शोधसंस्था
- (१२) अन्तर राज्य नौ-परिषद् परामर्श संस्था
- (१३) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संस्था ।

न्यूयार्क अमेरिकन पूंजी का सबसे बड़ा केन्द्र है। अमेरिका के सबसे प्रसिद्ध बैंक, उद्योग और व्यापार के अधिकतम कार्यालय न्यूयार्क के बाल स्ट्रीट और उसके आसपास के हिस्से में स्थित हैं। न्यूयार्क में जिन लोगों से भेद हुई उनमें कई तरह के लोग थे जिनका जीवन जिन मिन क्षेत्रों से सम्बद्ध था। अमेरिकन पूंजी के प्रतिनिधियों से भेद करने का मेरा कोई इरादा नहीं था किन्तु अगमोहनदास को अमेरिकन पूंजी के भारत में उपयोग से कुछ विलम्बस्वी की ओर इतीनिष्ट उन्होंने प्रसिद्ध अमेरिकन बैंकों के कुछ प्रतिनिधियों से मुसाफ़ात की। बाल स्ट्रीट पर ही अधिकतम बैंकों के कार्यालय हैं। शायदिक ज़ेबी और अन्य इमारतों में वे स्थित हैं। कुछ इमारतें तो बचाव से ही शक्ति मन्त्रियों की हैं। प्रत्येक इमारत एक छोटा-मोटा मुहल्ला मालम होती है। उसमें नीचे की मन्त्रियों में कुछ दुकानें भी रहती हैं, जिनमें प्राथमिकता का तारा सामान मिलता है। अनेकों निपट रहते हैं। कुछ बिघाम करने की अथवा सार्वजनिक टैली-फोन, टायमेट-रूम इत्यादि सभी की व्यवस्था रहती है। इन इमारतों से अमेरिका के व्यापारिक और औद्योगिक जीवन का लुप्त संवाहन होता है। इन इमारतों के एकर केंद्रीयतम जगह और सबे हुए कमरों में अमेरिकन जीवन के अधिकतम उत्पादन और व्यापारिक कार्यों की योजना बनती है और उसे कार्य रूप में परिवर्तित करने के प्रयत्न का निरीक्षण होता है। यहाँ जो लोग कार्य करते हैं अधिकतम उनमें भावनाओं का अभाव रहता है यदि अभाव न भी रहता हो तो कम-से-कम भावनाएँ उनके कार्यों को प्रभावित नहीं करतीं। प्रायः यदि पूंजी लगाने का प्रश्न आसपास तो उते यहाँ केवल उतनी साम-हानि की दृष्टि से देखा जायगा। सबशयम तो उते संयुक्त राष्ट्र में लगाने का प्रयत्न होगा किन्तु यदि किन्हीं कारणों से संयुक्त राष्ट्र में लगाना सम्भव न हो तो फिर दुनियाँ के किसी एते देश में वह लगायी जायगी जहाँ से वह अधिक-से-अधिक कमाई कर सके। केवल इति दृष्टिकोण से पूंजी लगायी जाती है और किसी भी दृष्टिकोण से नहीं। यहाँ के लोगों का यह विश्वास है संसार की शक्ति उन्नति निम्न उद्योग के द्वारा ही हो सकती है। निम्न उद्योगों पर किसी तरह का कोई नियंत्रण नहीं होना चाहिये। नियंत्रण से उद्योगों को मुक्तता में अन्तर पड़ जाता है। किसी भी उद्योग की ठीक सफलता और अनसाधारण के लिए उतका

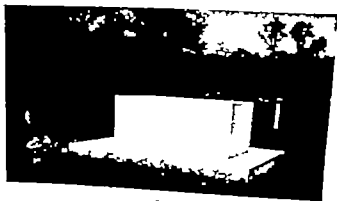


८१. म्युबारक की वाशिंगटन यादगार । मूर्ति के पास लेखक श्रीर जनसामान्यसह खड़े हैं

८७. म्युबारक में स्मरबैस्ट यादगार में स्मरबैस्ट की मूर्ति के सामन लेखक



८८. स्मरबैस्ट यादगार का बाहरी दृश्य



८९. स्मरबैस्ट का स्त



२. म्यूजक में सार्वजनिक पुस्तकालय का रीतिम क्म



२१. वासिगलन के कसिग-पुस्तकालय का रीतिम क्म

तज्जवा उपयोग तभी हो सकता है जब घनेक उद्योगों की एक ही दिशा में होड़ हो । बिना होड़ के उद्योगों में कुशलता नहीं पाती और बिना कुशलता के जनसाधारण की अच्छी सेवा नहीं हो सकती । अमेरिका का औद्योगिक जीवन ईइस्टियस रिबोस्पुअन के प्रारम्भिक सिद्धान्तों को अब तक प्रदान महत्त्व देता है और जम्हों की निति पर आधारित है । आइमस्मिथ ने जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन 'वेल्थ ऑफ नेशन्स' में किया था । अमेरिका के उच्चकोटि के उद्योगपति उन सिद्धान्तों को अब तक मानते हैं । यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में संसदसर स्टेट के सिद्धान्तों की अमरिकन व्यवस्था में कुछ थोड़ी-बहुत आन्वयता मिली है किन्तु यह आन्वयता आचारभूत सिद्धान्तों के रूप में न होकर केवल जनसाधारण को कुछ सहूलियतें देने के बुद्धिकोरु से मिली है ।

न्यूपार्स से रजाना होने के वहुसे हमने न्यूपार्स की वाशिपदन की और कन्वर्सेट की आदवार में आकर उन दोनों महापुरुषों को नमन किया (चित्र सं० ८५ से ८६) ।

अमेरिका उद्धारक के नगर में

हम सोम ७ अक्टूबर को हवाई जहाज से वाशिंगटन पहुँचे। वाशिंगटन में हमारे ठहरने का प्रबन्ध भारतीय दूतावास में एक मध्यम श्रेणी के परम्पु सम्माननीय चेतनचन्द्र कामरु होटल में किया था। यद्यपि यह होटल बहुत आनन्दार नहीं था, परन्तु हर प्रकार से सुविधाजनक था और भारत से आनेवाले सभी प्रायः यहाँ ठहरा करते हैं।

होटल में सामान धारि जमा भारतीय दूतावास के श्री प्रेम कपूर की सलाह से हमने वाशिंगटन का कार्यक्रम तैयार किया। वाशिंगटन के दर्शनीय स्थानों की देखने के तथा यहाँ के कुछ प्रतिष्ठित लोगों से मिलने के प्रतिरिक्त मुझे यहाँ एक तो यहाँ के हावर्ड विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति पर भाषण देना था दूसरे दो आकाशवाणी की संस्थाओं में से एक में अमेरिका में मैं क्या देना इस पर तथा दूसरी में महात्मा गाँधी के ऊपर इस प्रकार दो मुलाकातें देनी थीं। कार्यक्रम को पूरा निश्चित रूप देने के लिए दूसरे दिन प्रातःकाल भारतीय दूतावास में जा यहाँ कुछ अन्य पदाधिकारियों से मिलने का निर्णय हुआ।

वाशिंगटन में भारतीय दूतावास की दो इमारतें हैं—एक जहाँ दूतावास का दफ्तर है और दूसरी जहाँ भारत के राजदूत रहते हैं। अमेरिका के नये भारतीय राजदूत श्री पणनबिहारी मेहता हाल ही में अमेरिका आये थे पर मैक्सिको गये हुए थे। दूसरे दिन प्रातःकाल भारतीय दूतावास के दफ्तर में मेरी मेहता के राजदूत श्री ब्रह्मचरिंह जी तथा दफ्तर के कुछ अन्य पदाधिकारों श्री पृथ्वीसिंह श्री रतनोबा, श्री० सुन्दरन् धारि से मिली। मुझे तो वाशिंगटन के भारतीय दूतावास के अधिकारों में ही प्रबन्ध और करने करने विषयों को सभी भाँति समझनेवाले व्यक्ति जान उन्हें। श्री ब्रह्मचरिंह जी के बचपन में आये तो भारतीय सरकार के पास इन्ने-दिने ही रहे। यहाँ से

के कार्यक्रम की निश्चित रूप दिया गया। इस कार्यक्रम में

। एक भीज यहाँ की सरकार के वीर्यिक विभाज

गारा दिया जानेवाला एक जोर घोर भी बचनबिहारी नेहुता द्वारा ही जानेवाली एक राय-पार्सी भी सम्मिलित की गयी। श्री मेहुता यहाँ ता० १० को लौटने वाले थे घोर उस पार्सी का प्रबन्ध बहुते से ही कर गये थे। इसका कारण कदाचित् यह भी था कि मेहुता के विता श्री मन्सुमाई साबलदास से मेरे ताऊ बन्सलदास जी का बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध था घोर श्री मेहुता की घोर मेरी भी घनिष्ठता बहुत कम न थी। जब हमारे कार्यक्रम को निश्चित रूप दिया गया तब हमें मालूम हो गया कि हमारा भी विचार वाशिगटन में चार दिन ठहरने का था बहु समय यहाँ के लिए पर्याप्त नहीं है घोर हमें यहाँ कम-से-कम एक सप्ताह ठहरना हीमा था हमने वाशिगटन से १४ अक्टूबर की रातना निश्चित किया।

ता० ५ के तीबरे पहर से ही हमारा वाशिगटन का कार्यक्रम धारम्भ हो गया।

वाशिगटन घोर न्यूयार्क में घटना ही घन्तर है जितना कलकत्ता, बम्बई घोर नयी दिल्ली में। चूँकि हम अभी १५ दिन न्यूयार्क के महान् हो-हस्त में रहकर आये थे इसलिये हमें वाशिगटन घोर न्यूयार्क का यह घन्तर बहुत घबिह जान पड़ा न्यूयार्क की घरेला वाशिगटन कितना घबिह घान्त था। छिठ न्यूयार्क के घनन बुन्डी घासाओं। लक्ष्म ऊँके ऊँके न यहाँ मकान थे घोर न बंसी सड़के। कुछ मुन्बर घोर अल्प सरकारी इमारतें अमेरिका के राष्ट्र-कर्मो नेताओं की यादवार घादि ही यहाँ की सब से घाकर्षक वस्तुएं हैं। वाशिगटन का रूप घोर यहाँ का वायुमंडल नयी दिल्ली से बहुत-बहुत मिलता है।

हमने यहाँ क्या-क्या देखा ?

- (१) अमेरिका की धारा-सभा के भवन
- (२) कुछ सरकारी वस्तु
- (३) काँच स लाम्बेरी
- (४) प्लाइट हाउस यहाँ अमेरिका के राष्ट्रपति रहते हैं
- (५) वाशिगटन का स्मारक
- (६) ब्राह्मीम लिफन का स्मारक
- (७) बेन्डरसन का स्मारक घोर
- (८) एक घनजाले सैबिक की समाधि।

उमें से कुछ का विवरण इस प्रकार है—

(१) अमेरिका के संसद्-भवन का नाम कैपीटल है। इस भवन के निर्माण के सम्बन्ध में सर्वोत्तम नमूना संभार करने वाले के लिए अमेरिकन संसद् घर्षात् काँचक ने प्रतिनोयिता की थी। यह प्रतिनोयिता डाक्टर बिलियन पोर्नटन ने कीती। १७६३

में बहू इमारत बननी आरम्भ हुई कभी थी। नवम्बर १९०० को इस इमारत के उत्तरी भाग में अमेरिका की संसद की पहली सभा हुई (विम नं० २२)।

यह इमारत ७५ फुट लम्बी और ३०२ फुट चौड़ी है। इमारत लम्बे तीन एकड़ भूमी पर बनी हुई है। इमारत घोर मंदारों का इलाका ५० × एकड़ है।

संसद भवन की सुन्दर लोहे व इस्पात की बनी हुई है और ऊपर से लकड़ बोल ही कभी है। सुन्दर की ऊँचाई २५२ फुट है। इसके ऊपर १६ फुट ऊँची स्वतन्त्रता-देवी की मूर्ति बनी हुई है।

संसद भवन घण्टा भण्ड है।

घण्टिका की चार-सजा का हाल संसार में लभते बड़ा है। इसकी लम्बाई १३६ फुट चौड़ाई २३ फुट और ऊँचाई ३० फुट है। इसकी नीचे ४ जुलाई १८२१ की प्रेसीडेंट क्लिफोर्ड ने रक्की की घोर १६ दिसम्बर १८६७ को बहू तैयार हो गयी थी। घण्टा के बैठने का घासन संगमरमर का बना है। इसके एक घोर बाहिरीयत का बिच टंगा हुआ है और दूसरी घोर सजापत का। घण्टा के घासन के सामने प्रतिनिधियों की कुर्तियाँ हैं जिन के सामने बैठे नहीं हैं।

संसेट का मया हाल १८२६ में बना। संसेट का घण्टा उपराष्ट्रपति होता है। यह हाल ११३ फुट लम्बा ३ फुट चौड़ा और ३६ फुट ऊँचा है।

(२) सुप्रीम कोर्ट का इफतर—रोम के ग्याय-जान्वर की तरह ही अमेरिका का सुप्रीम कोर्ट की इमारत है। यह इमारत कंठीटल के मंदार के सामने ही बनी हुई है। इसे १८३६ में बुरा किया गया है। इसकी लम्बाई ३८३ फुट और चौड़ाई ३०४ फुट है। इमारत प्लासी डेम की कला पर बनी हुई है। अमेरिका के राष्ट्रपति कोर्ट की सभा और अनुमति से सुप्रीम कोर्ट के भी ग्यायाधीश एक मुख्य ग्यायाधीश और साठ संयुक्त ग्यायाधीश नियुक्त करते हैं। ये प्राबोधन इन पर्वों पर काम करते रहते हैं।

अमेरिका के ग्याय विभाग की इमारत को जिसे हमने देखा फेंडरल ब्यूरो ऑफ इन्वैस्टिगेशन कहा जाता है। यहाँ पर लोगों की संयुक्तियों के विधान प्राहि पृथक्त्वाने की घोर अचराधियों का टूटने के लिए प्रभ्य कुशल उपायों की शिक्षा हो जाती है। यहाँ पर एक प्रयोगशाला भी है।

बिदेधी विभाग की इमारत इन्कीतबी स्ट्रिट घोर बर्जोनिया एवेन्यू पर बनी हुई है। इसके निर्माण पर २३ करोड़ डॉलर खर्च हुआ था। पहले इसे मूड विभाग के अधिकारियों का निवास-स्थान बनाने के उद्देश से बनाया गया था। यह इमारत अमेरिका की राजनैतिक हस्तचाल का केन्द्र है। संसार में होनेवाली घनेक घटनाओं को अमेरिका के बिदेधी मन्त्री घोर उनके कर्मचारी यहाँ बैठे हुए बर्जावित करते हैं।

अमेरिका के वित्त विभाग की इमारत चार मंजिली है। इसमें यूनानी शैली के स्तम्भ हैं। इमारत के उत्तरी घोर एलबर्ट विलाडिन की मूर्ति बनी हुई है। कॅपीटल घोर प्लाइव हाउस को छोड़ बाघियरन की यह सबसे प्राचीन इमारत है।

(३) अमेरिकी संसद् की लाइब्रेरी संतार के सर्वोत्तम पुस्तकालयों में से है। यहाँ ०५ लाख से अधिक पुस्तकें संग्रहित हैं और एक करोड़ बस लाख से अधिक हस्त लेख हैं। अमेरिकी इसे अपनी राष्ट्रीय लाइब्रेरी मानते हैं।

संसद् लाइब्रेरी की स्थापना १८०० में हुई थी। १८१२ के प्रतिगंड में लाइब्रेरी लक्ष्मण स्वच्छा हो बची थी। १८५१ में फिर प्रायः लक्ष्मण से इस समय की कुल १५,००० पुस्तकों में से दो तिहाई बनकर राख हो गयीं।

नयी संसद् लाइब्रेरी की इमारत १८८६ में बननी आरम्भ हुई और १८९७ में तैयार हुई। इसके निर्माण-कार्य पर एक करोड़ घांसी लाख डालर से अधिक खर्च हुआ।

(४) अमेरिका के राष्ट्रपति का निवास-स्थान प्लाइव हाउस अमेरिका की संसद् की इमारत के उत्तर-पश्चिम में कोई डेढ़ मील दूर है। यहाँ का प्राकृतिक दृश्य बड़ा मनोहर है और लक्ष्मण घांसी प्रकार के बृक्षों से सुशोभित है। प्लाइव हाउस का डिजाइन अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज जेम्सोड ने तैयार करवाया था।

राष्ट्रपति भवन की लम्बाई १७० फुट है और चौड़ाई ८५ फुट है। यह एक दो मंजिली इमारत है। कहा जाता है कि इस इमारत के निर्माण का पत्थर राष्ट्रपति बाघियरन ने रखा था, किन्तु इतिहास के अनुसार बाघियरन उस समय प्रायः कारों में व्यस्त थे। १८०० में इस भवन में निवास करनेवाले सबसे पहले राष्ट्रपति श्री जॉन एडम्स थे। उसके बाद से ही यह भवन बराबर ही अमेरिका के राष्ट्रपतियों का निवास-स्थान रहता बना आया है।

धनुमान है कि इस इमारत को देखने के लिए प्रतिवर्ष लगभग दस लाख दर्शक पहुँचते हैं।

इस भवन में ईस्ट रूम नामक हॉल सबसे बड़ा है। इसकी लम्बाई ८७॥ फुट और चौड़ाई ४५ फुट है। छत पर पत्तार हो रहा था। उत्तरी चौड़ाई २२ फुट है।

बलपान-बहु राष्ट्रपति भवन का दूसरे नम्बर का सबसे बड़ा कमरा है।

राष्ट्रपति के बैठ करने का नीला कमरा सारे प्लाइव हाउस में सबसे अधिक सुन्दर है। यह ध्वजाकार बना हुआ है। यहाँ पर अतिरिक्त नीले रंग के कपड़े और चर्च प्रायः का प्रयोग हुआ है।

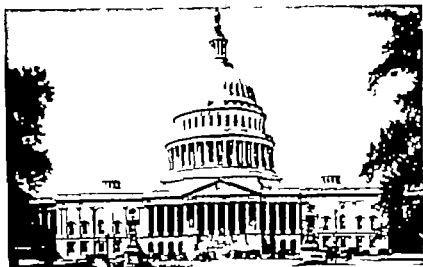
इसके अतिरिक्त यहाँ के द्वारे और नाल कमरे भी बर्तनीय हैं।

(५) ब्राह्मिष्ठन स्मारक का उच्च स्तम्भ नीसों दूर से संतर्भ मवन के छिन्न और लिङ्गन स्मारक के बीच प्राकाश में पटा हुआ दिखानी वेता है। इसकी ऊँचाई १२२ फुट २.५ इंच है। यह स्मारक सऊर परवर का महतीर वेता है जिसके ऊपरी छोर पर एस्प्रीमियम की मोठ बनी है। मूमि पर इसकी दोनों मुबार्यें १२ फुट की है और इसका प्राकार चौकोर है। बीबारों की मोटाई १२ १२ फुट है। ऊपर आकर मुबार्यें ३४ फुट २.८ इंच की रह गयी है और बीबार की मोटाई १५ फुट रह गयी है। यद्यपि इस स्मारक की बनाने का मुम्भब ब्राह्मिष्ठन के बीबन-काल में ही रका गया था, किन्तु उग्होंने कहा कि मेरे बीबन-काल में ऐसा कुछ नहीं होना चाहिए। यद्यपि इस स्मारक का निर्माल-कार्य बुताई १८४८ में प्रारम्भ हुआ किन्तु १८८४ से पहले इसे पूर्ण न किया जा सका। ब्राह्मिष्ठन की मृत्यु १७९९ में हुई थी और छठ तक उसे ८१ वर्ष हो चुके थे (चित्र नं० ९१)।

(६) लिङ्गन के स्मारक के साथ बुनिया के किसी भी स्मारक की तुलना नहीं की जा सकती। यह प्रत्यन्त सुन्दर इमारत है। इसे देखकर बसक पाइबर्षकित रह जाता है। रात्रि के समय जब बिद्युत से प्रकाशित इस स्मारक की परछाईं उस सम्ये ताल में बिजलायी वेती है जो इस स्मारक और ब्राह्मिष्ठन स्मारक के बीच बना हुआ है तो हृदय प्रकुम्भित हो पठता है। इस स्मारक न मुक्ति-बुन लिङ्गन की एक बिद्यमानकाय मूर्ति है। रात्रि के समय जब गहरा बिद्यत प्रकाश इस मूर्ति पर पड़ता है तो वह समीच-सी हो उठती है। लिङ्गन की यह मूर्ति कुत्तों वर बीठी हुई बिजलायी गयी है (चित्र नं० ९४ से ९५)।

(७) ब्रँडरसन का स्मारक ३ लाख डालर की लागत पर बनकर तैयार हुआ है। ब्रँडरसन अमेरिका के तीसरे राष्ट्रपति थे। यह स्मारक ब्रँडरसन के प्रति अमेरिकी जनता की कुतबना का प्रतीक है। ब्रँडरसन का स्मारक एक बुताकार कमरे के रूप में बना हुआ है। इसकी चौड़ाई ८१ फुट है और ऊँचाई ९१ फुट। मध्य भाग ब्रँडरसन की काति की एक मूर्ति है। काति की १८ फुट ऊँची यह मूर्ति ७ फुट ऊँची एक बमूतरे वर आड़ी की गयी है (चित्र नं० ९६)।

हमने यहाँ एक ऐसा माटक देखा जिसके मंच के चारों ओर दर्दकों के बैठने का स्थान था और संभमंच एसा था जिसमें न नेपथ्य था और न किसी प्रकार के पर्दे थे। संभमंच पर एक कितान के घर का भूषण दिखाया गया था पर पर्दे पर नहीं। अमेरिका के कितान के घर का एक बौठा बालान उसके दरबाज और लिङ्गनियां लकड़ी के साकेतिक टुकड़ों से दर्दकों गय थे। पथ पर सोने का पर्नब उस पर बिस्तर कुछ नहीं-सी कुर्तियां मोठ टबिल आदि रखी थीं। रत्नों बमाने और साने के कुछ बतन तथा मूर्तियों का सम्य कुछ सामान भी था। सारा माटक इसी मंच वर हुआ। जब



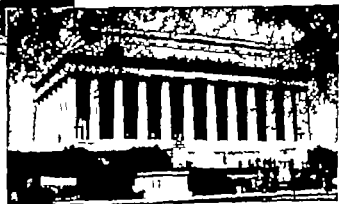
६२ राष्ट्रीय राजधानी भवन वाशिंगटन



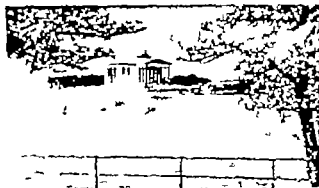
६३ वाशिंगटन की यादगार वाशिंगटन । प्रफुल्लित पेरी के बुझो के बीच रात्रि का दृश्य



२४ इब्राहीम लिफ्त की मादगार में इब्राहीम
लिफ्त की पापाक-मुर्ति बाधिषटन



२५ इब्राहीम लिफ्त की मादगार
का बाहरी भाग बाधिषटन



२६ बीकरसन मादगार
बाधिषटन । पीरी कुली है

दृश्य बदलता पूरे नाटकघर में खँबेरा हो जाता और जब फिर प्रकाश होता तब उस दृश्य में काम करनेवाले नट मंच पर घटना काम करते दिखायी पड़ते । एते रंगमंच पर अमेरिका के प्रसिद्ध नाटककार थो मू भी थो नील का एक नाटक खेला गया । थो नील की मोबस प्राइड थी जिस चुकी थी और में उनका यह नाटक पहले पढ़ चुका था । नाटक घबड़ी तरह खेला गया । अभिनय घबड़ा और स्वानाचिक था । पर सबसे बड़ी विशेषता थी रंगमंच की । यदि घरने देश में हर्षे नाट्य-कला की भाँषों में पहुँचाना है तो इस प्रकार के रंगमंच हमारे देश के लिए बड़े उपयोगी सिद्ध होंगे ।

हावर्ड विश्वविद्यालय जहाँ मेरा भारतीय संस्कृति पर अध्ययन होने वाला था हृषियों का विश्वविद्यालय है । इसके सनापति हृषी है इसके कायकर्ता भी अचिकीय हृषी है और विद्यार्थियों में भी हृषियों की ही अधिक संख्या है ।

हावर्ड विश्वविद्यालय अमेरिका में हृषियों का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है । इसके विद्यार्थियों की संख्या दो हजार है । यह विश्वविद्यालय मंत्रियों के प्रसिद्ध स्कूल के लिए प्रसिद्ध है । विश्वविद्यालय ज्योजिया एबम्पू के पूर्व में बना हुआ है ।

यहाँ मेरा भावण हुआ । अवस्थिति काफी थी फिर जो लोग भोताथों के रूप में घामे य जगहें भारत और भारतीय संस्कृति से बड़ा धनुराग जान पड़ा । भावण के पश्चात् यहाँ की प्रथा के अनुसार प्रश्न पूछ गये । बाद में जो सुबनाएँ मुझे मिलीं उनसे मालूम हुआ कि भावण और प्रश्नों के उत्तर बहूँ के लोगों को पसन्द आवे । मेरा भावण प्रश्नों के उत्तर और यहाँ की सारी कायबाही धंधेकी जाया में हुई ।

शाकासवाली की मेरी दोनों मुलाकातों तो वासिपदन की चर्चा का बहुत समय तक एक विषय बना रहा । इन मुलाकातों के सम्बन्ध में तो मेरे पास भारत में भी कई पत्र घामे और घामे भी घामे हैं ।

इस सर्वश्रेष्ठ देश में हम और जहाँ गये

अमेरिका हम सैन्टमिस्तको से छोड़ने वाले से और सैन्टमिस्तकी छोड़ने के पहले रास्ते में जितने अधिक-से-अधिक स्वान और मनुष्यगुण वस्तुएँ देख सकते थे उन्हें देख लेना चाहते थे। सेनेगा में होने वाली सामन्यतया पालियामेन्टरी कार्बनल की तारीखें निश्चित होने के कारण यूरोप में तो हम एक महीने से अधिक न टहर सकते थे, पर यहाँ के लिए कोई ऐसा बयान न था। अतः वाशिंगटन से रवाना होकर हमने नीचे लिखे स्थानों को जाना और निम्नलिखित वस्तुओं को देखना एवं खिया तथा इसी के अनुसार अपना कार्यक्रम बना हुआ जहाँक से यात्रा के दिष्टि बनवाये—

- (१) बफली जाकर नाइपा के जल-प्रपात ।
- (२) डिक्वाप्ट जाकर फोड का प्रसिद्ध पीठर कारखाना ।
- (३) सिन्नाबो जाकर ब्रिकामो नगर और वहाँ के दो प्रसिद्ध प्रजापक्षर—
स्पूबियम पाँक साइम एन्ड इन्डस्ट्री तथा स्पूबियम पाँक नैबुरल डिस्ट्री ।
- (४) डेनवर जाकर वहाँ के चारों ओर का प्राकृतिक सौन्दर्य ।
- (५) नार्सेक्सस जाकर वहाँ के हालीबुड की स्मृतियों ।
- (६) सैन्टमिस्तको जाकर वहाँ के कुछ खेती के फार्म और वहाँ से-से तीन

तीन हजार वर्ष पुराने ईडबुड के वरकल हें बहु बरकल ।

वाशिंगटन हमने ता० १४ अक्टूबर को छोड़ा और हम सैन्टमिस्तको से ता० २ नवम्बर को रवाना हुए । इस बीच हमने लगभग उपर्युक्त स्थानों को देखा । हुआई यात्रा होने के कारण यात्रा में हमारा बहुत कम समय बना । इसी कारण इतने थोड़े समय का जो बहुत सा भाग हम इन चीजों को देखने के लिए दे सके ।

नाइपा जल प्रपात

नाइपा जल-प्रपात संसार की सात सबसे अधिक प्रबल वस्तुओं में एक जाना जाता है । इस जल प्रपात में जितनी ऊँचाई से पानी गिरता है उतनी घरेला घनेक जल-प्रपातों का पानी वहाँ अधिक ऊँचाई से गिरता है परन्तु जल की जितनी राशि

इस प्रयास में विरती है उतनी करारित संसार के किसी प्रयास में नहीं। नाइया जल-प्रयास के दो भाग हैं एक कनेडा देश में घोर बृहत्त घनैरिका देश में परम्पु ये दोनों विभाग एक दूसरे के इतन निकट हैं कि दोनों को घन-घन केवल दोनों देशों की राजनीतिक सीमाओं के कारण ही माला जा सकता है। कनेडा देश का जल प्रयास अमेरिका देश के जल-प्रयास से बड़ा है और बड़े बड़े की मात्र के स्वरूप का है। इसीलिए अमेरिका में उसे हार्स यू फॉल कहते हैं। अमेरिका देश का यह प्रयास सोचा है और हार्स यू फॉल से छोटा।

हम जोय बचनों के जब नाइया जल-प्रयास पहुँचे तब सम्प्रा हो रही थी। मुझे प्रस्तावत के समय का घोर आकाश प्रायः निर्जन-सा होने के कारण घटत होते हुए अचानक की प्रकृत स्थितियों ने इस जल प्रयास की एक नहीं घनेक रूप दे दिये थे। कहीं-कहीं तो जल प्रयास में इन्द्र-अनुप के घनेक रूप हीय पड़ते थे। बाकी के नीचे पिरने के कारण नीचे से पानी के जो कण उँच रहे थे उनके कारण बुझा-सा बुझि पौकर हुआ या ठीक जलजलुर भड़ाघार के गर्बडा के जल प्रयास मुझाघार के सङ्घ पर इस प्रयास की जल राशि के बहुत अधिक होने के कारण यह बुझा उस बुझाघार के कहीं अधिक था।

हमने पहले हार्स यू फॉल देखा और फिर अमेरिका वाला जल प्रयास। इन दोनों जल प्रयासों को देख हम कहीं के विलबामइन नामक होटल में ठहर गये और सम्प्रा के भोजनोपरान्त फिर से इन प्रयासों को इतलिये देखने गये कि रात्रि की इन प्रयासों पर रंग बिरंगी बिजली की रोशनी डाली जाती है। रंग-बिरंगे बिजली के प्रकाश में तो ये शरात एक स्वप्न भूमि के सङ्घ बन पड़े। मुनहुरी रोशनी में सोने की चारार्ड, कनहुरी रोशनी में चाँदी की चारार्ड, मिग्ग-मिग्ग साल, हरे, बैयनी न जाने कितने रंगों में यह कितने रंगों की चारार्ड बिजली। कनेडा के जल प्रयास की घनेला अमेरिका के जल प्रयास की रोशनी की ध्यबन्धा अचछो थी। न जाने कितनी देर तक हम इस मनहारी दृश्य को देख होटल को सोट धाये।

दूसरे दिन प्रातःकाल हम फिर से प्रयास देखने चलें। प्रातः बुझपिय से जाइत ही गये थे घन दृश्य उतना सुन्दर न था। प्रातः हम पहले तो अमेरिकन जल प्रयास के निकट के एक बिजली के लिफ्ट द्वारा, कहीं भूमि पर पानो विरता था, उस स्थान पर गये और फिर एक छोटी-सी स्टीमर द्वारा अमेरिकन और कनेडा के दोनों जल-प्रयासों के उत बिनाश में घुसे कहीं प्रयास से बिरता हुआ पानी एक भील के रूप में बर गया है। इस भील के इतर उपर जल बड़े वेग से पिर रहा था, तथा उसके कण उड़ रहे थे। लिफ्ट से नीचे उतरकर कहीं से प्रयास का दृश्य और स्टीमर द्वारा भील में घुम्ते हुए प्रयास का दृश्य दोनों ही बड़े सुन्दर थे। हाँ इतना अचछो हुआ कि

स्वीडन में हमें बरसातियाँ बहुतो पर्वो और बरसाती कबडोनों से तिर डीकना पड़ा
 अग्यपा उड़ते हुए और-अलों के कारण हम लोग भीय जाते । हम तीनों के प्रतिरिक्त
 इन दुषों को देखने के लिए और भी अनेक पुष्प और महिलाएँ बड़ी बसा हुई थीं
 (चित्र नं० ६७ से १००) ।

इसके बाद हम लोग अमरिकाज जल प्रपात धारम्भ होने से पहले नाइजा बरी
 के कुछ दुषों को देखने पहुँचे । इन दुषों के घातपात उद्यम तथाये मये हैं, जिनसे
 ये दुष्य परम रमणीय हो गये हैं ।

नाइजा के ये जल-प्रपात इन देशों को प्रकृति की देन है वर प्रकृति से जो कुछ
 इन्हें मिला है उसे यहाँ के लोगों ने और कितना घबिक सुखर कर दिया है । फिर
 इस शौच्य के प्रतिरिक्त इन्होंने इतना वाबिक उपयोग भी काम नहीं किया है । इस
 प्रपात के इसके चारों ओर के लालों चरों को प्रकाश मिलता है, पश्चिमी श्यार्क
 राज्य के उद्योग-बन्धे चलते हैं और कॅनेडा को भी प्रचुर परिमाण में बिजली मिलती
 है । कई बड़ों से मबरिका और कॅनेडा मिलकर एक संयुक्त निर्मलक्षीय की तहायता
 से इस प्रपात के द्वारा उत्पन्न बिजली को घमित का उपयोग कर रहे हैं । अन्तर्राष्ट्रीय
 सहयोग के द्वारा प्रकृतिरक्त साधनों के उपयोग का यह बड़ा अध्या बढाहरत है ।

डिट्रॉयट

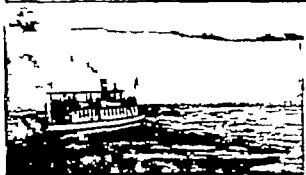
जब हम डिट्रॉयट पहुँचे तब हमें लने इबाई घड़े पर टोई मोटर कंपनी के
 भी अेड मरडी कोर्ड मोटर कम्पनी को सशौतम मोटर तिकन मिले हुए चीकूच था ।
 यहाँ हम ठहरे डबलर नामक होटल में । यहाँ भी हम संप्या के इबाई बहाज से ही
 पहुँचे थे । प्रातः जिन दिन हम पहुँचे उस दिन हुए से कैसर तथा फेंजर कंडलक और
 डी लीहो लीव मोटर कारखाने देखने के प्रतिरिक्त और कुछ न कर सके । अमरिका
 के सभसत प्रबिद्ध मोटर के कारखाने डिट्रॉयट एवं उसके ही घातपात हैं और मोटर
 उद्योग कितना बड़ा अमरिका में है संसार में कहीं नहीं । परन्तु हमारे पास कितना
 लभ्य था उसे देखते हुए कुछ कारखानों को बाहर ले ही तथा कोर्ड कारखाने को
 भीतर से देख हमने सलोग करने का निश्चय कर लिया था । फिर मोटर बनाने के
 लनी कारखाने प्रायः एक-से हैं, घात एक कारखाने को मरडी तरह देख लेंया एक
 प्रकार से लभ को देख लना था ।

दूसरे दिन २॥ बजे प्रातः जाल भी अेड मरडी फिर अमनी तिकन मोटर से
 हमें लने या पहुँचे । कोर्ड मोटर का कारखाना सचमुच ही एक महान् उद्योग है । यह
 कारखाना दुनियाँ के सबसे बड़े कारखानों में एक जाना जाता है । मोटरों के बाहरी
 दहि (बाडी) उन हीनों के भिन्न-भिन्न विभाग, मोटरों के इंजन, उनसे बन-पुर्जे
 बिजली कीरे दही कारखाने में बनती है । वरन्तु कुछ बसपुर्जे बाहर ले लरीर करके

१७ अमेरिकन प्रपात



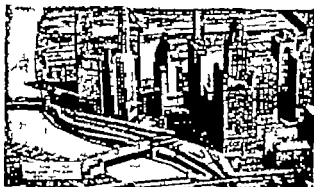
१८ अमेरिकन प्रपात का
सामने स्टीमर



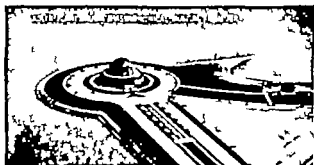
१९ हॉर्न खु प्रपात



२ हॉर्न खु प्रपात का
एक दृश्य



१ १ चिकागो नगर का एक दृश्य

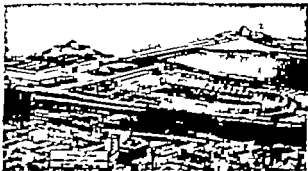


१ २ हवाई जहाज से चिकागो जेम्स एडवर्ड क्वेन्टेरियम एक विशालता के साथ दिखाता है

१ ३ चिकागो का प्रजासत्तक भवन (हवाई जहाज से)



१ ०४ विज्ञान और उद्योग का प्रजासत्तक चिकागो (हवाई जहाज से)



की इन मोटरों में लगायी जाती है। इसका कारण यह बताया गया कि जो बस्तुएँ बाहर से खरीदकर मोटरों में लगायी जाती है उन बस्तुओं की बनाने में घाम्य मोय इतने निपुण हो गये हैं कि यदि ऐसी बस्तुएँ इस कारखाने में बनायी जायें तो एक तो बेसी पक्की न बनेगी और उनसे मर्हबी भी पड़ेगी।

फोर्ड मोटर कम्पनी की स्थापना १५ जून, १९०३, को हुई। श्री फोर्ड ने पहले केवल पक्कीत हुआर डालर की रूँडी से अपना काम आरम्भ किया था। वे पक्कीत हुआर डालर भी उनके न चें उनके कुछ मित्रों ने उन्हें कम्पनी के प्रारंभ के रूप में दिये थे। पीरे-बीरे की फोर्ड ने वे प्रारंभ खरीदकर कारखाना अपना कर लिया। प्रथम तो सिट्रस कैनेडा जर्मनी जापान आदि सभी जगह फोर्ड के कारखाने कुने हुए हैं और उसे फोर्ड साम्राज्य तक कहा जाता है। अनुमान है कि १९४५ में कारखाने की सारी रूँडी लगभग १ २,१३ २५, १६६ डालर थी लेकिन यह अनुमान भी कुछ कम ही समझा जाता है।

बोयलर के जीवन के पूरा कारखाने के सबर मुख्य विभागों की दिशा भी बिक नरकी ने हूँ कारखाने के रैक्टरों ने ही जीवन कराया और जीवनोपरागत हूँ फोर्ड साहब का प्रभावबधर दिखाया। यह प्रभावबधर अपनी कुछ विश्वताएँ रखता है इसमें सन्देह नहीं। किसी एक व्यक्ति विशेष के लिए इतना बड़ा संप्रह करना एक अचंचनीय बात है।

हेनरी फोर्ड का प्रभावबधर १४ एकड़ भूमि में बना हुआ है। इससे विभिन्न क्षेत्रों में अमेरिका की प्रायः तक की प्रपति का अनुमान लगाया जा सकता है। यह प्रभावबधर तीन भागों में बँटा हुआ है—(१) ललित कला संग्रह, (२) अमेरिका की प्रारम्भिक नृत्यानों का भाग और (३) मजीनो हॉल।

श्री फोर्ड का ८ वर्ष की अवस्था के ऊपर कुछ वर्ष पहले ही वैद्वान्त हुआ है। उनके इकलौते पुत्र का वैद्वान्तान उनके सामने ही हो गया था। प्रथम उनके तीन पौत्र हैं जो इस कम्पनी के मालिक हैं। फोर्ड कुटुम्ब संसार के सबसे धनवान कुटुम्बों में एक है। इनका वर्तमान आउटवेक्षण ही संसार-विश्वम् है।

फोर्ड आउटवेक्षण अमेरिका की पृथ्वी लोक सेवा ट्रस्ट संस्था है। अमेरिका की संसार प्रसिद्ध फोर्ड मोटर कम्पनी की ९० प्रतिशत राशि इस संस्था में लगी हुई है। संस्था का कार्यक्षेत्र ३ विस्तारों में है—अन्तराष्ट्रीय आर्थिक स्थापना लोकतन्त्र की स्थापना, शिक्षा का प्रसार, आर्थिक समृद्धि में मोय और मानवाचार के सम्बन्ध में मानव-ज्ञान की प्रजिबुद्धि। संस्था की स्थापना १९३६ में की गयी थी। १९४० में उत्तरी सम्पत्ति कम्पनी के संस्थापक हेनरी फोर्ड और उनके एक मात्र पुत्र एडवल्ड फोर्ड की सम्पत्ति प्रत्यक्ष हो जाने से बहुत आर्थिक बड़पदी। अनुमान है कि उनकी सम्पत्ति ३०

करोड़ डालर होगी। इस प्रकार यह धन्य सभी बर्माई संस्थाओं यहाँ तक कि राक्य वेल्स पाउण्डेशन से भी बड़ी है। इसके कार्यक्रम का संवाहन पाल होकर भेज करते हैं।

इस संस्था से भारत की भी बहुत-कुछ सहायता प्राप्त होती है। भारत की सामुदायिक योजनाओं के लिए इस संस्था का धीमे धीमे प्राप्त किया जा रहा है।

शिकागो

शिकागो नगर का नम्बर अमेरिकन में न्युयार्क के बाद ही आता है पर अहुर न्युयार्क से अधिक फैलकर जाता है। न्युयार्क के तुल्य कुछ ढँके ढँके मकान भी हैं। एवेन्यू और स्ट्रीट जाने सड़कें न्युयार्क के तुल्य हैं, पर यह अहुर उतने व्यवस्थित तरीके से नहीं जाता है।

यहाँ आता है कि शिकागो शहर में बराबर बायु चलती रहती है। मिनीसन प्रीस से आते हुए बायु के ठँके कमी नहीं रहते इसलिए शिकागो की बायु का नगर भी कहते हैं। संतार में इस नगर का मौसा नम्बर है। दूर-दूर तक फैली हुई इमारतें हैं जो छोटो छोर व्यापार का केन्द्र बनी हुई हैं। आवास के बसस्थल में अजबतों की भाँति बसकार बुझा छोड़ती हुई अनतिगत चिमनियाँ हैं परती के हूबप को रोती हुई बस-बसकर चलती हुई रेलगाड़ियाँ हैं और अनतिगत किरितियाँ ब आजा है।

१८३३ में यह विद्यालय धीमेधीमे नगर एक छोटा-मोटा व्यापारिक नगर का किन्तु १८७१ के अग्निकांड के पश्चात् नगर का तीव्र पति के बिकास धारण हुआ। आज शिकागो कई जसोबों में संतार के धन्य सभी नगरों से आगे है। शिकागो की पोस्त की मंडी आनाज की मंडी, नाल की मंडी और रिडवेस्ट रसाक एक्सचेंज संतार नर में प्रतिष्ठ है। शिकागो के आल-नाल के प्रवेश में कोयला तेज इमारती लकड़ी और लोहा बहुतायत से आया जाता है।

अमेरिका में धन्य कोई नगर इतनी अजबती अजब स्थित नहीं है। इस नगर की जीवितिक स्थिति बड़ी अजबती है। यहाँ पर प्राकृतिक साधन प्रत्येक ही धीमे धीमेधीमे सुविधाएँ भी। अमेरिका के हूबप की अजबत का अतिना आनाल इस नगर से अतिना है जतना धीरे किली से नहीं।

शिकागो अंधुरल द्विती न्युयार्क की स्थापना मार्शल कौन्स ने १८३३ में की थी। बहुत-बहुत अजबत, निस अजबत, रोम अजबत के अतिना अजबत आल के संतार देखें का सकते हैं (अजब नं० १०१ से १०४)।

शिकागो में हुजने बर्क की अजबत नर अतिना प्रकार के नगरों का एक नम्बर प्रवेश्य धीरे देता। बस की अजबत का यह नभ लयमा १३० फुट लम्बा धीरे ३० फुट चौड़ा था। एक धीरे छोटे-से मकान का हूबप था। इसी से है अतिना धीरे अतिना

निकलते और घपना कार्य बर्ष के रंपमंच पर कर बापत सौद जाते । अब वे निकलते तब रंपमंच पर घपेरा हो जाता और उनके रंपमंच पर जाने पर विविध प्रकार एवं रंगों के बिजली के प्रकाश में उनके नृत्य होते । नाचने वालों के बरों में एक विशेष प्रकार के झूते रहते और उन झूतों के तलों में एक विशेष प्रकार के स्फोटक बने, जिनसे ये नृत्य बर्ष के रंपमंच पर किये जाते । नर्तक और नर्तकियों के कप बोधाक और धारा कार्य धार्मिक कलापूर्ण एवं आश्चर्य का । किसी प्रकार की धमकीयता मो न थी । नृत्य धारम्य हुआ । बिजली बरबार शीर्षक नृत्य थे । बिजली के पुराने मुस्तालों की पोशाक में कुछ नर्तक धार्य और नर्तकियाँ पुराने राजपूती-कला के बस्त्र धारण कर । धरणि बोधाक और नृत्य दोनों सबका भारतीय न थे पर बोधाक पुरानी राजपूती-कला से मिलती-जुलती धराम्य थी । इसके बाद न जाने कितने प्रकार के नृत्य हुए । इनमें हमें तो सबसे अच्छा तितलियों का नृत्य जान पड़ा । तितलियों की बोधाक और उत नृत्य में बीते प्रकाश की व्यवस्था की गयी थी, उतते पही जान पड़ता था कि बीते तथमुच ही धारमक्य की तितलियाँ रंपमंच पर उड़ती हुई विविध प्रकार के नृत्य कर रही हैं । बर्ष के रंपमंच का यह अवसर तथमुच ही अपने हंन का धमोका प्रदर्शन था और इसकी सबसे बड़ी विशेषताएँ थीं नृत्य करने वालों की पोशाकें, बिजली का प्रकाश और नृत्य में जाहान् गति ।

हम जिस दिन प्रातःकाल शिकाबी से उठना हो रहे थे तब दिन बर्ष गिरना धारम्य हुआ । मुभा कि प्रस्तुत में पही बर्ष कभी नहीं गिरता । हम लीचों में इसके रहने पहाकों पर जमे हुए बर्ष को तो देखा था लेकिन बर्ष गिरता हुआ नहीं । प्रतः हमने तो यह माला कि हमारी इत यात्रा में कोई वर्षागीय वस्तु देखने को यह न जाय, इसीलिए प्रकृति देवी ने कृपा कर प्रस्तुत में ही बर्ष गिरा दिया । कैसा सुन्दर दृश्य था यह हिम-प्रपात का । नीला ज्योम श्वेत धारलों से ढका हुआ था और जगते बिर रहा था कई के बहुत से समान लफेर बर्ष । ये हिम-बंद कुलों गुहों के ऊपरों और नूनि पर बिर तारी बस्तुओं को कुछ रंभ प्रदान कर रहा था । श्वेत बर्षों में तलों रंभों का लम्बिलाल होना है, पर ये तप्त बर्ष मिलकर एक श्वेत रंभ का निर्माण कर देते हैं । आज हिम-बृष्टि ने जिन जिन रंभों को श्वेत रंभ का रूप दे दिया था । धरे । रंभ-बिरंभी शीकती हुई पीटरों की जलों और मडगाई की लफेर हो गये थे । इस लुब्ध-बृष्टि में ही हम हवाई धनु पहुंचे । हवाई धनु के चारों ओर दूर-दूर तक के मैदान लफेर हो गये थे । बर्षा-नृत्य में भारत में दूर-दूर तक कौने हुए हरे रंभ के कालीनों के लघुय मैदान तो सदा ही देखते थे परन्तु श्वेत रंभ का यह कालोम ।

डेनवर और उसके आस-पास

डेनवर के चारों ओर के प्राकृतिक दृश्य बड़े सुन्दर हैं । हम लीच जहाँ लीच

बिन झूठे घोर दो दिनों तक प्राकृतिक दृश्य बताने वाली मोटरों पर कोई तीन तो भील की यात्रा की। पहले दिन कोई चौबस हजार एक ढ़े पाऊँच ईवेसत गये घोर दूसरे दिन इकते कुछ ही कम ढ़े पाइस पीक। हम तीनों के साथ पहले दिन चार अमेरिकन महिलाएँ घोर दूसरे दिन इग्ली में की तीन महिलाएँ घोर एक पुष्य थे। मोटर का रास्ता बड़ी बीहड़ पहाड़ियों में से पया था। कहीं-कहीं तो बड़ बहुत ही सकरा घोर भयावह था। इस मार्ग को देखकर लम्पलूमने से बचरीनाप जाने वाले देव प्रयाग धादि का रास्ता याद आता था। दोनों दिनों के ये प्राकृतिक दृश्य बड़े सुन्दर थे। झिकागो में की बर्क बिरा था बड़ यहाँ भी गिर चुका था। इस हिम-बुध्द के कारण दृश्य घोर सुन्दर हो गया था घोर भूँक इन दोनों दिन आकाश प्रायः निर्बल था इतलिए ये बर्क कोटि-कोटि हीरों के देरों के सङ्घ बनक रहा था। परन्तु बुझों के अत्यन्त मनोरम रहते हुए भी हमें यहाँ कोई ऐसी वस्तु न दिखायी दी जो हमने भारत में न देखी हो (चित्र नं० १०५ से १०७)।

जब इन डेनवर से लासेञ्जस जा रहे थे उस समय हमारे हवाई जहाज पर से हमने जैसे दृश्य देखे जैसे इसके पहले सचमुच ही नहीं देखे थे। पहले तो हमारे बाय बाय न बच से डके हुए पाइपलपीक को उतारिया घोर उसके कुछ देर बाद बड़ पड़ा षेण्ड कैमियन नामक स्थान पर से। षेण्ड कैमियन प्राकृतिक बुध्द के अमेरिका के सुन्दरतम साथ ही अद्भुत स्थानों में से एक माना जाता है। हमारा कार्यक्रम षेण्ड कैमियन जाने का था भी परन्तु इन दिनों वहाँ बायबाय न जाता था घोर रेल से जाने में बिलभा समय लगता था उतना हमारे पास था नहीं आतः हमने वहाँ न जाने का निर्णय कर ही सन्तोष कर लिया था। परन्तु सोभाग्य से बायबाय द्वारा हमने षेण्ड कैमियन देखा लिया। जब हमारा हवाई जहाज षेण्ड कैमियन पर के पड़ा उस समय जम्मा ही रही थी। आकाश निर्बल था, न बादल थे घोर न कोहरा। ऐसी लम्बा में कैता दिखता था बड़ षेण्ड कैमियन। कैमियन का अर्थ है छाई। अमुक-अमुक जगह तो पाठान फूट गया है हम कितनी बहुत अचिक बहरे स्थान को देखकर कह दिया करते हैं। षेण्ड कैमियन में इस प्रकार के पाठान न जाने कितने स्थान पर फूटे थे घोर इन जगहों के चारों घोर के बहाड़ के प्रत्येक घिला-अण्ड कितने रँगी के थे। ये रंग उद्विज लुध्द के नहीं बरबर के रच्य के थे। लाल पीले, पीले पीली हरे, कितने-कितने रंग इन जिलाघों में थे। फिर बचक-पूबक घिला पुबक पुबक रंग की हो बड़ नहीं एक ही घिला में अनेक रंग।

लासेञ्जस

लासेञ्जस उत कैलीफोर्निया प्रदेश का सबसे बड़ा नगर है जो कैलीफोर्निया चारे संसार में अग्रणी जनबाय तथा प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण प्रसिद्ध है। लासेञ्जस

१०५ डेनवर (आसारोडो) की एक विचित्र माकार की गिमा



१०६ डेनवर की एक दूसरी बड़ी ही गिमा



१०७ बड़ी के निकट बरफ गिरे हुए स्थान की कण्ठगिरी में कैलाश

बिना छहरे घोर जो दिनों तक प्राकृतिक वृष्य बताने वाली मीटरों पर कोई तीन सौ मील की यात्रा थी। पहले दिन कोई चौदह हजार फुट ऊँचे माऊन्ट ईवेंगल पर घोर बृहत्तरे दिन इतने कुछ ही कम ऊँचे वाइसस पोक। हम तीनों के साथ पहले दिन चार अमेरिकन महिलाएँ घोर धुनरे दिन इन्हीं में की तीन महिलाएँ घोर एक पुरुष थे। मोटर का रास्ता बड़ी भीड़ पहाड़ियों में से मया था। कहीं-कहीं तो यह बहुत ही सकरा घोर मयाबह था। इस मार्ग को देखकर मकमलामुने से बदरीनाथ जाने वाले रेश प्रयास था कि का रास्ता याद आता था। दोनों दिनों के ये प्राकृतिक वृष्य बड़े सुन्दर थे। जिक्रामो में जो बर्फ पिरा था वह यहाँ भी पिर चुका था। इस हिम-बुट्टि के कारण वृष्य घोर सुन्दर हो गया था घोर चूँकि इन दोनों दिन आकाश प्रायः निर्मल था इसलिए ये बर्फ कोटि-कोटि हीरों के डेरों के समान चमक रहा था। परन्तु वृष्यों के अत्यन्त मनोरम रहते हुए भी हमें यहाँ कोई ऐसी वस्तु न दिखायी दी जो हमने भारत में न देखी हो (चित्र नं० १०१ से १०७)।

जब हम डेनबट से लार्सेन्सक जा रहे थे उस समय हमारे हवाई जहाज पर से हमने कितने वृष्य देखे कितने इतने पहले सचमुच ही नहीं देखे थे। पहले तो हमारे आयु-यान ने बर्फ से ढके हुए वाइससवीक को उल्टीया घोर उसके कुछ डेर बाद यह उड़ा प्रैण्ड कैनिपन नामक स्थान पर से। प्रैण्ड कैनिपन प्राकृतिक बुट्टि से अमेरिका के सुन्दरतम साथ ही सचमुच स्थानों में से एक माना जाता है। हवारा कार्यक्रम प्रैण्ड कैनिपन जाने का था भी परन्तु इस दिनों यहाँ आयुयान न जाता था घोर रेल से जाने में अथवा लज्ज लमता था उठना हमारे पाल था नहीं, अतः हमने यहाँ न जाने का निर्णय कर ही सलीब कर लिया था। परन्तु सीजाम्य से आयुयान द्वारा हमने प्रैण्ड कैनिपन देख लिया। अब हमारा हवाई जहाज प्रैण्ड कैनिपन पर से उड़ा उस समय लम्ब्या हो रही थी। आकाश निर्मल था, न बादल थे घोर न कोहरा। ऐसी लम्ब्या में कितना दिखता था वह प्रैण्ड कैनिपन। कैनिपन का अर्थ है जाई। समुद्र-समुद्र जबह तो वातामन कूट मया है हम किसी बहुत अथिच बहरे स्थान को देखकर कह दिया करते हैं। प्रैण्ड कैनिपन में इस प्रकार के वातामन न जाने कितने स्थान पर कूटे थे घोर इन जगहों के चारों घोर के पहाड़ के प्रत्येक शिखा-कण्ड कितने रंगों के थे। ये रंग उज्ज्वल सुट्टि के नहीं वापर के स्वयं के थे। लाल, नीले, नीले बैंगनी हरे, कितने-कितने रंग इन शिखारों में थे। फिर पृथक-पृथक शिखा पृथक-पृथक रंग की हो यह नहीं एक ही शिखा में अनेक रंग।

लार्सेन्सक

लार्सेन्सक उस कैसीकोनिया प्रदेय का सबसे बड़ा नगर है जो कैसीकोनिया हारे संसार में अथनी अलबामु तथा प्राकृतिक लोन्वर्ग के कारण प्रसिद्ध है। लार्सेन्सक

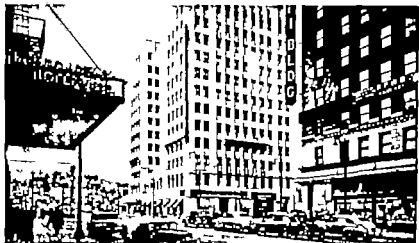
१०२ डेनबर (फाल्गुनी) की एक विचित्र आकार की गिरा



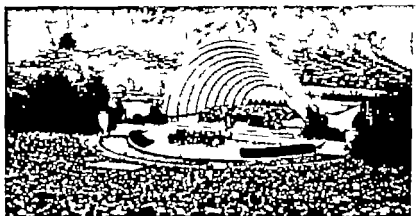
१ ८ डेनबर की एक बूसरी बनी ही गिरा



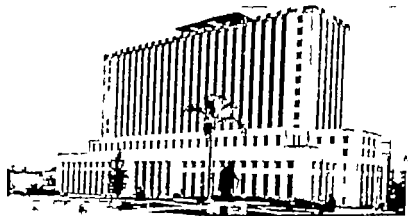
१०४. बसी के निकट बरफ गिरे हुए स्थान की पृष्ठीय में लेकक धीर जयमोहनराज



१ न. मासकस्त में प्रसिद्ध हासीबुड



१ २ हासीबुड का स्टेडियम



नगर यद्यपि अमेरिका के अन्य नगरों के समान ही हैं तथापि इसके अनेक भागों के दोनों ओर के अत्यन्त सुन्दर बसों ने और छोटे-छोटे हरे भरे नहरबानों से मुक्त तरह-तरह के पार्कों ने इस नगर को एक विशेष प्रकार की सुन्दरता दे दी है।

हमारे सातेंअस्त में ठहरने और जहाँ के बर्तनीय स्थानों को इयें दिखाने के सारे कार्यक्रम का प्रबन्ध संयोजकियों के भारतीय दूतावास के कीसलर श्री हुसेन ने किया था। उन्होंने सातेंअस्त के सबसे बड़े होटलों से एक बलात्क नामक होटल में हमारे ठहरने का इन्तजाम कराया था और सातेंअस्त के दो भारतीय श्री राममोहन बघाय और उनके छोटेसे पिता श्री महेशचन्द्र को हमें सातेंअस्त को दिखाने का कार्य लीव दिया था। श्री हुसेन ने ही सातेंअस्त के मूची पिचर एंथोतिवेघन के मार्केत जहाँ के सबसे बड़े स्टूडियो में से एक पैरामाउण्ड पिचर के स्टूडियो दिखाने का भी इन्तजाम किया था। आञ्जकल हालीबुड के स्टूडियो बिना किसी विभिन्न प्रबन्ध के नहीं देखे जा सकते अतः श्री हुसेन यदि यह प्रबन्ध न करते तो हालीबुड का स्टूडियो तो हम न देख पाते।

सातेंअस्त की जूमि पर जब हमारा हवाई जहाज पहुँचा तब रात हो गयी थी। ठहरने का प्रबन्ध हमारा बसार्क होटल में था जो, अतः हवाई अड्डे से हम लीचे हीअन आकर जहाँ ठहर गये। रात को ही हमने श्री राम बघाय की फोन किया और उनसे बातें कर तय पाया कि दूसरे दिन प्रातःकाल १० बजे श्री राम बघाय और श्री महेशचन्द्र मन्द से आकर मिलेंगे तथा हमारा कार्यक्रम तय कर देंगे।

दूसरे दिन ठीक समय दोनों पहुँच गये। दोनों ही बड़े सज्जन व्यक्ति हैं। श्री राम बघाय की माता ने श्री राम बघाय के पिता श्री मृत्यु के पश्चात् श्री महेशचन्द्र से विवाह कर लिया है और राम बघाय श्री महेशचन्द्र का अपने पिता के समान ही व्यवहार करते हैं।

हम लीव सातेंअस्त चार दिन ठहरने वाले थे। इन चार दिनों का कार्यक्रम इस प्रकार बना—पहले दिन अजमोहनवास पत्नी के फार्मों की मसीनों धारि के सम्बन्ध में जिन लोगों से मिलना चाहते हैं मिलेंगे। दूसरे दिन श्री राम बघाय हमें सातेंअस्त की बर्तनीय चीजें दिखा देंगे और उस दिन हमारा भोजन श्री महेशचन्द्र से यहाँ होगा। तीसरे दिन हम स्टूडियो देखेंगे और चौथे दिन रवाना हो आयेगे।

निश्चित कार्यक्रम के अनुसार ही सारी बातें चली।

बर्तनीय स्थानों में जिन स्थान में हमारा ध्यान सबसे अधिक आकर्षित किया यह था एक कब्रिस्तान। यह कब्रिस्तान कब्रिस्तान तो है ही जहाँ सेकड़ों नहीं हजारों अक पड़े हैं पर कब्रिस्तान के साथ ही यह एक सुन्दर और रमणीय बाग भी है, जहाँ की कड़ों पर केलीफोर्निया के निम्न-निम्न रंगों के सुन्दर पुष्प बिखे रहते हैं। मुझे

मुरखों की यादगारें कभी भी बसाय नहीं छातीं पर कर्मों में इस प्रकार कुतुम् लयामा कराचिन् मुरखों की यादगार की लकड़े प्रच्छर्मा प्रवा कही जा लकटी है ।

इस क्विस्ताम में एक नव्य भवन भी बना हुआ है और इस भवन में ईसा के सारे जीवन का महान् विद्याम चित्र बनाना गया है । भवन तो सुन्दर है ही, पर भवन से भी सुन्दर है वह भवनय जिसमें चित्र है, उस भवनय से भी सुन्दर चित्र है और चित्र से भी कहीं सुन्दर है बतका प्रदर्शन ।

चित्र पर सुन्दर परवा पिरा रहता है । छीक समय चित्र का प्रदर्शन होता है । धारम्भ में प्रत्यक्षिक मयुर बाघ बजता है । बसके परबाय् वान होता है । फिर पीरे पीरे चित्र का बरदा कुल चित्र में क्या बताया गया है इत पर भावलु होता है । भावलु के साथ एक बायु चित्र के बन स्वामी पर घूमता जाता है जिन्हें भावलु के द्वारा समझाया जाता है । क्या में फिर के बाल ही और बाघ बजकर बरजे से चित्र इक जाता है । इस सारे प्रदर्शन में कोई घावा बन्धा लपटा है ।

इस सारे पीरे में मेने ईसा के जीवन से सम्बन्ध रखनेवाले जनेक चित्र देखे थे, इस चित्र से भी प्रच्छे, पर ऐसा सुन्दर प्रदर्शन कहीं नहीं । ईसा की क्या कौन नहीं जानता, पर इस प्रदर्शन के समय उसका मन पर बहुत हीर धबुभुत प्रभाव पड़ता है । कैरे मन में एकएक जठा कि हम भी कहीं राम हृष्टल बुद्ध, बाबी की जीवनिपी के चित्री का कहीं ऐसा प्रदर्शन कर लें ।

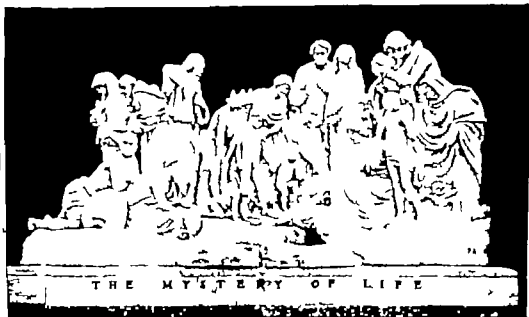
स्टूडियो भी दर्दनीय था । घणनि किली अपाने में तिबेमा अप्त से मेरा सम्बन्ध रह चुका है और घणनि स्टूडियो में मुझे कोई सर्वथा ऐसी नवी चीज नहीं दिखी जो मेने बम्बई-कलकत्ते के स्टूडियो में न देखी हो, पर उन सबके प्थ स्टूडियो कहीं बड़ा था । बाजार इत्यादि के सेटिंग इतने बड़े और विद्याल मे कि जान पड़ता था जैसे अमेरिका के बड़े-बड़े बाजार स्टूडियो में ही बने हें । स्टूडियो में एक बहुत बड़ा तालाब था, की धारवपकटा के समुकार बड़ाया-घड़ाया जा लकटा था । इत तालाब में बिजली के लहारे बड़े-बड़े समुद्री लुछान दिखाने जा लकते हें ।

लातेबलत में हम कई भारतीयों से भी मिले (चित्र नं० १०५ से ११२) ।

सैम्प्रान्तिस्को और उसके भास-वास

जब हमने सैम्प्रान्तिस्को की भूमि पर पैर रखा उस समय सब से पहले मुझे लाला हृष्टपाल का स्मरण आया । श्री हृष्टपाल हमारे देश के उन कार्तिकारियों में प्रथम स्थान रखते थे जिन्होंने हमारे देश की स्वतन्त्र कराने का बीड़ा लम् १८६० के स्वातन्त्र्य-युद्ध के परबाय् सर्वप्रथम उठाया था । फिर श्री हृष्टपाल की बुद्धिमत्ता और विद्वत्ता की तुलना की इने गिने भारतीयों से ही की जा सकती है ।

भारत आज स्वतन्त्र है और स्वतन्त्र भारत के हम नागरिक सब स्वतन्त्रता



१११ सासबस के कब्रिस्तान की एक मूर्ति



११२ सासबस का एक रीस्टॉर जिसेके भीतर न जाने कितना बड़ा बनस्पति-बनवत् धीर एक जल-मपाठ है

मुरदों की मादपारें कभी भी पसन्द नहीं जाती, पर कबों में इस प्रकार कुसुम लपला म्बावित् मुरदों की मादपार की सबसे बच्छी प्रपा क्की का सदती है ।

इस कश्तिस्तान में एक भव्य नवन भी बना हुआ है और इस नवन में ईला के सारे जीवन का महान् बिज्ञान बिन्न बनाया गया है । नवन तो सुन्दर है ही, पर भवन से भी सुन्दर है वह प्रात्य बिन्नमें बिन्न है उस प्रात्य से भी सुन्दर बिन्न है और बिन्न से भी कहीं सुन्दर है उतका प्रवर्धन ।

बिन्न पर सुन्दर बरदा निरा रहता है । ठीक समय बिन्न का प्रवर्धन होता है । धारम्भ में मत्स्यिक पशु बच बजठा है । उतके पश्चात् गान होता है । फिर धीरे धीरे बिन्न का बरदा कुल बिन्न में क्या उतमा गया है इस पर धायल होता है । मत्स्य के साथ एक बालु बिन्न के इन क्पानों पर घूमता जाता है जिन्हें मत्स्य के द्वारा समझाया जाता है । धन में फिर से गान हो और बालु बजकर परदे से बिन्न उक जाता है । इस सारे प्रवर्धन में कोई प्राया पष्टा लफता है ।

इस सारे धीरे में मेंने ईला के जीवन से सम्बन्ध रकनेबाने धनेक बिन्न देखे ने, इस बिन्न से भी पच्छे, पर ऐसा सुन्दर प्रवर्धन क्हीं नहीं । ईला की क्या कीम नहीं जानता पर इस प्रवर्धन के समय उतका मन पर महान् धीर प्रवृत्त प्रभाव बड़ता है । मैरे मन में एकएक उता कि हम भी क्हीं राम हम्मल बुद्ध, गंधी की जीवनियों के बिन्नों का क्हीं ऐसा प्रवर्धन कर सतें ।

स्त्रुडियो भी बर्धनीय था । पछवि कित्ती बपाने में सिनेमा बचत से बेरा सम्बन्ध रह बुदा है धीर पछवि स्त्रुडियो में मुझे कोई लबबा ऐसी नयी बीज नहीं दिखी जो नेंने बम्बई-कलकत्ते के स्त्रुडियो में न बेकी हो, पर इन सबसे यह स्त्रुडियो क्हीं बड़ा था । बाजार इत्यादि के संदिय इतने बड़े धीर बिज्ञान थे कि बाज बड़ता था बीते प्रनेरिका के बड़े-बड़े बाजार स्त्रुडियो में ही बने है । स्त्रुडियो में एक बहुत बड़ा तालाब था, जो धानपकता के अनुतार बड़ाया-घटाया जा सकता था । इस तास्ताब में बिजली के लहारे बड़े-बड़े समूही तूपान दिखाये जा सकते है ।

सातेंबम्ब में हम कई भारतीयों से भी मिले (बिन्न नं० १०८ से ११२) ।

सैंग्रामिसिस्को और पसके भास-पास

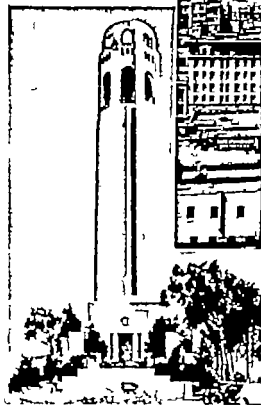
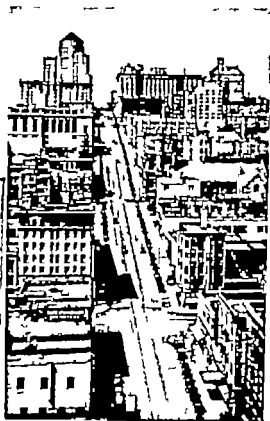
बच हमने सैंग्रामिसिस्को की भूमि पर वीर रखा उत समय बच से बहने मुझे लाता हरदयाल का स्मरल प्राया । धी हरदयाल हमारे देश के उन काम्तिकारियों में प्रधान स्थान रकते थे जिन्होंने हमारे देश की स्वतन्त्र कराने का बोका सन् १८६० के स्वातन्त्र्य-ध्द के बचम्ब बर्धप्रबन उठामा था । फिर धी हरदयाल की बुद्धिमत्ता और बिज्ञता की तुलना भी इने-विने भारतीयों से ही की जा सकती है ।

भारत प्राय स्वतन्त्र है धीर स्वतन्त्र भारत के हम नागरिक प्राय स्वतन्त्रता

बुर्बक सारे संसार का बचकर समा रहे थे। मुझे इस बात से बड़ा खेद-सा हुआ कि जिस भारतीयों ने भारत की स्वतन्त्रता का झंडा भारत के बाहर भी फूँका और जिस के कारण भारत की स्वतन्त्रता के बस में संसार का लोकमत बना तथा इस लोकमत ने भारत को स्वतन्त्र होने में कम सहायता नहीं पहुँचायी, उनमें भी हरबयाल साता साम्रपतराय तथा अन्य अनेक भारतीय प्राज्ञ नहीं हैं वे भारत को स्वतन्त्र देश भी न पाये। पर इस खेद के बाद ही मेरे मन में यह आये बिना भी न रहा कि श्रीर का धर्म ही अणुभंगुरता है। सवा कौन रहा है श्रीर इस जगत में कितनों ने अपना धर्मोप पुरा होते देखा है? इस मजबूर संसार में महत्त्व जीने को बहुत ही कम है। महत्त्व है जीवन-यापन किस प्रकार किया जाता है इसको। हरबयाल साता साम्रपतराय और उनके अनेक साथी जाड़े प्राज्ञ न हों, उन्होंने जाड़े अपने धर्मोप की सिद्धि स्वयं न देखी हो, परन्तु उस धर्मोप-सिद्धि के इतिहास में उनके तद्वर होते हुए भी उनके द्वारा किये हुए कामों के कारण उनके नाम अजर-अमर रहेंगे और यदि उनकी प्रात्मा नहीं होगी तो वह उनकी जन्म भूमि की स्वतन्त्रता के कारण असीम सुख पा रही होगी।

हम सैक्यन्तिलको भी लम्प्या को पहुँचे। हवाई घड़ई पर हमें लेने के लिए भारतीय बुतावाल के भी कपुर मोटर के साथ भीजूब थे। सैक्यन्तिलको में हमारे छह रने का प्रबन्ध भारतीय कौचसर की हुसतने एक अच्छे हौटल में किया था। हम एरोड्रोम से सीधे हौटल आये। प्राज्ञ रत के भोजन का निर्मल्ल हमें भी हुसतने के यहाँ का था। कोई ७॥ बजे भी हुसत स्वयं हमें लेने हौटल पहुँचे और मुझ पर लानकर बिसेप हबे हुआ कि भी हुसत नवाब के प्रतिष्ठ मुस्लिम नेता भी फजले हुसत के पुत्र है। यद्यपि भी हुसत से भी न दिल्ली में मिल चुका था, पर उनसे मेरा जितना परिचय था, उसकी धनेका उनके पिता से नहीं अपिच, क्योंकि उनके पिता जब भारत सरकार की एग्जीक्यूटिव कौंसिल के सदस्य थे उस समय में भी केन्द्रीय एसेम्बली का सदस्य का नहीं होना ही उनसे मेरा मिलना हुआ करता था। भी फजले हुसत पंजाब की प्रतिष्ठ मुनिबन पार्टी के सबसे बड़े नेता थे। एक समय इस पार्टी का पंजाब के राजनैतिक जीवन में बड़ा भारी स्थान था। भी फजले हुसत की मृत्यु के पश्चात् भी सिकन्दर हयात की और उनके बाद भी सिकन्दर हयात की इस बल के नेता हुए। यद्यपि यह बलों की सांघाविकता की बंध से सर्वथा रहित न थी परन्तु बाद में भी जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने सांघाविकता को जो बहुर उपलकर भारत का विभाजन तफ करा जाता वंसा बहुर उस बल में न था। यदि भी फजले हुसत और भी सिकन्दर हयात की के सङ्घ पंजाब के मुस्लिम नेता भीबित रहते तो भारत विभाजन तफ मानना पहुँचता या नहीं यह समझ ही बात है।

११३ सैन्यामिस्को के घाट
पहाड़ियों पर बसने के कारण
उसके रास्ते बड़े उतार-चढ़ाव के हैं



११४ 'फ्रिट' मीनार सैन्यामिस्को

पूर्वक तारे संतार का बन्दर लपा रहे थे। मुझे इस बात से बड़ा खेद था हुआ कि जिन भारतीयों ने भारत की स्वतन्त्रता का झंडा भारत के बाहर भी फूँका और जिन के कारण भारत की स्वतन्त्रता के पक्ष में संतार का सोकमत बना तथा इस सोकमत ने भारत को स्वतन्त्र होने में कम सहायता नहीं पहुँचायी, उनमें श्री हरदयाल, लाला लाजपतराय तथा अन्य अनेक भारतीय धाज नहीं हैं वे भारत को स्वतन्त्र देश भी न पाये। पर इस खेद के बाव ही मेरे मन में यह भावें बिना भी न रहा कि शरीर का बर्न ही अखण्डपुत्रता है। तथा कौन रहा है और इस अन्त में अन्तियों ने अपना अन्तःपुरा होते देखा है ? इस नगर संतार में महत्त्व होने को बहुत ही कम है। महत्त्व है जीवन-यापन किस प्रकार किया जाता है इसको। हरदयाल लाला लाजपतराय और उनके अनेक साथी जाड़े धाज न हों उन्होंने जाड़े अपने अन्तःपुर की सिद्धि स्वयं न देखी ही, परन्तु उस अन्तःपुर सिद्धि के इतिहास में उनके नगर होते हुए भी उनके द्वारा किये हुए कार्यों के कारण उनके नाम अजर-अमर रहेंगे और यदि उनकी आत्मा स्थाने होगी तो वह उनकी आम भूमि की स्वतन्त्रता के कारण असीम सुख पा रही होगी।

(

हम सैन्टामिस्को भी लम्बा को पहुँचे। हवाई अड्डे पर हमें लेने के लिए भारतीय हुतावाल के श्री कपूर मोटर के साथ मौजूद थे। सैन्टामिस्को में हमारे छह रने का प्रबन्ध भारतीय कौन्सलर श्री हुसैनने एक अण्डे होटल में किया था। हम एरोड्रोम से सीधे होटल आये। धाज रात के जीवन का निर्बंधन हमें श्री हुसैन के यहाँ का था। कोई ७॥ बजे श्री हुसैन स्वयं हमें लेने होटल पहुँचे और मुझे यह जानकर विभ्रम हुई हुआ कि श्री हुसैन पंजाब के प्रसिद्ध मुस्लिम नेता श्री फजले हुसैन के पुत्र है। यद्यपि श्री हुसैन से श्री प विस्ती में जिन जुका था, पर उनसे मेरा जितना परिचय था उसकी अपेक्षा उनके पिता से कहीं अधिक, क्योंकि उनके पिता जब भारत सरकार की एकत्रीयपुठिब कौन्सिल के सदस्य थे उस समय में श्री कैम्ब्रिय असेम्बली का सदस्य था, वहाँ रोज ही उनसे मेरा मिलना हुआ करता था। श्री फजले हुसैन पंजाब की प्रसिद्ध युनिफन पार्टी के सबसे बड़े नेता थे। एक समय इस पार्टी का पंजाब के राजनैतिक जीवन में बड़ा भारी स्थान था। श्री फजले हुसैन की मृत्यु के पश्चात् श्री सिक्खर हयाल जी और उनके बाव भी अखण्डपुत्रता का इस बल के नेता हुए। यद्यपि वह पार्टी श्री संप्रदायिकता की गंज से संबंध रखित न थी परन्तु बाव में श्री बिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने संप्रदायिकता का जो अहुर बमलकर भारत का विभाजन तक करा वाला बंडा अहुर उस बल में न था। यदि श्री फजले हुसैन और श्री सिक्खर हयाल जी के सङ्घ पंजाब के मुस्लिम नेता अखिल रहते तो भारत विभाजन तक मानता पहुँचता या नहीं यह सम्यह की बात है।

श्री कमलेश्वर हुसैन के सवृष बड़े बाप के घनेक सवृषुल श्री हुसैन में मीसुर थे । श्री हुसैन मुझे बड़े बिनम घोर नसे घाबरी बान पड़े । घाई छी. एस बालों में श्री हुसैन के सवृष अकलि मुझे बहुत कम मिले थे । श्री महाराज नागेन्द्र सिंह जी घोर एक-बो एते ही व्यक्तिपों का हुसैन से निमान किया जा सकटा है । श्री हुसैन के बंवलें बहुरे हम लोच भीमती हुसैन से भी मिले । बंसे श्री हुसैन से बंती ही बनकी भीमती जी भी । उनसे मिलकर तो मुझे घोर अकिक प्रतमता हुई । श्री हुसैन को पहले से ही बता दिया गया था कि हम लोच नाठ-मच्छी-मच्छा तो दूर की बात है प्याज घोर लहसुन भी नहीं खाते अतः हमारे लिए सर्वथा निरानिव बिना किसी प्याज घोर लहसुन की मंष का झुठ भारतीय डंप का दिन्नीसाहो भोजन तैयार था । बहुत दिनों के बाद हमें ऐसा अचछ भोजन करने को मिला । रात को ही श्री हुसैन साहब की राय के अनुसार हमारा सैन्धवमिस्को का कार्यक्रम तैयार हो गया । इस कार्यक्रम में सैन्धवमिस्को के बर्षनीय स्वामों की देखने के सिवा एक प्रेस कान्फेस घोर अरुं एके मसं संस्था में बर्तमान मारत पर मेरा एक सार्वजनिक भाषण भी निश्चित हुआ ।

हम लोच सैन्धवमिस्को चार दिन रहे । सैन्धवमिस्को अमेरिका का सबसे बड़ा पुरोध बगदरगाह है । यह नगर रोम के सवृष सल पहाड़ियों पर बसा है बरन्तु रोम की पहाड़ियों से इन पहाड़ियों की उंचाई-निचाई कहीं अधिक है । समुद्र तथा इन पहाड़ियों के कारण नगर के बतने का स्वत बहुत सुन्दर हो गया है । फिर नगर बसाया भी बड़ी सुन्दरता से गया है । सैन्धवमिस्को बहुत बड़ा नगर न होते हुए भी मेरे मतानुसार अमेरिका का सबसे सुन्दर नगर है (बिच में ११३ से ११७) । हम लोचों ने यहाँ को चीजें देखीं वे एक चीज को छोड़ प्रायः बंती ही बीजैती हमअमेरिका के अन्य नगरों में देखते था रहे थे—प्रजापदपर बिचघासा कु मच्छे नचन प्लैनेटैरियम घादि । जो चीजें हमने घब तक प्रायः किसी स्थान पर न देखी थी वह था यहाँ का माल बूतों का अंगल बहु अंगल अत्यन्त आश्चर्यजनक है । यहाँ बड़ ऊँचे ऊँचे बृल बाये बसते हैं। सबसे ऊँचे बृल की उंचाई ३६४ फुट से भी अधिक है । एक बृल का घेरा ४३ फुट है । यहाँ एक बाल किस्म के बृल है । जिनकी घामु लमजय तीन हजार बर्ष बतायी जाती है । इस समय को बृल यहाँ अभी भी दूरे अरे हैं वे लवमग को हजार बर्ष प्राचीन है (बिच में ११३ से १०१ तक) ।

रैडबुड फारेस्ट के सिवा हमने जो अन्य चीजें देखीं उनमें अमेरिका के कुछ घतों के फार्म थे । इन फार्मों के साथ घने अमेरिका का वैशाती जीवन भी देख लिया घोर यहाँ के कुछ निवासियों से भी मिल लिया । जपमोहनबात में मघवि इसके यहाँ भी कुछ काम देखे थे पर काम देखने का मेरा यह पहला ही अवसर था ।

प्रेस कान्फेस की ता ३० अक्टूबर को घोर उती दिन मेरा नाचल भी



११५ सैनफ्रांसिस्को का जगत्-प्रसिद्ध 'पापलॉर्ड-जे' पुल



११६ 'पापलॉर्ड-जे' पुल के सामने की सैनफ्रांसिस्को की बस्ती का एक दृश्य



११७ सैनफ्रांसिस्को के समुद्र-तट की बस्ती



११८-क रेडवुड के
कुछ विशाल वृक्ष

११८-ख रेडवुड के एक वृक्ष
का तना या १६४ फुट लंबा है



वा। ये दोनों सार्वजनिक कार्य भी मत्तो प्रति निपट पये। प्रेत काग्येन्त का वृत्त यहाँ के समो प्रबन्धनों में बड़े-बड़े धीरकों धीर बिन्नों के साथ छया। सभा में प्रब तक की अमेरिका की सब सभाओं से अधिक उपस्थिति की धीर भेरा यहाँ का न्याय भी धायर अमेरिका के मेरे समस्त भायलों से अधिक प्रबन्ध हुआ। भायल के पञ्चालु प्रमोत्तर यहाँ भी हुए। यहाँ के भायल धीर प्रमोत्तरों के उत्तरों पर की हुसैन तथा धम्य प्रनेक अमेरिकन पुस्तों धीर महिलाओं ने मुझे प्रनेक बधाइयाँ दी।

अमेरिकन राष्ट्रपति का चुनाव अभियान

हमारे अमेरिका के इस धीरे के प्रबन्ध पर अमेरिका में एक बहुत बड़ा काम चल रहा था। यह था अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव। अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव हर चौर बय होता है। अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव ४ नवम्बर १९५२ को होता था। हर चार बय बाद ४ नवम्बर को ही यह चुनाव हुआ करता है। अमेरिका की संसद् को कांस्रत कहते हैं। हमारे देश में कांस्रत एक सत्ता मात्र है। इस बयें बुकि अमेरिकी कांस्रत की लोक-सभा की (हाउस ऑफ रिप्रेजेन्टेटिव्स) सभी बयों के धीर उच्च सभा अथवा सेनेट की एक-तिहाई बयों के चुनाव होने से इस लिए प्रचार का बड़ा जोरधोर था। इसके अतिरिक्त राज्यों के गवर्नर से लेकर साबारतु म्युनिस्पाल अधिकारी तक निर्वाचित किये जाने से। इसलिए यह चुनाव धीर भी बहुत-बहुत था।

अमेरिका में केवल प्रपराधियों को छोड़ सभी बयस्क नागरिकों को मता बिकार प्राप्त है। जाति, रंग धर्म लिए अथवा धूल निर्वातियों सबकी।

अमेरिका में कई राजनीतिक पार्टियाँ हैं जो राष्ट्रपति-पद के लिए अपना-अपना प्रतिनिधि नियुक्त करती हैं। अमेरिका की दो प्रमुख पार्टियाँ हैं—डेमोक्रेटिक पार्टी और रिपब्लिकन पार्टी। यदि किसी मतदाता को मानवदानी के सम्बन्ध में कुछ भी कहना होता है तो उसके लिए पार्टी को सहस्यता प्रावश्यक होती है। बहुत से अमेरिकी किसी भी पार्टी के सहस्य नहीं हैं और किसी भी पार्टी के सहस्य के लिए यह भी धनिचार्य नहीं है कि वह अपनी पार्टी के उम्मीदवार के बस में ही अपना बोट डे।

राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार पार्टी के राष्ट्रीय सम्मेलन में चुने जाते हैं। सम्मेलन के लिए प्रतिनिधि चुनने का हरेक राज्य का अपना अपना तरीका है। तोसह राज्यों में प्रारम्भिक चुनाव होते हैं जेप बत्तीस राज्यों में प्रतिनिधियोंके चुनाव के लिए राज्य सम्मेलन होते हैं। प्रारम्भिक चुनावों में अथवा राज्य सम्मेलनों में केवल पार्टी के सहस्यों की ही मतदान का अधिकार होता है। प्रमुख पार्टियों में से प्रत्येक के राष्ट्रीय सम्मेलन में लगभग १२० प्रतिनिधि उपस्थित रहते हैं। इनके अतिरिक्त

हरेक पार्टी के ऐसे सदस्य भी इन सम्मेलनों में उपस्थित रहते हैं जो पार्टी के धीरे-धीरे प्रतिनिधि नहीं होते और जिनकी उपस्थिति से सम्मेलन में बड़ी रीतिक रहती है। इन सम्मेलनों का लक्ष्य पार्टी के सिद्धान्त और नीति प्रावि स्थिर करना रहता है।

इसके बाद प्रारम्भ होता है मतदान। सामान्यतः किसी भी राज्य के सभी प्रतिनिधि एक ही उम्मीदवार के पक्ष में भेड़ देते हैं। यदि उम्मीदवारों के बीच ज्यादा बोर का मुकाबला होता है तो एक से अधिक बार मतदान होता है। हर बार लोगों की उत्सुकता और कौतूहल बढ़ता ही जाता है। प्रतिनिधि बरैठ करते हैं और बंध प्रावि बजाते हैं। जब राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार चुन लिया जाता है तो वह सम्मेलन में अपना भावण देता है जो वास्तव में चुनाव प्राम्बोलन का प्रथम भावण होता है।

इस प्रकार उम्मीदवारों के नामजब हो चुकने के पश्चात् प्रत्येक पार्टी का चुनाव कार्यक्रम प्रारम्भ हो जाता है। उम्मीदवार देश भर का पर्यटन करते हैं। समाचारपत्रों, रेडियो और टेलीविजनों प्रावि की सहायता से उनके विचार जनता तक पहुँचते रहते हैं। हर लोग स्वयं भी उन्हें देख ले यह आवश्यक होता है। किसी विदेशी को तो ऐसा प्रतीत होता है मानो सभस्त अमेरिका बोलता उठा है। ऐसा भी जान पड़ता है कि इतने प्रबलतर पर जो कड़वाहट, गाली-गाली होती है और बीमनस्य की भावना पैदा हो जाती है वह समाज का स्थायी भग हो जायगी और उसे सदा के लिए डूबित कर देगी किन्तु ज्यों ही राष्ट्रपति का चुनाव सम्पन्न हो जाता है समाज जनता उसके सम्मान के लिए प्रावर से अपना शीघ्र नवा देती है और सारी कानिना भुस जाती है।

जैसा ऊपर कहा गया है अमेरिका में दो प्रधान राजनैतिक दल हैं—डमोक्रैटिक और रिपब्लिकन। राष्ट्रपति क्लैव्हेस्ट के समय से डेमोक्रेटिक दल के हाथ में ही अमेरिका की राजतता रही थी अर्थात् लगभग २० वर्षों से डेमोक्रेटिक दल ही अधिकार में था। इस बार राष्ट्रपति के चुनाव में बड़ा संघर्ष था। डेमोक्रेटिक दलकी घोर से भी स्वीचनतन लड़े हुए थे और रिपब्लिकन दलकी तरफ से भी प्राइसन हावर। दोनों घोर से खूब प्रचार चल रहा था।

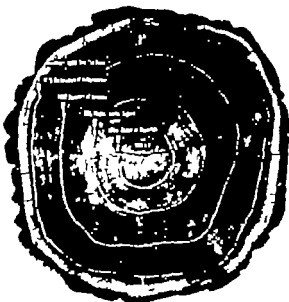
हमें यह देखकर कुछ खेद हुआ कि दोनों ही घोर के प्रचार में संघर्ष और प्राम्बोलना की अत्यधिक कमी थी। बहुत नीचे स्तर पर उतरकर बातें कही घोर छापी जाती थीं वहाँ तक कि कई बार तो गाली-गाली तक की मोबत प्रा जाती थी। स्वयं राष्ट्रपति श्री ट्रूमैन के डेमोक्रेटिक पार्टी के समर्थन के भावणों में न संघर्ष था और न प्राम्बोलना।



११८-य रेडवुड का एक विशाल बूस । इसकी विद्यालता का घन्घान इसके भीतर से मोटर निकल सकती है इससे हो जाता है



११६. रेडवुड का सबसे पुराना और मोटा वृक्ष जिसका घेरा ३३ फुट है। ये वृक्ष संसार का सबसे प्राचीन जीवित वृक्ष है। किसी-किसी की धामु तीन हजार वर्ष से अधिक है।



१२०. रेडवुड के एक वृक्ष की तुली हुई पेंदी



१२१. रेडवुड के एक वृक्ष की पृष्ठभूमि में सेवक

हमने अमेरिका के शीरे में इस चुनाव के प्रचार की देखा। चुनाव का क्या नतीजा निकलेगा इस पर लोगों से बातें कीं। सभी सदिग्ध से घोर सनी कहते थे कि करारी मुठमेड़ हूँ, जो भी जीतेगा छोड़े बोटों से।

मतदान ता० ४ नवम्बर की होने वाला था। परन्तु ४ नवम्बर को जो अपने स्वाम से अनुपस्थित रहनेवाले थे उनका मतदान ता १ नवम्बर को ही था। इस मतदान की भी समाप्त व्यवस्था ब्रैसी ही की गयी थी ब्रैसी ता० ४ के मतदान की।

लेन्कागिसको में ता १ का यह मतदान वहाँ के सिटी हॉल में था। हम लाम इधे देखने की भी गये।

यह अन्तिम वृत्त था जो हमने अमेरिका में देखा।

ता २ नवम्बर को ११ बजे दिन को हमने पन अमेरिकन लाइन के वायुयान से अमेरिका सेज छोड़ दिया।

संसार का सिर-मौर अमेरिका

आपायी कई बरों तक संसार के अधिपत्य पर अमेरिका का वास्तविक और आर्थिक शक्त का प्रत्यक्ष प्रमाण किती देश का नहीं होगा। इसका कारण अमेरिका का अन्य राष्ट्रों से कहीं अधिक शक्तिशाली होना है। अमेरिका की शक्ति के अनेक कारण हैं—उत्तरी भौगोलिक स्थिति, उसके अंदर साधन उत्तका विज्ञान औद्योगिक साम्राज्य और वहाँ की कुशल व अभिवृद्धि जनता। अमेरिका की स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद के अनेक महान् एवं योग्य कार्यकारों ने देश की बापडोर सम्हाली और उसे उन्नति के पथ पर अग्रसर किया।

अमेरिका आज एक विश्व शक्ति है। विश्व शक्ति का उत्कर्ष यह है कि अमेरिका अन्तर्राष्ट्रीय कतलों की दृष्टि में उत्तम बिना में मोड़ सकता है। विश्व राजनीति में अमेरिका की आवाज सुनी जाती है इतना ही नहीं बरन् अधिपत्य के बनाने अथवा बिगाड़ने में उसका काफी हाथ होता है। ऐसी ही विश्व-शक्ति किती समय में जर्मनी और जापान बन सके थे। अथवा यूरोप में विद्यमान द्वितीय महायुद्ध के समय ब्रिटेन और फ्रांस इन दो विश्व शक्तियों को अंतरा पंखा हो गया था। महायुद्ध में यूरोप की शक्तियों का इतना अधिक ह्रास हुआ कि अमेरिका की सहायता करने योग्य उन्नत कोई भी नहीं रह गया। स्वयं अस्त भी जो अमेरिका के समान ही एक अत्यन्त महान् शक्ति है युद्ध के पारों से काफी समय तक कराइता रहा।

युद्ध-स्थल से दूर रहने के नाते अमेरिका को यह बड़ा लाभ रहा कि उसके उन पारों का पता तक न चलता जिनके कारण अन्य राष्ट्रों का स्वतन्त्र-संचार मंदा पड़ गया था।

अमेरिका में लोगों का यूरोप से बसना १६७० में पूर्णतः बंद धारण हुआ था। इसके बाद के तीस बरों में उनकी कई विभिन्न बस्तियाँ बनीं। संयुक्त राज्य अमेरिका की स्थापना १७८३ में हुई और उस समय उसके क्षेत्रफल ८३००० वर्ग मील था। उसके बहुत कम भाग में वे लोग बसे थे। १८०३ में लुइसियाना प्रदेश के मिल जाने से संयुक्त राज्य अमेरिका का क्षेत्रफल दुना हो गया। १८१६ में स्पेन के

बलोरिका प्राप्त हो जाने के पश्चात् एटलांटिक तट की धीर का तारा प्रदेश संयुक्त राज्य अमेरिका का अंग हो गया। १८४३ से १८५३ तक के दशक वर्षों में अमेरिका का धीर भी विस्तार हुआ। १८४३ में ग्रीरेयन धीर १८४७ में मेक्सिकन प्रदेश सम्मिलित हो गये। इसी बीच टेक्सास प्रदेश भी हस्तगत कर लिया गया। १८५३ में अमेरिका का क्षेत्रफल २६ ७७ • • वर्गमील पहुँच गया था जो कि क्ल की छोड़ बाकी यूरोप के क्षेत्रफल से अधिक था। राजनैतिक धीर प्राकृत दृष्टि से बेस फिर भी पीछे था और यह अभाव पहले महायुद्ध तक बना रहा। इस युद्ध के पश्चात् अमेरिका सर्वप्रथम देशों की वंशित में आ गया। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् अमेरिका की स्थिति धीर भी सुदृढ़ पड़ने लगी किन्तु इस बार क्ल भी एक अत्यन्त शक्तिशाली देश के रूप में प्रकट हुआ और ऐसा ज्ञात होने लगा कि संसार के सर्वोच्च देश का स्थान प्राप्त करने के लिए चायब वह अमेरिका का प्रतिस्पर्धी तिष्ठ हो।

पन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक संयुक्त राज्य अमेरिका का क्षेत्र विस्तार सपन्नय पुरा हो चुका था। किन्तु १८६७ में अमेरिका ने असात्का इसलिए प्राप्त किया कि उसे क्ल से सुरक्षा का आश्वासन हो जाय। १८६८ में स्पेन के साथ सपर्थ के अन्तस्वरूप अमेरिका ने फिलीपीन, हवाई द्वीपों और प्यूरटो राइको को प्राप्त किया। इस प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका को ७ ००,००० वर्गमील इलाका धीर प्राप्त हो गया। द्वितीय युद्ध के पश्चात् अमेरिका की अन्व कई महत्त्वपूर्ण स्थान धीर सैनिक प्रकृष्टे प्राप्त हुए। युद्ध के बाद अमेरिका ने साम्यवाद निरोधक नीति पर चलते हुए जापान धीर आसपास के द्वीपों में धीर द्यूनीतिया आदि अन्व स्थानों पर सामरिक महत्त्व के प्रकृष्टे बनाने आरम्भ किये।

अमेरिका की भौगोलिक स्थिति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। उसके पूर्व में यूरोप है जहाँ संसार की एक-बीबाई आबादी है और पश्चिम में अफिरा-युबी एशिया के जापान चीन धीर भारत आदि देश हैं जहाँ बुनिया की आधी आबादी बनी हुई है अथवा आध अमेरिका के लिए यूरोप महत्त्वपूर्ण है किन्तु सम्भव है कि क्ल अमेरिका का अद्विध्य पृथिव्या में ही।

बृहदाकार होने पर भी अमेरिका आकार में सबसे बड़ा राष्ट्र नहीं है। क्ल का क्षेत्रफल अमेरिका से लगभग तीन गुना है। चीन अमेडा और जाजीस में तीनों ही संयुक्त राज्य अमेरिका से क्षेत्रफल में कुछ बड़े हैं। आस्ट्रेलिया का क्षेत्रफल लगभग अमेरिका के बराबर है। अन्व अमीन लकी अरेबों अमेडा अमेरिका, अिदिय अफगानिस्तन अन्वक, अरबीसी साम्राज्य से छोटा है। हाँ क्ल को छोड़ यूरोप के सभी देशों को संयुक्त करके भी अमेरिका बड़ा है।

अमेरिका की नदियों की अवेला बहाई के पर्वतों ने अमेरिका के राष्ट्रीय जीवन

के विकास को अधिक प्रभावित किया है। यह सर्वविधित है कि एपीसीथियन वर्षों में प्रारम्भिक बसनेवालों को पश्चिम की ओर चलने से रोक—जितना घसपन रूप से यह सान हुआ कि लोपों में राजनैतिक एकता और साठन बढ़ना सम्भव हो सका। उभर पश्चिम अमेरिका में मिलिसिपी मिलोरी मोहियो कोलम्बिया, कोलराडो और हुडसन जैसे बड़ी-बड़ी नदियाँ हैं, किन्तु उन्होंने अमेरिकी जीवन को उतना प्रभावित नहीं किया जितना कि नदियों ने अन्य देशों में किया है।

अमेरिका की जलवायु अमेरिका के लिए अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुई है। यह जलवायु समशीतोष्ण तथा नम है और पैदावार के लिए अत्यन्त उपयुक्त है।

अमेरिका के प्राकृतिक सौजन्य और उभका उपयोग करने की अमेरिका की बहुत शैलीमिक शक्ति राष्ट्र की सम्पत्ति अवस्था और उतकी पक्षसम्पत्ता के शीतक है। प्रथम महायुद्ध के बाद ही अमेरिका उन राष्ट्रों को अत्यधिक साध-पर्याप्त, धन और हथियार धारि देता रहा है जिसको उनकी प्रावश्यकता तो थी, किन्तु धनके पास अपने धान से बस्तुएं उपलब्ध करने के सामन नहीं थे। अमेरिका की अत्यन्त उपजाऊ भूमि और राज्याधिक साध-पर्याप्त धारि से वहाँ की कृषि व्यवस्था अत्यन्त समृद्धित है। केवल अमेरिका ही ऐसा देश है जिसे खेती की बहुत अधिक पैदावार होने के कारण विविधता होना बढ़ता है जब कि अन्य देश बहुत कम पैदावार होने से विविधता रहते हैं। फिर भी धारण्य होगा कि खेती अमेरिका के लोगों के केवल पौधों भाग का ही व्यवसाय है। बाकी लोग उद्योग धारि से जीविकोपार्जन करते हैं। अमेरिका की खेती बरानाहों जगलों और मत्स्यी उद्योग द्वारा अथिकांश प्रावश्यकताएँ पूर्ण हो जाती हैं।

वहाँ तक अन्न-पर्याप्तों का सम्बन्ध है अमेरिका में लोहा, ताँबा, जिंक, सीसा बहुतायत से मिलता है। गन्धक, फस्फेट और कोयला धारि भी अर्थात् मात्रा में मिल जाता है। जिञ्जली और पीत धारि की लक्ष्यता से वहाँ के कारखाने लुभाव रूप से बसते रहते हैं। एटमी शक्ति का विकास विशेष अस्मंजनीय है। वहाँ अमेरिका को मगनीय रांगा, एस्मूनीनियम अमेरियम और अश्रक का अमात्र प्रावश्य बहून करना बढ़ता है। धारि के समय में तो ये बस्तुएँ विदेशों से प्राप्त हो जाती हैं पर युद्धकाल में बाहर से सामान नैवाना कठिन ही धार के कारण विविधता गम्भीर हो सकती है।

शैलीमिक उपादान में अमेरिका संसार में सर्वोत्तम स्थान प्राप्त कर चुका है। एक स्थिर साधन-व्यवस्था के अयोग अमेरिका की शैलीमिक शक्ति संसार में सर्वोत्तम स्थिति पर पहुँच गयी है और इतने बते देश की पूर्वी धन, अन्धे मात अन्न सम्पत्ति, विद्युत शक्ति और इंजनिकल कीगत से लुभावता मिली है। शैलीमिक उपादान में उतका धारि कोई लोहा-बहुत मुदायता कर लच्छता है तो बहु केवल बस ही

लेकिन वह भी जतने बहुत नीचे रह जाता है। द्वितीय महायुद्ध में अमेरिका की औद्योगिक शक्ति इतनी स्पष्ट हो गयी थी कि अन्य कोई भी देश उसे चुनौती देने का साहस ही नहीं कर सकता था।

अमेरिका के पास सबसे अधिक ईतानिक है, सबसे अधिक शिक्षित और कुशल कारीगर हैं और सबसे अधिक ऐसे लोग हैं जो नये-नये कामों में हाथ डालने की तैयार रहते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में अमेरिका ने हाल ही में बहुत अधिक उन्नति की है। जितना भाग अमेरिका में तैयार होता है उतना प्रायः ७० प्रतिशत बिदेसी को भेज दिया जाता है। औद्योगिक विकास से अमेरिकी जीवन में कायापलट ही गयी है। मशीनों की सहायता से सबों का काम दिनों में और जिनों का काम घण्टों में करना सम्भव हो गया है। इतने मजदूरों की बेतन अधिक मिलता है और प्रबलता भी अधिक प्राप्त होता है। नवयुवकों और युवतियों की शिक्षा की विशेष सुविधाएँ मिल सकी हैं। जीवन में एक नया अनुभव और एक नयी तरंग पैदा हो गयी है। सरकार के लिए अधिक कर लेना सम्भव हो गया है। इसीलिए विकास के मार्ग तर्बन्त खुल गये हैं। एक या दो जगहों को छोड़ क्या है कि अमेरिकी लोग संसार में सबसे सुखी सुखहाल और भाग्यवान हैं।

जहाँ तक परिवहन शक्ति का सम्बन्ध है सभी तरह की सुविधाएँ हैं। तकड़े शक्ति बहुत सुन्दर और प्रबली बनी हुई है। जलमार्ग भी प्रबल है। वायुयान परिपक्व में भी अमेरिका किसी से पीछे नहीं है और वहाँ निरन्तर प्रगति हो रही है।

सारे अमेरिका में समुन्नत नगर हैं।

१९४ में जनगणना के अनुसार लगभग ७॥ करोड़ अमेरिकी नगरों में बात करते हैं। अमेरिका में १ लाख से अधिक की आबादी वाले ९२ नगर हैं। अमेरिका के १० प्रमुख नगरों के नाम इस प्रकार हैं—

न्यूयार्क शिकागो फ्लिडडेल्फिया, डेट्रायट सार्सेजस न्यूयॉर्क वाशिंगटन सेंट मुई बोस्टन और फिट्सबर्ग।

वर्तमान युग में जब कि संसार में तीन बड़ी शक्तियाँ मानी जाती हैं उस और अमेरिका में प्रतिबोधिता चल रही है। उस पुरानी दुनियाँ का सबसे अधिक शक्ति धारणी देश है और अमेरिका नयी दुनियाँ का। ब्रिटेन जो इन दोनों के मुकाबले का तो नहीं है किन्तु फिर भी बड़ी शक्ति माना जाता है औद्योगिक दुष्टि से उस के अधिक समीच होते हुए भी अमेरिका से अधिक सहयोग करता है।

यद्यपि पिछले महायुद्ध के पश्चात् राष्ट्रसंघ की तरह संयुक्त राष्ट्र की स्थापना की गयी थी जिससे कि शांति-भंग न होने पाये और महायुद्ध की पुनरावृत्ति न हो लेकिन वेता विदित कुछ ही समय पश्चात् कोरिया की समस्या उठ खड़ी हुई, जो

यद्यपि भारत के प्रपत्नों के बाव मुलम्बी तो है लेकिन धनी भी पूरी तरह समाप्त नहीं हो पायी है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस समस्या के इस हद तक उभरने जाने का कारण यह है कि इसमें बड़े राष्ट्रों की बिलबली है और वे प्रत्यक्ष रूप से इसके पीछे हैं। कोरिया की समस्या से जो राष्ट्र प्रमुख राष्ट्रों की पंक्ति की ओर घुसते होते दिखायी दे रहे हैं वे हैं—जापान और भारत। जापान और भारत तरह-तरह कोरिया में लड़ा और उसमें जिस तरह धनी खरिद का बरिचय दिया उससे संसार के देश-दार्तों-तले उँवली हवाकर रह गये हैं। उधर ईशियन कृषि से भारत ने बड़ी प्रतिष्ठा पायी है और बते जातिका लक्ष्य समर्थक समझ जाने लगा है। इसके उबरान्त तो केवल एक ओर खरिद उसनेकनीय रह जाती है और वह है फ्रांस। ती फ्रांस न ती धनी सामर्थ्य के कारण ही अपितु बिबाल पैदा करता है और न धनी नीति के कारण ही। इन्डोचाइना द्धनीसिया मोराको घादि के सम्बन्ध में धनी नीति के कारण उधे तिरस्कार ही अधिक मिलता है। फ्रांस की चलना यदि धान बड़ी शक्तिपों में की जाती है तो वह केवल इसलिये कि वह काफी घसें तक एक बड़ी धनित रहा है और अमेरिका व ब्रिटेन उधे धनी नी बड़ी धनितपों में बनाये रवाना चाहते हैं।

धनें मुख्य विषय अमेरिका पर लौटते हुए से यही कहना चाहता हूँ कि यद्यपि अमेरिका धान संसार का तिर-नीर बना हुआ है किन्तु उसका यह स्थान इसके लिये एक कमीडी है। केवना तो यह है कि अमेरिका संसार में धनित बनाये रखने, कम उन्नत देशों की लक्ष्य स्वस्थ बनाने, पीड़ित मानवता का कष्ट-निवारण करने में कर्तुं तक योग्य होता है। साम्यवाद के निवारण के लिये अमेरिका धान इयकता से अधिक धनित जान पड़ता है और कभी-कभी ऐसा जान पड़ता है कि धनी कोसलाहट में अमेरिका कहीं गसत कदम न उठा ल। लेकिन मेरा मत है कि अमेरिका को साम्यवाद से कोई घतरा नहीं होना चाहिए। धनरे की बस्तु ती संसार के देशों में धनाध भूक, रोम और कष्ट घादि का बिद्यमान रहना है। यदि अमेरिका ने रचनात्मक कृषिकोस धनितकर इन्हें दूर करने का कुछ निबधय दिया तो उसकी लक्ष्यता निरन्तरक है इसमें सन्देह नहीं होना चाहिए। मेरे बिचार में जो कृषिकोस अमेरिका के लिये उचित है वही बत के लिये भी धेयकर है। यदि ये दोनों महान् राष्ट्र प्रतिस्पर्धा छोड़कर बिब के कम्पाल के लिये रचनात्मक कार्यों में लव धर्म ती मानवता का धारा कष्ट ही दूर हो जाय और संसार लक्ष्य होकर जीता-जायता स्वस्थ बन जाय। अमेरिका की तीन मेरे लरकारी धनार्थ संघार्थ—कोई कष्टकरोस रोक केनर कष्टकरोस और कार्नेवी निधि, बिबकी बर्षा इन विद्यने धन्याय में कर धाये ह इसी विद्या में प्रयत्नधीन है—ऐसा मेरा मत है और उनके

कार्य की नै साराहणीय समझता है ।

परन्तु इस सम्झाव को एक बात धीर कहे बिना पूरा करना क्याचित् अमेरिका की स्थिति का लब्धा दिग्दर्शन कराये बिना अमेरिका का बख्श पूरा कर डालना होमा । अमेरिका का सारा जीवन देखकर मेरे मन पर यह प्रभाव भी पड़ा है कि वन धीर आधिभौतिक सुखों के पतिरेक से को एक प्रकार का पतन प्रारम्भ होता है यह भी अमेरिका में घुस हो गया है । इसका एक छोटा-सा प्रमाण है अमेरिका के 'ओवरल स्पूरो थॉऊ इनबंस्वीमेगन' के डायरिबठर भी के एडगर हूबर द्वारा प्रकाशित सन् १९५३ की पहली सम्झाही में अमेरिका के अपराधों की सूची । इस सूची में बताया गया है कि इन छः महीनों में अमेरिका में दस लाख संतामीस हजार को ली मग्ने बड़े अपराध हुए, हर ५० ३ निमिड पर एक बूग हर २६५ निमिड पर एक बलात्कार हर ५८ निमिड पर एक डाका हर ३७१ निमिड पर एक चोरी इन प्रकार हर १५६ संकिड पर एक बड़ा अपराध । इसी रिपोर्ट में यह बताया गया है कि अपराधों की यह संख्या बढ़ रही है ।

अमेरिका को अपने भौतिक चरित्र की धीर ध्यान देने की धीर इस धीर अत्यधिक लतक रहने की नितात आबाधकता है । जिनका यह मत है कि परीबी ही सारे अपराधों का कारण है वे अमेरिका के इन अपराधों की धीर बुद्धिपात करें अपराधों की बड़ है अर्थात्कता यह जाहे धमीरी में ही या परोबी में ।

किर इतना सम्झन रहते हुए भी अमेरिका भाबी युद्ध के मय से काँप रहा है । यह भी लतक जीवन में सर्वत्र बुद्धिपोकर होता है ।

हवाई द्वीपों में दो दिन

ता० २ नवम्बर को प्यारह बजे दिन के लगभग हमारा हवाई जहाज सेन्टान्तिस्को से होनोलुलु की ओर उड़ा। भारत से लौटते आते हुए मग्न से माइयल पहुँचने में एरलाइन्स महासागर को पार करने समय ही इत सीरे की सब तक की सबसे बड़ी उड़ान हुई थी। सेन्टान्तिस्को से डीकियो की उड़ान में प्रथम महासागर को पार करना पड़ता है। यह उड़ान एरलाइन्स महासागर को पार करने वाली उड़ान से कहीं लम्बी थी और सेन्टान्तिस्को से होनोलुलु की उड़ान को बिना बीच में कहीं टहरते हुए जो संसार को बिना बीच में कहीं टहरते आते उड़ानों में सबसे लम्बी। कीई २४ • मील की उड़ान की जिसमें पीने बस घण्टे के लगभग लफ्ते थे।

चार ईंधन वाला वैन अमेरिकन लाइन का हमारा वायुयान कुछ बड़ा और सुविधाजनक था। एअर कम्प्रीशन होने के कारण पत्रह हजार फुट ऊपर उड़ जाने पर भी वायुयान के भीतर का वायुमण्डल बंता ही जा जाता उस समय या जब वह क्षीण से उड़ा था। फिर बाहर किसी तरह का दृश्य प्राप्ति न था अतः इतनी लम्बी उड़ान होने पर भी बिना किसी कष्ट के ठीक समय हम होनोलुलु पहुँच गये। यद्यपि हमारी उड़ान में पीने बस घण्टे लगे परन्तु होनोलुलु का समय सेन्टान्तिस्को से दो घण्टे पीछे रहने के कारण होनोलुलु के इत समय पीने सतत ही बने थे।

होनोलुलु के हवाई घाटों पर बाजियों के स्थापत्य बड़ी भारी मीठ जमा की और यह भीड़ जर्मनों से चरित्रावित थी।

होनोलुलु हवाई द्वीपों में से एक पर बसा हुआ है और यद्यपि यह अमेरिका का हिस्सा नहीं है तथापि इस पर अधिकार है अमेरिका का। इसका कोशी महत्व भी है। यहाँ है प्रसिद्ध कीर्ति बर्ले हार्बर पर कीर्ति महत्व के अन्तर्गत यह है अमेरिका निवासियों की बिहार-भूमि। इसका कारण है हवाई द्वीपों का प्राकृतिक क्षेत्र हीर कुछ उच्चता सिधे हुए पहाड़ों की हवा। हवाई प्राइमरीज्म अमेरिका का नाम का बाहे कोई बने हो पर भी तो हवाई द्वीपों का यह अर्थ कर लेना है कि जहाँ की हवा बड़ी शक्तिशाली है। अमेरिका-निवासी यहाँ आते हैं कुटुंबी बनाने तथा

विवाह के बाद 'हनीमून' के लिए। यहाँ आकर के खूब घूमते। यहाँ समुद्र में नहाना तथा यहाँ ही समुद्र की रेत पर पड़े-पड़े खूप का सेवन करते हैं। जो यहाँ बिहारे करने आये हुए वे वे ही आये वे उनका स्वागत करने जो इसी प्रकार का बिहारे करने आ रहे थे। स्वागतार्थ आने वाली जगता में इसीलिए जमों थीं। सब तक यहाँ पात्री घास्ति से बापुमान में बैठे हुए आ रहे थे वे भी इन जमों की देस उत्सहित ही उठे। उतरते हुए यात्रियों की पैर घनेरिक्म लाइन बालों में एक-एक पुष्प पहनाया थीर स्वागत के लिए आये हुए लोगों में जो जितका स्वागत करने आया उठे। मुना यह कि यहाँ आनेवालों का सवा पुष्पहारों से इसी प्रकार स्वागत होता है।

हमारे यहाँ ठहरने का प्रबन्ध यहाँ के एक प्रतिष्ठित होटल 'माघोना' में हुआ। यहाँ ने भारत के एक प्रतिष्ठित व्यापारी श्री बाबूमल को लिखकर कराया था। रात का घेजेरा सब धोर खोल गया था। बिना भर की मात्रा की कुछ बचान भी थी। घत आग रात को घब हमने धीर कुछ न कर होदल में ही बिधाम करने निरक्षय किया।

जब प्रातःकाल हम उठे तब हमने देखा कि सारा प्राकृतिक दृश्य एकदम बदल गया है। यूरोप, अमेरिका की उद्विज लुधि यहाँ न थी। यहाँ की लुधि भी भारत से मिलती-जुलती। नारियल सुपारी, आम न आने कितने प्रकार के भारतीय फलों के यहाँ बर्धन हुए। भारत छोड़े हमें तीन 'महीने' के कुछ उठे हुए थे पर जान पड़ता था जैसे क्यों बीत गये हैं। भारतीय तब धीर भला-गुस्मों के देस भारत से आनी भी बहुत दूर रहने पर भी जान पड़ा जैसे हम भारत में नहीं। भारत के समीप घबगम पहुँच गये हैं, धीर यद्यपि हमें किसी ने न देस निकाला कि या न हम यहाँ खैर ही वे स्वयं आने वे इस पुष्पी-नरिक्मा के लिए, पर घब हम भारत के बिच्छे हे यह अनुभव कर हमें कितना आनन्द हुआ। अघान्त महात्मा पर लीड्री डीपों में भी ये इसी प्रकार की उद्विज लुधि के बर्धन कर चुका था। यहाँ भी मैंने घालों पर भीर धीर कम तथा भीमरी के बुध भी देखे थे। अघान्त महात्मा के ही इन हवाई डीपों में हमें भारत के बाहर पुन बैसो ही भारतीय उद्विज लुधि बर्धन हुए। इस भारतीय उद्विज लुधि के सिवा भी प्राकृतिक दृधि से हवाई डीपों लखनूच बड़े सुन्दर हैं। चारी धीर सहरता हुआ समग्र धीर बीच में खूब हरे रंग में हीन।

हवाई डीपों के विवासी सुपारी आकर्षक वस्तु थी। भारत के विवासीयों समुद्र ही बर्धे तथा रूप में भी भारतीयों से कुछ मिलते-जुलते।

कि इन द्वीपों की प्राथमिक प्रायः प्रचानताया तीन शरियों से है—पत्तों की खेती तथा अन्नकर का उत्पादन प्रचानता की खेती और पात्रियों का प्रायमन । इनमें पात्रियों का प्रायमन भी कम महत्त्वपूर्ण न था ।

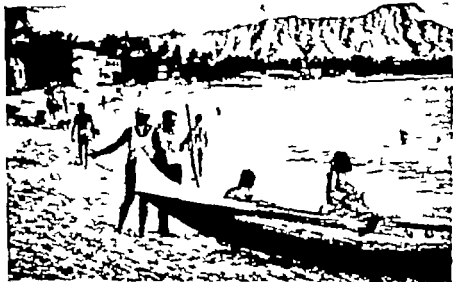
हुवाई द्वीपों की धर्म-व्यवस्था का प्राकार मजबूत है । यहाँ का सबसे बड़ा उद्योग चीनी-उद्योग है । पिछले सौ वर्षों से यह उद्योग हुवाई द्वीपसमूह की धर्म-व्यवस्था का मूलप्राकार रहा है । औद्योगिक प्रायः और राजस्व की दृष्टि से भी चीनी-उद्योग सर्वोपरि है । १७७७ में जब कप्तान जेम्स कुक ने पश्चिमी द्वीपों को हुवाई द्वीपों की जानकारी करायी थी तब भी यहाँ मत्स्य पर्वण होता था लेकिन पत्तों की खेती १८३७ में प्रचानता पा गयी । प्रति वर्ष सारे अमेरिका में अतिनी चीनी तैयार होती है उसकी एक चौथाई हुवाई द्वीपों में होती है और इस चीनी के कोई सारबे भाग का उपयोग समुद्रत राज् अमेरिका करता है ।

दुसरा स्थान प्रचानता उद्योग का है । पिछले पचास वर्षों से चीन के द्वीपों में प्रचानता भरकर बाहर भेजा जाता है ।

तीसरा स्थान पात्रियों के प्रायमन का है । सारे वर्ष भर हुवाई द्वीपों की ऐसी मनमोहक अलवायु रहती है कि बराबर पात्री प्राते रहते हैं । पिछले पचास वर्षों से सैर के लिए जानेवाले पात्रियों की संख्या बहुत बढ़ गयी है । १८३१ में ७८ ७३६ पात्री प्राये और उन्होंने यहाँ पर साढ़े तीन करोड़ डालर से अधिक धर्म किया । इसी से प्रचानता लगाया जा सकता है कि पात्रियों के प्रायमन का यहाँ की धर्म-व्यवस्था में क्या स्थान है । प्राथमिक पात्रियों को आकर्षित करने के लिए यहाँ उपाय भी किये जा रहे हैं । यहाँ हमने जिन पात्रियों को देखा उनमें अर्धिकांश अमेरिकन थे प्रायः सभी संप-बिरंगी बुधार्थ पहने हुए । कई धर्म तो ऐसे थे जिनकी पुत्र्य और महिला के एक से बस्य थे । महिला की ड्रेस का रंग-पिरंगा, जित्त नमूने का कपड़ा उसी रंग और उसी नमूने का पुत्र्य का बुधार्थ । फिर ऐसे पुत्र्यों और महिलाओं की संख्या भी कम न थी जो महाने के यूरोपीय डंग के म्यून-से-म्यून बस्य पहने हुए स्त्री-पुत्र्य साथ-साथ महलते तथा समूह की बानू पर बड़े-बड़े म्यून-स्नान करते ।

ज्यों ही हम नित्य-कर्मों से निवृत्त हुए त्यों ही यी बादूनन और उनकी धर्म रिक्त धर्मवली हम से मिलने तथा होनोलुलु के मुख्य-मुख्य बुधय हमें दिखाने के लिए जा पहुँचे । होनोलुलु हम को दिन रहे । यी बादूननजी के साथ तथा स्वयं ईश्वरी पर भी हम यहाँ खूब घूमे ।

होनोलुलु हुवाई प्रदेश की राजधानी है । होनोलुलु की सरकारी इमारतें क्रिप स्टीट पर बनी हुई हैं । हुवाई साम्राज्य के दिनों का पिछला शाही महल वर्धनीय है । समुद्रत राज् अमेरिका भर में महल यदि कोई है तो निर्य यही । इन दिनों इस महल



१२२ हवाई के समुद्र-तट का एक दृश्य



१२३ हवाई के प्रसिद्ध भारतीय उद्योगपति श्री बादराम घोर उनकी अमेरिकन पत्नी के साथ मेजरल घोर अयमोहनदास



१२४ हवाई में पत्तागाम का एक खेत



१२५-१२६ 'हनु' गाय के कुछ दृश्य



में जैसे प्रबन्ध अधिकारियों के इस्तर है। सिंहासन भवन अब भी यों का त्यो सुर भित रखा गया है। गवर्नर का इस्तर मूल के उस कमरे में है जो पिछले सभ्याद का समय-काल था। पिछले साभ्याग्य के संतर भवन में इन दिनों ग्यायालय है। इसका निर्माण १८७४ में हुआ था। सभ्याद कावेहावेहा की मूर्ति पर कोरोपाकरी की भीड़ रहती है। हवाई के गवर्नर का निवास-स्थान बागिगदन वेनेस है। बर्तानिया स्कुट पर महारानी अस्पताल है। इसी तड़क पर होनोमनु कला-भवन है। इसमें बुनियाद भर की कला-कृतियाँ रखी गयी है।

नू घानू घाटी उन लड़ाइयों के लिए प्रसिद्ध है जो हवाई सभ्यादों ने इस डीप पर नियन्त्रण रखने के लिए लड़ी थीं। इसी घाटी में माही मकबरा है जहाँ कावेहा-वेहा सभ्यादों के सब बफनाये गय ह। नू घानू घाटी के अन्त में कूना बर्त खेली में एक बिचित्र संवि-स्वत है जो अच्यय ही बर्तनीय है।

होनोमनु के सुम्बर लमुइ-सद का नाम बाइकीकी है। यह सत प्रवेश घनाबाई नहर के मुहाने से डाइमण्ड हैड तक फैला हुआ है और तीराकी नौका-बिहार तथा नकली पकड़ने का केंद्र है। होनोमनु के बाजारों में भी कुछ रौनक रहती है। बूछाने लड़कों घादि यवेय कप से लाक-मुबरी है।

उबयुंलत बस्तुओं के तिबा होनोमनु में हमने हूसा मृत्य भी देखा तथा मय के तिबा हमने उनकी हवाई भावा में उनका गान भी सुना। उनकी भावा न जानने के कारण यद्यपि उनका गान हमारे लय में न घामा तथापि मृत्य का अंग घीर बाघ तथा गान की ध्वनि हमें भारतीय मय के अंग घीर ध्वनि से कुछ बिसते-मुलते जान पड़े।

यहाँ पर हवाई भावा के विषय में कुछ सब कहना उचित होया। हवाई भावा में कुल बारह अक्षर हैं। यह स्वर प्रमाण भावा है और स्वर एक बूछरे से मुल मिलकर भावा की अत्यधिक संवीतमय एवं अपुर बना देते हैं। हवाई भावा के अति रिक्त अब हवाई डीपों के अधिकार्य अहुरों कसों घीर पाँचों में अंगेजी भावा बोनी जाने लगी है किन्तु अंगेजी का उच्चारण कुछ बिससत होता है। अंगेजी भावा ने हवाई भावा के कुछ सब भी गहूर कर लिये हैं उदाहरण के लिए 'नी' पुञ्जहार के लिए।

अब हूला मय पर घाता है। इन मृत्य में कबिता संवीत घीर अभिनय का अपूर्व मिश्रण रहता है। प्रेम मुद्ध घीर रीति-रिवाज के बिचल इस मृत्य द्वारा किये जाने हैं। प्राचीन काल में हूला मृत्य बायिक क्रिया-कलाप का ही एक अंग था और केवल अश्वत्त पट कलाकार ही इतने भाव लेते थे जो निरन्तर अम्पास द्वारा इनकी कला में पारंगत हो जाते थे। बर्तमान समाज में कोई भी हूला मय लीक सफल है। इन मय द्वारा मीन की अभिनय द्वारा मन्वर किया जाता है। हाथ-वीर

पृथ्वी-परिक्रमा

की क्रियायें लीची-सादी होती हैं न इनमें भारतीय नृत्यों-की-सी पक्कता है और न वही अद्विजता ही ।

होनोलुलु बड़ा बर्हुया स्थान है सभी चीजें बड़ी मर्हनी हैं । एक ही बुष्टास से इस मर्हुमाई का प्रग्वाज ही जायया । भारत में भी पुष्यहार बार घाने से आठ घाने तक में मिलते हैं उनकी कीमत मर्हु है एक डालर से तीन डालर तक यर्वात् पाँच रुपये से बरह रुपये तक ।

हवाई द्वीपों के सम्बन्ध में दो चार बातें और

हवाई द्वीपसमूह को प्रशांत सागर का स्वर्णसोप कहा जाता है। दुनियाँ में प्रथम ऐसा सुन्दर द्वीपसमूह ज्ञात नहीं है। संयुक्त राज्य अमेरिका की जनता को हवाई द्वीपों के सौन्दर्य का बोध कराने वाला पहला व्यक्ति प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक मार्क ट्वैन था। यह लेखक १८६६ में यहाँ आया था और इसने हवाई द्वीपों के सम्बन्ध में लेख तथा कहानियाँ लिखी थीं।

हवाई द्वीप कई बातों के लिए प्रसिद्ध है जिनमें कुछ ये हैं—जलवायु, सुन्दर समुद्र-तट, विशाल ज्वालामुखी प्रचुर जनसंख्या जनतु और मधुर फल जिनमें अनामस प्रमुख है। हवाई द्वीप उत्तर-पश्चिम से लेकर दक्षिण-पूर्व तक बड़े हजार मील की लम्बाई में फैले हुए हैं। भूगर्भ शास्त्र के ज्ञानकारों ने यहाँ के विशाल ज्वालामुखी पर्वतों को शांत बताया है किन्तु दर्बक को ये विशाल पर्वत काफी खतरनाक प्रतीत होते हैं। मानना लीजिए दुनियाँ के सबसे बड़े ज्वालामुखी पर्वतों में पिनो जाता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका की मुख्य भूमि से हवाई द्वीप दो हजार मील दूर है। राजनीतिक दृष्टि से ये द्वीप १८९८ से ही संयुक्त राज्य अमेरिका के अंग हैं और तभी से इन द्वीपों को प्रशांतसागर में अमेरिका की रक्षा-संरक्षित माना जाता है।

हवाई द्वीपों की जनसंख्या पाँच लाख के कुछ ही कम होगी। हवाई के मूल निवासी पोलिनीशियन हैं जो काकेशस, मंगोल और मीरो जातियों के मिश्रण से उत्पन्न माने जाते हैं। पकिस्तान प्राकारी दक्षिण के प्राठ बड़े-बड़े द्वीपों में हैं जिनके नाम हैं—हवाई, मापूई मोसोकाई लानाई काहूसावे घोहू काऊप्राई और नीहूआऊ। यद्यपि हवाई द्वीप अब सभी तातों द्वीपों की मिलाकर नौ बड़ा है राजनीतिक दृष्टि से घोहू का स्थान सर्वोच्च है। वहीं सबसे बड़ा बन्दरगाह पल हार्वर है और वहीं हवाई द्वीपों की राजधानी होगीलानु है।

हवाई द्वीपों का क्षेत्रफल ६,४३२ वर्ग मील है। एक हजार किस्म के फूल बीजे और फल ही यहाँ ऐसे होते हैं जो दुनियाँ के और कहीं कहीं नहीं होते। इन द्वीपों में पाये जानेवाले ताँबे बहुरीसे बहो होते और यहाँ के समुद्र में मितनेवाली कई

मछलियों का भक्षण करववाली किस्म की नहीं होती।

होनोलुलू इन द्वीपों में प्रवेश करने का द्वार है। जैसे जो पूर्व से पश्चिम जाने जाने वाले जहाजों के ठहरने का यह मुख्य केन्द्र है। उपरत राज्य अमेरिका का पहला महान् तराक होनोलुलू का ही था।

यहाँ हवाई समय का उल्लेख करना अत्यन्त न होना। इन सबों का विशेष प्रश्न है जो हमारे 'हिम्नुस्तामी बस्त' के प्रश्न से मिलता-जुलता है। यहाँ जलनेवाले जब अमेरिकी या विदेशियों को कई बार हवाई समय का प्रश्न न जलने के कारण बड़ी बरेघानी उठानी पड़ती है। बहुधा यह होता है कि जिस समय के लिए किसी व्यक्ति को निर्धारित किया जाता है उसका कभी पालन नहीं किया जाता। कई बार जब भोजन के लिए निर्धारित कोई मेहमान ठीक समय पर पहुँच जाता है तो देखता है कि वहाँ कुछ भी तैयार नहीं है। इस तरह हवाई समय मजाक की वस्तु बन गया है।

हवाई द्वीप के निवासी अपनी पोशाक धारि के सम्बन्ध में बहुत लज्ज नहीं यहाँ तक कि वे काकी भावरबाड़ी बरतते हैं। भारत की तरह यहाँ भी शोभ रक्तों को बिना कोट धारि पहने जाने जाते हैं। मुचक-मुचतियाँ तो बीजाणु घोर वैप्रभूवा की घोर घोर भी कम ध्यान देती हैं। बच्चे प्रायः तौर पर लगे वीर स्कूल जाते हैं। इस बुद्धि से भी भारत घोर हवाई द्वीपों के जीवन में कभी अमानता है।

तरने का हवाई द्वीपों के जीवन में प्रथम प्रत्यक्ष नमूना है। जिस व्यक्ति को तरना नहीं पसन्दा उसका हवाई द्वीपों में रहना उक्त व्यक्ति के समान है जो काम बन्द कर तिनेमा हाल में कोई तरबीर देख रहा हो। मनोहर कलबादु के धर्मिण्य वहाँ का जल उद्योग घोर धाकधक होता है। अपहू जम्हू समुद्र के किनारे लोगों के तरने के स्वप्न बने हुए हैं वहाँ तर करने के लिए जाने वाले व्यक्ति लकड़ों घोर हजारों की संख्या में मोज उड़ते हैं।

यहाँ के लोगों का पुष्प प्रेम भी उतना ही निराला है। ही लक्ष्य है कि इसका कारण यह हो कि हवाई द्वीपों में वर्ष भर बून बिलते हैं। एक विशेष प्रकार के पुष्प-हार बनाना यहाँ की प्राचीन कला है। ये पुष्प-हार पुष्पों घोर मिश्रणों द्वारा बड़े बाब से पहने जाते हैं घोर लुम्बरतम भुंजार जाने जाते हैं। हुला नृत्य भी पुष्प-हार पहनकर किया जाता है। ये पुष्प हार बून को मुँहकर इस प्रकार बनाया जाता है कि गहक के चारों घोर तिरकर शरीर का ही एक प्रंग प्रतीत होने लक्ष्य है घोर महिलाओं के लीन्य को बहुत धमिक बढ़ा देता है।

हवाई द्वीपों का बस्ता १७७७ में कप्तान कुक ने लगाया था। उससे पहले हवाई द्वीपों के इतिहास के सम्बन्ध में बहुत कम जानकारी है। प्राचीन समय में हवाई द्वीपों

में निरङ्कुश एकतन्त्र स्थापित था। कामेहामेहा दासक राज्य करते थे। समाज जन साधारण थीर दासक वर्ग में विभक्त था। दासक वर्ग लोग ब्रेली के होते थे— राजबंराने का वर्ग परम्परागत राज्यपाल बनने वाला वर्ग थीर पाँचों भाद्रि का प्रबिकारी वर्ग। तिली प्रकाशनी के शासन-काल में संयुक्त राज्य अमेरिका ने घमें रिक्कीवी की जान मात की रकाके लिए हस्तक्षेप किया। १८६१ में यहाँ अणराज्य की स्वतन्त्रता की पयो थीर पी बोल राष्ट्रपति बने लकिन हवाई में उनके बाद कोई थीर राष्ट्रपति नहीं हुआ क्योंकि ११ अक्टूबर १८६८ को अमेरिका ने ये द्वीप अपने अधिकार कर लिये।

अब हवाई द्वीपों का राजनीतिक लभ संयुक्त राज्य अमेरिका के एक राज्य का दर्जा प्राप्त करना है। प्रसीडेंट ट्रूमन अमेरिका के ऐसे पहले राष्ट्रपति थे जिन्होंने हवाई द्वीपों को राज्य का दर्जा देने का समर्थन किया था। २१ जनवरी १९५९ को उन्होंने काँग्रेस से एक संदेश में अनुरोध किया था कि हवाई द्वीपों को औरत ही राज्य का रूप देकर अमेरिका घुनियम में शामिल कर लिया जाए। १९५९ में बयालीशो काँग्रेस में लोक-सभा की अग्रम्य बहु विधेयक सेनेट में रखा गया।

इन द्वीपों का नया राज्य बना देना सर्वथा उचित होया।

मछलियाँ प्राद्वनियों का बलाप करनवालो किस्म की नहीं होतीं ।

होमोलुसू इन द्वीपों में प्रवेश करने का द्वार है । जैसे जो पूर्व से पश्चिम घाने जाने वाले बहानों के ठहरने का यह मुख्य केन्द्र है । सपुस्त राज्य अमेरिका का बहाना महान् तराक होमीनुसू का ही था ।

यहाँ हवाई समय का उल्लेख करना असंगत न होना । इन धर्मों का विधेय धर्म है जो हमारे 'हिम्बुस्तानी कर्त' के धर्म से मिलता-जुलता है । यहाँ प्रागवाले नये धर्मरिची या बिदेसियों को कई बार हवाई समय का धर्म न जानने के कारण बड़ी बरोशानी उठानी पड़ती है । बहुतबा यह होता है कि जिस समय के लिए किसी व्यक्ति को निर्मजित किया जाता है उसका कभी पालन नहीं किया जाता । कई बार जब भोजन के लिए निर्मजित कोई मेहमान ठीक समय पर बसुंज जाता है तो देखता है कि वहाँ कुछ भी तैयार नहीं है । इस तरह हवाई समय मजाक की वस्तु बन गया है ।

हवाई द्वीप के निवासी अपनी पोशाक आदि के सम्बन्ध में बहुत सज्जय रहते, यहाँ तक कि वे काकी आपरबाही बरतते हैं । भारत की तरह यहाँ भी लोब बस्तरों की बिना लोड आदि रहने वाले जाते हैं । बुबक-युवतियाँ तो पोशाक और बैज्ञान्य की ओर और भी कम ध्यान देती हैं । बच्चे धाम तीर पर नंगे पैर स्कूल जाते हैं । इस दृष्टि से भी भारत और हवाई द्वीपों के जीवन में काकी समानता है ।

तरन का हवाई द्वीपों के जीवन में प्रथम प्रलय महुरव है । जिस व्यक्ति को तरना नहीं आता उसका हवाई द्वीपों में रहना उस व्यक्ति क सामान है जो कान बन्द कर तिनेना-होम में कोई लखीर बेक रहा हो । मनोहर जलवायु के अतिरिक्त यहाँ का जल पट्टा भीर प्राकषक होता है । जबह जगह समुद्र के किनारे लोगों के तरने के स्थल बने हुए हैं जहाँ तर करने के लिए घाने वाले व्यक्ति लकड़ों और हजारों की संख्या में मौज उड़ाते हैं ।

यहाँ के लोगों का पुष्प-प्रेम भी उतना ही गिराला है । ही लकटा है कि इसका कारण यह ही कि हवाई द्वीपों में बर्ष भर बून झिलते हैं । एक विधेय प्रकार के पुष्प-हार बनाना यहाँ को प्राचीन कला है । ये पुष्प-हार पुष्पों और फिरीयों द्वारा बड़े बाध से पहने जाते हैं और पुष्परतम भूषार घाने जाते हैं । हुना नृत्य भी पुष्प-हार पहनकर किया जाता है । ये पुष्प हार कुलों की गूँफर इस प्रकार बनाया जाता है कि गदन के बायीं और निचरकर गरीर का ही एक धर्म प्रतीत होने लभता है और पहिसापी के लोन्वर्ध को बहुत अधिक बढ़ा देता है ।

हवाई द्वीपों का पता १७७८ में जपान बुरु ने लगाया था । उतसे पहले हवाई द्वीपों के इतिहास के सम्बन्ध में बहुत कम जानकारी है । प्राचीन समय में हवाई द्वीपों

ने तब उनकी बीड़ के कारण हुआ जहाज की पति का पता खेत बाबल मिल जाते और कभी-कभी समुद्र में भी सफ़र । शुभ मेघों तथा तित क्रमियों में पूर्व की किरणें प्रकट होकर आती हैं ।

जब हमारा हुआ 'जहाज बिक्रमसिंह' पर उतरा । हीनोत्तम है कि बीच में वेदोंत जाहि लेने के लिए हुआ जहाज का यहाँ रुकता है ।

जहाज प्रयाग महासागर में एक छोटा-सा द्वीप है । हुआई भूखंड के पश्चिम में और कुछ नहीं है । हुआई भूखंड से सम्बन्ध रखने वाले लोग और जहाँ से सम्बन्धित कुछ मकान जाहि है । हाल ही में कुछ महीने बहुत बड़ा सूखान प्रायाग का जिलेके कारण इन मकानों के ऊपर से और वे समस्त मकान बड़ी ही अस्त-व्यस्त अवस्था में थे । प्रकृति । कोप भी मनुष्यकृत-वस्तुओं को किस प्रकार क्षिप्त-जिप्त कर सकता है वे यही भी बिक्रमसिंह की इस समय की स्थिति ।

बापुयान कीई एक घण्टे इस द्वीप में ठहरा । यहाँ से उड़कर सब बहुत करने वाला था । हमारी पुष्पी के पश्चिमी ओर सैन्क्रान्तिस्को से लू में जाहे हम कुछ समय ठहरे हों पर पश्चिम में हमारी जो उड़ान ही ओर से प्रारम्भ हुई थी वह पुष्पी के पूर्वोप ओर टोकियो में समाप्त है इस बीच एक बात और होने वाली थी । यह भी पूरी एक तिथि अस्तिसको और बापुयान के समय में १६ घण्टे का अन्तर है, अतः पुष्पी न पर, जिसे 'डेड लाइन' कहते हैं तारीख ही बतल जाती है अर्थात् अस्तिसको एवं सैन्क्रान्तिस्को के पश्चिम में रहती है टोकियो एवं टोकियो तक प्रागो की तारीख । सैन्क्रान्तिस्को तथा उसके पश्चिम में प्रागो की ओर टोकियो तथा उसके पश्चिम में ६ नवम्बर । अब मैं कीजी गया था भी इसी प्रकार एक विशिष्ट स्थान पर तारीख बतलती थी यहाँ तक था ।

प्रागोसिंह से टोकियो तक रास्ते में सिवा एक बरतना के और-कोई जगह नहीं है । यह बरतना जो टोकियो पहुँचने के लीई जो घण्टे पहले एक भीषण सूखान की सूचना हुआ जहाज वालों को बिक्रमसिंह में ही मिल गयी थी हमें हुआ कि जिस सूखान को हमने बहुत बड़ा सूखान माना वह हुआ कि के लिए एक सम्भार-सा सूखान था और यद्यपि भीषण सूखानों की पर हुआ जहाज ठहर जाते हैं पर ऐसे साधारण सूखानों की सूचना

पूर्व के सबसे उन्नत देश की ओर

होगीसुसु से ता० ४ नवम्बर की रात को १ बजे जब पचास में ता० ५ शुरू हो रही थी हमारा वायुयान आपान के लिए रवाना हुआ। मौसम अच्छा था। रात भी खिनी। निर्मल आकाश में तारे घीरे ग्याहू कला का चाँद भीतिमा से मुस्त इबेत प्रकाश फैला रहे थे जिस प्रकाश में ऊपर नीचे तम घीरे नीचे नीले सागर का एक अद्भुत प्रकार का सीगर्म बुझियोबर होता था। वायुयान के बैठने की पीठें बहुत अच्छी थीं। कुछ लोगों के सीने की व्यवस्था भी थी जो स्पान कुछ प्रतिक देने पर प्राप्त किये जा सकते थे। बैठे-बैठे भी अच्छी तरह सोया जा सकता था।

वायुयान के चलने के थोड़ी ही देर बाद हमें नींद आ गयी। जब हमारी नींद लुप्त हो की फट चुकी थी। जब छिड़की के बाहर का दृश्य स्पष्ट दिखायी दे रहा था। आकाश अभी भी निमल था घीरे शीता आकाश था बैसा ही समझ। कुछ दिमा में अतिरिक्त पर अरुण के तारको अरुण का अरुण प्रकाश फैल रहा था। कौता सुन्दर दृश्य था। थोड़ी ही देर में अचानक धंमुनाली के दर्शन हुए—पहले एकदम लाल वर्ण में घीरे घास रक्त वर्ण रवि की देख मुझे पवनपुत की उल कवा का स्वरुण ही थाया जब उन्होंने लोहित बरु के नारतव्य की लाल रंग का एक कम नाम मसला करने का प्रयत्न किया था। लाल रंग के रवि की लाली ने नील बरुं अयोम के संय-संग नीले सागर को भी एक नयी आना ही। रक्तबरुं से लुनहुरी रंग लेंने में सुर्ष की बहुत देर न लगी घीरे लोने के सहभांगु की मुबल धंमुर्दे सागर में लोना-सा चलने लयीं। जब तक घाँवों में इस सारे दृश्य को देखन की सामध्य की वर ह्यो ही सुर्ष ने अपना दुर्ल तेज चारुण किया ह्योही अर्म-अधु खोबिवा वये। किन नेत्रों में वह दर्शिन हूँ ओ सुर्ष के ककर कफर करके।

ऊपर नातव्य की मधुकों से लुसोभित नीलाकाश था घीरे नीचे इन्हीं मधुकों से प्रतिबिम्बित नील समुद्र। बीच में कोई ३०० नील प्रति। लुटे की आल से हमारा वायुयान चलता जा रहा था, वरन्तु ऊपर घीरे नीचे अन्व ० ई वस्तु न रहने के कारण तेज आल से चलने पर भी आन बढ़ता जैसे वायुयान बढ़ा हुआ है। थोड़ी देर

बाद जब कुछ बाबल मिले तब उनकी बीड़ के कारण हवाई जहाज की गति का पता लगा। जब कभी-कभी इतने बाबल मिल जाते थीं कि कभी-कभी समुद्र में भी सफ़र नहीं बिना बढ़ती। इन सुन्न भेदों तथा तित क्रियाओं में सूर्य की किरण अनेक बार सात रंग का इन्द्र-बनुव बना देतीं।

समय २ बजे हमारा हवाई जहाज 'बेक प्राइसैण्ड' पर उतरा। होमोलुसू से टोकियो इतनी दूर है कि बीच में पेट्रोल घाबि लेने के लिए हवाई जहाज का यहाँ उतरना अनिवार्य रहता है।

बेक प्राइसैण्ड प्रशास्य महासागर में एक छोटा-सा द्वीप है। हवाई घड़े के प्रतिरिक्त इस द्वीप में और कुछ नहीं है। हवाई घड़े से सम्बन्ध रखने वाले लोग ही यहाँ रहते हैं और उसी से सम्बन्धित कुछ मकान घाबि है। हाल ही में कुछ महीने पहले यहाँ एक बहुत बड़ा तुकान प्राया था जिसके कारण इन मकानों के ऊपर घाबि उड़ गये थे और वे समस्त मकान बड़ी ही अस्त-व्यस्त अवस्था में थे। प्रकृति का एक छोटा-सा बीप जो मनुष्यवृत्त-वस्तुओं को किस प्रकार छिन्न त्रिन्न कर सकता है इसका प्रमाण वे यही थीं बेक प्राइसैण्ड की इस समय की स्थिति।

हमारा वायुयान कोई एक घण्टे इस द्वीप में ठहरा। यहाँ से उड़कर जब वह टोकियो ही में उतरने वाला था। हमारी पृथ्वी के पश्चिमी छोर संक्रान्तिको से चलकर होमोलुसू में जाते हम कुछ समय छूरे हों पर यथावत् में हमारी जो उड़ान पृथ्वी के पश्चिमी छोर से प्रारम्भ हुई थी वह पृथ्वी के पूर्वीय छोर टोकियो में समाप्त हो रही थी। और इस बीच एक बात धीरे होने वाली थी। यह थी पूरी एक तिथि का लोप। संक्रान्तिको और जापान के समय में १९ बघ्टे का अन्तर है अतः पृथ्वी के बिद्युत् स्थान पर, जिसे 'बेट लाइन' कहते हैं तारीख़ ही बदल जाती है; अर्थात् जो तारीख़ संक्रान्तिको एक संक्रान्तिको के पश्चिम में रहती है टोकियो एवं टोकियो के पश्चिम में उसके प्राये की तारीख़। संक्रान्तिको तथा उसके पश्चिम में प्राय ५ नवम्बर की थी टोकियो तथा उसके पश्चिम में ६ नवम्बर। जब मैं पीजी गया था उस समय जो इसी प्रकार एक बिद्युत् स्थान पर तारीख़ बदलती थी, वही यहाँ भी होने वाला था।

बेक प्राइसैण्ड से टोकियो तक रास्ते में सिवा एक बटना के और कोई उल्लेखनीय बात न हुई। यह घटना भी टोकियो पहुँचने के कोई दो बघ्टे पहले एक भीषण तुकान। इस तुकान की घुषना हवाई जहाज वाली को बेक प्राइसैण्ड में ही मिल गयी थी, पर बालुम हुआ कि जिस तुकान को हमने बहुत बड़ा तुकान माना वह हवाई जहाज वाली के लिए एक साधारण-सा तुकान था और यद्यपि भीषण तुकानों की घुषना पाने पर हवाई जहाज उड़र जाते हैं पर ऐसे साधारण तुकानों की घुषना

मिलते पड़ नहीं। इत तूफान ने घासद्वैलिया के पोट डारबिन से लिबनी जाते हुए जो तूफान मुझे मिला था उसका स्मरण दिलाया। धन्वर यह था कि पोर्ट डारबिन से सिबनी हम रस्त की गधे से घट बँपिय एब भरसते हुए पानी के घाघ के सिबा हमें बाहर का कोई बुधय बिसापी न देता था घाज की यात्रा की बिग की भरतएब बँपिय से अतिरिक्त बाहर का बुधय भी हमें बोज पड़ता था। घने बाबलों के बीच से इनारा हवाई बहान उड़ रहा था। जब बुधय था धीरे भरसते हुए पानी के घाघ के सिबा वह पानी भी बिसापी पड़ रहा था। घोर बुधय हुई धीरे जब बपिय। कभी-कभी बँपिय के कारण वायुमान एकाएक नीचे की घोर बँसता तब धीरे की घाबाज होती धीरे याभी प्रयभीत हो उठते। जान पड़ता कहीं वायुमान डूब तो नहीं रहा है। यह तूफान कोई सबा घबटा बना। तूफान की लभापित धीरे डोकियो का पहुँचना प्रग्य साध-साध ही हुआ। जापान की भूमि पर उतरने के पहले सर्वप्रथम बर्षन हुए जापान के सर्वोच्च पर्वत कूजी के। इत घन के ऊपरी सिखरों पर जमा हुआ कुछ हिम समक रहा था। जापान के इस गौरवशाली बिरि को चित्रीनें तो हमने प्रगलित बार देखा था परन्तु घाज प्रयका न इसके बर्षन कर इसे प्रसाम किया।

जब हमारा वायुमान डोकियो की भूमि पर उतरा उस तब डोकियो की ता१ ६ नवम्बर के अकराहू के पीने तीन बज थे। सैन्सामिस्को से डोकियो तक हम कोई २५ घंटे उड़ चुके थे धीरे हमने लगनग ४२०० मील दूरी की यात्रा की।

...पान में एक पक्ष

टोकियो के हुआई धड़के पर हमें लेने भारतीय वृतावाप्त क थी नायर तथा जापान की एक प्रसिद्ध व्यापारी कम्पनी किनझो ट्रेडिंग के प्रतिनिधि श्री मियोरा नोमुर ने । भारतीय वृतावाप्त वालों को हमारे पान की सूचना जाशिपत्र के भारतीय वृतावाप्त ने वे ही श्री और किनझो ट्रेडिंग कम्पनी को श्री बोबर्नहासजी बिल्लामी ने । टोकियो के हुआई धड़के पर मिलने के पश्चात् हमारे जापान छोड़ने तक इस कम्पनी के प्रतिनिधियों ने तो हमारी जो खातिर-तसल्ली की बहु प्रबलनीय है । किन्तु शिष्टता, कितना ममत्व दिखाया इन लोगों ने । ऐसा प्रातिभ्य-सत्कार हमारा इस सारे दौर में प्रब तक किसी ने न किया था । माता और हूँके के टीकों क सदि छिन्नेड तथा चु गी महकमे में सामान के निरीक्षण के पश्चात् हम लोग टोकियो के सर्वश्रेष्ठ इंपीरियल नामक होटल घाये जहाँ हमारे ठहरने की व्यवस्था पहले से की जा चुकी थी ।

जापान में हम ता० २३ नवम्बर तक एक पक्ष से भी प्रबिध रहते । इन दिनों में हम लोग टोकियो में रहे और जापान के अन्य प्रसिद्ध स्थानों की भी गये ।

। अन्य देशों के लक्ष्जा जापान में भी हमने सभी कुछ देखने का प्रयत्न किया । यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य की छाया देखी । यहाँ के सबसे बड़े नगर टोकियो और यहाँ के सबसे बड़े व्यापार-केन्द्र घोसाका को देखा । यहाँ के प्राचीन नार्मिक तथा सांस्कृतिक स्थल देखे । यहाँ के जीवन के मिला मिला पहलुओं को जानने का प्रयत्न किया । यहाँ की प्रसिद्ध संस्थाएँ देखीं । यहाँ की छोटी और उचीय-बग्ने देखे विघ्नोपकर छोटे छोटे कम-ठारखाने (स्मॉल स्केल इण्डस्ट्रीज तथा लॉरेज इण्डस्ट्रीज) जिनके लिए जापान सारे संसार में प्रसिद्ध है । यहाँ का प्रसिद्ध काबुकी नामक रंगमंच देख्य और यहाँ के नाइट-क्लब भी देखे ।

प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण समूचे जापान की एक बड़ा पाठ या श्रित-स्त्रेघन प्रबन्ध बाय प्रबबा पार्वत्य प्रवेद्य कहा जा सकता है इसीलिए संर के लिए जापान एक प्रत्यन्त उपयुक्त स्थान है । तबक ही पहाड़ दिखायी देते हैं जो कहीं भी बहुत

रूँके नहीं हैं। समुद्रों का पान में पर्वत-पेसी रीढ़ की हड्डी के समान फैली हुई है। इनमें से कुछ पर्वत जलते हुए खालामुखी हैं। पर्वतों के बीच-बीच में प्रायद्वीप सुन्दर भूमि हैं। नदियों में पायी जानेवाली भूमि उतनी सुन्दर नहीं है और कहीं-कहीं तो समदल-प्राय है। खालामुखी के प्रकोप के कारण पर्वत के आकार कहीं-कहीं कहीं-तहीं बिगड़ गये हैं, वर इतने उनका लोम्बम और भी बड़ गया है। इसके प्रतिरिक्त आपान का जनस्फुटि जयत् है जो लदव हरा-मरा रहता है।

आपान की एक और विशेषता यहाँ के नरम लोते है। दुनियाँ में कोई और देश ऐसा नहीं है जहाँ इतने अधिक प्राकृतिक परम लोते हों। इनके समीप आपान के प्रतिबिम्ब के जीवन की जितनी सुन्दर भूमि मिलती है उतनी प्रायद्वीप नहीं। पत कुछ वर्षों से शहरों के लोप लप्ताह के प्रतिम दिनों में इन लोतों की और अधिकाधिक प्रार्थित होने लगे हैं। इन लोगों की सुविधा के लिए एक संस्था भी कायम की जा चुकी है। एक हजार एक लो से अधिक ऐसे लोते हैं जिनका बानी विकिरता के लिए लाभदायक माना जा सका है। समुद्र का अप्पुनगर तो प्रायद्वीपजनक परम लोतों के नगर के रूप में विश्व विख्यात हो चुका है। गंधक के भी बहुत से लोते पाये जाते हैं जहाँ रोगी इलाज के लिए आते रहते हैं।

संसार के जितने देश हमने देखे उनमें प्राकृतिक घोसा की दृष्टि से आपान का स्थान सबसे पहले देशों में है। इस प्राकृतिक देश का मनुष्य ने भी उपयोग किया है। यहाँ के बनी-बनी में क्रिस्तेपनम नामक दुप के पीछे ली बिदेगी निरीसक बनी विन्मूत ही नहीं कर सकते। इन फूलों को भारत में मुलदाबरी कहते हैं। बड़े मुल दाबरी के फूल एक-एक पीये में ली-ली से अधिक होते हैं और छोटे मुलदाबरी के फूल तो एक-एक पीये में लकड़ों। फिर इनके भिन्न भिन्न रूप देखते ही बनते हैं।

प्राकृति में यहाँ के जड़ जगत् पर ही कृपा नहीं की है जगम जवत् पर भी। इस जगम जवत् की लक्ष्मण लुष्टि मानव और मानव के काम माप वर यहाँ निरर्थक की जितनी ब्रमा हुई है उतनी घेरे ब्रमानुसार इस संसार के कितनी भी देश पर नहीं। मे पड़ता और मुनता प्रा रहा जा कि लक्ष्मण जितना प्राय जाति का सुन्दर होता है उतना प्राय कितनी का नहीं, परन्तु आपानी महिनाएँ संयोज जाति की होने वर की मुझे जितनी सुन्दर जान पड़ो उतनी प्राय जाति की भी नहीं। आपान ऊँचा देश है पर यहाँ के निवासी और बर्ण ह बहुत रूँके पूरे भी नहीं, प्राय बिबने हैं। यहाँ के निवासियों की मज्जाकृति प्रायों से बर्षा भिन्न है। इजारी प्राय जाति में जिन कपस-वत लोचनों और शुक्र-मातिका का बलुंग है वैसे बड़-बड़े नेत्र और मुकीली नाक यहाँ के निवासियों की नहीं। घनेक की घाँवें तो लो रेशायों के लक्ष्य मुक वर वर उनकी मज्जाकृति पर मे रेंदो नेत्र-रेखाएँ मुझे लो बड़ी भली

जान पड़ीं। फिर वहाँ की महिलाओं के व्यवहार में एक विचित्र प्रकार की मुहुता है। यह व्यवहार धारम्भ होता है मुस्कराहट से प्रकृत प्रत्यक्ष झुकाकर बिना नमन से। जापानी एक आ बीनों हाथ उठा दबबा केवस तिर झुकाकर नमस्कार नहीं करते। नमस्कार करते समय वे कमर तक के शरीर के भाग ऊपरी भाग को झुकाते हैं। महिलाओं की इस प्रकार का नमन मुस्कराकर करना चाहिए, वह शायद सारी जापानी जाति की सिखाया गया है। यह नमन तथा इसके परचाम् भी हर प्रकार के व्यवहार में बिनाप्रता ने इन महिलाओं के लोम्ब में मुहुता और माथुयं का समावेश कर इन्हें कहीं अधिक सुन्दर बना दिया है। फिर इस लोम्ब्य में और बुद्धि की है इनके विचित्र-विचित्र रंगों के एक विशेष डोंप के बर्णों ने। मुझे तो यह बड़े ही श्रेय की बात जान पड़ी कि जापानी महिलाएँ अपने जापानी पोसाक छोड़कर परिचयी वेष्ट-मुबा अपना रही हैं। और जापानी महिलाओं के इस तमस्त लोम्ब्य बटकीली वेष्ट-मुबा एवं बिनाप्रता तथा मधुर व्यवहार में कहीं भी प्रबलीलता का स्वर्ण तक नहीं हुआ है। इनमें लोम्ब्य है, धील है, धानीमता है। जो लोग यह समझते हैं कि रिचियों की बर्ण नाम वेष्टमुबा और केवल बटक मटक घाकरक वस्तुएँ हैं उनके लिए जापानी महिलाएँ एक चुनौती हैं। ये महिलाएँ अपने बर्णों को एक विचित्र प्रकार से नें जाती हैं; पीर में नहीं पीठ पर।

प्राथमिक बुद्धि से इस देश में मानव ने कम काम नहीं किया है। भूमि सर्वोत्तम न होने तथा जन-संख्या की अधिकता होने के कारण यदि जापान के निवासी अपनी प्राबल्यकता के अनुसार आद्य-वस्तुएँ उत्पन्न न कर सकें तो इसमें उनका श्रेय नहीं पर उन्होंने सारे देश की भूमि का इंच बराबर बाग भी निकम्मा नहीं छोड़ा है। यहाँ खेती के बड़े-बड़े कार्म नहीं हैं। इतीमिए खेती में टू बठर प्रादि बड़ी-बड़ी मशीनों का उपयोग नहीं होता। छोटे-छोटे खेत हैं। कृषक अपने हाथों वनुषों तथा छोटी-छोटी मशीनों की सहायता से खेती करते हैं। मुना गया कि खेती करनेवाले एक कुम्ब के पाठ बाई एकड़ से अधिक भूमि शायद ही किसी के पास हो। इन घनेछ छोटे-छोटे कार्मों में बर्ष में छः-छः फसलें तक होती हैं। मुख्य जातल की फसल है और ही एकद्विजना जातल बड़ी पैदा होता है फसल कुमिया में कहीं नहीं। घन के तिया घन छोई भी ऐसी वस्तु नहीं जिते जापानी अपने देश में न बनाते हैं। बड़ी-से-बड़ी और छोटी-से-छोटी हर प्रकार के उपयोग की वस्तु जापान में तैयार होती है। इसलिये घन बहुर से मंगाने पर भी इस देश के निर्यात के प्राकड़े सबा घायल के प्राकड़ों से अधिक रहते हैं। कल-कारखाने बड़े और छोटे दोनों प्रकार के हैं। छोटे-छोटे कारखानों (हमाल स्लेस इन्डस्ट्रीज) का तो सारे देश में जाल-सा फैला हुआ है। छोटे-छोटे इन कारखानों में मशीनों के सिवा जिन पुर्जों की तैयार होते हैं और फिर वे

बड़े-बड़े कारखानों में इकट्ठे कर बड़ी-बड़ी मशीन बन जाती हैं। हमने कुछ बड़े-बड़े कारखानों देखे। इन कारखानों की बड़ी-से-बड़ी रोटरी धीर घूमते बनाने की मशीनें हमने जापान की ही बनी पायीं। हमने वातु के भी कुछ कारखाने देखे। उनको भी प्रतिक्रिया मशीनें जापान की ही बनी हुईं। छोटे कारखानों के सिवा लोहे तथा इस्पात के बड़े-से-बड़े कारखाने भी यहाँ हैं। और इन तारे कम कारखानों को चलाने के लिए बिजली की ताकत तो तमान बेश में एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैली हुई है। बारी के निकलनेवाली बिजली (हाइड्रो-इलेक्ट्रिक) के अन्धे सुदूर-से-सुदूर पार्श्वों में भी बिजली पकते हैं। यह सस्ती बिजली को ताकत यहाँ के उद्योग-व्यवहों की नींव है। यहाँ के उद्योग बन्धों के सफलतापूर्वक चलने के तीन प्रधान कारण हैं। पहला है हर संसार मान की बिजली के लिए 'यार्बेटिंग स्पूरो' का वैद्य-व्यापी संयोजन। इस संयोजन के कारण कोई भी मान कारखानों में पडा नहीं रह सकता। ये संयोजन मान की वैद्य में बिजली करता है और बेश के बाहर भी मान का नियंत्रण करता है। कोई भी तो संसार मान देता नहीं जिसकी बिजली का यार्बेटिंग स्पूरो न हो। दूसरा कारण है वातावात की व्यवस्था। यह व्यवस्था इतनी धरजो है कि कोई मान वातावात के साधनों की कमी के कारण बड़ा नहीं रहने पाता। और तीसरा कारण है हर कारखाने वाली को कामकाज कुछ संख्या काम लीजने वाली (एपेरियन्सों) की रचना पडता है। इतने काम जानने वाली (स्किन्ड लेवर) की कमी नहीं होने पाती। जापान में प्रायिक उन्नति का प्रधान कारण यहाँ के लोगों का दार्शनिक समशील और अतिबलान होना है। अपने काम-धन्धों में जापानी बितनी धार्मिक वैहनत करते हैं कम जातिदा करती होंगी। इसी के साथ मुना गया कि ये बड़े ईमानदार होते हैं। कोई भी जिम्मेदारी का काम उन्हें नि-अंक होकर लीपा जा सकता है। इतने पर भी जापान अमेरिका और यूरोप के लक्ष्य कम जान नहीं है। हाँ पुं का शायद सबसे कमबाल बेश कहा जा सकता है।

परन्तु सम्पन्न होने पर भी जापान की धर्म-व्यवस्था मूलतः कमजोर है। धर्म-व्यवस्था की कमजोरी के कारण है—मृषि की घोर प्राकृतिक साधनों की कमी बड़ी हुई प्राबादी धर्म की कितानों की बरीबी उद्योग धर्मों के प्राप्तिपत्ता की घोर जाते हुए भी जापानी मान की निकाली के लिए मद्यियों की कमी और विदेशों पर प्रावश्यकता से धार्मिक निर्भरता धार्मिक।

जापान का केवल सारे पण्डित प्रतिशान भाग लेती क योग्य है। कोई सारे सात प्रतिशत भाग में बरागाह है। बाकी भाग में अल्प है। जापान के प्राकृतिक साधन मूल है। अपनी प्रावश्यकता का एक-तिहाई भीहा उसे विदेशों से लेना है। धार्मिकतर कच्चे मान के लिए उसे दूसरे देशों का मुह ताकना रबड़ बपाल अज धार्मिक उसे नगबग बुरे के बुरे बाहर से भी घंगाने पडन

है। जोड़े तौर पर अपने कारखानों की प्रावण्यता के कच्चे माल का ४ प्रतिशत मात्र ही जापान अपने यहाँ से प्राप्त कर पता है। कच्चे जापान में प्रावण्य बहुत अधिक होता है। जापान में अधिकतर छोटे और घरेलू उद्योग हैं। ८० प्रतिशत कारखाने छोटे-छोटे रूपमें मात्र हैं जिनमें काम करनेवालों की संख्या बहुत कम होती है। इसके अलावा तरीके भी पुराने और हकियानूसी हैं। जापान एक ऐसा देश है जिसे कच्चे माल के लिए भी विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता है और अपने कारखानों में तैयार होने वाले सामान की निर्यात के लिए भी विदेशों पर। इस प्रकार विदेशी व्यापार ही उसके जीवन का मुख्य साधन है और यही उसकी धर्म-व्यवस्था का एक बहुत महत्वपूर्ण पहलू है।

जापान में कोई भी प्रतिबंधित नहीं है। सारी जनता शिक्षित है। शिक्षा की जाती है जापानी भाषा में। ईशानिक प्रभावों भी जापान की अपनी है विदेशी नहीं। किसी विदेशी भाषा का यहाँ प्रमुख नहीं। अंग्रेजी और अमेरिकनों से सम्बन्ध रहने पर भी अंग्रेजी किमती के लोच आते हैं और जो जानते हैं उनमें भी ठीक तरह प्रथम की जानने वाले तो हमें मिले ही नहीं उनकी पिणती तो प्रायः अंग्रेजियों पर की जा सकती है।

१९४७ के नये शिक्षा कानून के अनुसार विद्यार्थी को छः वर्ष तक प्राइमरी शिक्षा तीन वर्ष तक निम्न माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा और चार वर्ष तक कालिज शिक्षा दी जाती है। छः वर्ष की प्राइमरी शिक्षा और तीन वर्ष की निम्न माध्यमिक शिक्षा कच्चे लिए अनिवार्य है। एक और परिवर्तन यह हुआ है कि सामाजिक शिक्षा पर अधिक जोर दिया जाने लगा है। तैमिकवाद और रासिकवाद की शिक्षा अब समाप्त कर दी गयी है। यहाँ एक शिक्षा प्रायोग (कमीशन) बनाकर शिक्षा का विकेंद्रीकरण कर दिया गया है। स्थानीय शिक्षा के प्रबन्ध का काम इसी समीप को सौंपा गया है और शिक्षा मन्त्रालय तत्सहकार तत्त्वा मात्र हो गया है।

जापान में कालिजों और विश्वविद्यालयों की संख्या २०३ है। इनमें से ७१ राष्ट्रीय २६ सरकारी और ११ गैर सरकारी हैं। कालिजों और विश्वविद्यालयों में लड़के-लड़कियाँ साथ-साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं।

किसी विदेशी भाषा में पढ़ न होने पर भी जापानी अक्षर्य या अक्षरकृत नहीं करने जा सकते। वे सुसंस्कृत अक्षर्य और सुसंस्कृत हैं। यह तो भारत का ही एक प्राप है कि अपनी मातृभाषा का पण्डित भी यदि विदेशी भाषा अंग्रेजी न जान तो वह अक्षरकृत तथा अक्षरकृत बना जाता है।

जापानी अधिकतर बौद्ध धर्मावलम्बी हैं। बौद्ध धर्म के पूर्व जलन में किन्हीं

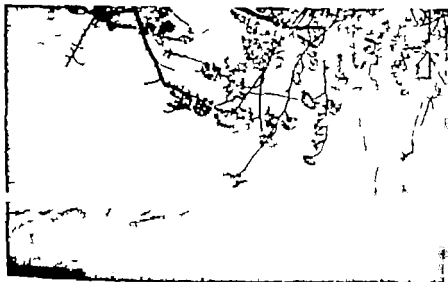
धर्म का प्रचार था। उसके भी अनुयायी यहाँ कम नहीं। सारे देश में बौद्ध धर्म सिटी मन्दिर जैसे हुए हैं। जापान की सारी संस्कृति इन चीनों जर्मों से पूर्वतया प्रभावित है फिर भी इन दोनों जर्मों में कोई अन्तर नहीं है। आरम्भ में जापानी प्रकृति के उदात्त में धीरे धीरे प्रभवा में विश्वास करते थे पर तीसरी सताब्दी में चीनी संस्कृति के सम्पर्क से जापान में बौद्ध मत धीरे धीरे प्रकृतियुक्त मत का प्रभाव पड़ा। बौद्ध मत के प्रभाव से उच्च साहसों कलाओं और साहित्य को प्रेरणा मिली। बौद्ध मत के साथ साथ जापान में कला साहित्य बर्धन और विज्ञान का विकास होने लगा। सप्तवीं सताब्दी समाप्त होते न होते सारा देश बौद्ध मत के प्रभाव में आ गया था। चौदहवीं सताब्दी में धर्म और राजनीति के बीच संबंध छिड़ा। मूल जापानी धर्म सिद्धी का पुनः प्राबुध्वि हुआ। वो सताब्दी तक जीवन्तान चलती रही। सत्रहवीं सताब्दी में जब धार्मिक और राजनीतिक एकात्मता स्थापित हुई तो जापान में ईसाई धर्म ने भी प्रवेश किया।

इस धार्मिक प्रभाव वाली संस्कृति ने यहाँ के लोगों को बड़ा कलापूर्ण बना दिया है।

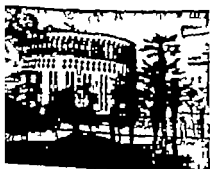
यहाँ के लोगों की लक्ष्मिनी भी बुरी नहीं। व्यापारियों का प्रकोप यहाँ नहीं मूला गया। पर इस सम्बन्ध में यहाँ की सरकार भी कुछ विचित्र धारणाएँ है जैसे न जाने क्यों यह माना गया है कि धाम से हुआ होता है धतः धाम के धायन पर यहाँ पूर्ण प्रतिबन्ध है।

यहाँ के लोगों की वेष्टभूया परिचयी हो गयी है। मुख्य तो प्रायः सभी बर्धिमनी धंग के बरतत पहुँचते हैं रिश्वी में भी अधिस्ततर परिचयी। यह क्यों हुआ है यह कहना कठिन है। कदाचित् परिचयी वेष्टभूयाका यहाँ की वेष्टभूया से अधिक लुब्धियाजनक होना इसका प्रभाव कर रहा है। यों तक में परिचयी वेष्टभूया का प्रकार है। फिर धाम तो सारे संसार के देशों पर ही परिचयी सम्बन्ध और परिचयी वेष्टभूया का प्रभाव है। परन्तु वेष्टभूया परिचयी होने पर भी जापानियों के रहन-सहन में अधिकांश बातें पूर्वी धंग की हैं जैसे उनके मकानों के भीतर बूते नहीं आते। कुतियों पर न बैठ के जमीन पर बैठते हैं और जमीन पर बैठकर ही कामें हैं।

यहाँ के निवासियों में बहुत अधिक धनवान और बहुत अधिक निर्धन दोनों ही कम हैं। अध्याय मेंली के लोग अधिकांश हैं। पर धनवान और निर्धन दोनों ही नहीं हैं यह नहीं कहा जा सकता। निर्धन तो काफी बड़े आ सकते हैं। हमने यहाँ निजा मीकने वाले भी देखे। जीवन-धोरण अमेरिका और यूरोप के अनुस्तार नहीं पर पूर्व के देशों में साधारण सबसे अच्छा है। यों में मकान बहुत अच्छे नहीं पर कपड़े सभी अच्छे पहनते हैं। बच्चों में भी नये बच्चे हमने नहीं नहीं देखे। लोगों का जीवन आनन्द



१९८. जापान का प्रसिद्ध पर्वत 'माउ फुजी'



१९९. एक मोबाइल गेटवे टोकिओ



२००. जापान का पमद् (हायट) भवन



२०१. जापान के प्रसिद्ध हायट के छते

मरुभूजाकाया । वसुधैव कुटुम्बकम् । इतने बानो चीत्रों जितनी आवाज में मिलती है उतनी बुनियादों में कही नहीं । इन चीत्रों में वहाँ की बुनियाद सबसे आकर्षक है । कितनी तरह की धीरे कितनी बेझ-कीमती बड़ी तथा छोटी बुनियाद मिलती है यहाँ । ये स्टीर इत प्रचार की चीत्रों से भरे रहते हैं ।

यहाँ के राष्ट्रीय आवाजपर का संग्रह भी कोई बहुत बड़ा नहीं; हाँ यहाँ की चित्र-कला का संग्रह अथवा विद्यालय है । पर इत चित्रशाळा में संग्रहित चित्र धीरे भूतियों की लगाने का रंग बहुत ही बुरा है । बीबातों पर चित्र इत तरह टाँपे गये हैं कि उन सबों की भीड़-सी हो गयी है और भवित्या तो इत तरह अमायी गयी है कि जान पड़ता है कि भूतियों का मेला लगा है । स्वान की कमी ही आयर इतका प्रधान कारण है ।

डोकियो का जीवन आवाज के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है । यहाँ की लड़कों पर नर-भारियों का तथा प्रवाह-सा बहुत रहता है । उनके नवसिद्ध तथा वैद्यभूषा से आवाज की अमता के स्वल्प एवं उनके व्यवहार से इत अमता की चित्र भ्रता का ज्ञान हो जाता है । साथ ही डोकियो की पश्यी से इत बात का भी पता चल जाता है कि आवाज के निवासियों का रहन-सहन बहुत स्वच्छ नहीं है । लगी अण्ड तेल में पकती हुई मछली की दुर्गन्ध घाती रहती है ।

यहाँ हमने आवाज के प्रसिद्ध काबुकी नामक रंगमंच को देखा । इतका आरम्भ लगभग सतासदी में हुआ था । बड़ा भारी मंच उस पर चित्र विचित्र रंगों के बिलाल धीरे नव्य भुक्त । आवाज की पुरानी वेधभूषा में नर धीरे गयी । स्त्रियों का काम भी इस रंगमंच पर पुण्य ही करते हैं । नरन्तु कुछ ऐसे ठियरे-ठियरे तथा बुझने-बतने पुण्यों की स्त्रियाँ बनाया जाता है कि जब तक हमें यह बात बतायी नहीं गयी कि काबुकी रंगमंच पर स्त्रियों का काम पुण्य ही करते हैं तब तक हम यह बात जान न लें कि वे स्त्रियाँ न होकर पचार्य में पुण्य हैं । काबुकी रंगमंच पर एक प्रदर्शन में एक ही नाटक नहीं खेला जाता । बहूना छोटे-छोटे नाटकों का संग्रह रहता है । रंगमंच पर एक और एक या एक से अधिक लोग आवाजों संदूरे पर नाटक की कथा का पाल करते हैं और बीच

सम्भावना

नीच, सभी

आता है । इस खेल में

की कथा का पाल है

बहुत स्वाभाविक

की सहायता

बहुत कम

६



१३७ जापान की प्रसिद्ध 'मेधा' गर्तिकायाँ



१३८ एक लकड़ी कली हुई बीरी को देख प्रफुल्लित हो रही है



१३९ जापान के प्रसिद्ध 'शिवेन्वयम' पुष्प



१४ जापान की खड़ी बाल की फसल

महसूबाकाया । दृष्टिहीन या प्रथमतः दितने वाली चीजें जितनी जापान में मिलती हैं उतनी बुनिया में नहीं मिलती । इन चीजों में बर्तनी की मुद्रिया सबसे प्राकृतिक हैं । कितनी तरह की घीर कितनी बेसा-कीमती बड़ी तथा छोटी मुद्रिया मिलती हैं यहाँ । ये स्तोर इस प्रकार की चीजों से भरे रहते हैं ।

यहाँ के राष्ट्रीय पराम्यव्यय का संग्रह भी कोई बहुत बड़ा नहीं; हाँ, यहाँ की चित्र-कला का संग्रह प्रथम विभाग है । पर इस विभागाला में संग्रहीत चित्र घीर मूर्तियों को लगाने का रंग बहुत ही बुरा है । दोषालों पर चित्र इतने तरह की गये हैं कि उन सबों की भीड़-सी हो गयी है घीर मूर्तियाँ तो इस तरह बनायी गयी हैं कि जान पड़ता है कि मूर्तियों का मेला लगा है । स्थान की कमी ही प्रायः इतका कारण कारण है ।

दोषियों का जीवन जापान देश के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है । यहाँ की लड़कों पर गर-नारियों का सदा प्रभाव-ता बहुत रहता है । उनके नवजात तथा बचपन के जापान की जनता के स्वभाव एवं उनके व्यवहार से इस जनता की चित्र कला का ज्ञान हो जाता है । साथ ही दोषियों की पेशबी से इस बात का भी पता चल जाता है कि जापान के निवासियों का रहन-सहन बहुत स्वच्छ नहीं है । सभी बच्चे तेल में नकली हुई मछली की बुर्गल खाती रहती हैं ।

यहाँ हमने जापान के प्रसिद्ध काबुकी नायक रंगमंच को देखा । इसका प्रारम्भ प्रथम ही सातवीं शताब्दी में हुआ था । बड़ा भारी मंच उत पर चित्र विचित्र रंगों के विभाजित घीर मध्य बुध । जापान की पुरानी बेसमूवा में नर घीर नरी । चित्रों का काम भी इस रंगमंच पर प्रथम ही करते हैं परन्तु कुछ ऐसे दिग्गज दिग्गज तथा बुद्ध-गतने पुस्तकों की चित्रों बनाया जाता है कि अब तक हमें यह बात बतायी नहीं गयी कि काबुकी रंगमंच पर चित्रों का काम प्रथम ही करते हैं तब तक हम यह बात जान न सके कि ये चित्रों न हीकर यथार्थ में प्रथम ह । काबुकी रंगमंच पर एक प्रदर्शन में एक ही नाटक नहीं खेला जाता । बहुतों छोटे-छोटे नाटकों का संग्रह रहता है । रंगमंच पर एक घीर एक या एक से अधिक लोग जापानो संभूरे पर नाटक की कथा का गान करते हैं घीर बीच में नाटक खेला जाता है । इस खेल में सम्प्रत्यक्ष प्रतिमपयुक्त वीत मूल्य लक्षी होते हैं । नाटक की कथा का गान ईक-पाठ्य मूल्य की शक्ति चलता है । मुझे ध्यान में बहुत स्वाभाविक न जान पड़ा । दोष-परिष्ठा बहुत था । मुख्य कलाकारों की सहायता के लिए रंगमंच पर काने बन्न पहले ध्वनि पाते हैं जिन्हें 'कुरीमो' कहा जाता है । इस रंगमंच की बेसमूवा जित प्रकार जापान की पुरानी बेसमूवा रहती हैं उती इस रंगमंच की भाषा भी पुरानी जापानी भाषा, जिसे वर्तमान जापान



१३७ जापान की प्रसिद्ध 'नचा' नर्तकियाँ



१३८ एक नतकी फली हुई खैरी को बेल प्रफुल्लित हो रही है



१३९ जापान के प्रसिद्ध शिमीन्धमन पुष्प



१४० जापान की खड़ी बाग की फसल

के इत नृत्य के प्रतिरिक्त नृत्य घोर भीतों के कुछ प्रदान भी होने हैं। इन में कुछ प्रदानों की नर्तकियां नृत्य करते करते अपने शरीर पर के कपड़े उतार-उतारकर खेंकती घाती हैं और प्रता में दोनों बाँवों के बीच तीन इंच की पट्टी के सिवा ऊपर और नीचे के धंगों में वैरिल के सबूत यहाँ की नर्तकियों के शरीर पर भी कोई बस्तु नहीं रहता। इन करीब-करीब मंगी स्त्रियों के हाव-भाव तो इतने कामुक होते हैं जितने में न रोम में देखे थे और न वैरिल में। मुना गया कि सजाई के बाद अमेरिकियों के यहाँ जाने के बरबात की यह लुब्ध है। अमेरिका की घण्टे नाम पर जापान के इन रात्रि-बनवों की में कर्तक का रूप मानता हूँ।

टोकियो में हमने दो जापानी फिल्म भी देखे जिन्हें देखकर हमारा मत हुआ कि जापान में अभी सिनेमा की बहुत तरक्की नहीं हुई है। इनमें से एक फिल्म में जापान की इस समय की सबसे प्रसिद्ध कलाकार मुची हारा ईरोइमी ने काम किया था।

कामाकुरा और इनोरिमा

टोकियो के निकट ही हमने दो स्थान घौर देखे। इन दोनों की वर्तनीय कहा जा सकता है। इनके नाम हैं—कामाकुरा और इनोरिमा। कामाकुरा तापामी काजी के दिनारे स्थित है और अपनी मन्दिर जलबायु तथा सुन्दर लठ के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ भगवान् बुद्ध की बाँव की विमल बाइबुल्य मूर्ति है जो बुनिया में अपने शंभ की धनीकी है। अकेले इस मूर्ति के कारण ही कामाकुरा वर्तनीय है और कोई भी दर्शक यहाँ जाने का लोभ संबरल नहीं कर सकता। तन् ७३७ ई. में जापान के प्रसिद्ध सम्राट् भी शोमू (Shomu) में जो अनेक बौद्धमठ और मन्दिरों का निर्माण कराया उसमें 'कामाकरा' सर्वश्रेष्ठ है (चित्र नं० १४३)।

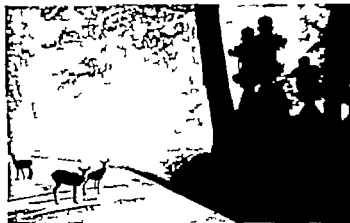
यहाँ की पीतल की विजाल मूर्ति तन् १२३२ में बड़ी मयी की। इसे प्रसिद्ध जापानी कलाकार ओनो-गोरोवे-मान (Ono-Goro-Man) ने राजकुमार शोगुन (Shogun) की आज्ञानुसार निर्मित किया था। यद्यपि तन् १४६३ ई० के अर्धकर समुद्री लुब्ध ने मूर्ति को क्षति पहुँचायी फिर भी आज मूर्ति की हालत बहुत अच्छी है। इस मूर्ति की ऊँचाई ४३ फुट है और इसका घेरा ६७ फुट। घेरे की लम्बाई ७७ फुट है। एक-एक धाँव ३३ फुट की है। कान की लम्बाई ६५ फुट है। मूर्ति का कल बज्र से हुआर सात ली लत है (चित्र नं० १४६)। इस से बड़ी जापान में एक ही बौद्ध मूर्ति है—कियोमी में। टोकियो से कामाकरा पहुँचने में ३४ मिनट लगेते हैं। विजली की रेलगाडियाँ बखी-बखी चलती रहती हैं। मोटर कार भी इन स्थानों को जाती हैं। कामाकरा में बहुत से प्राचीन मंदिर प्रादि हैं। इन मंदिरों तथा कई कला-बस्तुओं से पता चलता है कि बारहवीं और तेरहवीं सतावरी में इसका



१४५ कामाकुरा की एक इमारत



१४६ कामाकुरा की बाइबुत्सु (बड़ा बौद्ध) धर्मित बुद्ध नामक ताने की मूर्ति । यह प्रतिमा ४३ फुट ऊँची है और इसका भजन है दो हजार सात ती मन ।
 वन् १९५२ में यह स्थापित हुई थी



१४७ नाच के 'आमुसा'
मन्दिर के सामने मन्दिर
में पले हुए मूष



१४८ इसी मन्दिर में
पके हुए बारहण्डिहे



१४९ सिद्धक इन मूर्तों को
सपने हाथ में धिना रहे हैं

कितना ऊँचा स्वाम था। प्राचीन ऐतिहासिक कृत्य घोर मंदिर प्रादि वहाँ के सिधे बड़ी प्राकृतिक वस्तुएँ ह।

इसोमिया कामाचुरा के समीप ही एक छोटा टापू है। इस टापू में एक गुफा है जो कोई ३९ फुट गहरी है घोर वा सालाखों में बँटी हुई है। वहाँ की गुफा देखने के सिधे मोमबतियाँ ही जाती हैं। गुफा के छोर पर बाइ घोर बनटन की एक कृति है जिसे सौभाग्य के साथ देवी-देवताओं में से एक माना जाता है।

ओसाका

ओसाका जापान का सबसे बड़ा व्यापार-केन्द्र है। नगर प्रायः दोबियो के समूह वहीँ का-ता बीबन। ओसाका जापान का दूसरे मन्बर का नगर है। प्राचीन काल में ५३२ ईसवी के आसपास जब जापान में बौद्ध धर्म का प्राबुर्वाब हुआ था तब ही ओसाका का देसी घोर बिदेसी व्यापार में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान था। ओसाका योमी नदी के सहाने पर बसा हुआ है। बहुत अधिक नहरें घोर पुस होने के कारण ओसाका को जापान का वेनिस कहते हैं। पर ऐसी जन जाने के बाद इन नुर्तों घोर नदियों का पहल जैसा महत्त्व नहीं रहा। जहर भर में खोड़ी खोड़ी सड़कें होने के कारण यातायात भी सुवम हो गया है। यत मुर्तों में जारी मुकदाम होने पर भी रिजले पचास वर्ष में ओसाका एक प्राबुर्निक नगर बनता गया है। ओसाका में कारखानों की बहुत अधिक बिमनियाँ होने घोर सड़कों पर निरन्तर बढ़ते हुए याता यात के कारण बहु नुर्तों की बजाय परिश्रम का नगर अधिक प्रतीत होता है। अत्यन्त प्राचीन होते हुए भी ओसाका में प्राकृतिक की जगहें बहुत अधिक नहीं ह। ओसाका का प्राचीन राज्य-प्रासाद अजय्य बर्तनीय है। इसे १५५४ ई० में हिरोयोजी ने बनवाया था।

नारा

नारा जापान का प्राचीन प्राबुर्निक घोर सांस्कृतिक केन्द्र है। नारा का कानुम्य बौद्ध मन्दिर तो ऐसे रमणीय स्थान पर बना है कि उसे देख भारत के प्राचीन लरी वनों का स्मरण आता है। इस मंदिर के अवगम में इरिणों के भुण्ड के मुख बिचरल किया करते हैं। वे ऐसे पास्तु हैं कि जाने की कोई भी वस्तु देने पर आपसे निष्कट या उनके हाथ से उसे खाते हैं। मुना है कि इन इरिणों के नुर्तम भारत से यहाँ लाने यवें से घोर इनकी नस्त उन्हीं भारतीय इरिणों की है। इस लयेबन की देख नुर्त नहाकरि काशिवाय द्वारा रचित 'अभिज्ञान आत्मतल' में बरिखत नर्तव कल्प के आभन का स्मरण आवे बिना न रहा (बिज नं० १४७ से १४९)।

किओटो

किओटो नुम्बर प्राकृतिक नुर्तों वाला एक रमणीय स्थल है। किओटो जापान

की प्राचीन राजधानी रहा है और एक हजार वर्ष से अधिक समय से जापान की सम्पत्ता का केन्द्र । यह नगर प्राचीन ऐतिहासिक और धार्मिक परम्पराओं का स्थान है और यहाँ उन कलाओं व इस्तकारियों का जन्म हुआ जिनके लिए जापान सारे संसार में प्रसिद्ध है । धार्मिक और सांस्कृतिक प्रगति के साथ-साथ कृषि-बौद्धमत का एक प्राचीन केन्द्र है और यहाँ प्रायः ही प्राचीन जापान की धारणा के द्वारा किये जा सकते हैं । यह नगर पर्वतों से घिरा हुआ है और इसमें घनोच्चो ओहक कागि है । यहाँ का 'बाइबुरो' बौद्ध मन्दिर उसका पपोडा उत मन्दिर की विद्याल बीड प्रतिमा तथा यन्त्रा वासीय है । इन मन्दिरों में एक मुरली बजाती हुई श्रीकृष्ण की मूर्ति भी है ।
(चित्र नं० १५ से १२५)

हाकोने

यहाँ का प्राकृतिक दृश्य भी बड़ा मनोहारी है । समुद्र के कारण यहाँ घनेक गरम करने के जिनके साथ निरुत्था करती है । एक जाती बड़ी शील भी है । परन्तु पत्थर के व जेल म्यूजीक्रेड के रोटावप्रा नामक स्थान में इस स्थान से कहीं अधिक विशेषता रखने वाले हैं ।

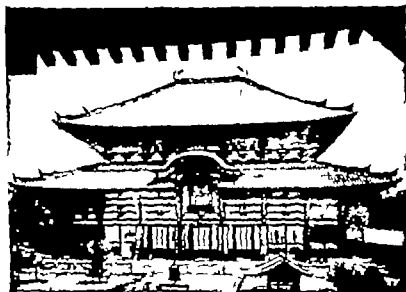
निकको

निकको एक पहाड़ी स्थल है । कुछ कुछ बढ़कर एक पहाड़ी शैवाल मिलता है जिनमें एक सुन्दर शील और जल प्रपात है । नदियों, झरनों और पुरातन कुओं के कारण निकको का प्राकृतिक लौहार्थ अद्वितीय ही मया है । जापान में कदाचित प्रसिद्ध है कि अब तक साथ निकको को न देखें यावत्तो जापान के लौहार्थ का पता नहीं चल सकता । निकको जापान के अग्रह राष्ट्रीय पार्कों में सर्वप्रमुख है । निकको में दोसोपू नामक एक सिद्धो मन्दिर है । यह मन्दिर बड़ा कलापूर्ण शैल से बना है ।

दोसोपू मन्दिर का निर्माण १६३६ ईसवी में हुआ । इसका अभिप्राय द्वारा इतना सुन्दर और आकर्षक है कि इसकी सराहना करते मनुष्य का भी नहीं बचता और वह दिन भर यहाँ से हटने का नाम नहीं लेता । योमिनाल के बार ओ सप्रेड द्वारा विद्यायी शैला है वह भीमी शैल का है और भीमी द्वार के नाम से प्रसिद्ध है । पत्थर की दो सो तीक्ष्ण चट्टानों के बाह ईपानु की समाधि प्रसिद्ध है जिस पर अग्नि का ग्यारह कुट्ट अंका स्तूप है । दोसोपू का मुख्य त्योहार १७ मई को मनाया जाता है । इस दिन एक विशाल जुलूस निकाला जाता है ।

जापान के दर्शनीय स्थानों और अस्तुओं को देखने के प्रतिरिक्त हमने यहाँ की कुछ संस्थाओं को देखा ।

टोकियो में और टोकियो के घातगत टोकियो के अत्यधिक लालिच्छ कोई अरबविद्यालय है । इन अरबविद्यालयों में से कई में भीस-भीस सहस्र विद्यार्थी



१५० किफोटो का बाह्यदृश्य (बगल बायें) मन्दिर



१५१ किफोटो का पगोडा



१५२ किफोटो के उपर्युक्त मन्दिर का भी

वैप्लोड कम्बरल एन्तोसिएशन की भारतीय संस्कृति । दोनों वायु मेरे मायल प्रप्रेमी
 में हुए, पर धीतापी में प्रप्रेमी समझनेवाले कम से घत दोनों ही स्वानों पर इन
 वायुओं का जापानी भावा में धनुबाद किया गया । इन मायलों के पश्चात् यही भी
 कुछ प्रमोत्तर हुए । इन दोनों मायलों की जापान की विद्रुसलमात्र में तथा बहूँ के
 साप्ताहिक तथा मासिक पत्रों में बहुत समय तक चर्चा चलती रही जो इस बात का
 प्रमास है कि जापान के लोगों को भारत से कितना अधिक धनुराग है ।

इन लोग जापान के निम्न निम्न प्रकार के कुछ लोगों से भी मिले इन में कुछ
 ऐसे भारतीय भी थे जो जापान में ही बस गये हैं । जिन भारतीयों से इन बहूँ मिले
 उनमें दो प्रधान थे—श्री नारायण धीर श्री मूर्ति । दोनों ही सख्तन बलिय भारत के
 हैं धीर दोनों ने धपना बिबाह जापानी महिलाओं से किया है । दोनों जापानी भावा भी
 इसकी जानन लये हैं कि जापान में धपना काम जली भक्ति बना लेते हैं । श्री नारा
 यण कोई पन्द्रह बरों से धीर श्री मूर्ति कोई छठारह बरों से जापान में रहते हैं । श्री
 नारायण समाचार-पत्रों से सम्बन्धित है भारतीय प्रेत दृष्ट के भी लबाधबला है धीर
 श्री मूर्ति व्यापारी हैं ।

मेरे भी हैं इन कसब के भायल का प्रबन्ध श्री नारायण ने किया था ।
 इसके सिवा उन्होंने जापान के सम्बन्ध में मेरे बिचार व्यक्त कराने का जापान के
 प्रधान डॉइकास्टिम स्टेशन से प्रबन्ध कराया था धीर इसी विषय पर मेरी एक मुला
 कात भी ली थी । मेरे मुला कि जापान के सम्बन्ध में डॉइकास्टिम स्टेशन में जो कुछ
 सीने कहा था जो धनुरिका में एक बिलिष्ठ स्वान दिया गया । मेरी मलाकात के
 संबाद श्री जापान धीर भारत के प्राय सभी पत्रों में बड़े-बड़े शीर्षकों से छाया । श्री
 नारायण का जापान के पड़े निकल समाज से प्रच्छा सम्बन्ध है ।

श्री मूर्ति व्यापारी होते हुए भी सार्वजनिक कार्यों में बड़ी बिलचस्पी रखते
 हैं । ये इन्डोवैप्लोड कम्बरल एन्तोसिएशन के सभापति हैं । नेताजी मुभायचन्द्र बोस के
 यहाँ के समस्त कार्यों में नेताजी के से बड़े भारी सहयोगी थे । इनके नाम नेताजी के निकले
 हुए कई वर हमने देखे । नेताजी के कुछ बिज धीर उनके मायलों के बरों के कटिय
 भी देखे । उनके एक मायल का रिकार्ड भी मुला । हमें यह भी जानूम हुआ कि नेताजी
 के प्रप्रेमी मायलों का जापानी भावा में धनुबाद श्री मूर्ति की धर्म-बली करती
 थी । श्री मूर्ति हमें घत बौद्ध मन्दिर में लो ले गये जहाँ नेताजी की भस्म रखी हुई
 है । नेताजी की भस्म के साथ उनके बिज के दर्शन कर देता कौन भारतीय है जिस
 की धर्मों में धांसु न बहु निकमें । हमारी भी यही दबा हुई । नेताजी से सम्बन्ध
 भी कितनी बातों का मन्ने स्मरलु हो घावा कातकर त्रिपुरी के कापेठ ब्रवि
 । जिसके सभापति नेताजी थे धीर जिसकी स्वागत-सभिति का प्रप्यक मे ।

भारत के इस महान् सुपुत्र ने भारत की स्वतन्त्रता के लिए क्या-क्या किया था और इसका प्रभाव हिन्दू धर्म सम्बन्धी काम तो इसके महान् साहस अद्वितीय त्याग और प्रयत्नशील देश-भक्ति के मन्दिर का अलस था। उनकी भस्म को देखकर भी मन इस बात पर विचारात करने को तयार न हुआ कि नेताजी अब नहीं हैं। श्री मूर्ति के सामने उनका अग्नि-संस्कार भी न हुआ था। भस्म यहाँ धापी को उस समय की जापानी सरकार के प्रतिनिधि द्वारा। अतः धाम निश्चयपूर्वक कौन कह सकता था कि यह नेताजी की ही भस्म थी। जो कुछ ही नेताजी अब हों या न हों और इस मन्त्र प्ररीर का भाव तो एक दिन अवश्यम्भावी ही है। नेताजी के कार्य भारत के इतिहास में तथा स्वर्णशिरों में लिखे रहेंगे और उनका नाम रहेगा अजर अमर।

श्री मूर्ति ने मुझे यहाँ के प्रसिद्ध सुगामो नामक खेल ले जाकर मुझ के कंबियों से भी मिलाया। मैं यहाँ तीन कंबियोंसे मिला। जनरल घोसिमा, जनरल के सेठो और श्री कुमारोईकी उर्फ अन्नदेव। प्रथम महाशय यत मुझ के पूर्व से तथा मुझ के समय अमंगी ने जापानी राजभूत थे। इन्हीं ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को एक मुझ की लक्ष्मणीन द्वारा अमंगी से जापान भेजा था। उस समय के अनेक वृत्त जन्मोंने बताये जिन्हें सुन सुनकर अनेक बार रोमांच हो गया। श्री के सेठो उस समय के जापान के प्रधान मन्त्री श्री टोयो श्री मुझ-समिति के श्री टोयो के बाद प्रधान व्यक्ति थे। इनके भी उस काल की अनेक बातें मालूम हुईं। श्री कुमारोईकी उर्फ अन्नदेव दंत के एक डाक्टर थे। वे सात वर्ष बम्बई में रहे थे और यहाँ के कचकलबाड़ी रोड के प्रायतमात्र ने इन्हें हिन्दू धर्म की बीजा दी थी। उसी समय से इनका अन्नदेव यह हिन्दू नामकरण भी हो गया था। इन्होंने सात वर्ष तक बम्बई में प्रविष्ट किया था। इनका बसावना बम्बई की अस्त्रिच स्टेशन के सामने पीमुञ्ज मठ में था। वे अपने को हिन्दू कहते हैं, तथा भली भाँति हिन्दू भाषा बोलते हैं। भारत से सम्बन्ध रखनेवाले इनके कई सु सम्प्रदाय हैं। इन तीनों मुझ के कंबियों से मिल उस समय के जापान का एक बीता-जायता चित्र मेरे सामने खिच गया। जापान और भारत के सम्बन्ध अच्छे-से-अच्छे रहे हैं और अविद्य में और भी अच्छे रहेंगे, यह विचार इन महानुभावों ने व्यक्त किये तथा जापान और अमेरिका की वर्तमान संबंध के सम्बन्ध में भारत का जो स्वर रहा है उसका हार्थिक समर्थन किया। जापान में उस समय यह धारणा थी जाती थी कि वे मुझ कंबी अब सीधे ही हूँगे और जापान की भावी राजनीति में इनका फिर से हाथ होगा। जापान के प्राचिनिक एक अष्ट साक्षियकार श्री कद्सुबो घरभूता से श्री गारायल ने मुझे मिलाया वे बड़े ही सम्मान पुरुष हैं। कुछ दिन पहले वे भारत आये थे। इनके साहित्य पर बहुत डेर तक बर्चा होती रही। इस बर्चा में अब मैंने इन्हें भारतीय मलिन-कला के बीच प्रधान वर्गों—स्वायत्त मूर्ति चित्र संगीत और काव्य का

बिस्लेषण तथा नव रत्नों की ध्याख्या बतायी तब इनकी भावुकता का रस चला । इन्होंने कहा कि इस प्रकार का बिबरण जापानी साहित्य में नहीं है । और इस सम्बन्ध में मैं उन्हें एक नोट भेज जिसकी वे जापान के साहित्यिक पत्रों में खर्चा करेंगे ।

जापान में हम जिन ग्रन्थ लखानों से मिले उनमें तीन मुख्य थे । पहले थी इन्जी-आका जो जापान के मुख्य व्यवसायियों में एक थे । इनसे हमें जापान के रोजगार-वर्ग के विषय में धनक बातें ज्ञात हुई ।

दूसरे थी राधाबिन्दर दास जिनका जापान के भूतपूष प्रपाण मन्त्री टोको के मुख्यमंत्री के समय से जापान में एक विशेष स्थान हो गया था ।

तीसरे सञ्जन थे प्रसिद्ध धर्मिक परकार श्री लुई फियर । श्री लुई फियर कुछ देशों के बीरे पर निकले हुए थे और इस समय जापान में थे । इस बीरे वर श्री फियर एक पुस्तक लिख रहे थे । श्री फियर से उनके इस बीरे के सम्बन्ध में तथा उनके भारत के एवं बहुसमा गांधी के मुख्य संस्मरकों के विषय में बातें होती रहीं । श्री लुई फियर ने इस खर्चा में यह भी व्यक्त किया कि भारत तथा जापान का जो पुराना सम्बन्ध है उसे और बढ़ाना तथा बृद्ध करना प्रावश्यक है एवं दोनों देश एक दूसरे के अपने-आपके बातों में बहुत अधिक लाभ उठा सकते हैं ।

भारतीय दूतावास का मुख्य काम ही यह है परन्तु मुझे और के साथ कहना पड़ता है कि हमने कहीं का भी भारतीय दूतावास इतना प्रकर्मण्य नहीं देखा, जितना जापान का भारतीय दूतावास है । यद्यपि इस दूतावास से और इसके कुछ कर्मचारियों से जिनमें मुख्य हैं श्री रणवीरसिंह, श्री नारायणम् और श्री नायर, हमें हर प्रकार की सहूलता प्राप्त हुई तथापि हमने देखा कि इस दूतावास का कारण के जीवन के किसी भी क्षेत्र से न किसी प्रकार का विशिष्ट सम्बन्ध है और न वहाँ के जीवन के किसी भी क्षेत्र पर इस दूतावास का कोई प्रभाव । असाधारण से जापान से हमारे देश का वित्त प्रचार का सांस्कृतिक सम्बन्ध रहा है उसे देखते हुए यदि हमारा जापान का दूतावास कर्मण्य ही तो इन दोनों देशों का सम्बन्ध अभी भी कितना अधिक बढ़ सकता है । मैंने भिन्न-भिन्न देशों के भारतीय दूतावासों के काम को कुछ निकट से देखने का प्रयत्न किया है और उनके छोटे-मोटे शेषों की ओर भी ध्यान न देकर उसकी प्रशंसा ही की है पर जापान के भारतीय दूतावास के प्रति इसी प्रकार की सद्भावना रखते हुए भी मैं ग्रन्थ भारतीय दूतावासों के सद्बोध उसकी प्रशंसा करने में अपने को सतमर्ब पता हूँ ।

हमारे दौड़ियों में रहते दो बातें और हुई—एक भारतीय छवि प्रतिनिधि मंडल जो जापान गया था उसके सदस्यों से भारतीय राजदूत श्री राज्ज के यहाँ के एक में हमारी भेंट और दूसरा जापान के मुखराज का मुखराज-पर पर प्रतिनिधि ।

हुने एक बात का खबर रहा कि संसार में एक सरकार की स्थापना के उद्देश्य से हिरोशिमा में होनेवाली एक परिषद् का निमंत्रण मिलने पर भी जापान देश से पहुँचने के कारण से हिरोशिमा न जा सका और इस परिषद् का संघटन करने वालों से मिलकर ही हुने सन्तोष करना पड़ा।

जता कि सबविदित है हिरोशिमा पर ६ अगस्त १९४५ को अणुबम फेंका गया था। बम गिरने के स्थान से चारों ओर दो-दो मील तक के प्रदेश की 'अणु मरुस्थल' कहा जाने लगा था। सरकारी डॉक्टरों के अनुसार इस बम-बिस्फोट में हताहत होने वालों की संख्या इस प्रकार है—

मृत	७८ १५०
लापता	१३ ९८३
घायल	<u>३७,४२३</u>
कुल मोज़	<u>१ २६,५३८</u>

इस बम-बिस्फोट में ६,०४० भवन और इमारतें जलकर लपट हो गयी थीं। सरकार ने यह खबर भी कि जिस प्रदेश में अणुबम का बिस्फोट हुआ है वह ७३ वर्ष तक बन्द रहेगा किन्तु कुछ महीनों के अन्दर यह बात निराधार साबित हुई।

बिस्फोट के बाद जीवित रहने वालों ने ताहस के साथ पुनर्निर्माण का काम आरम्भ किया और १९३० में हिरोशिमा की जनसंख्या बढ़ती हुई ९ लाख ७३ हजार ७१८ तक पहुँच चुकी थी।

जापान पर एक दृष्टि

यूरोप में जो स्थिति ब्रिटेन की है एशिया में वही स्थिति जापान की है। दोनों बहुत छोटे किन्तु अत्यन्त विकसित देश हैं। दोनों की स्थिति में एक अन्तर अन्तर है कि जापान चीन के समुद्र-तट से कोई पाँच सौ मील दूर है जब कि ब्रिटेन यूरोप के अत्यन्त निकट है। जापान-द्वीप समूह का अधिकांश भाग बड़ाही है और ग्वालान्गुली व बूबात का उहाँ प्रकोप रहता है। भारत के से अंदान जापान में देखने की नहीं मिलती। अठारह हजार मील लम्बा और कड़ा-कड़ा समुद्र-तट होने के कारण जापान में अंदरवाह बहुत अच्छे हैं जिनसे व्यापार में बड़ी सहायता मिलती है। नदियाँ छोटी और अतिबाल हैं जिनसे बिजली तो पचष्ट प्राप्त हो जाती है किन्तु वे भी-परिवहन के काम की नहीं हैं।

जापान एक अत्यन्त सुन्दर देश है और ही सकता है कि जापानी इसी कारण आधुनिक औद्योग्य-श्रेणी है।

जापान का उत्तरी और दक्षिण के अन्तरवाह बीजों की लीन में है और बहिरी छोर हिमाली की लीन में पड़ता है। जापानियों की उत्पत्ति एक रहस्य का विषय है। वहाँ के प्राचीनतम मूल निवासी मंगोल वही अल्पकालेय जाति के लोगों से मिलती-जुलते हैं। सम्भवतः इसी आधार पर हिन्दु जापानियों को धार्मिक परिवार में सम्मिलित करता था।

जापान पश्चिम और पूर्व प्राचीन और नवीन का सधि-स्वत है। जापान पर अत्यन्त संस्कृतियों का प्रभाव चीन-बीन न बढ़कर एकाएक फैलनेवाली लहर के रूप में पड़ा। पहले जापान पर प्राचीन चीनी संस्कृति का गहरा प्रभाव पड़ा। बाद में वहाँ बौद्धमत का गया। नये युग में जापान पर पश्चिम का भी व्यापक प्रभाव पड़ा और आज के जापानी जीवन में हम देख सकते हैं कि पुरानी जापानी संस्कृति और परम्परा पर पश्चिमी सम्भवा का ज्ञान रंग चढ़ गया है।

चीनियों की तरह जापानी भी कला के बड़े प्रेमी हैं। क्य रंग और आकार का सौन्दर्य उन्हें आस्था में बहुत आकर्षित करता है। जापानियों की सबसे बड़ी

विनोदता यह है कि उन्होंने अपने प्रतिदिन के साधे घोर एकरस जीवन में कला की स्थान दिया है। अपने घातपात की वस्तुओं को समा-सँवारकर रखने और कल्पना की लुम्ह से उन्हें कलात्मक बनाने में वे अपना तानी नहीं रखते। अपने साज-सामान और गहनों आदि को ही नहीं नित्य-प्रति काम धानेवाली बर्तनों खेती चीजों को भी उन्होंने कलात्मक बना दिया है।

जापान के किसानों का जीवन प्राचीन परिपक्वी के अनुसार बना जाता है। पिता परिवार का मुख्य सदस्य होता है। कमाया हुआ समस्त धन उसके पास जमा होता है। नकान लीचे-साधे होते हैं। पार्सीयों की सहायता से वे इच्छानुसार कई कमरों में या एक बड़े हॉल में परिचरित किये जा सकते हैं। एर्नोवर की बजाय जमीन पर बटाई और गहूँ आदि का ही पथिक प्रयोग होता है। स्नान-गृह इनकी एक विशेषता होती है। यह स्नान-गृह नकान के पिछले भाग में होता है। दिन के कार्य के पश्चात् गर्म पानी से स्नान करना जापानी किसान की बड़ी-से-बड़ी खुशी है। जापान के वैद्विजी जीवन की एक घोर विशेषता यह है कि एक एक अपह बोड़े-बोड़े मकान होते हैं। इन मकानों के लोच एक ही अपह घाव जलाकर अपने-अपने लिए पानी गरम कर लेते हैं। इससे भाई-भारे की यहूरी माचना पैदा होती है। इसके प्रति रिक्त पाँच में कई धम्य काम मिल-जुबकर मेहनत करके पूरे किये जाते हैं—उदाहरण के लिए बाग बीजा और सड़क व पुल बनाना। गाँव का प्रत्येक व्यक्ति धिरा-घमस्वा में घाम-वाठआला में बढने जाता है। इससे भी जनके बीच सौहार्दता की कड़ी मजबूत होती है। घाम तीर से घाम जीवन केवल सिधे पर ही निर्भर नहीं करता। बहूँ चावल के बढने में कुछ सामान प्राप्त किया जा सकता है। भारतीय गाँवों में भी घाम के बढने सामान प्राप्त हो जाता है। धाबुनिक मुय की मोटर, बस, रेल बिजली आदि वस्तुओं से परम्परागत घाम जीवन वर प्रभाव प्रबन्ध पड़ा है पर मूलतः उत्तम कोई बड़ा अन्तर नहीं पड़ा। जापानी किसान राज्य-शाहा के प्रति प्रति निष्ठावान होता है।

जापान की मुख्य फसलें हैं चावल वेहूँ चाय और तम्बाकू। खेती-धीप्य मूनि के तीन बड़ा पाँच भाग में वे लोच खेती करते हैं जो जमीन के मालिक है। बाकी जमीन में ऐसे किसान हैं जो दूसरे से जमीन लेकर खेती करते हैं। बाग की खेती के जापानी तरीके का उन्नेक करना यहाँ उचित ही होया क्योंकि इस तरीके का भारत में बड़ा प्रचलन हो रहा है। यह बाग की खेती का एक वैज्ञानिक तरीका है जिससे फलन कई गुनी होती है।

तरीका यह है हर पक्कीस फुट के लिए एक चौध कम्पोस्ट खाद प्रचवा गोबर की खाद काम में लाइए। हर पक्कीस फुट पर एक चौध खाद निध क्लिरा बीजिए,

मिट्टी को तम करके कम्बोस्ट बाह डाल बीजिए धीरे ऊपर से हुलसी-हुलसी राख बुरक बीजिए । कतल करने के डीक बाह ही जमीन की बुताई करनी चाहिए । एक-एक फुट बागह छोड़कर चार चार फुट चौड़ी बहिर्वा बना लीजिए जिनकी मोटाई तीन इंच ही । बहुत अधिक बीज न बोईं । बीज ढण्डे टिफ्त के लें धीरे ढण्डे ढण्डे पाणी से बरी बग्यी में बिगो दें । इसके बाद बीजों को हिलार्इ । चारी बीज बैठ जायेंवे हुलसे बीज ऊपर तिरने लगेंगे । चारी बीजों को ही चुन । बीज मिगड के लिए बीजों को निवारपर में डालकर ऊपर से ३ इंच घण्टी मिट्टी बिछा दें । बचचील फुट की बट्टी में एक बोट बोज बोना ठीक रहेया । यदि बर्या न हो तो जल दें । फिर पीसे तैयार होने पर बण्डे धण्डे को दें । पीसे जल तमब तैयार तमबने चाहिए जे से १ से २ इंच तक लम्बे हों धीरे उनमें १ बसिया निकल घौपी हों । ये बोसे जल जमीन में ढण्डे जयों को बूज तयार की गयी हो धीरे बट्टी की एकड़ जमीन में बगडू-बीज बाड़ी बाह डाला गया हो । एक बिसेव बात बपाल रखने की यह हे कि बीजे एक बूतरे से बख-बख इंच की दूरी पर होने चाहिए ।

जापान के ग्रहरी जीवन पर बहिबमी सम्पत्ता की अधिक गहरी छान बिखायी पड़ती है । जापान के ग्रहरी में लकड़ी के छोटे-छोटे लकान बिखायी देते हैं । इनमें बाब-बपीसे के लिए अधिक खान नहीं होता । ग्रहरी जापानियों के रीति-रिवाज ही अपने ही हैं, किन्तु उन्होंने सामाजिक आचार बिचार बहिबमी सम्पत्ता के धपना लिये हैं । अमेरिकी सम्पत्ता का जापान पर काफी प्रभाव पड़ा है ।

जापान की राजनीतिक कन्देखा तमबने के लिए बट्टी के जीवन में लच्छाडू का खान खान लेना बड़ा बकरी है । बूतरे महामुड में जापान की हार के बाद लच्छाडू के महामुड में काफी बरिबर्तन हुआ है । बूतरा महामुड तयार होने तक लच्छाडू की बट्टी बुबा होती थी कतकी बालीबना करना या उसके बिच्छ मत बकड करना मुनाई था । लोगों का अपने लच्छाडू में प्रबबिबकास-बा का धीरे से बडे देवी बकित मलते थे । इसका बरिल्लाम यह हुआ कि जापान अपने लच्छाडू के अमीन एक बाल्यत संबडित देश बन गया ।

सन् १९०६ में मेजी संविधान की रचना हुई धीरे बहिबमी देशों की देखा-देखी संसद् बाल्य भी बनी, किन्तु इसका अधिकार-जेब बहुत ही सीमित था । लच्छाडू के हाथों में मुर्ब लता रहने का ध्यबहार कम यह था कि चारे अधिकार सरकारी अधिकारी बर्ग धीरे संलिक मुड के हाथों में आ बये । बरिल्लाम यह हुआ कि बाल्य एक महामुड संलिक संलिक के रूप में संबडित हुआ धीरे बूतरे महामुड में बककी करारी हार हुई ।

३ बबम्बर, १९४६, को जापान में नया संविधान तैयार किया गया जिसमें

इसका राजनीतिक स्वरूप ही बदल गया। नये संविधान के अनुसार तारे प्रबिकता जनता के हाथों में आ गये हैं और जनता के प्रतिनिधियों की सभा के रूप में संसद को मिल गये हैं। सम्राट् राष्ट्र का प्रतीक मात्र रह गया है। जापानी संसद् में दो सदस्य हैं—लोकसभा और परिषद्। देश के लिए कानून बनाना और देश की सरकार चलाना सब संसद् और मन्त्रिमण्डल के हाथों में है। इस तरह जापान में लोकतंत्र का सूत्रपात हुआ है और अब देखना यह है कि वह कहीं तक सफल होता है। जापान का भविष्य क्या है यह तो निश्चित नहीं कहा जा सकता पर इतना प्रबल है कि सद्दा के प्राप्ति के बाद जापान ने बड़ी तेजी से अपनी खोयी शक्ति प्राप्त करने की कोशिश की है और इसमें उसे काफी सफलता भी मिली है।

उस प्राचीन देश की ओर जहाँ आर्वाचीन साम्यवाद का नेतृत्व है

चीन की मुख्य भूमि में प्रवेश करने के लिए चीन के ही एक द्वीप हांगकांग प्रयास पड़ता है। परन्तु भौगोलिक दृष्टि से हांगकांग चीन का ही एक विभाग होने पर भी चीन के राज्य में सम्मिलित नहीं है। हांगकांग पर ब्रिटिश राज्य का अधिकार है।

टोकियो से २३ नवम्बर की रात को ६ बजे वैन अमेरिकन लाइन के हवाई जहाज से चलकर दूसरे दिन प्रातःकाल लगभग ६ बजे हुए हांगकांग पहुँचे। टोकियो से हांगकांग केवल १ घंटे की दूरी है और इतनी दूर का रास्ता तय करने की हवाई जहाज ने जितना समय लिया वह बहुत अधिक था परन्तु एक तो इस मार्ग में वायु-यान की गति धीमी रहती है दूसरे टोकियो और हांगकांग के बीच में सम्पूर्ण एक द्वीप में ईंधन आदि लेने में लगभग डेढ़ घण्टे लगता है।

जब हमारा हवाई जहाज हांगकांग के हवाई अड्डे पर उतर रहा था उस समय हमने देखा कि हवाई द्वीपों के समूह ही हांगकांग भी एक सुन्दर और रमणीय द्वीप है। साथ ही हवाई द्वीप की उद्विग्न दृष्टि जिस प्रकार भारत की उद्विग्न दृष्टि से मिलती-जुलती है उसी प्रकार हांगकांग की भी भारत के समूह ही; नारियल और सुपारी आदि के बूँद; किन्तु यहाँ घास के बूँदों का घमास था। हांगकांग की उद्विग्न दृष्टि हवाई के समान व्यपथिक घनी भी नहीं थी। हवाई द्वीप के समान हांगकांग पहुँचते ही भावना की एक लहर सी पठी कि हम भारत के निकट पहुँच रहे हैं, परन्तु भावना की इस लहर को घास विभ्रल इतने भी डेर न लगी। जिस प्रकार होमोमूल से हम सीधे भारत में आकर आवास कर गये थे और भारत फिर से बहुत दूर ही गया था उसी प्रकार हांगकांग से भी हम चीन जा रहे थे और भारत पुनः दूर हीनवाला था।

हांगकांग के हवाई अड्डे पर चुनी बार्सों का व्यवहार बदतमीची से भरा हुआ था। हमारे साथ ऐसा व्यवहार अब तक किसी भी जगह न हुआ था। हमें इस व्यवहार से कुछ और आश्चर्य इसलिए हुआ कि हांगकांग एक मुक्त शहर (सीपिय

बोर्ड) है। फिर हमने यह सुना था कि कामनवेल्थ के देशों में रहने वालों को हांगकांग के विसा की आवश्यकता नहीं रहती, अतः जगमोहनदास और अलम्पामबास के पास पोर्टों में हांगकांग का कोई बिजनेस था। हवाई ब्रूडे के इमीग्रेशन अफसर ने नाक-भी छिकोड़ते हुए इन दोनों को हांगकांग में जाने की इजाजत तो दे दी, पर साथ ही यह भी कहा कि चीन से सीधे हुए हांगकांग आने की इजाजत इन्हें हांगकांग के इमीग्रेशन अफसर से लेनी होगी। इस इजाजत के लिए जब हम हांगकांग के इमीग्रेशन अफसर को गये तब वहाँ के लोगों का व्यवहार भी छिन्नाचार के सर्वथा प्रतिकूल था। इसके सिवा वहाँ के मुख्य अधिकारी ने इस इजाजत के लिए चार दिन की आवश्यकता बतायी जबकि वह इजाजत चार मिनट के अन्दर ही जा सकती थी। बीता कि यूनाइटेड किंगडम में यूनाइटेड के वृत्तावास ने किया था और बास में घंटाई में ब्रिटिश कौन्सेल ने हांगकांग के बिजनेस में भी किया। हांगकांग के इन अंग्रेज अफसरों के इस प्रकार के व्यवहार को देख मुझे अंग्रेजी राज्य के समय के भारत के कई अंग्रेज अफसरों के बर्ताव का स्मरण हो आया। मेरे मन में बसा कि अंग्रेजी साम्राज्य की समाप्तप्राय स्थिति में भी कई अंग्रेजों के बर्तन का परिहार नहीं हो पाया है और यर्ब हारी भयबालू को इनके इस यर्ब-परिहार के लिए व्यायस घसी और कुछ करना खेब है। अंग्रेज जाति में अनेक सङ्गुणों के रहते हुए भी इनके अधिकारी बर्तन में अछिन्नायता इनका सदा से एक मङ्गल कुण्डल रहा है जिसका कुत्सित अर्धमन्व ज्य हांगकांग में फिर देखने को मिलता।

हांगकांग में हम वहाँ के सबसे अच्छे होटल पैन्सलपेनिया में ठहरे। हम अन्टी-से-अन्टी जाल चीन जाना चाहते थे परन्तु हमें वहाँ जाने के लिए विसा मिलने वाले थे जाल चीन की सीमा पर। जाल चीन की सीमा कहीं से आरम्भ होती है वहाँ तक पहुँचने के क्या सामन है वहाँ हमें ये विसा किससे प्राप्त होंगे, इत्यादि बातों का हमें डोकियो में कोई पता न लग पाया था अतः होटल में सामान रख हम इन सब बातों का क्या लपाने निकले।

सबसे पहले तो हमें यह मालूम हुआ कि जिस हवाई ब्रूडे पर हम चले हैं और जिस होटल में हम ठहरे हैं वे स्वाम हांगकांग नगर के इस विभाग में न होकर एक दूसरे विभाग में है वहाँ जाने के लिए हमें समुद्र की एक छोड़ी जहाज से पार करनी होगी। साथ ही हमें यह भी मालूम हुआ कि जो जानकारी इन चाहते हैं वह हमें हांगकांग नगर के उस विभाग में ही मिलेगी।

हम धीमे-धीमे हांगकांग के इस विभाग में पहुँचे और वहाँ पहुँचते ही अचानक हमारे बुद्धि एक ऐसे साइन-बोर्ड पर पड़ी तथा इस साइन-बोर्ड को यह हम एक ऐसे अफसर में पहुँच गये कि ईबपोम से हमारी तारी समस्यार्प तालाब इन ही गयी। यह साइन

बीर्ड और इपतर या चाइना ट्रेडिंग एजेंसी का ।

चीन की सरकार ने चाइना ट्रेडिंग एजेंसी वालों को हमारे हांगकांग पहुँचने पर हमें उनके राज्य की सीमा तक पहुँचाने की सारी व्यवस्था करने के लिए मुक्तता दे दी थी । हमारा कार्यक्रम हांगकांग २२ तारीख को पहुँचने का था । उस दिन इत एजेंसी के प्रतिनिधि हमें लेने हवाई अड्डे पर भी नये थे । हम मात्र हांगकांग पहुँच रहे हैं इसकी इन्हें कोई खबर न थी भत मात्र इनका प्रतिनिधि हवाई अड्डे पर न आया था । और हमें इसका पता न था कि हमें चीन की सीमा तक जाने के लिए क्या करना चाहिए । इसीलिए अंता अन्तर निजा हूँ हमारी इत समय की समस्याओं का हल ईबवीय ही ही हुआ ।

चाइना ट्रेडिंग एजेंसीवालों ने हमारे सारे कार्यक्रम को व्यवस्थित कर हमारे हीटल में सम्प्रा की मिलने के लिए कहा । हाँ इतना प्रायः निश्चय हो गया कि चीन की सीमा के लिए हम लोग दूसरे दिन प्रातःकाल ११ बजे की ट्रेन से रवाना होंगे ।

चीन की सीमा के लिए रवाना होने के पहले हमने हांगकांग देख लेना चाहा । हांगकांग एक छोटे से समुद्री द्वीप पर बसा हुआ है । यह द्वीप घिरा है पर्वत पत्थियो से । प्रायःहवा है बम्बई के समुद्र । प्राकृतिक दृश्य समुद्र और पहाड़ियों के कारण बड़ा सुन्दर हो गया है । लगभग बीस लाख की आबादी की बड़ी-बड़ी इमारतों और सड़की-सड़की सड़कों वाला यह अद्वैत भूमि की सभी के कारण बहुत बना बसा है । पर बस्ती के बने होने पर भी तथा काफ़ी मात्र सुपरा है । आबादी में अधिकता चीनी है पर कम रहते हुए भी प्रमुख हैं इबैतानों का । वे सफ़ेद अधिकतर अंग्रेज हैं यहाँ के पीरे खूब बनवाने जान पड़ते हैं पर यहाँ की जनता अत्यधिक गरीब । यह गरीबी अंग्रेजों का परिणाम है और गरीबी में जिन कष्टों तथा दुर्गुणों की उत्पत्ति होती है वे सब यहाँ की आम जनता में स्वच्छ दिखायो देते हैं । लोगों के घरीरों, उनके मुँहों उनकी चेष्टाओं से निर्धनता साफ़ दिख पड़ती है । निवारियों की भी काफ़ी मात्रा है और चीरों तथा जडाईनीरों की भी । मेरे दौड़ के अन्तर के बीच से मरा फाउन्टेनपेन और पेंटिल इत दिखत से निकाल लिये गये कि हमें ज्ञात हो गया कि जोरी में यहाँ के निवासी कितने पदु हो गये हैं । हांगकांग को देखकर हमें पुनः याद आ गया कि बिदेसी अंग्रेजी राज्य और गरीबी तथा गरीबी के कष्ट एवं दुर्गुण शायद पर्यायवाची हैं ।

अंग्रेजी वृष्टि से महत्त्वपूर्ण होने के कारण हांगकांग का संसार की धृवीत में अपना एक विशेष स्थान है । फिर हवाई यातायात में भी हांगकांग का हवाई अड्डा संसार के मुख्य हवाई अड्डों में एक है । यहाँ व्यापार का भी बड़ा विकास हुआ है

घौर तिगापुर के सङ्घ हांगकांग का बन्दर भी एक खुला बन्दर होने की वजह से वहाँ के व्यापार की बहुत सहायता मिली है ।

हांगकांग में एक घौर बिन्दु कष्ट वहाँ के निवासियों को है । यह कष्ट है पानी का । इस दौरे में पहले बार होटल बर्तुबने पर हम लोगों को यह भावूम हुआ कि हम स्नान नहीं कर सकते क्योंकि नलों में पानी केवल प्रातःकाल दो घण्टों के लिए प्राप्ता है घौर सम्प्रा को दो घण्टों के लिए । ताब ही पानी खराब न करने की सम्झी विवायतें हुकूमत मरे घण्टों में होटल के स्नानागार में लिखी हुई थीं । जब हम लोग सम्प्रा को हांगकांग की सड़कों पर घूम रहे थे हम लोगों को कुछ अण्ड गरीब स्त्रियाँ नाली के पानी में कपड़े धोते दिखायी थीं । हमारे यह समझ में नहीं आया कि जिस हांगकांग नगर में इतने दिनों से अंग्रेजों का अधिकार है वहाँ से करोड़ों रुपयों का व्यापार अंग्रेज प्रति वर्ष करते हैं वहाँ सब तक पानी की व्यवस्था क्यों न हो पायी ।

ता० २५ की प्रातःकाल ११ बजे सब हम हांगकांग से सात चीन की सीमा के लिए रवाना हुए तब चाइना डेवेलपिंग एजेंसी के दो अध्यक्ष हमारे साथ थे । हांगकांग से सात चीन की इस सीमा का दुरावृत्त स्नान बहुत दूर नहीं है ।

सात चीन की सीमा का यह स्नान एक अमान्यन रसता है । हांगकांग से आनेवाली रेल वहाँ ठहरी वहाँ सहरा रहे थे अंग्रेजी राज्य के मुनियन बँक घौर एक छोटे से पुल के बाब सात चीन की सीमा पर सात चीन के सात अण्डे । दोनों घौर इन अण्डों की जितनी अधिकता थी उतनी हमें इस दौरे में किन्हीं अण्डों की न मिली थी । केवल साइया नदी के पुल पर कैनेडा घौर संयुक्त राज्य अमेरिका की सीमा पर कैनेडा घौर अमेरिका के अण्डे थे किन्तु वहाँ किन्तु स्वल्प एक-एक अण्डे ही लगाये गये थे । इसका कारण कदाचित् इस स्थल का देते स्थान पर हीना या वहाँ दो राज्यों की सीमा लगती है । इन अण्डों की बहुतायत के सिवा सात चीन की सीमा में पर रहते ही अण्ड जिन दो चीनों ने हमारा ध्यान सबसे अधिक आकषित किया है वे ही जस के सर्वेसर्वा स्टाकिन घौर चीन के सर्वेसर्वा चाओत्सेतु म के चित्र तथा चीन की सरकार के कावों का हर प्रकार का लबातार प्रचार करनेवाला दैवियो । सात चीन की सीमा में प्रवेश करने के बाद सात चीन छोड़ने तक ये दो चीनों तो हर अण्ड अनेक रूपों में हमें दृष्टिगोचर होती रहती ।

सात चीन की इस सीमा पर हमें लेने के लिए चीन की सरकार की घौर से भी दो तथा चाइनी-इंडियन अेचिप एसीजिएशन के एक प्रतिनिधि आये थे । आब से लेकर चीन छोड़ने तक बी बी महोदय तो लगातार हमारे साथ ही रहे । बी बी के सङ्घ संरजन अस्थित जीवन में हमें बिरलै ही मिले हैं घौर साइनी-इंडियन अेचिप एसीजिएशन ने चीन में हमारा जो प्रेम-पूर्ण महान् आतिथ्य-सत्कार किया वह भी हम

जीवन भर कभी भी विस्मृत नहीं कर सकते ।

नाम चीन में प्रवेश करने के लिए जिन बिना घाहि की आवश्यकता थी उसकी यहाँ समस्त व्यवस्था थी । बुंदी घाहि के सम्बन्ध में भी हमें किसी प्रकार की कोई परेशान नहीं हुई ।

नाम चीन की इस सीमा से चीनी रेल लगभग दो बजे जाती थी । चीन की हमारी सारी यात्रा अब रेल से होने वाली थी । यहाँ से चलकर नाम चीन के जिन प्रथम स्थान पर हम ठहरने वाले थे उतका नाम था कॅप्टोन । इस स्थान से कॅप्टोन पहुचने में लगभग चार घण्टे लगते थे ।

मोजन कर दो बजे हम कॅप्टोन के लिए रवाना हो गये ।

चीन में दो सप्ताह

जब हमारे चीन के मुख्य भूभाग में प्रवेश किया तब मेरे मन में ऐसी उत्सुकता थी वैसी इस पृथ्वी-परिक्रमा में अब तक कहीं भी न रही थी ।

इसका प्रधान कारण का इतना प्राचीनतम देश में एक नवीनतम प्रयोग का होना । अब तक हम त्रिन देशों को गये थे उनका राजनैतिक धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था थोड़े-बहुत हेरफेर के साथ वैसी ही है जैसी हमारे देश की । लपकते से बर्षों से जो यूजीवाद संसार के सभी देशों की राजनैतिक धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित किये हुए हैं उसको उखाड़ फेंकने का जो देश प्रयत्न कर रहे हैं उनमें चीन का एक मुख्य स्थान है । यद्यपि चीन के धार्मिक नेताओं का यह दावा नहीं है कि चीन का जीवन साम्यवादी जीवन हो गया है तथापि वहाँ के शासन में साम्यवादियों का नेतृत्व है और चीन को वे उसी विभा में ले जा रहे हैं । हमारे देश के कुछ प्रतिनिधिबंदल इन्हीं दिनों चीन घाये थे और इन बंदलों के कुछ प्रतिनिधियों ने चीन में जो कुछ हो रहा है उसके सम्बन्ध में अपनी-अपनी सम्मतियाँ भी कीं कुछ ने पक्ष में, कुछ ने विपक्ष में । इन प्रतिनिधियों में से कुछ के भावण्ड मने सुने हैं और कुछ के विचार पत्रों में पड़े थे । मेरे मन में बड़ी उत्सुकता रही थी चीन के इतना नवीन प्रयोग को स्वयं देखने की । यद्यपि वस में यह प्रयोग बहुत समय से चल रहा है और वहाँ जो लोग पये थे या कुछ साल तक रहे घाये थे उन्होंने वहाँ की सफलता तथा विफलता के सम्बन्ध में भी घनेक बर्तों कही थी जिन्हें सुनकर या पढ़कर मेरी वहाँ जाने की भी बड़ी इच्छा थी और धानी भी है तथापि वस की प्रवेष्टा भी चीन के सम्बन्ध में यह इच्छा कहीं धार्मिक प्रबल थी । इसका प्रधान कारण था हमारे देश का और चीन का बहुत पुराना सांस्कृतिक सम्बन्ध । साम्यवाद के सिद्धान्तों से मे पुराने तथा सहमत नहीं हूँ । इसके प्रधान कारण दो हैं—साम्यवाद सर्वथा धार्मिकवाद है अतः मे उसे इर्कवावाद मानता हूँ । मानव को किसी भी प्रकार के केवल धार्मिकवाद से सन्तोष नहीं हो सकता यह मेरा मत है । दूसरे साम्यवाद अतिशय स्वातन्त्र्य का शोष कर देता है । पर साम्यवादी न होते हुए भी मे यह भी मानता हूँ कि यूजीवाद

ने उसके पूर के सामग्र्यवार धारि के सङ्ग अचिन्तित लोगों को बुझी ही एक छोड़ा है। यतः समाज की बतमान व्यवस्था में परिवर्तन आवश्यक है। यद्यपि म धनी अमेरिका बेचकर सोडा या और मने नहीं देखा था कि पूँजीवादी-व्यवस्था में भी बुद्धियों की सहाय बहुत कम है तथापि अमेरिका के समाज धन्य कोई पूँजीवादी देश नहीं यह भी म देख चुका था। हमारा पड़ोसी और अताधिक्य से मिल देश है हमारा सांस्कृतिक सम्बन्ध रहा है ऐसा भी देश पूँजीवाद से विषय छुड़ान का प्रयत्न कर रहा है समाज में उड़ी देश को देखा मेरी इस समय की उत्पुष्टता का यह प्रधान कारण था। धन्य देशों को जाते समय नहीं के प्राकृतिक बुद्धि और वर्तनीय स्थानों को देखने की मेरी अभी उत्पुष्टता रहती थी जतसे चीन देखने की उत्पुष्टता वर्तना मिल थी।

चीन की मुख्य भूमि में प्रवेश करने के दिन से उसे छोड़ने तक हम सोय सोलह दिन और पन्द्रह रात चीन में रहे। इन सोलह दिनों में घाट दिन और पन्द्रह रातों में छः रातें हमारी रैम में बीतीं। सोय समय हमने बिताया कम्बोन्, रांपाई, वीकिंग और हेकी नगरों तथा इनके प्रासवास के कस्बों, बाँधों धारि में। परन्तु चूँकि हमारी यह सारी यात्रा रैम में हुई और इस यात्रा में बलित से उत्तर तथा उत्तर से बलित हमने चीन देश के अनेकों भागों के भूभाग को नाया इसलिए रैम के उच्चों की बुद्धियों से भी हमने चीन के कितने नगर, कस्बे, बाँध, नहरों की भूमि नदियाँ, पहाड़ और मैदान, बस्तियाँ और खेत तथा नहरों का हर प्रकार का जीवन देखा। हमें इस बात पर बड़ा खेद हुआ था कि रैम की इस यात्रा के कारण हमारा बहुत सा समय यात्रा में ही लय जायगा और जो कुछ हम नहीं देख सके थे वह बहुत बड़ा होगा। परन्तु आज मुझे इस बात पर हर्ष है कि हमारी यह यात्रा रैम से हुई। रैम की इस यात्रा के कारण हम जो कुछ देख सके थे वह हवाई यात्रा से सम्भव न था। फिर जित बुद्धि से हम यह देश देख सके थे वह स्वयं होने के कारण चलती हुई रैम से स्टेजनों से चढ़ी-चढ़ी हम चढ़ी और जिन जिन स्थानों को हम अपने उन सबके नामा प्रकार के बुद्धों से, एवं जिन-जिन से हम मिले उनके आदर्शों तथा जो साहित्य हमने चढ़ी इकट्ठा किया उतने इतने पीछे समय में भी हम वर्तमान चीन का चौड़ा बहुत अध्ययन करने में जायब सफल हो सके हैं। यों तो किसी देश के सांयोग्य अध्ययन के लिए हस्तों, महीनों ही नहीं, वर्षों की आवश्यकता होती है फिर चीन के सङ्घ विद्यालय के लिए तो वर्षों की। पर मुझे-फिरते यात्रियों की अपनी एक बुद्धि होती है।

बुद्धि चीनकी है मन पर कुछ बुद्धि-बुद्धि-सी देखाएँ जो मिल मुनकर एक न-सा बना देती है। हमारे चीन के जिन की ये देखाएँ विविध प्रकार की थीं, कि मुझे फिरते यात्री होने पर भी हम चीन की एक विविध प्रकार से देखा जाते थे और इसीलिए हमने इतने बड़े समय में भी केवल वर्तनीय स्थान ही नहीं,

पर वहाँ के जीवन से सम्बन्ध रखने वाली विविध प्रकार की वस्तुओं को देखने का प्रयत्न किया तथा वहाँ के प्रत्येक छिद्रकों के विस्फेदार्थ व्यक्तियों से मिल प्रत्येक सम स्याओं पर चर्चा करने एवं वहाँ के गाना प्रकार के साहित्य को इकट्ठा कर उसका अध्ययन करने का। छिद्र हम एक न होकर तीन से साब ही साइनो-इंडियन कोण्ड्रिप एसोसियेशन के पदाधिकारियों से हमारे इस प्रयत्न में उन्हें हर तरह की पूरी सहायता प्रदान की इसीलिए हमारे इस प्रयत्न में हमें कई सहूलियतें मिल पयीं।

हमने चीन में जो कुछ देखा उसमें वर्तनीय स्थानों एवं गणक नव्य प्रादि सांस्कृतिक प्रदर्शनों की बात तो बाद में करेंगे पहले चीन में जो एक नवीन प्रयोग हो रहा है धीरे जिस प्रयोग को देखने की ही मेरी सबसे अधिक उत्सुकता को उसी की से कुछ चर्चा कर लूँ। इसके लिए मैंने कुछ सरकारी धीरे धीरे सरकारी कारखाने देखे। मजदूरों की वस्तियाँ देखीं। पाँच बड़ी की खेती धीरे वहाँ के लोगों का रहन साहन देखा। कुछ लोगों से मुलाक़ातें कर कुछ विषयों पर चर्चा की धीरे कुछ साहित्य इकट्ठा किया। इस सब निरीक्षण से वहाँ के इस नवीन प्रयोग के विषय में हमारा जो मत बना घसी का संक्षेप में एक मोटे रूप में से यहाँ एक निबोध-सा रस रहा है। पर इस निबोध को रखने के पूर्व में इतना प्रबन्ध कह देना चाहता हूँ कि चीन के निरीक्षण के उपर्युक्त सारे साधनों के बुझाने पर, इस निरीक्षण के धीरे प्रयत्न करके पर धीरे यह मानने पर भी कि हम अपने निरीक्षण में कुछ दूर तक साम्य सफल हो सके हैं हमारा चीन के सम्बन्ध में जो मत बना है वह मत भी ही सकता है। इसका प्रबल कारण यह है कि वहाँ इन तीन वर्षों में जो कुछ किया गया है उसके विषय में वहाँ के जिन लोगों से हम मिले उनकी राय में इतनी विभिन्नता है तथा जो ज्ञातन इस समय वहाँ चल रहा है उसमें इतनी बातें गुप्त रखी जाती हैं यहाँ तक कि वहाँ का वार्षिक बजट तक प्रकाशित नहीं होता कि किसी भी बारीक-से-बारीक धीरे स्पष्ट-से-स्पष्ट दृष्टि रखने वाले निरीक्षण का भी यह कह सकना कि उसका मत ठीक है से कठिन हो नहीं सतम्ब मानता हूँ। मेरी यह राय उन लोगों के सम्बन्ध में भी है जो बीजिंग तक वहाँ रहे हों, यहाँ तक कि उन दूतावाहों के सम्बन्ध में भी जो सदा वहाँ रहते हैं धीरे जिनका काम हर प्रकार से हर बात का पता लगाते रहना रहता है।

नये चीन को ज्ञात चीन कतना पश्चात् में उपर्युक्त नहीं है। इस समय का चीन साम्यवादी वहाँ कहा जा सकता धीरे चीन ही क्या कस तथा पूर्वी यूरोप के बेकोस्लोवेकिया, यूबीस्लाविया बलबेरिया प्रादि देश जो साम्यवादी कहे जाते हैं, पश्चात् में साम्यवादी नहीं हो पाये हैं। लम्बे साम्यवाद में व्यक्तिगत सम्पत्ति का कोई स्थान नहीं है। इन सब देशों में यहाँ तक कि कस में भी व्यक्तिगत सम्पत्ति मौजूद

है चीन में तो बहुत बड़े परिमाण में। चीन में चाहे जमीन का पुनर्बितरण हो गया हो पर अभी भी सारी जमीन व्यक्तिगत सम्पत्ति ही है। कहीं-कहीं सहकारी (कोऑपरेटिव) और सामूहिक (कन्सिस्टन्स) फर्मों की स्थापना का प्रयत्न हुआ है पर सुना गया है कि ये सफल नहीं हो रहे हैं। कहीं-कहीं सरकारी काम स्थापित हुए हैं पर इन्हें स्थापित हुए अभी इतना कम समय बीता है कि इनकी सफलता के सम्बन्ध में आज कुछ भी कहना उपयुक्त न होगा। चीन में उद्योग-धन्य कम है और उनमें अभी भी कुछ व्यक्तिगत सम्पत्ति ही है। कुछ बड़े-बड़े कारखानों का राष्ट्रीयकरण हुआ है, पर इनकी संख्या अभी बहुत कम है। चीन का व्यापार सरकार के हाथ में आया है, पर व्यक्तियों के हाथ में भी है। साम्यवाद का दूसरा सिद्धान्त है कि हर घाबरी अपनी क्षमता के अनुसार उत्पादन करे और अपनी आवश्यकता के अनुसार प्राप्त। इस सिद्धान्त के ती निकट भी कोई देश नहीं बढ़ रहा है। चीन में तो इसकी चर्चा तक सुनायी नहीं हो। एक व्यक्ति की घामदानी से दूसरे की घामदानी में बहुत बड़ा अन्तर अभी साम्यवादी कहे जानेवाले देशों में है जस में भी चीन में एक बड़े परिमाण में। फिर भी यह बात जाननी होगी कि पूँजीवादी देशों की घमेला घाय का यह अन्तर चीन में कम है। अमेरिका आज के संसार का सबसे बड़ा पूँजीवादी देश है और अन्य अधिकांश पूँजीवादी देशों में पूँजीवाद बहुत दूर तक जो बरा समान केवल सहयोग माना जाता है वैसे अमेरिका में नहीं अमेरिका में तो पूँजीवादी सिद्धान्त ही ठीक है यह माना जाता है। अमेरिका में एक व्यक्ति की घामदानी से दूसरे की घामदानी में जितना अन्तर है उतना कदाचित् कहीं नहीं पर इतने पर भी बहुत जिनकी घामदानी सबसे कम है उनमें भी हमें प्रतापोव न दिखायी दिया, ऐसे लोग भी पूँजीवाद बुरा है और साम्यवाद की आवश्यकता है यह कहते हुए नहीं सुन गये। इतका कारण कदाचित् यह है कि वहाँ की न्यूनतम घाय भी इतनी अधिक है जितनी अन्य देशों में अधिकतम की अधिकतम घाय। वहाँ से चीन का ही उदाहरण हुआ। चीन में अधिक लोगों की राय में उच्च-से उच्च सरकारी कर्मचारी को हमारे रुपये में १४०) मासिक वेतन मिलता है। चीन जनराज्य के प्रधान माओसे लुंग का वेतन कोई ७०) रुपये है। यद्यपि कुछ लोगों की राय है कि यह उच्च-से-उच्च वेतन चार हजार रुपये महीना भी है। ठीक बात क्या है इतका पक्का पता इससिफ नहीं चलता कि क्या अन्तर कहा है कि चीन का बजट ही किसी को शक नहीं। अमेरिका में एक घण्टे की मजदूरी की बिरफा कम-से-कम चार रुपये के लयमप (पचहत्तर सेंट) कानून से नियुक्त है यद्यपि मिलती इतने कहीं अधिक है। पर यदि हम कानून द्वारा निश्चित कम-से-कम मजदूरी भी से लें तो अमेरिका में घाठ घण्टे के काम की मजदूरी बलीत रुपये हुई। हस्ते में दो दिन की वहाँ लुट्टी होती

है बात: बाईस दिन की मजदूरी हुई ७ ४) रुपये। ऊपर चीन के उच्च-से-उच्च तरकारी कर्मचारियों के वेतन की बात कही गयी है। जिनके बच्चे-बच्चे और व्यापार है उनकी प्रायः छायद इतने अधिक है और मजदूरों की बहुत कम। सुना गया कि मजदूरों की कम-से-कम मजदूरी एक रुपया रोख तक भी है। पर अमेरिका के लोगों की घामबनी और चीन के लोगों की घामबनी का कोई मिलान नहीं किया जा सकता। मर्चेंट में अमेरिका के लोगों की प्रायः से तो संसार के किसी भी देश के लोगों की प्रायः का मकाबला नहीं। अमेरिका में एक व्यक्ति की घामबनी से दूसरे की घामबनी में बहुत अधिक अन्तर होने पर भी जिनकी घामबनी कम-से-कम है उन्हें भी इतना अधिक मिलता है कि उन्हें असन्तोष नहीं। पर जहाँ सोच मुझों करते हैं वहाँ यदि एक व्यक्ति की प्रायः से दूसरे की प्रायः में बहुत अधिक अन्तर हो तो कम प्रायः वाले को असन्तोष ही नहीं ईर्ष्या होती है जलन होती है और इसका अन्तिम परिणाम निरक्षरता है जन्म। संसार के किसी भी देश में साम्यवाद के मुख्य सिद्धान्त के अनुसार चाहे हर घामबनी अपनी अन्तिम के अनुसार उत्पादन कर अपनी आवश्यकता के अनुसार प्राप्त न करता हो चाहे एक व्यक्ति की घामबनी से दूसरे व्यक्ति की घामबनी में काफी अन्तर भी हो पर साम्यवादी कहे जाने वाले देशों में इस अन्तर को घटाने का प्रयत्न अवश्य किया गया है चीन में भी यह हुआ है और इसीलिए निर्धनता रहते हुए भी वहाँ के लोगों के पुराने असन्तोष की मात्रा अल्प गयी है।

इस प्रकार साम्यवाद के उपयुक्त लोगों मुख्य सिद्धान्तों के अनुसार संसार का कोई भी देश पूर्णतया साम्यवादी नहीं कहा जा सकता चीन तो सर्वथा नहीं और इसीलिए चीन का शासन जिनके हाथ में है वे भी चीन को साम्यवादी न कहें केवल इतना ही कहते हैं कि चीन का शासन साम्यवादियों के नेतृत्व में है और इस नेतृत्व का ध्येय चीन में साम्यवाद की स्थापना है।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या चीन इस ध्येय की ओर बढ़ रहा है? इसका उत्तर देना सरल नहीं है। जिस वक्त में पहली साम्यवादी आन्ति हुई और जिस अन्ति को हुए ३५ वर्ष हो चुके जब उसके सम्बन्ध में भी इस विषय पर विचारकों में मतभेद है तब चीन के सम्बन्ध में जहाँ वर्तमान आन्ति को हुए केवल तीन वर्ष बीते हैं इस विषय में कुछ भी कहना एक अर्थात् बात होगी।

इसने पर भी इन तीन वर्षों में चीन में कुछ बड़ी-बड़ी बातें करने का प्रयत्न किया गया है और कुछ बड़े-बड़े काम हुए हैं। मेरे मतानुसार वे बड़े काम चार हैं—चीन की भूमि का पुनर्विस्तारण, चीन की स्त्रियों का उत्कर्ष चीन में अन्तःकार की समाप्ति और चीन की न्याय-व्यवस्था का परिवर्तन। अब इन चारों बातों के प्रत्येक

का सञ्चय से कुछ विगड़ान उपयुक्त होता ।

चीन की इस नयी शासन-व्यवस्था के पूर्व चीन को अधिकांश भूमि पर जमींदारों का अधिकार था । ये जमींदार इस जमीन को या तो धरमी कास्टकारों को उठाते थे या मजदूर रककर खेती कराते थे अधिकांशतर पहली वृद्धि से । जमींदारी खत्म होने के पहले की भारत की घोर चीन की उस स्थिति में कोई विशेष अन्तर नहीं था । नये चीन ने केवल जमींदारी खत्म नहीं की पर जमींदारी खत्म करने के साथ ही जमींदारों की सारी जमीन भी लेकर उसका पुनर्वितरण कर दिया गया यद्यपि सब अगहू घोर सब की जमीन के सम्बन्ध में यह नहीं हुआ । टिनकी जमीन लेकर बाँटी गयी घोर कितनी नहीं इसके विषय में चीन का जमीन के सम्बन्ध में जो नया कानून है उसी के आधार पर कुछ कहना उचित होगा ।

चीन में जिन लोगों के पास भूमि थी उन्हें नये कानून के अन्तर्गत निम्न शक्तियों में विभाजित किया गया है—

- (१) जमींदार ;
- (२) धरमी किसान ;
- (३) मध्यम धरणी का किसान ; घोर
- (४) परीब किसान ।

इनमें जमींदारों घोर इसी प्रकार मंदिरों इत्यादि की जमीनों तो सरकार ने पूरी तरह खीन ली है । भूमि सुधार कानून की धारा २ घोर ३ में कहा गया है—

“जमींदारों की जमीनें उनके पसु खेतों के धौजार इनका फाजतु धनाच व देहातों में इनके फाजतु मकानों को अस्त कर लिया जायगा, पर उनकी अन्य सम्पत्ति अस्त नहीं की जायगी ।”

अंतुक्त जर्मस्थानों मंदिरों मठों, गिरचों स्कूलों धरि संघठनों की धुवि-भूमि तथा सार्वजनिक संस्थाधों की अन्य भूमि सरकार प्राप्त कर लेवी वर स्थानीय अन्तरकारों को इस बात का अनुचित प्रबन्ध करना होगा कि इन जमीनों को प्राप्त करने के बाद इन जमीनों की धाय से अस्तने वाली संस्थाधों के लिए धर्ब-प्रबन्ध की व्यवस्था ही जाय ।

“मसजिदों की जमीनों के सम्बन्ध में परिस्थितियों के अनुकूल घोर स्थानीय मुस्लिम अस्तता की इच्छानुसार निर्णय किया जाय ।”

इसी कानून की धारा ३ के अनुसार लैमिकों धरिधों के अन्तराधिकारियों घोर कुछ अन्य लोगों की जमीनें अन्हीं के पास कुछ धठों पर छोड़ दी गयी है—

“अधिकारी अस्तियों, धरिधों के धाधितों मजदूरों, सरकारी कर्मधारियों

पेसावर कारीगरों तथा ऐसे अन्य व्यक्तियों की जमीनों को भी अन्य कोई काम करने के कारण अपनी जमीनें लगान पर अछा देते हैं जमींदारियों के प्रन्तर्गत बर्गीकृत नहीं किया जायया और ना ही सरकार उसे लेगी। पर इसके साथ शर्त यह है कि जिस इलाके में जमीन हो उसमें प्रोसत से प्रति व्यक्ति को जितनी जमीन मिली हुई हो उतने यह प्रति व्यक्ति के हिसाब से बुयनी से अधिक नहीं होनी चाहिए। उदाहरण के लिए यदि किसी इलाके में प्रति व्यक्ति प्रोसत जमीन दो 'मोन' हो तो प्रति व्यक्ति को चार मोन जमीन तक छोड़ ही जायगी पर इससे अधिक हुई तो प्रतिव्यक्त जमीन को सरकार ले सकती है। यदि यह साबित हो जाय कि जमीन व्यक्ति की कुन-बसोने की कमाई से खरीदी हुई है या प्रकले रहने वाले किसी बड़े व्यक्ति की है प्रनाय की है, धर्मंग की है या निराधित विधवा या विधुर की है, जिसकी धार्मीयिका इस भूमि पर ही निर्भर करती है तो इरेक नामने की देकते हुए इस बात की रियायत ही जा सकेगी कि बुयनी से अधिक होने पर ऐसी जमीन को भी सरकार न ले।”

यनी किसानों की जमीनें भी छोटी नहीं गयी है। बारा ६ का भी यहाँ उद्युत करना अनुपयुक्त न होया—

“यनी किसानों की जमीनें जिन पर वे बूढ़ कासत करते ह या मजूरों से कराते ह उनको और ऐसे किसानों की अन्य सम्पत्तियों की रक्षा की जायगी।

“यनी किसान जिन छोटी जमीनों को लगान पर खोत के लिए उठा रहे उनको भी यों ही रहने दिया जायगा। पर कुछ बात इलाकों में लगान पर उठायी गयी जमीन का कुछ धंश या बहुसमुची की समुची प्राप्तीय जन सरकारों की स्वीकृति से या अधिक उच्च स्तर पर कार्टवाई करके हस्तगत की जा सकेगी।

“यदि किसी धर्म जमींदार जैसे यनी किसान की लगान पर उठावो यपी जमीन उत जमीन से अधिक होगी जिसमें बहु खेती करता है या जिसमें बहु मजूरों से खेती कराता है तो लगान पर उठायी गयी जमीन हस्तगत कर नी जायगी।

“जिस भूमि को किसान लगान पर उठाता हो बहु जमी भूमि के साथ सम्पुलित होनी चाहिए जिसमें बहु बूढ़ कासत करता या कराता हो।”

मध्यम धेरी के और यरीष किसानों की भूमि उनके पास ही धपूनी छोड़ दी ययी है।

इन धेरियों की परिभाषा प्रत्यन्त महत्वपूर्ण है। जमींदार की परिभाषा में इस बात पर बिद्वेष और दिया गया है कि बहु स्वयं धारौरिक धम करता है या नहीं। यदि बहु स्वयं धारौरिक धम नहीं करता तो उसे जमींदार माना जायगा।

“ऐसे व्यक्ति को जमींदारों के वर्ग में रखा जायया जो भूमि का स्वामी तो

हो पर स्वयं मजदूरी न करता हो प्रबन्ध मात्र को मजदूरी करता हो और जो अपनी प्राचीनिका के लिए शोषण पर निर्भर रहता हो।"

इसी प्रकार पत्रिक किसान वे हैं जिनके पास कार्य करने के लिए प्रच्छ लावन है। जिनकी स्वयं की जमीन भी है और जो दूसरों से जमीन भी खोलने को लेते हैं किन्तु वे यद्यपि स्वयं भी धम करते हैं तथापि अधिकतर दूसरों के धम के शोषण पर निर्भर रहते हैं।

साधारणतया ऐसे लोगों के पास उत्पादन के बहुत साधन रहते हैं और कुछ नकद भुँजी भी। वे धम का कुछ भाग स्वयं करते हैं पर अधिकतर दूसरों के धम पर निर्भर रहते हैं। उनकी प्राचीनिका का मुख्य भाग शोषण पर प्रबलम्बित है।

मध्यम श्रेणी के किसानों के पास यद्यपि स्वयं की जमीन होती है किन्तु वे अपने धम के उत्पादन पर ही निर्भर रहते हैं। परीब किसान भी अपनी मैतुनत पर ही निर्भर रहते हैं। उनके पास जमीन रहती भी है और नहीं भी रहती।

इस तरह का श्रेणी किसानों के द्वारा ही किया गया है। किसान संघ को कामुनी साम्यता प्राप्त है और किसान संघ में जिम्मेदार बराधिकारी साम्य बाबी इस के लक्ष्य हैं।

धीन की अधिकतर भूमि का पुनर्निर्माण हुआ है। ग्राम तौर पर हर व्यक्ति को एक तिहाई एकड़ जमीन दी गयी है। कहीं-कहीं उत्तर में जहाँ भूमि अधिक है अधिक भी दी गयी है। लोग अधिक प्राधान्य का देश है और वहाँ एक कुटुम्ब घोसत से पाँच व्यक्तियों का माना जाता है। एक तिहाई एकड़ प्रति व्यक्ति के हिसाब से एक कुटुम्ब को १३ जमीन मिली है। जमीन के नये कानून के अनुसार जनमान किसानों के पास अधिक जमीन भी है और जिन्होंने धीन की नवी सरकार की स्थापना में सहायता की है उनको और विशेष रूप से सैनिकों की जमीन भी नहीं ली गयी है। वे लोग अपनी जमीन पर मजदूर रखकर भी काम करा सकते हैं। चूंकि इसके पहले जमीन बहुत छोटे लोगों के पास को प्रच. जमीन पाकर धीन के श्रेणियों को पहले पहल सन्तोष हुआ यद्यपि यह सन्तोष बहुत दूर तक मनोबिज्ञान की दृष्टि से मानसिक सन्तोष ही था। भारत के सभूत धीन में भी वहाँ की ७५ प्रतिशत जनता श्रेणियों में रहती है प्रच. वहाँ की जनता का इस प्रकार का सन्तोष बहुत बड़ी बात है यद्यपि यह भी सुना गया कि यह सन्तोष अब प्रसन्तोष में परिवर्तित ही रहा है क्योंकि भूमि का कर बहुत बढ़ा दिया गया है। जो कुछ हो, प्रबल भूमि का पुनर्निर्माण धीन का बहुत बड़ा काम है। पर इसका एक दूसरा रक भी है जिसमें धीन में भी नहीं आ सकती। एक सही दो बड़े तीन एकड़ के धाम ही अब धीन में अधिक हो गये हैं और

ऐसे एक काम का उत्पादन क्या सम्भव बन सकता है तथा इस उत्पादन से जो प्राय एक कुटुम्ब को होती है उससे वहाँ की जनता का जीवन-स्तर क्या ऊँचा से जाया जा सकता है ? हमने वहाँ की लड़की और कटती हुई फसलें भी देखीं। चीन में अधिकतर जावल होता है और वहाँ जावल की फसल घाने का बही समय या जब हम वहाँ गये। वहाँ की फसलें हमें कमबोर और प्रत्यन्त साधारण कोटि की जान पड़ीं। चूँकि चीन में वहाँ की प्राच्यकृता के प्रसार प्रग्न उत्पन्न हो जाता है और वहाँ बाहर से प्रग्न मँगाने की प्राच्यकृता नहीं है इसलिये उत्पादन बढ़ाने का प्रग्न वहाँ बाहे तात्कालिक महत्त्व न रहता हो, पर परीबी की वृष्टि से चीन परीब से परीब देशों में एक देश है। वहाँ के पाँच, उन पाँचों के मकान रास्ते प्रादि हमारे देश के बाँधों के समान ही हैं। लोगों की रज्जु-बहुन भी उत्कृष्ट परीबी की है। बुजने-मत्तने पाल, पिचके हुए निस्तेज घरीर और उन पर फटे बिगड़े लगे हुए बिचड़े वहाँ की जनता की प्राचिक स्थिति के स्पष्ट प्रदर्शन हैं। यदि चीन की जनता का मुख्य पिसा होती है तो वहाँ की परीबी दूर करने के लिए खेती का उत्पादन बढ़ाना ही चाहिए। इतनी थोड़ी जमीन में प्राधुनिक मशीनों प्रादि का उपयोग तो दूर रहा, पशुधों का उपयोग भी नहीं किया जा सकता, घटः प्राय थोड़ी-थोड़ी जमीन मिलने से लोगों को बाहे सम्भव हो गया ही पर यह शक्य सम्भव है। जमीन का इस प्रकार का बिनामन वहाँ की स्थायी स्थिति में नहीं रह सकता। तब प्राये चलकर इस सम्बन्ध में वहाँ क्या होना ? कहना सरल नहीं है। या तो जो सहयोगी और सामूहिक काम वहाँ इस समय लफन नहीं हो रहे हैं और वहाँ के लोगों को बचिकर भी नहीं उन्हीं की स्थापना इस प्रकार के भूमि बितरण का प्रतिम रूप होना चाहिए। या फिर जापान के लघु लघु छोटे-छोटे काम के लिए उत्तम-से उत्तम जाद की बहुतायत और प्राकृति-से-प्राकृति प्राचपायी के साधन होने चाहिए जो चीन के लघु प्रत्यन्त बिनाम साध ही प्राच्यकृता परीब देश के लिए जुटा सकना सरल बात नहीं है।

चीन की स्त्रियों का उत्कर्ष वहाँ के कामों का दूबरा महत्त्वपूर्ण कार्य है। पुराने चीन में स्त्रियों को जो बधा भी उसका कुछ बिबरल यहाँ दिया जा रहा है। प्राचीन चीनी परम्परा के अनुसार चीनी स्त्रियों में कैबल ये मूल होने प्राच्यकृता से—रसोई का काम प्राग, घर का प्रबन्ध देखना और जिम्मे-पालन। बिबाह से पहले बहु पिता की प्राज्ञा मानती थी बिबाह के बाद पति की प्राज्ञा पर चलती थी और पति की मृत्यु के बाद अपने बेटे पर प्राधित रहती थी। समाज में स्त्री का स्थान पुरुषों की तुलना में प्रत्यन्त हीन था। बहु घरों की चारदीवारी में ही सोना पत्नी थी। परीबी के कारण लड़कियों को बेचने के उदाहरण भी पाये जाते थे। नये स्त्रियों के उत्कर्ष के सम्बन्ध में प्रत्यन्त महत्त्वपूर्ण और ठोस कथन

चीन की स्त्रियों को यूरोप की स्त्रियों से अधिक स्वतन्त्रता प्राप्त है, किन्तु इससे नैतिकता का स्तर नहीं गिरने वाला बरन् कुछ ऊँचा हो गया है। पेरिस जैसे शहरों में नैतिक व्यवहार का जैसा नमूना चित्र दिखायी देता है उसका चीन में कहीं नाम-निघान भी नहीं है।

स्त्रियाँ सभी कामों में भाग लेती हैं। चीन की सेना में इनकी काफी संख्या है और सरकारी इकायों में भी वे अपनी कुशलता का परिचय दे रही हैं। मरों से धरमाने करने का काम करने के निम्न कोटि का समझने का बड़ा प्रश्न ही नहीं पड़ता। विवाहित जीवन के साथ-साथ वे अपने लिए उपयुक्त आजीविका भी जुटाती हैं। भारत की तरह चीन की महिलाएँ आर्थिक दृष्टि से एकदम नुस्खों पर आश्रित नहीं हैं।

चीन में महिलाओं का एक फेडरेशन है। हरेक गाँव में इस संस्था की शाखाएँ हैं। इस संस्था के दो मुख्य काम हैं—महिलाओं के हितों की रक्षा करना और राष्ट्रीय प्रगति में इनका योग प्राप्त करना। भारत में कुछ महिलाएँ अवश्य बहुत प्रगति हो गयी हैं पर अभी वर्ग में अधिक जागृति नहीं है। जैसा कि ऊपर बर्लिन किया जा चुका है चीन में महिला समाज की परिस्थितिवश समाज में अपना पड़ा, हाँ, नये चीन में जिस दिशा में उनका सक्रिय किया गया वह सराहनीय है। भारत की तरह चीनी महिलाएँ फेडरेशन के रूप में समाज में नहीं आयी बल्कि आधुनिकतावश आयी हैं और अब राष्ट्रीय प्रगति में अत्यन्त महत्वपूर्ण योग दे रही हैं।

नये चीन में महिलाओं की ठीक-ठीक स्थिति का ज्ञान वहाँ के नये विवाह कानून से हो सकता है। यह कानून मई १९५० में पास किया गया। चीन में देखा नहीं है कि कानून सर्वोच्च संतुष्टि में पास कर दिया और इसके बाद उठे जायु कर दिया। वहाँ कानून बनता के फेडरेशन से बनते हैं। गाँव तथा एक सभी संस्थाओं के विचार लिये जाते हैं। इसलिए नया विवाह कानून बनने में सीमाहीन महीने का समय लगा।

इस कानून में विवाह का बहुमुख अत्यन्त स्पष्ट किया गया है—

- (अ) आपसी प्रेम
- (आ) धर्म-नाशक;
- (इ) राष्ट्रीय प्रगति में योगदान और
- (ई) नवनि समाज का निर्माण।

एक और मुख्य शर्तों का बरबा बराबर होता है जिसका अर्थ है कि दोनों ही अपने-अपने लिए व्यवसाय चुनने के लिए स्वतन्त्र हैं और सामाजिक जीवन में पूरा भाग ले सकते हैं।

इस कानून में इन बातों की भी व्यवस्था है—कोई भी व्यक्ति एक स्त्री के रहते हुए दूसरा विवाह नहीं कर सकता स्त्री पति के रहते दूसरे व्यक्ति से अनुचित सम्बन्ध नहीं रख सकती, छोटी उम्र में विवाह नहीं हो सकता, विधवा विवाह पर प्राप्ति नहीं की जा सकती और विवाह के अन्तर पर बहूज प्राप्ति नहीं माँगा जा सकता ।

जब तक लड़का बीस वर्ष का न हो और लड़की की उम्र अठारह वर्ष न हो उनका विवाह नहीं हो सकता । वे दोनों रजिस्ट्रार के अन्तर में अपने विवाह की घोषणा कर सकते हैं । माता-पिता को बचल बिन का अधिकार नहीं है । असाध्य रोग से पीड़ित व्यक्ति विवाह नहीं कर सकते । यदि दोनों व्यक्ति तलाक देना चाहते हैं तो यह औरन स्वीकार कर लिया जाता है । यदि तलाक देने के बाद वे पुनर्विवाह करना चाहते हैं तो कानून उन्हें इस बात की आज्ञा देता है ।

घाज चीनी बीजल का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसमें महिमाएँ अग्रसर न हो रही हों । स्त्रियाँ सैनिक भी बनी और छात्रामार भी । कारखानों और सरकारी वपत्रों में जहाँ और स्कूलों में स्त्रियों ने पुष्पों के साथ लंबे से कंबा मिलाकर काम किया । पहले स्त्रियाँ अपनी सुरक्षा का ही क्यास करती थीं और समाज में घाते डरती थीं । उन्हें अलग रहना ही पसन्द था । अब स्त्रियाँ समाज में घा पयो हैं और स्वतन्त्र हैं ।

चीन की नयी सरकार को इस काम में बहुत बड़ी सफलता मिली है । इस विषय का कोई दूसरा एक नहीं और इस विषय में नये चीन की जितनी भी प्रशंसा की जाय सीधी है ।

अध्यापक की चीन में तीन वर्षों के अध्ययन में प्रायः समाप्ति-ही हो गयी है । चीन का यह काम भी छोटा काम नहीं है । चीन की नयी सरकार को अध्यापक समाप्त करने के लिए सख्त-से सख्त कथम बढाने पड़े हैं ।

अध्यापक रोकने के लिए और चीन को अबाधित तथ्यों से मुक्त करने के लिए चीन के नवीन शासन ने दो प्रबल आन्दोलन जताये । पहले का नाम था 'पूछी की' (तीन सामाजिक बोगों के विच्छेद) आन्दोलन । यह सरकारी कर्मचारियों के लिए था । जिन तीन सामाजिक बोगों के विच्छेद यह आन्दोलन जताया गया था वे थे—(१) अकम्प, (२) घूसखोरी और (३) सरकार का मुकसान । प्रत्येक कर्मचालय में सरकारी कर्मचारियों से एक दूसरे के विच्छेद अध्यापकों माँवी पयी । जिन कर्मचारियों के विच्छेद भीके कर्मचारियों से और भीके कर्मचारियों के विच्छेद उनके भीके के कर्मचारियों से । फिर इन सारी शिक्षापत्तों को एकत्र कर समी बोबी पाये जाने वाले कर्मचारियों को नोकरी से हटाना काराबास, मृत्यु-दण्ड तक सभी दण्ड दिये गये । ये बोबी हैं या नहीं इसके निर्णय का अधिकार उक्त समय जिनके से-जिनके सरकारी कर्मचारियों को

चीन की स्त्रियों को यूरोप की स्त्रियों से अधिक स्वतन्त्रता प्राप्त है, किन्तु इतने नैतिकता का स्तर नहीं विरने पाया बरन् कुछ ऊँचा हो गया है। वैरिस् जैसे ग्रहों में नैतिक ध्वंसाकार का बीसा नग्न बिज्र विषादी होता है उसका चीन में वहाँ नाम-निदान भी नहीं है।

स्त्रियाँ सभी कामों में भाग लेती हैं। चीन की सेना में उनकी काफी संख्या है और सरकारी दफ्तरों में भी वे अपनी कुशलता का परिचय दे रही हैं। मरों से शरमाने करने प्रवृत्त उनसे अपने को निम्न कोटि का समझने का बहुत प्रयत्न ही नहीं करता। विवाहित जीवन के साथ-साथ वे अपने लिए उपयुक्त धार्मिकता को चुनती हैं। भारत की तरह चीन की महिलाएँ धार्मिक दृष्टि से एकदम दुरर्षों पर प्रभावित नहीं हैं।

चीन में महिलाओं का एक संवेग है। हरेक गाँव में इस संस्था की शाखाएँ हैं। इस संस्था के दो मुख्य काम हैं—महिलाओं के हितों की रक्षा करना और राष्ट्र की प्रगति में उनका योग प्राप्त करना। भारत में कुछ महिलाएँ प्रवृत्त बहुत उत्तम हो गयी हैं पर स्त्री वर्ग में धार्मिक जागृति नहीं है। बीता कि ऊपर चलन किया जा चुका है चीन में महिला समाज की परिस्थितिवाला समाज में धाना बढ़ा है, नये चीन में नित शिक्षा में उनका संयोजन किया गया बहु तराहनीय है। भारत की तरह चीनी महिलाएँ रंगम के रूप में समाज में नहीं आयी बल्कि धार्मिकतावाला धायी है और अब राष्ट्रीय प्रगति में अग्रगण्य महत्त्वपूर्ण योग दे रही है।

नये चीन में महिलाओं की ठीक-ठीक स्थिति का ज्ञान वहाँ के नये विवाह कानून से हो सकता है। यह कानून मई १९५० में पास किया गया। चीन में ऐसा नहीं है कि कानून सर्वोच्च संसद् ने पास कर दिया और इसके बाद उसे लागू कर दिया। वहाँ कानून जनता के कर्तव्य से बनते हैं। पाँच समाज तक सभी संस्थाओं के विचार लिये जाते हैं। इसलिए नया विवाह कानून बनने में सोलह महीने का समय लगा।

इस कानून में विवाह का उद्देश्य प्रत्यक्ष स्पष्ट दिया गया है—

- (अ) आपसी प्रेम
- (ब) शिशु-पालन
- (ग) राष्ट्रीय प्रगति में योगदान और
- (द) नवीन समाज का निर्माण।

स्त्री और पुरुष दोनों का बरजा बराबर होता है जिसका अर्थ है कि दोनों ही अपने-अपने लिए व्यवसाय चुनने के लिए स्वतन्त्र हैं और सामाजिक जीवन में पूरा भाग ले सकते हैं।

इस कानून में इन बातों की भी व्यवस्था है—कोई भी व्यक्ति एक स्त्री के रहते हुए दूसरा विवाह नहीं कर सकता स्त्री पति के रहते दूसरे व्यक्ति से अनुचित सम्बन्ध नहीं रख सकती, छोटी उम्र में विवाह नहीं हो सकता विधवा विवाह पर आपत्ति नहीं की जा सकती और विवाह के अक्षर पर बहुत्र धारि नहीं मांगा जा सकता ।

जब तक लड़का बीस वर्ष का न हो और लड़की की उम्र अठारह वर्ष न हो उनका विवाह नहीं हो सकता । वे दोनों रजिस्ट्रार के दफ्तर में अपने विवाह की घोषणा कर सकते हैं । माता-पिता को रक्षक देने का अधिकार नहीं है । असाध्य रोग से पीड़ित व्यक्ति विवाह नहीं कर सकते । यदि दोनों व्यक्ति तलाक देना चाहते हैं तो बहु कोरम स्वीकार कर लिया जाता है । यदि तलाक देने के बाद वे पुनर्विवाह करना चाहते हैं तो कानून उन्हें इस बात की आज्ञा देता है ।

साम्र चीनी जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसमें महिलाएँ अक्षर न हो रही हों । सिखाई सैनिक भी बनी और छापाकार भी । कारखानों और सरकारी दफ्तरों में अंतों और स्कूलों में शिक्षकों ने पुरुषों के साथ कंबे से कंबा मिलाकर काम किया । पहले शिक्षा अपनी सुरक्षा का ही क्यास करती थी और समाज में घाते डरती थी । उन्हें अलग रहना ही पतन्य था । सब शिक्षा समाज में आ गयी है और स्वतन्त्र है ।

चीन की नयी सरकार को इस काम में बहुत बड़ी सफलता मिली है । इस बिज का कोई दूसरा रज नहीं और इस विषय में नये चीन की जितनी भी प्रयत्ना की जाय वोड़ी है ।

अध्याचार की चीन में तीन वर्षों के अल्पकाल में प्राप्त समाप्ति-सी हो गयी है । चीन का यह काम भी छोटा काम नहीं है । चीन की नयी सरकार को अध्याचार समाप्त करने के लिए सतत-से सतत करन उठाने पड़े हैं ।

अध्याचार रोकने के लिए और चीन को अर्थात्तित तत्त्वों से मुक्त करने के लिए चीन के नवीन शासन ने दो प्रधान आन्दोलन चलाये । पहले का नाम था 'एथी जी' (तीन सामाजिक बोरों के विच्छ) आन्दोलन । यह सरकारी कर्मचारियों के लिए था । जिन तीन सामाजिक बोरों के विच्छ यह आन्दोलन चलाया गया था वे थे—(१) अरुड़ (२) घुसकोरी और (३) सरकार का मुक्तान । प्रत्येक कार्यालय में सरकारी कर्मचारियों से एक दूसरे के विच्छ शिक्षामते मांगी गयी । अंके कर्मचारियों के विच्छ नीचे कर्मचारियों से और नीचे कर्मचारियों के विच्छ उनके नीचे के कर्मचारियों से । फिर इन सारी शिक्षावर्तों को एकत्र कर सभी होयी पाये जाने वाले कर्मचारियों को नौकरी से हटाना कारावात मृत्यु-दण्ड तक सभी दण्ड दिये गये । ये बोली है या नहीं इसके निर्णय का अधिकार उस समय अंके-से-अंके सरकारी कर्मचारियों को

वा जो अपिष्टतर साम्यवादो पार्टी के सदस्य थे। ऐसा सुना गया कि इस कांग्रेसोलन में घनेकों कर्मचारियों को मजदूरी दी गयी। रिक्तों को कारणवात् हुमा रिक्तों को मूल्य बण्ड घोर रिक्तने लोचरी से घनग किये गये—इसके कोई अपिष्टत घाँटने घमाप्य है। इस घांगोलन के घनत्वकूप सरकारी कर्मचारियों पर ऐसा घातक कम गया कि वे कोई भी घनप कार्य करने से बहुत अपिष्ट करने लगे।

इसी प्रकार जनता को सामाजिक दोषों से मुक्त करने के लिए एष्टी काइब (बीच सामाजिक दोषों के बिच्छ) एक घांगोलन चलताया गया। ये दोष निम्न थे—(१) सरकारी घनकर को घृत देना, (२) सरकारी घनकर से घाल लारीदना (३) ईरत न देना (४) सरकार के निताघ घनकाह रँलाना घोर (५) जनता को ठमना। बीच के लघनग लभी प्रतिघिठ लोषों को इस घांगोलन के बीच से गुजरना पड़ा। एक दूसरे के बिच्छ घिकापतें इकट्ठी की गयीं। उन पर रिक्तने बीच की जा सकती थी बहु की गयी घोर इन घिकापतों के घानार पर घनेकों एष्टी पुष्पों को सजा दी गयी। सजा भी मामूली से लेकर मृत्यु-बण्ड तक थी।

यह सुना जाता है कि उपर्यक्त दोनों घांगोलनों के कमारकूप घनेकों ने घनम-हत्या की, घनेकों को कारणवात् हुमा घोर घनेकों मारे गये। इन दोनों घांगोलन ने अघाधार-उगमूलन में बिघाप लहापता दी।

ग्याय करने की बहति में परिवर्तन नये बीच का बीबा महुरघपुलं काम है। बीबानी घोर बीबवारी के सारे पुराने कानूनों को रद्द कर किसी भी नये निश्चित कानूनों के बिना घोर बिना किसी भी माभसे में बकीलों को उपस्थिति घोर बीबीस या नबीर देने के घाबकन बीच में ग्याय किया जाता है। बरिचनी बेघों में ही नहीं पर हमारे देश में भी इस बिबिध पद्धति को सुन बहुत कम ऐसे लोग होने लिये घोर घोर न हो पर नये बीच में घाज इसी प्रकार ग्याय हो रहा है। बीच में अब हमने भी बर्हा की यह ग्याय-पद्धति सुनी तब हमें भी कम घोरघर्य नहीं हुमा। हम बर्हा के घनकतन ग्यामालय (सुप्रीम कोर्ट) के बाइघ प्रेसिडेन्ट के बीब घनका घोर बिच बीच से मिले घोर घनूने स्वीकार किया कि हमने जो कुछ सुना बहु डीक है। बीच के पुराने बीबानी घोर बीबवारी सारे कानून रद्द कर किये गये हैं। नये कानून बहुत कम कने हैं घोर जो बने हैं वे किसी कानून बनाने वाली सजा (सेजिस्लेचर) के द्वारा पास नहीं किये गये हैं बर्हा की सरकार के द्वारा बनाये गये हैं घनानूने हैं एक प्रकार के घन्यावेघ (घाईनेल)। पुराने बकीलों को सनघें छोट ली गयी है घोर किसी माभसे में कोई बकील किसी तरह की वेरबी नहीं कर सकता। अब किसी ब्यबिघ के बिताक कोई शिघमयत घाती है तब उसे कचहरी में ललब होने की घाजा मिलती है। मुनजिम को भी कुछ कहना होता है बहु कह सकता है। इसके बाद ग्यावापीघ मबाह घानि लेकर

देखते हैं कि शिक्षागत तरीका ही या गलत। प्रावरणकता जान पड़ती है तो ग्यावापीस जाँच के लिए उस स्थान पर जाते भी हैं वहाँ से शिक्षागत प्रायो हैं। अर्थात् चीन की अद्यावतों के ग्यावापीस निष्पन्न बने हुए दोनों बलों को सुन केवल फँसला करनेवाले न होकर स्वयं जाँच करनेवाले भी होते हैं। इस छोटी-सी सक्षिप्त कार्यवाही के बाद बहुत जल्दी फँसला दे दिया जाता है। हाँ, फँसले की दो धर्मीले प्रचण्य हो लगती है। अब तक के समय कहलाने वाले लमाज में ग्याप के सम्बन्ध में सबसे बड़ा सिद्धान्त यह था कि चाहे बस बोवी बूट कार्य पर एक भी निर्वोच दृष्टित न हो। चीन में भी निर्वोच दृष्टित किये कार्य यह सिद्धान्त नहीं है पर मुझे ऐसा प्रचण्य लगा कि उपर्युक्त सिद्धान्त शायद जमद गया है अर्थात् वहाँ यह सिद्धान्त हो गया है कि चाहे बस निर्वोच दृष्टित ही कार्य पर एक भी बोवी न पूरने पाये। इस पद्धति से वहाँ लान भी हुमा है। इसी पद्धति के कारण वर्तमान सरकार का कोई विरोधी नहीं घोर प्रष्टा बार धारि की भी समाप्ति हो गयी है।

इन बार गृहस्वपुर्ण कामों के सिवा शिक्षा के प्रसार में बुद्धि, स्वास्म्य-रक्षा, यातायात के साधनों की बुद्धि धारि के भी प्रयत्न हो रहे हैं। वैज्ञानिक घोर घौपी विक शिक्षा की घोर विद्येय प्र्यान दिया जा रहा है। यह सारी शिक्षा चीनी भाषा में ही जाती है। वैज्ञानिक धार तक जम्होंने अपने बनाये हैं विदेशी वैज्ञानिक सम्भावनी जम्होंने किसी भी रूप में ग्रहण नहीं की है। हमें चीन में कहीं भी किली विदेशी भाषा को कोई प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं हुमा। चिकित्सकों की बहुत अधिक धार-इच्छता के कारण चिकित्सक शिक्षा का एक ऐसा पाठ्यक्रम निकाला गया है कि दो बलों के भीतर साधारण चिकित्सक तैयार हो जाते हैं। परन्तु इन क्षेत्रों का अब तक कोई अच्छे मापदण्ड का स्तर नहीं बन पाया है। यातायात के साधन—रेलें, सड़कें, रेलों पर चलने वाली पाड़ियाँ घोर सड़कों पर चलने वाली बसों प्रचण्य मोटरों धारि की कमी प्रायः बँसी ही है बँसी पहले की यद्यपि इस विद्या में भी कुछ-कुछ प्रयत्न प्रचण्य हो रहा है। बायुमान तो वहाँ नहीं के बराबर स्थानों में चलते हैं।

परीबी बीता ऊपर कहा गया है धर्मी भी चीन में अपने चिकराल से चिकराल रूप में भीभूद है। पाँच की प्राचिक प्रबलता का बल्लन ऊपर धा चुका है। सड़कों में भी इस परीबी के भयानक से भयानक रूप के वर्धन होते हैं। धर्मार्थ के लक्ष्य घौपी विक घोर ग्यावारी केन्द्र में मजदूरों के रहने की धालें (स्लम्स) घोर उनके लक्ष लक्ष जल्दी नानिर्वा लक्ष जल्दी पाली से मरे हुए गड़े रूप जोड़ले हैं। अतिरिक्त जर्ण के प्रायः समाप्त हो जाने के कारण सड़कों में भी व्यक्तिगत सम्पन्नता नहीं रिखायी देती। सरकारी मोटरकारों घोर हुतावासों की मोटरों को जोड़ धायर ही किसी व्यक्ति के पास मोटर हो। टैक्सी मोटर भी क्वचित ही चलती है। पैदोस के धाम

बेकते हैं कि प्रिजापत सही है या बलत । प्रायःप्रकृता जान पड़ती है तो ग्यावापीरा जीव के लिए उस स्थान पर जाते भी हैं वहाँ से प्रिजापत प्रायी है । प्रर्वात् चीन की प्रजासतों के ग्यावापीरा निम्नत बँटे हुए दोनों पक्षों को सुन केबस चँतला करनेवाले न होकर स्वयं जीव करनेवाले भी होते हैं । इस छोटी-सी संसिप्त कायवाही के बाद बहुत असो फँसला दे दिया जाता है । हाँ, चँतले की दो प्रवीले प्रबन्ध हो सकती हैं । प्रब तक के सम्ब बहूताने वाले लनाम ने ग्याव के सम्बन्ध में सबसे बड़ा सिद्धान्त यह था कि चाहे बस बोयी बूट जाये पर एक नी निर्बोव बन्धित न हो । चीन में भी निर्बोव बन्धित किये जाये यह सिद्धान्त नहीं है पर मुझे ऐसा प्रबन्ध लना कि उपर्युक्त सिद्धान्त प्रायः उलट गया है प्रर्वात् वहाँ यह सिद्धान्त हो गया है कि चाहे बस निर्बोव बन्धित हो जाये पर एक नी बोयी न छूटने पाये । इस पद्धति से वहाँ लाभ भी हुआ है । इसी पद्धति के कारण वर्तमान सरकार का कोई विरोधी नहीं घोर प्रष्टा-चार प्रादि की भी समाप्ति हो गयी है ।

इन चार महत्त्वपूर्ण कार्यों के सिवा प्रिजा के प्रसार में बुद्धि स्वास्थ्य रसा, पास्तापत के साधनों की बुद्धि प्रादि के भी प्रयत्न हो रहे हैं । वैज्ञानिक और छोटी विक प्रिजा की घोर विरोध ध्यान दिया जा रहा है । यह सारी प्रिजा चीनी भाषा में ही जाती है । वैज्ञानिक सम्ब तक उन्होंने अपने बनाये हैं विदेशी वैज्ञानिक सम्ब-बन्धी उन्होंने कितनी भी रूप में प्रहल नहीं की है । हमें चीन में कहीं भी किसी विदेशी भाषा का कोई प्रभाव बुद्धिघोर नहीं हुआ । बिबिस्तकों की बहुत अधिक प्रा-इयकता के कारण बिबिस्तक प्रिजा का एक ऐसा पाठ्यक्रम निकाला गया है कि दो वर्षों के भीतर साधारण बिबिस्तक तैयार हो जाते हैं । परन्तु इन क्षेत्रों का प्रब तक कोई प्रच्छे मारदण्ड का स्तर नहीं बन पाया है । पास्तापत के साधन—रेल, सड़क, रेलों पर चलने वाली माडियाँ और सड़कों पर चलने वाली बसों प्रबसा मोटरों प्रादि की कमी प्रायः बची ही है जैसी पहले की, यद्यपि इस विज्ञा में भी कुछ-कुछ प्रयत्न प्रबन्ध हो रहा है । बायुवाग तो यहाँ नहीं के बराबर स्थानों में चलते हैं ।

गरीबी बीता ऊपर कहा गया है प्रभी नी चीन में अपने विकराल से विकराल रूप में मौजूद है । गाँव की प्राधिक प्रबस्था का वर्णन ऊपर या चुका है । घरों में भी इस परीबी के बवानक से प्रयानक रूप के बर्णन होते हैं । प्रबाई के लघु छोटी विक और ग्यापारी केन्द्र में प्रबहूतों के रहने की बालें (स्लम) और उनके सब लघु प्रभी नातिर्वा तथा गन्ने पानी से भरे हुए गड़े बम घोस्टे हैं । प्रभिजात बर्ष के प्रायः लबाप्त हो जाने के कारण घरों में भी व्यक्तिगत सम्पत्तता नहीं रिखायी देती । सरकारी मोटरकारों और बूताबासों की मोटरों को छोड़ प्रायः ही किसी व्यक्ति के पास मोटर हो । देवती मोटर भी बन्धित ही चलती है । पेट्रोल के बान

(कास्सीयुधम) तक नहीं है। वहाँ का ध्यान चलता है एकाधिपत्य से।

चीन के सारे प्रशासन सरकार के अधिकार में हैं। इसलिए वहाँ के प्रशासकों में सरकार की किसी प्रकार की कोई भी आलोचना सम्भव नहीं। वहाँ किसी सार्वजनिक सभा में भी सरकार की किसी तरह की आलोचना नहीं की जा सकती। सार्वजनिक सभा तो दूर की बात है पाँच-दस प्रायः ही इकट्ठे होकर भी सरकार की किसी प्रकार की भी आलोचना करने में अव्यक्त संकित ही वहाँ प्रत्यक्ष भयभीत रहते हैं। इसका कारण है मत तीन बरों में सरकार के विरोधियों को कान्ति के विरोधी (काउन्सिलर रिबोन्सुचनरी) कहकर कठिन-से-कठिन वहाँ तक कि प्रायः-दण्ड भी दिया जाता।

मत तीन बरों में इस प्रकार के कान्ति-विरोधियों और अपराधियों को कठिन से-कठिन दण्ड दिये गये हैं। इस दण्ड की प्रमाँ भी भिन्न-भिन्न प्रकार की रही है। सबसे अधिक प्रचलित प्रथा यी ऐसे लोगों के स्वयं अपराध को स्वीकृत कराना। अपराध को स्वीकृत कराने के लिए जिन साक्ष्यों का उपयोग किया गया सुना कि वे अपराधित प्रकार के थे। अधिकतर अपराधियों ने ही अपने अपराध स्वीकृत किये होने, वर जिन साक्ष्यों को अपराध-स्वीकृति के लिए काम में लाया गया उनमें से कुछ, कहते हैं ऐसे थे कि अपराध स्वीकृत न करने की अपेक्षा अपराध न होते हुए भी, अपराध स्वीकार कर लोगों ने प्रायः दे देना अधिक सरल माना। प्रत्येक ने उस प्रकार के कर्त्यों से बचने के लिए प्रयत्न किया तक कर सी। इन तीन बरों में इस प्रकार से कितने लोग मरे या मारे गये इनकी कोई संख्या निश्चित भानुम न हो सकी। हजारों से लेकर लाखों तक इनकी संख्या बतायी जाती है। प्रायः-दण्ड के प्रतिरिक्त इन अपराधों में लोगों की पूरी की पूरी सम्पत्तियाँ जब्त की गयी हैं और जो कमी लाहों के बनी वे वे केवल शरीर वर के कपड़े छोड़ बिना एक बाई भी दिये अपने घरों से निकाल दिये गये हैं।

चीन की राजसत्ता आज जिनके हाथ में है वे तीन बड़े बुद्धिमान, विचारशील, परिश्रमशील और निस्वार्थ व्यक्ति हैं। वेयरदेन माघ्रोसेत्सुम में उपर्युक्त सारे गुणों का समन्वित वस्तुवा जाता है। राज्य के प्रधान-अपान उत्तरदायित्व के स्थानों पर ऐसे व्यक्ति रखे गये हैं जिन्होंने वर्तमान सत्ता को स्थापित करने में किसी न किसी प्रकार का प्रयत्न या अप्रयत्न योग दिया था। इन लोगों में इस राजसत्ता और इसके कार्य-क्रम में प्रत्यक्ष विश्वास और श्रद्धा है।

राज्य के नैतिक कर्मचारी भी ऐसे लोग हैं जिनको इस समय की सत्ता और उसके कार्यक्रम पर पूर्ण विश्वास है। हमारे देश के इस प्रकार के वैतन-भोगी जित-तरह हमारी सरकार के हर काम की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से केवल आलोचना ही

हैं परन्तु अपने मंसन से भी अधिक । फिर मत्ता कितनी सामर्थ्य है कि मोटर रख सके ? जिनकी दिती प्रकार की भी राजनैतिक स्थिति है, जैसे राजभूत धारि उन्हें प्रथम प्रकाई अपने मंसन में पैदोल मिल जाता है ।

पर जब हम नये चीन की इत परीबी धारि का बर्लन करते हैं तब हमें यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि नये चीन के पास बिस्वकर्मा के लक्षा कोई वैभता नहीं कि इतने छोड़े समय में इन सब चीजों को दुबस्त कर सके ।

यह है नये चीन का एक छोटा-सा बिन्न । मेरे मतानुसार जो सोच यह कहते हैं कि पुराना कूटनी चीन सर्वथा लताप्त हो बहूँ एकत्रम एक नयी आगवन्धमान बालु का निर्माण हो गया है उनका मत भी ग्राह्य नहीं किया जा सकता और जो यह कहते हैं कि बहूँ कुछ भी नहीं हुआ उनकी राय भी ठीक नहीं है ।

इतने छोड़े समय में चीन में जो कुछ हो सका है उसके कुछ विशिष्ट कारण हैं और जब हम उन्हीं पर कुछ विचार करेंगे ।

चीन में जाड़े साम्यवादी लता न हो, पर एकाधिकारवासी लता है । और ऐसी सरकार में न प्रजातन्त्र का कोई स्वान रह सकता है और न व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का । बहूँ कभी भी कोई चुनाव नहीं हुए । वर्तमान सरकार भी चुनी हुई सरकार नहीं है । कोई स्वतन्त्र चुनाव निकट भविष्य में हो सकेसे ऐसी प्राप्ता नहीं है । यद्यपि अभी हाल में ऐसी सरकारी घोषणा हुई है कि १५ वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों की मतदान-सूचियां बनायी जायें, किन्तु स्वतन्त्र प्रजातन्त्र के चुनाव की कोई सम्भावना नहीं है । अतः सरकार की चुनाव की कोई बिस्ता न होने के कारण उसके मत में जो ठीक जान पड़ता है उसे करने में कितनी प्रकार की बाधा नहीं है । यद्यपि कुछ राजनैतिक बल हैं, जिनमें प्रधान है तीन बल—साम्यवादी (कम्युनिस्ट), प्रजातन्त्रवादी (डिमोक्रेटिक) और आत्मिकारी (रिपब्लिकनरी) क्यूमन्दांग पर वर्तमान सरकार का बिरोधी (अपोसीशन) कोई बल नहीं । सरकार में साम्यवादी बल का नेतृत्व है और ऐसे दोनों प्रमुख बलों के भी कुछ व्यक्ति सरकार में शामिल हैं । बहूँ कैंग्र में कोई संसद् या प्रांती में कोई विधान-सभा कानून बनाने वाली संस्थाओं के सदस्य संस्थाई नहीं जिनके प्रति सरकार बिम्बेवार हो या बहूँ बड़ी-से-बड़ी बात से लेकर छोटी-से छोटी बात तक की बात की जान निकालकर बहुत मुबाहसा होता हो । बीसा अन्तर कहा गया है बहूँ का बजट तक कितनी की लता नहीं । चीन की सरकार की हर बल गुप्त रहती है और सरकार की कुछ भी जता-बुरा, उच्छेद-स्वाह करना चाहे उसे कर सकने की उसे पूरी-पूरी प्राजाबी है । सरकार की लता देने के लिए (कन्सल्टेटिव) कुछ समार्ष धरस्य है पर इनको कितनी प्रकार का कोई अधिकार नहीं, इनका काम केवल सलाह देना है । चीन का कोई विधान

(कास्सीदुपुत्र) तक नहीं है। वहाँ का वास्तव बलवाहूँ एकापिपत्य से।

चीन के सारे प्रजासत्ताक सरकार के अधिकार में हैं। इसलिए वहाँ के प्रजासत्ताकों में सरकार की किसी प्रकार की कोई भी धातोलचना सम्भव नहीं। वहाँ किसी धार्मिक सभा में भी सरकार की किसी तरह की धातोलचना नहीं की जा सकती। सार्वजनिक सभा तो दूर की बात है पाँच-बस मासमी इकट्ठा होकर भी सरकार की किसी प्रकार की भी धातोलचना करने में प्रत्यक्ष संकित ही नहीं प्रत्यक्ष मयमीत रहते हैं। इसका कारण है पक्ष तीन वर्षों में सरकार के विरोधियों को अग्नि के विरोधी (काउन्टर रिबोल्शुनरी) कहकर कठिन-से-कठिन यहाँ तक कि प्रास-दण्ड भी दिया जाता।

पक्ष तीन वर्षों में इस प्रकार के अग्नि-विरोधियों और प्रजासत्ताकों को कठिन से-कठिन दण्ड दिये गये हैं। इस दण्ड की प्रवृत्ति भी जिन-जिन प्रकार की रही है। सबसे अधिक प्रचलित प्रथा भी ऐसे लोगों से स्वयं अपराध को स्वीकृत कराना। अपराध को स्वीकृत कराने के लिए जिन साधनों का उपयोग किया गया गुना कि वे प्रयुक्त प्रकार के थे। अधिकतर अपराधियों ने ही अपने अपराध स्वीकृत किये होंगे, पर जिन साधनों की अपराध-स्वीकृति के लिए काम में लाया गया सबसे से कुछ, कहते हैं ऐसे वे कि अपराध स्वीकृत न करने की अपेक्षा अपराध न होते हुए भी, अपराध स्वीकार कर लोगों ने प्रास दे देना अधिक सरल माना। अनेक ने इस प्रकार के कष्टों के बचने के लिए धर्मग्रहणा तक कर ली। इस तीन वर्षों में इस प्रकार से कितने लोग मरे या मारे गये इनकी कोई संख्या निश्चित मान्य न ही सही। हजारों से लेकर लाखों तक इनकी संख्या बतायी जाती है। प्रासदण्ड के अतिरिक्त इन अपराधों में लोगों की नुरी की पुरी सम्पत्तियाँ जब्त की गयी हैं और जो कमी लाखों के पनी वे वे केवल धारीर पर के कपड़े छोड़ बिना एक बाई भी दिये अपने घरों से निकाल दिये गये हैं।

चीन की राजसत्ता धारक जिनके हाथ में है वे लोग बड़े बुद्धिमान विचारशील अतिशय धीर निस्वार्थी व्यक्ति हैं। वे परमेश्वर माओत्सेत्सुंग में अपर्युक्त सारे गुणों का समावेश बताया जाता है। राज्य के प्रचालन प्रचालन अस्तरवापित्व के स्वार्थों पर ऐसे व्यक्तित्व रखे गये हैं जिन्होंने वर्तमान सत्ता को स्थापित करने में किसी न किसी प्रकार का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष योग दिया था। इन लोगों में इस राजसत्ता और इसके कार्य-कर्म में प्रजासत्ताक विस्थाप और अज्ञा है।

राज्य के अतिरिक्त कर्मचारी भी ऐसे लोग हैं जिनकी इस समय की सत्ता और इसके कार्यक्रम पर पूर्ण विश्वास है। हमारे देश के इस प्रकार के अतिरिक्त-जोपी जित तरह हमारी सरकार के दूर काम की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से केवल धातोलचना ही

नहीं करते वर नज़ाक तक चढ़ाया करते हैं, बेसी बात की चीन में वन्दना तक नहीं की जा सकती। फिर कोई चुनाब होकर राग्य-सत्ता बदलने की सम्भावना न देख वे बेतन भीषी कर्मचारी घोर भी अधिक राजमरत हो गये हैं।

सरकार की घोर से रेंडियो, साउथ स्पीकर, बोस्टर, लीकलड, नाटक, सिनेमा, मिन्न मिन्न प्रकार के सतत आपीडन आदि से प्रचार का ऐसा प्रकार है जिसमें किसी भी एक भावा नहीं आता। इस सरकार के पुर्ब की सरकार बितनी निरुम्मी, भ्रष्ट और कुर थी इसे हर तरह मिन्न-मिन्न प्रकार से कहा जाता है। इस सम्बन्ध में अनेक प्रकार के विद्रोह और क्रिम लोगों की दिशाये जाते हैं। वर्तमान सरकार के छोटे-से-छोटे काम का बड़े-से-बड़ा प्रदर्शन किया जाता है। वर्तमान सरकार की असफलताएँ भी आये बसकर किस प्रकार सफलताओं में परिणत होने वाली है, अभी का बरिदी चीन कंता सम्पन्न हो जाने वाला है, और आज जो लोगों को म्यारह-म्यारह बाण्ड-बारह पण्डे काम करना पड़ रहा है उसके परिणाम में उन्हें भविष्य में कंता आराम मिलनेवाला है। इसे लोगों को माना प्रकार से समझाया जाता है। इसके लिए सबसे अधिक कस के काबों के बुढाण्ड दिये जाते हैं। कस और चीन की महान् मित्रता के हर अनहू प्रदर्शन किये जाते हैं। पूंजीवादी देश, विशेषकर अमेरिका के विरुद्ध मुड-सिप्ता के माना प्रकार के बोपारोपल कर चीन और कस आन्ति केवल आन्ति के अपातक है और उन्हें यदि लड़ाई की तैयारी करनी पड़ रही है तो अपने बचाव के लिए तथा इस तैयारी में सारो बनता की प्राखल से भोग बना आबन्ध ही नहीं अनिबार्न है यह समझाया जाता है। कुछ बिबिदि नारीं और अर्थों का इस प्रकार में बड़ा योग्य रहता है। जैसे 'आउथर रिबोस्युशनरी' आन्ति-बिरोधी, 'एथी इन्वीरिपनिस्ट' साम्राज्य-बिरोधी 'आउथर लिबरेसन ऑफ आबना' चीन की मुक्ति के बाद 'चीपिस्त वर्कमेथ' बनता की तर कार, 'प्रोपेसिब' प्रसिधीन 'बुराकेटिक कंपीटनिस्ट' नीकरशाही वाले पूंजीवादी, 'प्येड' हाप के बिलौने, 'बेडल' और 'बिसेरल' गुषा 'न्यू डिमोकेती' नया प्रबन्ध तन्म इत्यादि। इन सारे सभों के सुन्दर चीनी सम्म बनाने गये हैं। पुरानी सरकार और आन्पकाई लोक के लिए इनमें से कई बिसेरलों का सतत उपयोग किया जाता है। स्कूलों और कानेजों में नवी पीढ़ी के निर्माण के लिए इस प्रकार का महान् उपयोग किया जा रहा है। इस सतत प्रचार के कारण चीन की बनता में एक बधा-ता बड़ा हुआ है और इस गये का किसी प्रकार उतार न आ जाय इसका बड़े बैज्ञानिक डंप से पुरा-पुरा म्यान रखा जाता है। चीन की बनता अधिकतर अशिक्षित है इसलिए उस वर इस प्रकार का अमोय प्रभाव पड़ रहा है। चीन आन्ति का ही अपातक है इसलिए चीन का आन्ति-बिहू कन्तर अण्ड-अण्ड अनेक कर्षों में बिभित है।

चीन की सैना यदि लड़ाई के समय मुड करने के लिए त्रिस्त है तो आन्ति

के समय उसे चीन के उत्पादन बढ़ाने में बतवित्त रहना पड़ता है। सेना की प्रशिक्षण करने के लिए उसे हर प्रकार की सुविधाएँ दी गयी हैं और चीन में सेनिकों का सबसे अधिक आवर है। यवार्च में चीन की वर्तमान सरकार की यह सेना रोक की हज़्डी है।

चीन के मजदूरों को ग्यारह घण्टे काम करना पड़ता है—आठ घण्टे शारीरिक धम और तीन घण्टे मानसिक।

और अबमुक्त साबन चीन में क्यों सफल हो रहे हैं इसका भी कारण सुनिए—

नवम्बर ३० वर्षों से चीन के निवासियों ने जितना कष्ट भोगा है उतना कष्ट बिच् संसार के किसी देश के निवासियों ने नहीं। मांचू राज्य बंद के प्रतिम दिनों में चीन की जो बटा थी, सबसे पहले उसी का कुछ उल्लेख करना उचित होगा।

मांचू बंद के शासकों ने चीन पर परिस्थितिबद्ध अधिकार प्राप्त किया। उत्तरी चीन पर इनका प्रभुत्व सर्वसम्पति से हुआ। बसिली चीन को उगूँने लम्बी और घमासान लड़ाई के बाद अपने बाहुबल से जीता। उत्तरी चीनी मांचू शासकों के प्रति बख्शवार से और शासक की सोचों का विरवाठ करते थे। बसिली चीन इनके प्रति बिद्रोही या और से भी बर्हा के सोचों को सार्थक बुद्धि से देखते थे। मांचू शासकों ने पीकिय नगर को अपनी राजधानी बनाया, जो उनके देश और उनके मंगोल मित्रों के समीप था।

यह स्पष्ट था कि मांचू शासक चीनी जनता का सहयोग पाये बिना इतने साम्राज्य पर शासन नहीं कर सकते थे। इसके साथ ही यह भी बिहित था कि यदि चीनी और मांचू समान समझे जाते तो मांचू लोगों का चीनी जन समूह में बटा भी न बनता। इसलिये धामे सरकारी वर्षों पर मांचू रजे मये और धामे वर्षों पर चीनी। धीरे-धीरे बसिले चीन के लोगों को अनुभव होने लगा कि मांचू साम्राज्य पीकिय के राजदरबारियों की हित रक्षा के लिए है यद्यपि इनके राजस्व का मुख्य आवर बसिली चीन ही है। इसमें नये बिभाग राजमन्त्रियों का निर्मास हो रहा था। पिछली शासकियों में बिन आक्रमणकारियों ने चीन में अपना प्रभुत्व स्थापित किया था वे धुन-मिलकर चीनियों के ही धर्म बन गये थे, किन्तु मांचू शासकों और धासित चीनियों का अन्तर लईब बना रहा। अनेकाङ्कत अयोग्य मांचू भी सरकारी वर्षों पर धासानी से नियुक्त कर दिये जाते थे। परिणाम यह हुआ कि उनकी बहू सैनिक शक्ति घटने लगी जो इनके पुषकों के पास थी। धीरे-धीरे मांचू बंद की अक्ति लीए होने लगी। एक धोर उगूँ बसिले के बिद्रोह का सामना करना पड़ा दूसरी धोर उगूँ बिदेदी आक्रमणकारियों से मोर्बा लेना पड़ा। एक सताम्बी के आघाठ प्रतिपाठ से चीन ने प्रथम बिद्रोह की अवाला बपक उठी जिसमें मांचू बंद का नत्म हो जाना कोई बहुत बड़ी घटना

थी। अठारहवीं शताब्दी में जित सांभ्राज्य की तराहना की जाती थी वह अमीराती की समाप्त होते न होते अर्बत हो चुका था। कहना न होया कि जित समय बरिचपी में में विज्ञान की प्रगति हुई थीन के लिए वही समय गतिरोप का था। मांजू साम्राज्य की इतनी तीव्र प्रयोगति का कारण केवल राजनीतिक अथवा धार्मिक कुप्रवण्य त्र ही न था बरिचक आसक बर्न की मनोबैज्ञानिक प्रवृत्ति थी।

मांजू बंश के लोगों की अपनी कोई परम्परा तो थी नहीं इसलिए उन्होंने चीनी सृष्टि को ही अंधीकार किया, किन्तु वे बहिबारी कनकपूषियन परम्परा को ही अपना के। दामोदाद और उससे सम्बन्धित तिदासों की उन्होंने अपेक्षा की। मांजू साम्राज्यों तीव्र बनान और नसब विद्या के ज्ञानोवाजन के लिए अनुद्वय लोगों को अपने यहाँ आ, किन्तु बिदेसी वैज्ञानिक ज्ञान की उन्होंने धोर अपेक्षा की।

अमीराती शताब्दी में मांजू साम्राज्य के शोग्र पतन का कारण उनका बौद्धिक तिरोप था। सामन्तवारी पुन के प्रण्व उनके साहित्य के आदर्भ थे। मांजू साम्राज्य ती धार्मिक और राजनीतिक विपति का पौड़ा-सा परिचय प्राप्त कर लना धारण्यक। देश की सारी पूँजी चीन के उत्तर-पूरुबी भाग में संचित और सीमित थी। व्यापार क मुख्य केन्द्र पुर बसिल में था। दोनों अगुओं की दूरी जनमप की हुबार मील ती और वे दोनों स्वत उस नुमाप से काष्ठी दूर थे अर्थाँ चीन की मुख्य आबादी थी था उत्पादन-केन्द्र था। मांजू साम्राज्यों के आसन प्रवण्य में भी कुद्यमता पायी जाती ती उसका सामाजिक और धार्मिक जीवन में अथवा प्रभाव था। परिस्थाम यह हुपा के इच्छित चीन की धार्मिक और ध्यापारिक प्रवृत्ति ने कान्ति का सुत्रपात कर दिया।

बौद्धर चिदोह के बाव मांजू साम्राज्य टिक न सका। यह चिदोह चीन बर बदेक्षियों के प्रभाव का परिणाम था। ये बिदेसी मांजू बंस की अर्द्धे भी खोजती कर हे वे और उसे टिकाये हुए भी थे। बड़ी-बड़ी पराक्रमों के कारण मांजू बंश का मान अटता था र्हा था किन्तु बिदेसी बर के बरले में उनके छीने हुए प्रवेश उन्हें बापल तीटा बैठे थे जितते कि उनका कुप्रवण्य अतता रहे। परिस्थाम यह हुपा कि राज टिक आगुति फलने लगी। पुन संस्कार संगठित होने लयीं। १६०४ में चीनी नुपि र क्त और आयात की सीमाओं का संघाम हुपा।

अन्त में डाक्टर तुमस्तैल के नेतृत्व में इस सत्ता को अतठने का सफल प्रकल पा और सन् १६११ में चीन पहले-पहल एक प्रजातन्त्र घोषित हुपा। परन्तु अर्धपि ांजू राज्यबंध अनाप्त हो गया तथापि उस काल की सामन्तवादी के ऐसे सामन्त रहे थे जिनके कारण चीन में अथवा प्रजातन्त्र स्थापित न हो पाया। इन सामन्तों की अर्थवाक्षियों पर भी पौड़ा विचार करना उपयुक्त होगा।

१६११ की कान्ति से लेकर १६२६ तक सामन्त सरकारों की सत्ता का

ही बोलबाला रहा। इनमें से लगभग प्रत्येक सरकार के पास अपनी प्रत्यक्ष सेना थी। हरेक सामन्त का उद्देश्य एक न एक शहरमाह पर अधिकार प्राप्त करना होता था जिससे कि वह विदेशों से हथियार और सामान प्राप्त कर सके। यदि उसका प्रदेश समुद्र से दूर होता था तो वह अपने यहाँ एक अस्त्राधार बनाने का प्रयत्न करता था। अपनी सेना का खर्च वह उस रकम में ही देता था जिसे वह अपनी सेना के बल पर नियंत्रित प्रदेश से कर के रूप में प्राप्त करता था। वे सामन्त प्राप्त में भी लड़ते और केंद्रीय सरकार का पस लेकर या उसके विरुद्ध भी लड़ते थे। विभिन्न विदेशी सरकारों के साथ इनकी साठ्याँठ चलती रहती थी।

जापान उस समय बड़ी साम्राज्य की नीति पर चल रहा था। जापान चीन में किसी तरह की एकता प्रयत्न निरंकुश सत्ता स्थापित होने देना नहीं चाहता था इसलिए वह एक से अधिक सामन्तों का समर्थन करता रहता था। पहले तो जापानी किसी सामन्त के प्रदेश में रियायतें प्राप्त कर लेते थे फिर वे इन रियायतों को केंद्रीय सरकार से भी मनवा लेते थे। ऐसा ही एक अस्तित्वात्मी सामन्त चांग सोलिन था जिसने उत्तरी चीन पर अधिकार कर रखा था और जिसके प्रदेश में जापानियों को बहुत अधिक रियायतें मिली हुई थीं। यहाँ पर स्मरण रखना महत्वपूर्ण होगा कि बिना किसी चीन में सामन्त सरकारों का बोलबाला था जहाँ किसी यूरोप में लड़ाई कभी हुई थी। १९१४ से लेकर १९१८ तक यूरोप लड़ाई में जैता हुआ था और अमेरिका की भी विजयवादी बनी थी। इस बीच मुजहुरा व्यवहार पाकर जापान ने उत्तरी चीन में अपना पाँच जमा लिया, क्योंकि यहाँ से वह बस बर भी आक्रमण कर सकता था और चीन पर भी नियन्त्रण रख सकता था।

संघट के इन बयों में मुजपतसेन निरन्तर कार्यरत रहे पर्यन्त पश्चिमी देश उन्हें स्वयं-बुद्धा मात्र समझते थे। उनका सबसे बड़ा काम विभिन्न विचारों के लोगों को एक धुन में बाँधना था। जब कभी उन्हें चीन से बाहर रहना पड़ता था तो विदेशों में रहने वाले चीनियों के पास चीन की स्थिति के समाचार ले जाते थे और जब कभी वे चीन आ जाते थे तो प्रवासी चीनवासियों के पास से नया उस्ताह और नवीन राजनीतिक विचार लाते थे। चीन की अन्ति में प्रवासी चीनियों का बहुत बड़ा हाथ था। इसका कारण यह था कि उपनिवेशों में रहने के कारण उन्हें अधिकारवादी विदेशियों का विधुर व्यवहार सहना पड़ता था। वे चीन में अन्ति की अस्मरण करने लगे थे। यहाँ के धनी, बीसरी भी दल, उन्मत्त में बड़े पत्र विचार रखते थे और जन से सहामता देने को तैयार रहते थे। धीरे-धीरे विदेशियों को मुजपतसेन से स्वर्ण होने लगी। वे इनको सफल देखना नहीं चाहते थे, किन्तु प्रवासी चीनियों के उस्ताह का बरिछाम यह हुआ कि मुजपतसेन का काम कभी नहीं सका।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है सामन्त सरदारों के ऐश्वर्य-काल में ही वहाँ एक घोर धीरे धीरे आपात अपने नाशून यज्ञता जा रहा था वहाँ दूसरी घोर तन् १९२१ में सर्वप्रथम चीन के साम्यवादी दल की स्थापना हुई। इसके संस्थापकों में चीन के वर्तमान सर्वोच्च मार्गोस्ते तुंग भी थे। चीन में साम्यवादी दल की स्थापना में दल की तन् १९१७ की अस्तित्व से स्पष्ट प्रेरणा प्राप्त हुई थी इसमें संदेह नहीं हो सकता।

डाक्टर सेन के प्रजातन्त्र और मार्गोस्ते तुंग का साम्यवादी दल दोनों ही अपने अपने अनीष्ट में पूर्णतया लक्ष्य न हो सके। तन् १९२५ में डाक्टर सेन का देहान्त हो गया और उनका स्थान लिया जनरल इस्मो अ्यानकाई शोक में। जनरल इस्मो अ्यान साम्यवादियों के कट्टर शत्रु थे। उन्होंने साम्यवादियों पर लोभहर्षण प्रस्थापार किये।

दल की तरह चीन के लिए भी अस्तित्व का मुनहना अक्षर परत समय आया जब कि यूरोप के युद्ध में संसार की वर्तमान व्यवस्था की अड़ें हिला दी थीं। किन्तु बुर्माय से मुनयतसेन का १९२५ ईतभी में देहान्त हो गया था। हाँ, १९२६-२७ की अस्तित्व के लिए अन्होंने मानसिक दृष्टभूमि तैयार कर दी थी। उनके लोग लिखतत थे—राष्ट्रीय लोकतन्त्र, राजनीतिक लोकतन्त्र और धार्मिक लोकतन्त्र।

जैसा ऊपर लिखा जा चुका है चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना १९२१ में हुई थी। उसके सदस्यों को मुनयतसेन की कौमितीय अथवा राष्ट्रवादी पार्टी में शामिल होने की आशा थी। यही नहीं, कुछ कौमितीय अथवा कम्युनिस्ट नहीं थे दल अत्रे अये थे; अ्यानकाई शोक की उनमें से एक थे।

मुनयतसेन की मृत्यु के बाद कौमितीय अथवा राष्ट्रवादी पार्टी की सेवाएँ अ्यानकाई शोक के नेतृत्व में अदन से अक्षर होने लगीं। परिणाम यह हुआ कि सामन्त सरदारों की सेनाएँ पराजित होने लगीं क्योंकि न तो उनमें अैश-अैम ही था और न एकता ही। आपानियों के अत्र हस्तक्षेप के कारण भांगसी नदी के अतर में राष्ट्रवादियों की अ्रगति धीमी पड़ गयी। इस तरह एक घोर तो आपात से युद्ध अिड़ आने का अतरा जा और दूसरी घोर चीन में बिदेसी अस्तियों आने अैश राष्ट्रवादी अान्दोलन को पतनने देना नहीं चाहते थे। इसलिये अस्तित्व यह हो गया कि नवा राष्ट्रवादी अान्दोलन अुर्ण अिजय के लिए अक्षता ही जाय अथवा कुछ काल के लिए एक जाय अथवा की लंगठि करे और अुर्ण अिजय के लिए पूरी तरह तैयार हो जाय। फलस्वरूप अस्तित्व के नेताओं ने, अितनी लक्ष्यता प्राप्त हुई असी पर अन्तक्षेप कर लक्ष्य और अस्तित्व-अथवा का काम लक्ष्यत लिया।

१९२५ से अैकर १९३७ तक के समय में सरदार के सामने दो मुख्य काम

।—चीन में राजनीतिक व्यवस्था कायम कर आसन-सम्बन्ध की नींव डालना और देश में मजबूत तथा नये ढंग का बनाना। इन बातों में परिवर्तनीय देशों द्वारा प्रेरित राजनीतियों को सबसे अधिक प्रबलता मिली। चीन में प्रगति होने लगी, कारखाने बनाने लगे और वैदिक इंजीनियरी शिक्षा और स्वास्थ्य के विकास की ओर प्रयत्न किया जाने लगा।

पर इतनी चीज दो बातों और हुई—नयी सरकार ने कम्युनिस्टों और कृषि से अपना सम्पर्क तोड़ लिया जिससे सरकार और कम्युनिस्टों के बीच गृह-युद्ध छिड़ गया। कुत्से, चीन को आपात का भी सामना करना पड़ा।

१९२४ में डाक्टर सुनयतसेन ने राष्ट्रीयवादी कोमिन्तांग पार्टी का पुनर्स्थापन किया। इसके बाद से कम्युनिस्ट भी इस पार्टी में शामिल किये जाने लगे थे। इसका परिणाम यह हुआ था कि पार्टी में अस्थिरकारी भावना का प्रवेश हुआ था। उस समय एक पार्टी सम्मेलन और एक वर्ष का ही प्रतिनिधित्व करती थी, सन् '२४ से यह वनसमूह का भी प्रतिनिधित्व करने लगी। चीन की पचासी प्रतिशत किसान-मजदूर जनता का प्रतिनिधित्व उसे प्राप्त हो गया; किन्तु पार्टी का पुनर्स्थापन करने के दौरान बाद ही १९२५ में डॉ. अन्वर कहा गया है डाक्टर सेन का वैवाहिक हो गया। इस पर पार्टी के अन्तर कुछ अस्थिरकारी बलों ने अधिकार और अस्थिरता प्राप्त करना शुरू कर दिया। बीरे-बीरे व्यापकाई श्रेणियों ने समस्त सत्ता हस्तगत कर ली और अगस्त १९२७ में कम्युनिस्टों का सफाया होने लगा। कृषि को छोड़ बाकी सभी बड़े देशों ने व्यापक सरकार को स्वीकृति दे दी। मार्क्सवादी सरकार ने कृषि से राजनीतिक सम्बन्ध तोड़ लिये। चीन की राष्ट्रीय सरकार ने देश को पूंजीवादी आधार पर पुनर्पठित करना प्रारम्भ किया। कारखाने जोसे लगे और प्राथमिक सुविधाएँ सुदृढीय होने लगीं। विदेशियों ने नयी सरकार से अपने स्वार्थ साधने का प्रयत्न किया और उन्हें एकमतता भी मिली। अमेरिकी आर्थिक सहायकार और जर्मन सैनिक सहायकार व्यापक सरकार के परामर्शदाता बन बैठे। एक अंग्रेज सर फ्रेडरिक ग्राहट चीन के विदेश विभाग के सहायकार के रूप में काम करने लगे। ये वे ही महासचय थे जो हमारी केन्द्रीय असेम्बली के प्रथम अध्यक्ष बनावे गये थे।

१९२७ में सारे देश में आतंक की लहर फैल गयी। कम्युनिस्टों और वर-कम्युनिस्टों का देश-भर में विरोध में परिवर्तित हो गया। एक और व्यापकाई श्रेणियों का समन्वय बना, कुत्से और कम्युनिस्टों ने अपने बचत की कार्यवाहियाँ बढ़ा दीं। चीनी मजदूरों और किसानों की सहायता तैयार की गयी जिसके प्रधान सैन्यपुत्र बनकर शुरू-शुरू से ही राजनीतिक निर्देशक माओत्सी तुंग। बाद के वर्षों में चीन जनता के रक्त से रंग गयी। कुछ दिनों में भाग्यशास्त्री

दुनियाँ में कहीं नहीं देखा जा। कितना स्वान घिरा हुआ या इस महल से। काम पड़ता था कि पीछे के भीतर एक दूसरा गृह बना हुआ है। सारे भवन में कोई पाँच हजार कमरे हैं। तीन घण्टे उस भवन में घूमने पर भी हमारी प्युब घड़ी तीन सौ कमरों से अधिक स्वान पर न हो सती। यद्यपि में यह भवन मिय और चिंग राज-बागों के दरबार का एक प्रकार का नगर या शींग जनमा-नगरण की वहाँ लाने की धारा नहीं थी। इसका निर्माण १४१७ ईसवी से १४२० ईसवी तक हुआ। कमरों की छतें टाइल की हैं और फर्श संगमरमर के। भवन के चारों सार बीबाल बनी हुई हैं। चार कोनों पर चार मीनारें हैं। हरेड मीनार तीन मजिली घोर लकड़ी की बनी हैं। छतें इनकी भी पीसी टाइल की हैं। इन मीनारों से पता चलता है कि पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही चीनियों को भीतिर शास्त्र और रीवायित का प्रचुर ज्ञान था। इस विभागत नगर में उत्तर व दक्षिण और पूर्व व पश्चिम की घोर चार द्वार हैं जिनमें प्रमुख दक्षिणी द्वार है। प्राचीन समय में जब सभ्यता भवन से बाहर जाते थे तो मूर्ख पर इश्यासी घाघात किये जाते थे और उनका सोचते समय उनकास। यह राजभवन चीनी वास्तु-कला का एक आश्चर्य माना जाता है। बर्षाक पर भवन की विद्यालता और कारीगरी की गहरी छाप पड़ती है (चित्र नं० १९३)।

कहा जाता है कि राजभवन की कई बहुमूल्य वस्तुएँ और कला-कृतियाँ भय्य चीनिताना अधिकारियों ने बिदेष्टियों को बेच दी थीं। इनमें से कई वस्तुएँ चीनी राष्ट्र के लिए प्राय बुप्याप्य हैं किन्तु नवी सरकार ने कुछ वस्तुएँ पुनः प्राप्त करके फिर वहाँ स्थापित कर दी हैं।

इस भवन के प्रजापबधर का संप्रह जी महान् है। संप्रह में पाँच हजार वर्ष पुराने मिट्टी के बर्तन तीन हजार वर्ष पुराने ताँबे (बाँज) के बर्तन पन्द्रह सौ वर्ष पुरानी बालिख की हुई पाटरी तरह सौ वर्ष पुराना लकड़ी की बरवाई का काम और एक हजार वर्ष पुराने चित्र हैं। सबसे अधिक पाटरी है जिसके लिए चीन सारे संसार में प्रसिद्ध है। इस पाटरी के लेंसे-केंते रंग और रूप हैं। कितनी को देख जोसा होता कि यह मिट्टी नहीं बानु है और कितनी को देख जान पड़ता कि यह लकड़ी है। इस संप्रह में प्राचिनिक काल की भी अनेक कारीगरी की वस्तुएँ दर्शनीय थीं।

प्रजापबधर के तीन विभिन्न विभाग इस प्रकार हैं—(१) राजमहल का प्रजापबधर (२) क्रांति विपयक वस्तुओं का प्रजापबधर और (३) ऐतिहासिक प्रजापबधर। कोई भी व्यक्ति इन प्रजापबधरों को देखने जा सकता है।

इन प्रजापबधरों को देखने के लिए वर्ष भर बर्षाकों का ताँता लया प्यता है।

इस प्रजापबधर में चीन की छोड़ और कहीं का कोई संप्रह नहीं है। प्राचीनतम देस मिथ का एक और प्रजापबधर हम इस बोरे के प्रारम्भ में देख चुके थे।

उसका नाम मने रखा है मुरबों का अजायबघर । आज अपने बोरे की समाप्तप्राया स्थिति में हम संसार के एक दूसरे प्राचीनतम देश का अजायबघर देख रहे थे । विश्व के अजायबघर के समान यहाँ का वायमण्डल न था । चीन की अजीब चीजों के संग्रह के कारण यह सच्चा अजायबघर जान पड़ता था । इसे देख मन में उत्पत्ति होती थी अद्भुत रस की ।

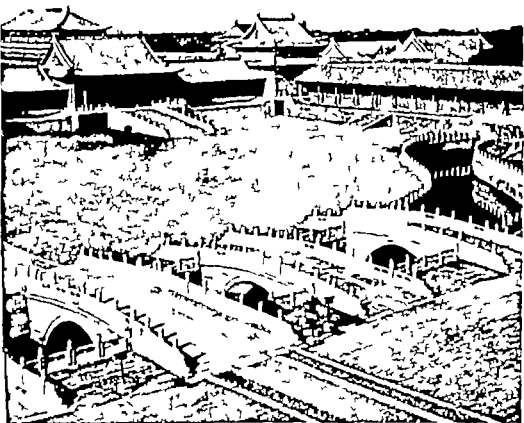
चीन के सरकारी पुरातत्व और वैज्ञानिक विभागों के अध्यक्ष भी जैन संघों ने हमारे साथ रह हमें यह अजायबघर दिखाने की छुपा की थी ।

अपराह्न में हम चीन का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय पीकिंग यूनिवर्सिटी देखने गये । यूनिवर्सिटी के उपसमापति और चीन महोदय ने हमारा स्वागत किया । यहाँ हम भारत से भाये हुए हिन्दी भाषा के सम्पादक प्रोफेसर जैन और उनकी पुत्री सु भी अकेले से भी मिले । चीन के पाठ्यक्रम धार्मिक के सम्बन्ध में हमें यहाँ अनेक जानकारी प्राप्त हुई ।

नये शिक्षा-अधिकारियों ने पुरानी पाठ्य-पुस्तकों के स्थान पर नयी पाठ्य पुस्तकें लागू की हैं । इनका प्रमुख उद्देश्य बालकों में भानुभूमि और साम्यवाद के प्रति नहरी भ्रष्टा और अनुमान उत्पन्न करना है । इसके बाद दूसरी बस्तु जिस पर सबसे अधिक बल दिया जाता है वह धार्मिक प्रेम है । विद्यार्थियों को साहित्य आहूनेवाले सभी देशों से प्रेम करना सिखाया जाता है । उन्हें इस बात की भी शिक्षा दी जाती है कि जब सभी देशों के प्रति सहानुभूति रखें तो ऊपर उठने का प्रयत्न कर रहे हैं और जिनमें अंधि की लहर फैली हुई है । विद्यार्थियों को अंधि विप्लव विचारों की शिक्षा दी जाती है । भारत की शिक्षा-प्रणाली से यहाँ की शिक्षा-प्रणाली एकदम निम्न प्रतीत होती है । शिक्षकों और विद्यार्थियों में अंधता अन्धता पाया जाता है उसका भारतीय स्कूलों में प्रायः अभाव रहता है । इन लोगों में अर्थ-भावना बहुत गहरी जमी मौजूद होती है । उनके मन में यह प्रेरणा जान करती जान पड़ती है कि हमें कुछ करना है । विद्यार्थियों और शिक्षकों का सम्बन्ध बड़ा निकट का और सरल होता है । दोनों ही एक दूसरे में और अपने-अपने काम में विलयस्थी लेंते हैं । देश के सब से बड़े नेता माओत्से तुंग के प्रति उनमें बड़ा आदर-भाव है ।

यहाँ के मिडिल स्कूल भारत के हाई स्कूल अथवा हायर सेकेंडरी स्कूल जैसे ही होते हैं । पहली सोच कक्षाएँ निम्न मिडिल और बाद की तीन कक्षाएँ उच्च मिडिल कहलाती हैं । इन कक्षाओं के लिए विद्यार्थी को ६ महीने के लिए पीछे भारतीय मुद्रा के अनुसार नौ-बच रुपये देनी होती है । भारत में इन्हीं कक्षाओं के लिए लगभग इतनी पीछे एक महीने में ली जाती है ।

हमने देखा कि विद्यार्थियों में से कोई भी प्रतिभात क्लान परिवारों के हीने और



१६४. पीकिंग का एजमन । संसार का सामन यह सब से बडा मसन है । मसन में पाँच हजार कस
है । पहले इसमें चीनी सम्राट् रहते थे । अब यह अजामन बनना दिया गया है

ता० ६ विसम्बर पीरिय में हमारी प्रशिक्षण जारी है।

आज प्रातःकाल हमने पाइही नामक बड़ी की नर्सरी देखी। सुना कि इस प्रकार की प्रत्येक नर्सरी बीन के बच्चों के लिए बनी है। इनकी एक सौ प्रस्ती सख्या तो पीरिय और पीरिय के आसपास ही बतायी जाती है, जो तीन बच्चों के समय में बन जाना कम-से कम हमें कुछ प्रतिशतव्योक्त जान पड़ा। जो कुछ हो पाइही नर्सरी सबमुब बड़ी सुन्दर है। बच्चे सब तन्मुस्त और प्रफुल्लित थे। इस नर्सरी में छोटे बच्चों का प्रच्छे वातावरण में जालन-पालन करने की बहुत अच्छी व्यवस्था करने का प्रयत्न किया गया है। नर्सरी के मुख्य कमरे में तोबियट बच्चों के प्रारम्भिक जीवन के प्रत्येक बिन्दु लम्बे हुए थे जिनसे यह प्रकट होता था कि तोबियट यूनिफन के बच्चों की विभाजित के सभी साधन उपलब्ध हैं। छोटे बच्चों के सोने के लिए प्रच्छे पर्तों की व्यवस्था है। उन्हें सभी कार्य स्वयं करने का शिक्षण प्रारम्भ से ही दिया जाता है। भोजन करने के लिए उनकी छोटी-छोटी बिसोय प्रकार की डेबिल और कुर्तियाँ हम लोग कभी न भूल सकेंगे। बिसोय प्रकार के खाने के बर्तनों की भी व्यवस्था उनके लिए की गयी है। उन्हें खेल २ में ही कुछ महत्वपूर्ण बर्तों सिखानेका विषय इन्तजाम है। (बिज नं १६७)

इसके पश्चात् हमने यहाँ का 'फ्यूंसिग' नामक एक मंडा मिल देखा जो सरकारी न होकर एक व्यक्तिगत सम्पत्ति थी। इसके मैनेजर श्री सन् फ्यूंसिग ने हमें इस मिलका सारा हाल बताया। इस मिल के वर्तमान व्यवस्थापक श्री सन् फ्यूंसिग के बित्ता में यह मिल प्रारम्भ किया था और आज भी इसमें लगी हुई सारी पूँजी पर जो सन् फ्यूंसिग की माला का एकाधिकार था। व्यवस्था श्री सन् फ्यूंसिग बैठते थे और उन्हें इस कार्य का पारिभ्रमिक मिलता था।

इस मिल में १४ आठों पीसने जालने इत्यादि की मशीनें थीं। इसका औसत उत्पादन १४ • • बोरा घाटा प्रतिमास होता था। १ बोरे में २२ किलोघाम आटा आता था। हमें यह बताया गया कि मजदूरों के बिसोय प्रस्तावपूर्वक कार्य करने के फलस्वरूप हमने महीने में १२ ६०० बोरा घाटा तैयार होने वाला था।

यह मिल सरकार के लिए आटा तैयार करने का कार्य करता था। सारा वेहें सरकार की ओर से मिल को भेज दिया जाता था। मिल का यह कार्य था कि इस वेहें का आटा तैयार करके सरकार को भेज दे। ऐसी परिस्थिति में मिल को अपनी ओर से बकिब केपिबल के रूप में कुछ नहीं लगाना पड़ता था।

उत्पादन करने में जो व्यय होता (Cost of production) था उसका ४०% मजदूरों के रूप में बचता था। मिल को केवल एक ही कर देना पड़ता था। यह आयकर था। मुनाफे (Net profit) पर २% से ३% तक यह कर लगता था। प्रबिक ते-प्रबिक मताक पर ३% ही आयकर के रूप में बीन में

लयता है। चूंकि इस मिल का मुनाफा ध्वंसित-से प्रथिक मुनाफे की सीमा के अन्तर्गत था जाता था इसलिए इस मिल के मुनाफे पर १ % टैक्स लग जाता था।

मुनाफे की रकम में से १०% टैक्स देने के बाद १ % रिजर्व फण्ड में रखी जाती थी। शेष ६०% में से ६% प्रिफरेंस शेयर पर डिविडेंड के रूप में देने के बाद जो रकम शेष रह जाती थी उसका ६०% सामान्य शेयर होल्डर्स को डिबिडेंड के रूप में दिया जाता था। १५% प्रतिशत मजदूरों को प्रतिशत इनाम के रूप में दिया जाता था। १५% बोनसपेयर और मजदूरों के विशेष प्रबन्ध में जाता था और १०% बिगही विशेष प्रावधानों के लिए रखा जाता था।

उपर्युक्त विवरण हमें बहुत बतही में दिया गया था फिर भी यह बताया गया था कि यह बहुत कुछ ठीक है। इस विवरण में एक ही बात महत्वपूर्ण थी कि टैक्स इत्यादि चुकाने के बाद जो रकम शेष रहती थी उसका ६०% डिबिडेंड के रूप में व्यवस्थापक की की माता को ही मिलता था।

व्यवस्थापक का मासिक वेतन १६ लाख यवान बताया गया। इसके साथ ही उन्हें मोटर, मकान इत्यादि की सभी सुविधाएँ प्राप्त थीं और सभी कुछ कर सजने के अधिकार भी प्राप्त थे। इतनी सुविधाएँ थीं इसका पुरा खोरा हम नहीं भिस सका।

हमें यह भी बताया गया कि मिल में कार्य करने वाले प्रत्येक मजदूर को ५,०००० यवान मासिक वेतन मिलता था और साथ ही रहने का मकान पानी और बत्ती सहित कपड़े का एक सूट प्रतिवर्ष, बच्चों की पढ़ाई के लिए खीस इनाम के लिए सुविधाएँ प्रादि भी हो जाती थीं।

इस प्रकार हमें यह समझाया गया कि व्यवस्थापक और मजदूर के वेतन में अन्तर को कम-से-कम करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

मिल का वातावरण अच्छा था और मजदूर कार्य प्रसन्नता से कर रहे थे। जहाँ-जहाँ मिल में अमेरिका विरोधी पोस्टर लग हुए थे जिनमें यह बर्खासा गया था कि अधिक उत्पादन से ही अमेरिकी साम्राज्यवाद का विनाश हो सकता है।

मिल के व्यवस्थापक अत्यन्त उत्साही और मिलनसार व्यक्ति थे।

घान बोयहर का भोजन हमें राष्ट्रीय कूतावास के डिनिटर की कौंस दे यहाँ करना था। भोजन में भारतीय कूतावास के सभी प्रतिष्ठित कार्यकारी सम्मिलित हुए थे।

कुछ अच्छा भारतीय खाना मिला और कुछ ही बर्बा हुई चीन की विन्न-विन्न समस्याओं तथा विषयों पर।

घपराङ्ग में हम चीन के सरकारी विभागों के कुछ उच्च अधिकारियों से मिले। इनमें थे—साइनो-इण्डिया कंसल्टिंग एजेंसियास के सनापति, चीन के सांस्कृतिक

मन्त्रिमण्डलके अध्यक्षकी भी टिग सींसब, जिनसे इसके पहले भी हमारी मेंट हो चुकी थी पर सरकारी विषयों पर चर्चा प्राय ही हुई। जिम्मा-विभाग के एक परामर्शकारी भी आये किंग। चीन के उच्चतम न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) के अध्यक्षकी भी श्रेय कुरिघान को पहले चीन के लिती विधविद्यालय में प्राचार्य थे। वे अत्यन्त विद्वान् व्यक्तित्व मान्य हुए। उनकी विचार प्रणाली बड़ी सुलझी हुई थीर जातिकारी थी। उन्होंने बस्तबोध के दौरान में यह बताया कि चीन की पुरानी न्याय-पद्धति अत्यन्त कुम्भित हो गयी थी। इसमें बिना धामूस परिवर्तन के कोई सुधार सम्भव ही नहीं था। इसीलिए नये चीन की न्याय-व्यवस्था में पुराने कानूनों को कोई स्थान देना उचित नहीं माना गया। पुराने सभी कानून रद्द कर दिये गये हैं और एक नयी न्याय-व्यवस्था स्थापित की गयी है। इस नयी न्याय-व्यवस्था में न्यायाधीश का कार्य केवल चुपचाप बैठकर बवाहों और मुस्लिमों के बयान सुनकर फैसला निकालना ही नहीं है बल्कि बायी और प्रतिबायी में समझौता कराना उसका सबसे पहला कर्तव्य है। इसी के अनुसार जनता की प्रभावों (Peoples Courts) कार्य करती है। जहाँ तक बच्चे का प्रश्न है इसका सभी पुरा-पुरा विवेचन नहीं हुआ है। जहाँ जैसे-जैसे मुकदमे आते हैं उनका फैसला किया जाता है। बीरे बीरे इन फैसलों के आधार पर नये कानून की क्यरेका तैयार हो रही है। उनकी बस्तबोध से यह प्रतीत हुआ कि चीन की वर्तमान न्याय प्रणाली का निर्माण हो रहा है और उसमें सभी को कुछ होता है वह अधिकतर किसी लिखित कानून के आधार पर न हो न्यायाधीशों की न्यायबुद्धि के आधार पर होता है। उन्होंने यह बताया कि पश्चिमी न्याय-पद्धति चीन के लिए सर्वथा अनुपयुक्त है और चीन को अपनी स्वयं की न्याय-प्रणाली बनानी होगी।

रत को हम पीकिंग आयेरा देखने गये। बांबाई का आयेरा होने इससे अधिक पसन्द आया था। हाँ यहाँ एक सर्कस भी दिखाया गया। इसके कार्य बड़े ही अच्छे और मद्भुत थे।

ता० ७ को प्रातःकाल हमने पीकिंग छोड़ दिया। स्टेशन पर हमें बड़ी जानदार बिबाई ही गयी। उपस्थित सदस्यों में साइलो-इन्डियन प्रेसिडिय एसीसियोजन के सभापति भी द्विय उद-सभापति भी अन और पीकिंग में रहनेवाले एक भारतीय भी बीकमल भी थे जिनसे भारतीय हुतावात के करिये हमारी कम ही जान-पहुचान हुई थी। इन सबकेन से भी चीन के सम्बन्ध में हमें अनेक बातें मालूम हुई थीं। प्राय ये हमारे लिए भारतीय योजना बनाकर माये थे जो हमने मार्ग में बड़ी रधि से खाया।

ता० ७ को पीकिंग से रवाना होकर ता० ८ को २ बजे दिन को हम हूको पहुँचे। यहाँ हमारी पाड़ी बरलती और हमें चार बजे का समय चीन का यह नगर

देखने की भी मिसलता था। हुको स्टेशन पर हमारे स्वागत के लिए अनेक प्रतिष्ठित चीनी सरकारी कर्मचारी और वा भारतीय सिविल इन्जिनियर मौजूद थे। वे दोनों वर्गों से चीन में रहते थे। इन्हें हमारे घाने की सुचना पीकिंग के भारतीय वृत्तावास में ही थी।

हुको स्टेशन से हम होटल प्राये जहाँ हम दोनों भारतीय डाक्टरों से कुछ और बातें करते रहे। इसके बाद हम पये हुको देखने के लिए। हुको भी चीन के प्रायः शहरों के समान ही एक शहर है। हमने शहर के साथ ही यहाँ का एक बगीचा भी देखा। कोई ऐसी नयी बात हमें यहाँ न मिली जिसका उल्लेख किया जाय सिवा रेशम पर कसीदे के कुछ चित्र। चीनी प्रान्त पूकिंग इस तरह की कारीगरी और चीनाई रेशम के लिए प्रसिद्ध है। इसके नमूने हुको में बिकते हैं। करीब ५ बजे हम होटल लौट प्राये और वहाँ से वृ छांग स्टेशन चले। इस स्टेशन पर पहुँचने के लिए याँबो नदी पार करनी पड़ती है। इस नदी को पार करने के लिए यद्यपि बोटों-बोटों की बर में छोटे-छोटे बहाव घाते-जाते हैं जिन पर टिककर लोपों का मातायात होता है पर हमारे लिए चीन सरकार ने एक खास मोटर बोट का प्रबन्ध किया था।

लगभग ६ बजे संध्या को हमारी ट्रेन हुका से कैंबोम के लिए रवाना हो गयी। कैंबोम हम पहुँचे ता० ९ की रात को १० बजे। जिस होटल में हम चीन घाते समय ठहरे थे उसी होटल में प्रात्र भी ठहराये गये थे। रात भर कैंबोम में ठहर ता० १० को प्रातःकाल ९ बजे हम कैंबोम से चीन की सीमा के सिम सांग स्थान को रवाना हुए। यह रास्ता चार घण्टे का था। रास्ते में कोई नयी बात नहीं हुई पर नयी बात हुई प्रवेची राज्य की सीमा पर पहुँचते ही। यह जो प्रवेची राज्य के इमीग्रेशन अफसर की हूब दरजे की बरतमीची। चीन की सीमा पर हमें लेने चाहना ट्रेनिंग एजेंसी के प्रतिनिधि प्राये थे। चीन की सीमा पर हमें कोई कष्ट नहीं हुआ। चीनी से मिल-जुटकर तथा जहाँने जो कुछ हमारे लिए किया था उसके सम्बन्ध में उन्हें धनित वन्द्यवाद दे हम सब पुल की ओर चले जिसे पार कर प्रवेची राज्य की सीमा में प्रवेश होना था। हांगकांग घाते समय बुरी बालों ने तथा इमीग्रेशन के अफसर बालों ने हमारे प्राथ विसा व्यवहार किया था उसे ध्यान में रखते हुए प्रवेची में ब्रिटिश कौंसलेट से हमने हांगकांग में प्रवेश करने के लिए प्राज्ञा लिखावा ली थी अतः ये सत्रजन हमें रोक तो सकते न थे, पर जहाँने हमें तंग बकर किया। हमारी ट्रेन चीन की सीमा पर पहुँची थी लगभग ११। बजे और ब्रिटिश सीमा से हांगकांग हमारी ट्रेन जाती थी वहाँ बजे। हमारे पासपोर्ट इमीग्रेशन के अफसर महाशय ने जाँच के लिए रख लिये और प्रायः चल दिये लेंच जाने। पासपोर्टों की जाँच में पीछे निरिष्ठ से प्राधिक समय न लगता पर अफसर महाशय का जाना जाने का समय जो हो गया था। हमने तनाम बुनिया के इस डीरे में कहीं भी यह नहीं देखा था कि कितनी प्रबिकारी के जाना जाने का समय हो जाने

के कारण पासपोर्टों की जांच के सबसे प्राथमिक कार्य रोक लिये जायें। हाई बजे वाली गाड़ी से जाने की चिन्ता हमें इसलिए प्रथम थी कि हावकांग के वैन अमेरिकन लाइन के बस्तर में ५ बजे के पहले हम जिस वैन अमेरिकन हवाई अड्डा से दूसरे दिन जा रहे थे उस अड्डा की तारीख करनी थी। कोई पौन बजे से लेकर दो बजकर बस मिनट तक इस हब बरजे के अहम्मय वीर अदतमीय अंप्रय की हमें राह देवनी पड़ी। दो बजकर बस मिनट पर यह बस्तर में आया। पासपोर्ट देवने की रसम-प्रथमी में तीन मिनट से अधिक न लगे और किसी तरह बोकते भागत हमें हावकांग की गाड़ी मिस सही क्लिके कारण हम ठीक समय वैन अमेरिकन लाइन के बस्तर में पहुँच सके। इस अनेमानस अंप्रय को इस बात की चिन्ता न थी कि यदि हम इस गाड़ी का बूक जाते तो हमारे कार्यक्रम में जो मड़बड़ होती वह अतके पाँच मिनट देर से लंब खाने की अपेक्षा हमारे लिए न जाने कितनी बड़ी मुश्किल जाती। मेरा निश्चित मत है कि अंप्रय के बाहर बच-बुचे अंप्रयो राज्य को यह अंप्रयो नौकरवाही समाप्त करने वाली है। अंप्रयो में एक अड्डावत है—अपवान् ऐसे मित्रों से बचाने। मे कहता हूँ अंप्रयो राज्य को अपवान् ऐसे नौकरों से बचाने। पीकिंग से इत सीमा तक की हमारी यात्रा २४५ किलोमीटर की थी।

बेकाक हमारा हवाई अड्डा ता ११ को १२ बज दिन की जाता था। निय मानुसार हम ११ बजे वैन अमेरिकन लाइन के बस्तर को पहुँच गये और तारी रसमी कार्रवाई से कट्टी पायो। पर बीड़ी देर में हमें सूचना मिली कि अमीन में कुछ मड़बड़ होने के कारण हमारा प्लेन ३ बजे के लगभग जायगा। यहाँ हमें मिला गये थे चीन के अाप्ति-सम्मेलन में जाने वाले अड़ीसा के एक साम्बवाही सज्जन श्री रामकृष्ण पाटी जो इसी प्लेन के वापस अलकते जा रहे थे। अच प्लेन जाने में देर थी अतः हम चारों भोजन के लिए अने। भोजन से लौटने पर हमें सूचना दी गयी कि अच हमारा हवाई अड्डा जायगा ही नहीं। सब जायगा इतकी भी कोई निश्चित सूचना नहीं थी। अने पाँच घण्टी लम् ५ की अास्ट्रेलिया की सिडनी की घटना अब भीतम कारण होने के कारण मुझे सिडनी में ३ दिन पड़ा रहना पड़ा था जिसके कारण मुझे अपनी हिन्ने सिवा वाली यात्रा सम्पूज करनी पड़ी थी। अने भय तथा कि इस बार स्याम और अर्मा की रही हुई यात्रा के विषय में भी कहीं ऐसा ही न हो। पर चारा क्या था। बीड़ी ही देर बाद हमें यह मानुम हुआ कि बी प्री ए सी का हवाई अड्डा अल अल-काल ग्यारह बजे जा रहा है और हम जाहूँ तो अल अड्डा से जा सकते हैं। हमने अपने वैन अमेरिकन लाइन के अिकट अलकाल बी० प्री ए सी० के कराये और दूसरे दिन अल-काल की प्रतीक्षा करने लगे।

दूसरे दिन अल-काल तक कोई काम न रहने के कारण मेने सोचा कि मेरी

खोयी हुई काउन्सिलिंग और वैसिल की पूर्ति हांगकांग से ही कर ली जाय क्योंकि कुत्ता बन्दरगाह होने के कारण यह सुना जा कि यहाँ इस प्रकार की चीज सस्ती मिलती है। हांगकांग का बाजार हमें सचमुच ही बड़ा प्रवीण जान पड़ा। छोटी से बड़ी हर चीज की एक दुकान से दूसरी दुकान की कीमत में बड़ा भारी अन्तर और इसने अधिक मोम-तोल की प्राणप्रकृता कि किसी को अन्त तक यह विश्वास ही नहीं हो पाता कि जो वस्तु वह करीब रहा है उसकी उचित कीमत दे रहा है या नहीं। हांगकांग चाहे कुत्ता पोर्ट हो पर हांगकांग के सच्चा बाह्रियात बाजार हमने और कहीं न देखा था।

दूसरे दिन प्रातःकाल जब हम बी. प्रो० ए० सी० के बन्दर को जा रहे थे तब हमें पता गया कि उस लाइन का हवाई अड्डा भी लेट हो गया है और कुछ आयेगा इसे कोई नहीं कह सकता। योड़ी देर बाद मालूम हुआ कि पैक अमेरिकन लाइन का एक अड्डा घाने वाला है और वह शायद तीसरे पहर आता जाय। कम-से कम तीसरे पहर तक हांगकांग से रहाना होने की कोई संभावना न देखा अयमोहनदास और अन्त्यामदास हांगकांग के एक प्रसिद्ध वैशेडा को देखने गये और मने अयमा समय लगाया इस पुस्तक में।

कोई १२॥ बजे हमें निश्चित सूचना मिली कि बी० प्रो० ए० सी० का हवाई अड्डा था। बजे सप्पा को जा रहा है और हय लोगों को ३ बजे के पड़ने बी प्री ए० सी० के बन्दर पहुँच जाना चाहिए।

करीब २ बजे हमने हांगकांग छोड़ दिया।

चीन पर ही कुछ और

इसपर भारत से और अन्य देशों से भी अनेक लोग चीन पर ही और उन्होंने अपने-अपने विचार प्रकट किये हैं। जितने विभिन्न और परस्पर विरोधी विचार चीन के सम्बन्ध में पाये जाते हैं उतने अन्य किसी देश के सम्बन्ध में नहीं। कुछ लोगों का मत है कि नया चीन एक अज्ञान-अज्ञानता स्वयं बन गया है। कुछ और लोगों का मत इसके विपरीत है कि नयी शासन-व्यवस्था के अर्थात् चीन और दुर्बला को पहुँच गया है और वहाँ की जनता एक सर्वाधिकारकारी व्यवस्था के अर्थात् लड़ा के लिए बन्धी हो गयी है। इसलिए वहाँ एक ओर नये चीन की भूरि भूरि प्रशंसा की जाती है वहाँ दूसरी ओर चीन की उत्तमी ही कड़ी निन्दा भी सुनने में आती है। स्पष्ट है कि ये दोनों दृष्टिकोण वास्तविकता पर आधारित न होकर बसगत भावनाओं से प्रेरित रहते हैं। नये चीन के पक्षपाती अधिकारी कम में प्रचार के लिए उसका अन्य विषय प्रस्तुत करते हैं जबकि नये चीन के विरोधी मध्यम-बहिष्कार के लिए नये चीन में केवल कालिमा ही देख पाते हैं। मेरा मत है कि ये दोनों ही बातें भ्रामक हैं। मैंने चीन में जो कुछ देखा उसके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि न तो चीन में इतना अधिक विकास हो गया है कि वहाँ अब और कुछ करना बाकी न हो और न ऐसा ही है कि नयी सरकार ने चीन को लड़ाही की राह पर बाल दिया हो।

मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि आज का चीन एक सक्तिशाली देश और विश्व की एक प्रबल शक्ति है उची तरह जैसे नये स्वतन्त्र भारत की पणना महानतम देशों में होने लगी है। इसमें सन्देह नहीं कि कीर्तितांग चीन की तुलना में आज का चीन कहीं अधिक संघटित और कहीं ज्यादा सक्तिशाली है। चाँकहाँ श्रेष्ठ के दिनों में शासन-प्रबन्ध अत्याचार-पुर्ष या और अयोग्य एवं कम अनुभवी अधिकारियों के द्वारा में जाता गया था। जनता की अज्ञानता और इसके अन्वयण की अज्ञानता न छोड़कर चीन सरकार के अधिकारी स्वार्थ-साधना में लिप्त रहते थे। ऐस्कर्य और विनाशिता का वहाँ महुलों में बोलबाला था वहाँ पाँवों में जनता की पुकार सुनने वाला कोई न था। देश में उत्पन्न भी इसी लिए कम होता था और चाँकहाँ श्रेष्ठ को अपनी लता

बनाये रखने के लिए विदेशियों का धामय लेना पड़ता था।

चांगकाई ग्रेक सरकार का जनता पर न तो प्रभाव ही था और न जनता की उसमें भावना थी। चांगकाई ग्रेक और उसकी सरकार के अन्य अधिकारी जनता के प्रतिनिधि तो थे नहीं क्योंकि चुनाव जैसी कोई व्यवस्था वहाँ न थी। सैनिक बल पर जनको सत्ता टिकी हुई थी और इतना ही उनका सबसे बड़ा धर्म था। सरकार सामन्तों और जागीरदारों का पक्ष लेती थी इसलिए राज्य की जनप्रति निष्क्रिय पड़ी थी। जिन दिनों चीनी कम्युनिस्ट धर्मो बढ़ रहे थे और चांगकाई ग्रेक की बैगाएँ हारती हुईं आत्मसमर्पण करती हुईं एक शहर से दूसरे शहर की हट रही थीं उसका मुख्य कारण यही था कि चीन की जनता चांगकाई ग्रेक के साथ न होकर नये कमिन्टारियों के साथ थी और यद्यपि अमेरिका का प्रभाव चांग सरकार को मिला हुआ था फिर भी वह नष्ट होने से न बच सकी। 'एशिया की स्थिति' नामक पुस्तक के अग्रज सेक्रेटरी विलियम लेटीमोर ने लिखा है कि अमेरिका ने चांग की सुरक्षा और विरोधियों को परास्त करने के लिए जो सैनिक सामान दिया था उसे अपने पास रख लाने की भी सामर्थ्य चांगकाई ग्रेक में नहीं रह गयी थी। अकेले मुख्यतः और चीनको में कम्युनिस्टों के हाथ १९,२ ००० करोड़ डॉलर का अमेरिकी सैनिक सामान गया था। इस तरह के सामान और जनता के सहयोग से कम्युनिस्ट-विजय अचरित्यम्भावी थी। वहाँ जनकी विजय होती थी वहाँ पर वे जूमि किसानों में बाँट देते थे। इसलिए वहाँ की जनता की बहुमानुभूति उन्हें सहज ही प्राप्त हो जाती थी और मिल प्रदेश की ओर वे बढ़ते वे वहाँ की जनता भी ऐसे ही लाभ की आशा में उनके स्वागत के लिए तैयार रहती थी। जनता का जो समर्थन चीनी कम्युनिस्टों की विजय का कारण बना वह नये चीन को धर्म निर्माण-कार्य के लिए भी प्राप्त हुआ इसमें कोई सन्देह नहीं।

सोवियत की दृष्टि से चीन संसार के सबसे बड़े देशों में है। आकार में वह समूचे यूरोप के बराबर है यद्यपि संयुक्त राज्य अमेरिका से कुछ ही कम है। जनसंख्या वहाँ की लगभग पचास करोड़ है और संस्कृति पाँच हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन है। चीन एशिया के पूर्वी भाग में विस्तृत और महान् मूल्यवान् है। उसका सोवियत समय पर्यन्त प्रायः पूर्ण चीन होगा और पूर्व से पश्चिम तक तथा उत्तर से दक्षिण तक उसको लग्नाई एक-डेढ़ हजार मील है। उसकी उत्तरी सीमा उसकी सुरक्षा के लिए लाभदायक है किन्तु समुद्र-तट बहुत बड़ा और विदेशी आक्रमणों के लिए खुला है। चीन का अतीत बड़ा ही गौरवमय है। धर्म से कोई चीन हजार वर्ष पूर्व वहाँ कुतुबनुमे (कम्पास) का आविष्कार हो चुका था। समस्त चीन वर्ष पहले वहाँ कायम तैयार होने लगा था। लगभग बारह सौ वर्ष पहले वहाँ मुद्रण-कला की नींव

पड़ चुकी थी और घाठ सी गर्द पहने वहाँ मोसा-ब्राह्म बरने लगा था। प्राचीन काल में भी चीन की संसार के महानतम देशों में मरुता की जाती थी और घाज भी वह बुनिया के अत्यन्त शक्तिशाली देशों में है। नये चीन ने बुनिया में एक बुद्धि दानित के रूप में परापरण किया है। कुछ देश इस तथ्य को स्वीकार करने में आनाकारी कर रहे हैं पर इसमें सन्देह नहीं कि नया चीन एक वास्तविकता है।

भारत और चीन के बड़े पुराने सांस्कृतिक सम्बन्ध हैं और दोनों की सम से बड़ी समानता यह है कि वे कृषि प्रधान देश हैं। चीन के अधिकांश भाग को तीन बड़ी-बड़ी नदियाँ सींचती हैं जिनमें सबसे महत्वपूर्ण तीन हुआर लम्बी यांग्सी ब्यांग नदी है। दूसरी महत्वपूर्ण नदी 'ह्ल्यांगहो' है जो निरन्तर अपना बच बदलती रहती है और चीन में काफी तबाही करने के कारण 'चीन के घातू' नाम से विख्यात है। देश की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है जो देश की भौतिक स्थिति और जनसामु के अनुकूल ही है। चीन में मुख्य रूप से जाने-पाने की बीजों की ही खेती होती है साथ ही मुँदर पालने और मुँदियाँ ब बलक पालने का भी रिवाज है। वहाँ की मुख्य फलमें आबल गेहूँ, अवार बाजरा जो मछई घानू लीपाबीन और लम्बियाँ धारि हैं। व्यापारी फलनों का वहाँ दूसरा स्थान है और चाय तम्बाकू कपास धारि की खेती भी होती है। रेशम के कीड़े पालना वहाँ का एक प्रमुख प्रयोग है। कहा जाता है कि नये चीन में भूमि के पुनर्बितरण और कृषि के नये तरीके के कारण पैदावार काफी बढ़ गयी है पर हमें इसके कोई प्रमाण नहीं मिले नये तरीकों से खेती होते हुए भी हमने वहाँ नहीं देखा।

चीन जिसका बड़ा देश है उसके हिसाब से उसके प्राकृतिक साधन उतने अधिक नहीं हैं। वहाँ चीन में कोयला बहुत अधिक पाया जाता है। राना और लोहा भी समुचित मात्रा में हैं। इसके अतिरिक्त वहाँ पेट्रोलियम पत्थक और ताँबा भी निकलता जाता है। चीन के सभार-साधन बहुत विकसित नहीं हैं नवी रेल-पटरियाँ बिछायी गयी हैं किन्तु सब भी ऐसे स्थान ही अधिक हैं जहाँ घाने-जाने के और सामान पहुँचाने के लिए थोड़ा अचर अथवा कुत्ते धारि काम में लाये जाते हैं। प्राकृतिक विकास के लिए नवी सरकार की कुछ योजनाएँ लफल हुई हैं पर देश की महानता की देखते हुए ये धमी नहीं के बराबर कही जा सकती है। हमारे देश की इस प्रकार की योजनाएँ चीन की योजनाएँ से कहीं महान् हैं।

अब जरा चीन के राजनीतिक स्वरूप पर विचार करें। इस दृष्टि के चीन दो भागों में विभक्त है—मुख्य चीन और बृहत्तर चीन। मुख्य चीन वह भाग है जिसमें चीन के वे सभार प्राचीन प्राप्त करते हैं जो चीन की महान् जित के बलित में हैं। बृहत्तर चीन में वह सब भूभाग गिना जाता है जो प्राचीन यांग्सी ब्यांग के समय

चीन साम्राज्य कहलाता था। इसमें मंगूरिया मंगोलिया, सिनकिंग और तिब्बत इन चार को भी सम्मिलित किया जाता है।

याम चीन में 'मुक्ति' अर्थ जितना प्रचलित है उतना और कीई नहीं। कम का चीन एशिया का एक रोगी देश था जो साम्राज्यवादी देशों की एक पूरी अताखी की कुचालों और ध्यागलाई श्रेक के बोल बर्ब के कुशासन से पीड़ित था।

चीन जनराज्य की स्थापना ही चीनी लोग मरित कहते हैं। इससे पहले ध्यानलाई श्रेक के शासन में स्थिति बड़ी असन्तोषजनक थी और दिन-पर दिन बिगड़ती जा रही थी। देश में अभाव्यकता से कम प्रमात्र पैसा होता था और बिदेसों से मंगाना पड़ता था। बाहर से याम मँगाने पर भी प्रभाव और प्रकाल मुह बाये रहते थे। मुझ का असन बहुत बड़ गया था। उन दिनों की सरकार बिश्व में अत्यन्त अल्प सरकार मानी जाती थी और यह लघ्य संबंधित था। धमीरी-गरीबी का भेद बराबरका पर पट्ट बूका था। किसानों पर सामग्न बर्ग का भीवल अत्याचार होता था। उमर मिलों के धमडूर कराइते थे। सरकार सब कुछ देखते हुए भी कुछ न देखती थी और पीड़ितों की बूकार पर काल न देती थी। सत्ता मर में बूर चीन का आसक बर्ग अपनी अन्ता का शोवल करता था और बिदेसियों के इधारों पर नाचता था। बेकारी बेईमानी मूक, बीमारी, परीबी, बेरपाबुति और भिमाबुति का बीतबाला था।

नये चीन के जो सरकारी अधिकारी नापल के घाई० सी० एस सचसरो के बिलते-बुलते हैं अधिकारिण रूप में बिश्वबिद्यालयों के एते छात्र हैं जो कोमिठाप सरकार के विरुद्ध आन्दोलन में नाप से बूके हैं और अपने विश्वासपात्र होने का समूह है बूके हैं। इन अधिकारियों ने अपनी मर्जी से मुक-मुबिबा का परिव्याप कर दिया है। उनका कहना है कि जनता वाली के समान है बिधने हमारा अस्तित्क मछलियों-का-ता है। वाली के न रहने पर मछली बीबित नहीं रह सकती। इसलिए वे अपने धाय ही बहुत कम बदन लेते हैं जो कारखाने के किंती भी नजदूर के बेलन के बराबर होया। वे दो-दो बोड़ी सूती और ऊनी पुनीधर्म लेते हैं जो अत्यन्त लारे होते हैं। बुनिया के किंची भी देश में प्रामव इस बर्ग के अधिकारी इतना अधिक काम न करते होंगे और न इतनी प्रमुबिबा ही सहन करते होंगे जो चीनी अधिकारियों ने ल्हुर्व स्वीकार की है।

पहो नहीं बीस बर्ग के संभय और निराधारों के धार जब लम्पूतिस्तों की सत्ता प्राप्त हुई तो वे मर से बूर नहीं ही पये और उन्होंने निर्माण के काम की ओर ध्यान भी दिया। पहले क्याल यह किंथा जाता था कि लम्पूतिरठ सभी बर्गों और पात्रियों को भंग करके अन्त में सर्वाधिकारवादी सरकार बनाने पर उन्होंने एता

नहीं किया। इसके विपरीत उन्होंने अपने को वील ही रखा। चीन की संसद में उनके पास एक तिहाई वोट हैं। नयी धातन-व्यवस्था के हरेक क्षेत्र में घोर हरेक स्तर पर तैर कम्युनिस्ट ही नहीं पिछले कोमिन्तान पार्टी के कुछ लोग भी काम करते हैं बिना सुधार हीनमा हैं। पात्र चीन के ६ उपप्रधानों में से तीन तैर कम्युनिस्ट हैं घोर माओत्से तुंग के बाद इन्हीं का स्थान है। सरकार में धाबे बर्जस से प्रथिम पार्षियों के मंत्री हैं। सरकार की जपरेखा एक विस्माल विरासिड बैसी है। गाँव जहर, प्राण और चीन की केन्द्रीय सरकार एक दूसरे से खूब मजबूती के साथ सम्बन्ध हैं। इसके प्रतिरिक्त विविध कियों के सम्बन्ध में सरकारी बनी हुई है। जनता की जकरतें घोर जनता की इच्छा ही सरकार में स्पष्ट होती हैं। जित प्रकार घरीर में धननिगत कमनियों घोर विरासों का जाल बँसा है उनी प्रकार कैन्द्रीय सरकार का नामों नवनों घोर प्राणों के साथ सम्बन्ध है। कैन्द्रीय सरकार का कोई भी धारेध चीन के हरेक कोने में पहुँच जाता है। नयी व्यवस्था की छोटी-से-छोटी कड़ी जाम-संस्कार है घोर पीठिन सरकार उन सबसे ऊपर है जिसका पूरा नियंत्रण रहता है। फिर भी यह कहे बिना नहीं रहा जा सकता कि चीन की जिली भी धातनीय संस्था का चुनाव नहीं हुआ। सब की सब सरकार द्वारा नामजब है।

प्राथिम क्षेत्र में चीन सरकार की नीति को कम्युनिस्ट-नीति नहीं कहा जा सकता क्योंकि इसने निजी सम्पत्ति को मरमत्ता दे रखी है। लोगों को जमीन जख-दार प्रबवा कारखानों का मालिक होना का प्रथिकार है। साथ ही इसमें सामूहिक खेती की भी कोई जर्बा नहीं की गयी। इन मुबारों को जामू करने में फिटनो उधारता से काम लिया जा रहा है इसका अनुमान एक मिस्त्रान से जम जावया। इन मुबारों के साथ एक व्यवस्था यह है कि बरि कोई व्यक्ति जपान के रूप में प्रपवा कर्ज के ऊपर व्याज के रूप में रकम लेकर लोपल करता हुआ वावा जावया और इसके परिचार के मरम्यों की संस्था प्रथिम न होगी घोर कर्ज कम होमा तो उते जनीधार समझ जावया बरन्तु परिचार बहुत बड़ा होने घोर कर्ज प्रथिम होने बर ऐसे व्यक्ति को जनी फिटान माला जावया जहे इन दोनों प्रकरबासों में बहु व्यक्ति खुर ही बरि जम क्यों न करता हो।

भूमि-मुबारों के सम्बन्ध में सरकार की नीति वास्तविकता बर धाधारित है। निजी सम्पत्ति रखने के साथ-साथ लोगों को मुतरता जमाने का हक भी है किन्तु यह अनुमत्ता बहुत सीमित ही-ही सकता है। सामलकारी लोपल का प्रबन्ध कोई स्थान नहीं रहा है और इसे सभी कर्जों में जमात्त कर दिवा जवा है। भूमि-कर बँबाबार का कोई बर्जनीय से हीत प्रतिघत होता है जो प्रभाव के रूप में दिया जा सकता है। मुदा-न्यैति को रोकने के सिद् चीन में भी उपज्य किये गये हैं उनमें यह कापी

महत्त्वपूर्ण है। जमींदारों की जमीनें ती बख्त कर ही सी गयी है पर जो पुर खेती करना चाहते थे उन्हें इसकी अनुमति भी दी गयी है। नयी चीन सरकार को जोड़े ही समय में अपने कुछ निश्चय के कारण उस खोरबाजारी और प्रयत्नकार की समाप्त करने में भी सफलता मिली है जो व्यांगकाई लोक के समय में कला हुआ था। इस विद्या में उनकी सफलता को अनेक विदेशियों ने स्वीकार किया है।

किन्तु मैं यह भी कहे बिना नहीं रह सकता कि चीन के भूमि-सुधारों की जितनी तुलना की जाती है उतने प्रभावकारी वे सिद्ध नहीं हुए। हमारे देश में भूदान पत्र के रूप में जो नयी भूमि अस्तित्व में लयी है वह भी किसी तरह कम सराहनीय नहीं है। हम कह सकते हैं कि आचार्य बिरोबा भाबे का यह आन्दोलन जो हमारे देश की बाँबीबाबी विचारधारा के अनुकूल है और जिससे व्यक्ति की स्वैच्छापूर्वक त्याग-माषणा प्रकट होती है अपने अर्थ में किसी तरह कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी नयी चीन सरकार ने कुछ परिवर्तन किया है। पहले चीन में शिक्षा कुछ इने गिने व्यक्ति ही प्राप्त कर सकते थे जिनके पास साधन होते थे। नये चीन में शिक्षा सबके लिए आवश्यक वस्तु समझी जाती है। नये चीन में सारे स्कूल सरकार ने अपने अधिकार में ले लिये हैं, और शिक्षा का बहु रूप लोगों की कैवल बर्तक बनाना नहीं है। नये चीन में शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाने का लक्ष्य सामने रखा जाता है। सेना में अक्सर अपने खाली समय में सैनिकों को पढ़ना-लिखना सिखाते हैं। सैनिक स्वयं अपने खाली समय में शिक्षकों की सहायता देना अपना कर्तव्य समझते हैं। अन्तिम आँकड़ों के अनुसार १९३१ में प्राइमरी स्कूलों में ३ करोड़ ७० लाख, स्कूलों में १३ लाख ७ हजार और कॉलेजों में १ लाख २६ हजार विद्यार्थी पढ़ रहे थे। इसी वर्ष १३ लाख मजदूरों ने इस्तकारी के स्कूलों में शिक्षा ली और डोई करोड़ शिक्षकों ने जाइों के विनों में पढ़ाई का कार्यक्रम पुरा किया। फिर भी बीजा रहसे कहा गया है कि शिक्षा का स्टेण्डर्ड बड़ा का ठेका नहीं कहा जा सकता।

औद्योगिक क्षेत्र में भी चीन उन्नति कर रहा है, पर बहुत अधिक नहीं। स्वदेशीय पर और देने के कारण बड़ा आत्मनिर्मरता कुछ दूर तक सम्भव हो सकी है। एक और कारण यह है कि मजदूरों को अधिक-से-अधिक सुविधायें देने का यत्न किया जाता है।

ग्राम का चीन काथी अक्षर प्रगति कर रहा है। सारा राज्य पुनर्निर्माण के काम में जुटा हुआ है। ईमानदारी, सादगी और जनता की सेवा में सिद्धांत सामने रखे गये हैं। कुछ लोगों का मत है कि चीन पर रूस का पर्यायिक प्रभाव है, और मेरी राय में यह मत लयी है।

को कुछ ही एक बात स्पष्ट है। नये चीन में बल राजनीतिक एकता की स्थापना हो गयी है जिसका पिछली एक सताब्दी से अभाव था। जहाँ तक जापान, तिब्बत, रोसिया-रिबाब और सिन्धुवासी की एकता का सम्बन्ध है वह तो सदा से बनी हुई थी ठीक वही प्रकार जिस प्रकार विदेशी शासन के अधीन भारत का अस्तित्व हो गया था किन्तु वैदिक सिन्धुवासी की घोर संस्कृति की एकता अटूट बनी रही। चीन में अल्प समय में जो कुछ हुआ है अस्तित्व संसार का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है। चीन में भारत के लिए मेरे बड़ा सम्मान था। भारत की अस्तित्व के चीन को बड़े आदर की दृष्टि से देखता है। यदि माने जाने बिना में भारत की ओर चीन का सम्पर्क और भी गहरा होता गया तो इससे अधिक हर्ष की भी क्या बात हो सकती है। अब मे सारे ब्रिटेन-पूर्वी एशिया और दूर पूर्व पर दृष्टिपात करता हूँ तो मुझे आज्ञा होता है कि द्वितीय महायुद्ध के अन्तर्गत इस युद्ध में चीन जापान और भारत इन तीन नयी एशियाई शक्तियों का अस्तित्व हुआ है। हम कह सकते हैं कि जहाँ चीन की शक्ति का सबसे अधिक परिचय ऐतिहासिक क्षेत्र और जापान की शक्ति का परिचय भौगोलिक क्षेत्र में मिला है वहाँ भारत की शक्ति का परिचय नैतिक क्षेत्र में मिला है।

संसार के उस देश में जिसमें सबसे अधिक धार्मिक वायुमण्डल है

हृदयकांग से रवाना होने पर भी कठिनाई भी फिर वहाँ से चलकर स्वाम की राजधानी बगकाक पहुँचने में केवल २। घण्टे लगे क्योंकि हृदयकांग से बगकाक लगभग एक हजार मील ही था। इससे पहले से डैनेडा और सेन्टेन्सिस्को से हनानुल तथा हनानुलू से डोकियो की उड़ानों के सामने यह उड़ान कुछ-सी जान पड़ती थी। इस उड़ान से बड़ी तो घोर भी कई उड़ानें उड़ी जा चुकी थीं।

बगकाक के हवाई घण्टे पर भारतीय वृत्तावास के भी सुबहाभ्यम् हमें लेने के लिए बीजुद थे। बगकाक में हमारे ठहरने का प्रबन्ध वहाँ के सबसे अच्छे होटल में किया गया था। हवाई घण्टे में हम लोब सीने होटल पहुँचे। होटल पहुँचते पहुँचते ही हमें मान्य हो गया कि स्वाम देश और भारत में कोई अन्तर नहीं है। वैसे ही प्राकृतिक दृश्य वैसे ही उज्ज्वल सृष्टि और वैसे ही मेहुँए बरखों की अनन्तता। हाँ वहाँ की अनन्तता की पोशाक और भारत की अनन्तता की पोशाक में काफी अन्तर था। वहाँ के उन नर-नारियों को छोड़ जिनकी बेधभूवा पत्रिकामी को सेप लोब स्वामी लिबास में थे।

स्वाम में स्त्रियों और पुरुषों दोनों की ही मुख्य पोशाक कोई झाँई फूट चौड़ी और सात फुट लम्बी होती है जो कमर से घुटनों तक का शरीर ढक सती है। इसके दोनों सिरे घाये की और लटकते रहते हैं जिनकी लपेटकर भांग बना ली जाती है। इस वस्त्र को स्वाम में 'पानु' कहा जाता है और यह लुत्ती या रेझमी होता है। इसके प्रतिरिक्त ग्रामीण लोग शरीर के ऊपरी भाग पर या तो कुछ नहीं पहनते या छोटी डीली आकृत पहनते हैं। स्त्रियाँ 'पाहु' नामक एक पट्टी बख वस्त्र पर बाँध लेती हैं या चुल्ल बाहोंवासी आकृत पहनती हैं। जब धर्म के लोग को पुरो पत्रिकामी पोशाक नहीं पहनते वे सफ़ेद ड्रिल धमका टसर के कोट, यूरोपीय ढंग की मलमल की कमीज ईट-सूती मोझे पहनते हैं जो 'पानु' के साथ बड़े

बन्धे सकते हैं। सरकारी और सैनिक अधिकारियों को हमने यूरोपीय डम के बस्त्र पहने देखा। उच्च वर्ग की महिलाएँ स्लाउग् रेशमी मोझे और डैबी एकी की झूठी पहनती हैं। छोटे बच्चे बिधेय प्रबसरो को छोड़ अधिकतर कोई बस्त्र नहीं पहनते।

होटल पहुँचते-पहुँचते ही हमें वहाँ अनेक भारतीय भी इण्डियनर हुए जिनमें अधिकतर धोती पहने हुए थे। कितने समय और कितनी दूर घूमने के बाद हमने ठीक से बोती पहने हुए लोग देखे। इनके सिवा पीत चीवर बारसु किये हुए अनेक बौद्ध भिक्षु भी हमें होटल पहुँचते-पहुँचते ही दिखायो दिये। आयात और चीन में भी वहाँ के अधिकतर निवासी अभी भी बौद्ध धर्मावलम्बी हैं। हमें इस प्रकार के बौद्ध भिक्षु नहीं दिख पड़े थे। बाद में हमें भालूम हुआ कि स्वाम में हर व्यक्ति को पाँच वर्ष से पञ्चीस वर्ष की अवस्था के बीच चार महीने से लेकर चार बय तक बौद्ध भिक्षु होना पड़ता है। जिस प्रकार भारत में एक समय क्रिश्चियन धर्मप्रचार संस्कार से लेकर समाकर्म संस्कार तक ब्राह्मणारी रहते थे उसी प्रकार स्वाम में धाज भी कुछ-न-कुछ समय के लिए हर व्यक्ति बौद्ध भिक्षु होता है। बौद्ध धर्म स्वाम में अधिक धर्म है। बौद्ध धर्म ही वहाँ का राजधर्म है। किसी देश में किसी धर्म का हमने ऐसा जीता-जागता प्रभाव नहीं देखा जैसा स्वाम में बौद्ध धर्म का।

कितना हर्ष हुआ हमें धाज भारत के इतने समिकष्ट पहुँचकर भारत के समान ही भारतीय संस्कृति से प्रोत्थित भारत के पड़ोसी इस स्वाम देश के वर्धन कर।

होटल पहुँचकर हमने अपने स्वाम में ठहरने के डाई दिन का कार्यक्रम निश्चित किया। इस कार्यक्रम में बेककाक के वर्धनीय स्थानों को देखने के प्रतिरित जिनमें अधिकतर बौद्ध मन्दिर थे मेरे सार्वजनिक भावसु का आभोजन भी था। इस भावसु का प्रबन्ध बेककाक की 'आई-भारत कम्पनल गुसाइटी करने वाली थी। स्वाम में लयमय इस हवाय भारतीय रहते हैं जिनमें लयमय घाठ हवाय बेककाक में है। मेरा यह भावसु भारतीय जनता के बीच होने वाला था।

दूसरे दिन प्रत-काल ही से हमारी बेककाक घुमाई धारम्य हुई जो बेककाक से बिदा होने तक चलती रही।

बेककाक का अपना इतिहास है। यह सत्रह सो वर्ष में बीरे-बीरे ही यह नगर बन पाया है। बीरे-बीरे सेनाम नबी की मिट्टी से समुद्र पटता गया और बेककाक नगर का निर्माण हुआ। इस नबी की मिट्टी अब भी जमती जा रही है और ही सकता है कि कभी घाने बनकर बेककाक भी समुद्र से उठी तच्छ दूर हो जाय जैसे कि अयोध्या हो गया है।

बकिल-मुर्ची एशिया में बेककाक सबसे बड़ा नगर है और १७८२ से ही



१६६ 'बाम बीम्मामा बोरो पितु
संगमरमर मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध
बेंगकाफ का एक प्रायः बौद्ध-मन्दिर

१७ बेंगकाफ में बुद्ध की एक
विशिष्ट मूर्ति



पड़ा। वे एक-एक डग इतना सँभालकर धीरे-धीरे रखती थीं कि इतनी धीरी चलत है महीनों लंबन करनेवाला प्रयत्न कोई बड़े भारी धाँधरेझगडे मुक्त हुआ रोमी ही चलता है। मुना कि धम की छावना के समय इन्हें अपने धरीर को भी इतना सँभालकर रखना पड़ता है कि मस्तिष्क, हृदय प्रयत्न धरीर के किसी प्रयत्न को किसी प्रकार का धक्का या धटका न लगने पावे।

बीठ मन्दिरोँ धीर बीठ बिहारों की देखने के सिवा हमने स्याम का प्रसिद्ध रंजमंच भी देखा। इन दिनों बंगलाक में एक प्रदर्शनी भी हो रही थी। हम इस प्रदर्शनी की भी देखने पावे।

स्याम की कला धीर बहूँ का साहित्यधर्म से बहुत अधिक प्रभावित है यहाँ तक कि धर्म का ही एक ध्य रहा है। धार्मिक समय में इस स्थिति में कुछ परिवर्तन प्रचल्य हुआ है। स्याम का रंजमंच उल्लत है। कुछ समय पहले तक प्राचीन धास्त्रीय नाट्य-शैली का अनुसरण किया जाता था किन्तु १९१० के बाद से नयी विधा में भी उल्लति होने लगी है। इसमें प्राच्य धीर पुरोपीय बहति का मिश्रण कर दिया गया है। स्याम के प्राचीन धास्त्रीय नाटकों की तुलना हम अपने यहाँ की रामलीला धासि से कर सकते हैं। इसमें बेहरे पर नकली बेहरे लगाने का प्रयोग होता है धाबाध भी स्वाभाविक नहीं रहती धीर हावभाव प्रकट करने के निश्चित तरीके होते हैं। इस प्रकार के नाटक बहूँ जन बाटक कहे जाते हैं क्योंकि लोय कला में परिष्कार की धीर अधिक ध्यान दिये बिना इनसे धाहागी से मनोरंजन प्राप्त कर लेते हैं।

स्याम की धास्त्रीय नाट्य-कला को पूर्ण रूप से स्याम की कला तो नहीं कहा जा सकता किन्तु उसकी कुछ धपनी बिजेयताएँ प्रचल्य हैं। स्याम को यह कलागिधि भारत से प्राप्त हुई। स्याम के नाटक दो कोडि के हैं—(१) खीन—बिचमें धनी पुष्क-नाम नकली बेहरे लगाते हैं (२) नाडीन—बिचमें पुष्क-यात्रकैवल बेल्की प्रचला बहूँ का बिचल करने के लिए ही नकली बेहरोँ का प्रयोग करते हैं। इन नाटकों में धस्त्रों की बिबिधता धीर नुंवार बाहुस्य कम बहुत अधिक स्वात है। नुंवार धीर बेधमुया से साध-साध संबीत धीर नृत्य का प्राधान्य रहता है। (बिच नं १७४, १७५)

ता० १५ के प्रत-काल मेरा धार्मिक भावण हुआ धीर इस भावण के धवतर पर ही मेने स्याम की उस प्रसिद्ध धाई भारत कश्चरल मुसाहती से धमन तथा धायों की देखा एवं इस संस्था के प्रधान-प्रधान संघालकों से मेट की बिच संस्था ने मेरे इस भावण का प्रबन्ध किया था। इससे प्रधान संघालक धावकल की रधुनाय धर्मा है।

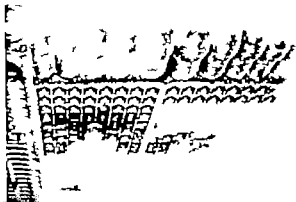
प्रत-काल का समय होने पर भी इस धमा में बड़ी ही धक्की उपस्थिति थी। इस उपस्थिति तथा मेरे भावण की भी प्रतिक्रिया हुई उससे मुझे ज्ञात पड़ा कि

१७१ लड़े हुए बुद्ध की प्रतिमा



१७२ लड़े हुए बुद्ध की प्रतिमा

१७३ लड़े हुए बुद्ध की प्रतिमा के चरण





१०६-१०१ बेवकाफ के नाटक
के दो हरम



संसार के उस देश में जिनमें मन्थने अधिक धार्मिक वायुमयबल है ३२३

वहीं बसे हुए भारतीयों का भारत के प्रति कितना अधिक अनुराग है। अफ्रीका के विभिन्न-विभिन्न देशों कीभी स्पूजीसैन्स सभी स्वार्थों में बसे हुए भारतीयों में से वही वाचना ईश्वर बुका था। भारत की गुन्धर भूमि और उसकी संस्कृति को भारतवासी अपने कितनी ही दूर और कितने ही दीर्घकाल से क्यों न बस जायें विरमृत नहीं कर गये। अफ्रीका और फोर्जी में तो मैं ऐसे भारतीयों को भी ईश्वर बुका था जिनके पूर्वज भारत से उन देशों को गये थे जिन्होंने स्वयं भारत के वर्धन तक न किये थे और भारत से उनके पूर्वज उन देशों को धार्मिक कष्ट महान कष्ट, के कारण गये थे। ऐसे व्यक्तियों को भी भारत का नाम सुनते ही रोमांच ही घाता था उनकी बाँहों में धातु छमछला घाने थे। पश्य ! तु मन्थ है मगवान की प्रिय भूमि। वहाँ बिहार करने भगवान् स्वयं अवतार बारा करतें हैं। और मुझे तो तेरा विषय बहुत काल तक सह सज्जा ही महान् बरतप्रद हो जाता है। मैं तोबने मयना हूँ कि इन मुख्यमय वैज्ञानिक बीरों से भी मैं कितने शीघ्र भारत सौंठने को घातुर ही जाता हूँ। अफ्रीका स्पूजीसैन्स आस्ट्रेलिया फोर्जी मलाया और इत पुष्पी-परिष्कार में हर बार तो मने वही अनुभव किया।

अपने अणकाक के भावना में भी मने वहाँ बसे हुए भारतीयों से वही बातें वही जो म विदेशों में बसे हुए भारतीयों से कहा करता हूँ। भारत को कदापि न मूलो, उस पुष्प भूमि के प्रति अगाध भक्ति अतकी संस्कृति के प्रति असीम भ्रष्टा एको परमन्तु जिस देश में बसे हो उसे विदेश न मान अपना ईश्वर तमन्त वही के निवा बियों को अपना भाई मानी, उनसे धूल मिस जायो। अपने पुष्प अणिकारों की यात कनी न उठायो और वहाँ बसे हो उस देश तथा वहाँ की जनता के हित में अपना हित समझे।

मने सुना कि मेरे इस भाषण की अणकाक में बहुत समय तक चर्चा होती रही।

ता १५ को हवाई अहाज से हम लाय र्याम से बर्मा के लिए रवाना हो गये।

स्याम पर एक दृष्टि

न जाने क्यों मैं यह समझता था कि स्याम एक बहुत ही छोटा देश है और वहाँ की धारवाही भी नगण्य है। मैंने देखा कि मेरा यह विरा भ्रम था।

स्याम दक्षिण-पूर्वी एशिया के उस छोर का ही एक भाग है जिसमें बर्म, सिन्धीन और मलाया आदि देश हैं। स्याम इन तीनों देशों और समुद्र से घिरा हुआ है। स्याम का क्षेत्रफल दो लाख एक सौ अड़तालीस बर्ग मील और धारवाही नव लाख के लगभग है। देश का शासन प्रकाश सभाई के हाथ में है जो संविमण्डल के परा मर्द से कर्म करता है। शासन-प्रबन्ध की बुद्धि से तारा रम्य अठारह मार्गों में बँटा है। स्याम में एक हजार तीन सौ मील लम्बी सरकारी रेलें हैं। वहाँ के जन-जीवन पर जर्म का कितना बड़ा प्रभाव है इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि वहाँ मंत्रियों की संख्या ठीक हजार से अधिक और पुरोहितों की संख्या पच हजार से अधिक होगी।

स्याम भूमध्य रेखा के पास जाने इन गिने-बुने देशों में से है जिन्हें कुछ स्वतंत्र रहने का अवसर मिला। यहाँ के देश प्रतिशत गिद ती जेतो से धारवाहिका कमाते हैं। यहाँ के जिनियों का काम अधिकतर व्यापार है।

स्याम के २० प्रतिशत लोग बौद्ध हैं। धारवाहिक बर्तु, रंग और धारवाहिक की बुद्धि से स्यामवासी मंत्रालय के हैं किन्तु वास्तव में स्याम-वासियों की किसी एक जाति का नहीं कहा जा सकता। नव भाग में जो कि स्याम का सबसे बड़ा भाग है वे लोग रहते हैं जो अपने की भाई कहते हैं। इनकी संख्या कोई जालीस लाख होगी। इसके अतिरिक्त स्याम में बर्मियों, क्सेमियों, धारवाहिकों और मलय लोगों से पड़री समलता रहने वाले लोग पाये जाते हैं।

यहाँ के निवासियों का रंग पड़री मुरा होता है। अन्ध] कुल की महिलाओं का रंग काफी सफेद भी पाया जाता है किन्तु बूतरी और चाकमेद रंग से मिलते हुए व्यक्ति भी पाये जाते हैं। इन लोगों के नाम कम्मे और धारवाहिक मुरी समकवार होती हैं। साधारणतया धारवाहिकों की उँचाई पाँच फुट से इंच और सिन्धी की चार

कम बस इंच होती है ।

ध्यागारिक क्षेत्र में स्यामजाती कोरे है इसलिए अधिकांश व्यापार विदेशियों के हाथों में है । किसानों की आयशक्तताएं कम होती है । बो-सान महीने के परिष्कार से बे बर्ष मर के लिए चावल की फसल घटा लेते है । बाहर के लोगों की घाब शक्तताएं अधिक है । किसानों के मकान लकड़ी के बने होते है । ये मकान धारणत सारे इंच के होते है किन्तु सहरों में विशेषकर ब्रैम्काक में पक्के मकान बनाये जा रहे है । समझ-सट के पास घातपात लैरते हुए मकान स्याम की विशेषता है । ये मकान बड़ी-बड़ी नाबों बर बने होते है । स्याम में उद्योग-बान्धे कम है । चावल की खेती बहुत बड़े पैमाने पर होती है इसलिए चावल साक करने के कारखाने है । अपनी धारशक्तताएँ पूरी करने के बाद जो चावल बचा रहता है विदेशों को भेज दिया जाता है । चावल के प्रतिरिक्त स्याम में गारियल खोबरा, कालोमिच डालें एबर घीर फल उत्पन्न होते है । धन्य छोटे-मोटे उद्योगों में नाब बनाने ईट पकाने मिट्टी के बर्तन बनाने, बुनाई घोर रेशम-उद्योग की बलना की जा सकती है । लोगों की मुख्य खुराक चावल घीर मछली है । स्याम में धन्य मनेसी तो होते ही है पर बहु हाथियों के लिए भी प्रतिष्ठ है । उत्तरी स्याम में सावीन की इमारती लकड़ी प्राप्य होती है । वहाँ पम्पे जाने वाले खनिज पदार्थों में कोपला, सोडा घोर रॉमा मुख्य है । स्याम के जीवन में अलस्थल का लनमग बराबर महुरब है । कड़ना चाहिए कि अर से बच्चा चलना सीकता है लगभग सभी से संरना भी सीक जाता है । रिक्का नाबों बर बाजारों की जाती है जो बहुधा पायी पर ही होते है । रेलों होने पर भी उत्पारक-स्वत से बंधियों तक पास की पहुँचाने का मुकम साधन अब भी नाब है । व्यापार का सप्त बडा बस भाग नाबों की सहायता से ही होता है । बहुत से लोग अपने जीवन के बहुत माम में या सारे जीवन भर नाबों पर ही रहते है ।

स्याम में बच्चे के जन्म प्रादि का प्रबन्ध भारत जैसा ही किया जाता है । होने वाली माता को बिलकुल अलग रखा जाता है । बच्चे का जन्म होने के बाद पबिल को बुसाया जाता है जो जलकी जन्म-कुच्छतो संवार कर देता है । नाब बर्ष की अवस्था तक बच्चे गल रहते है । ६ बर्ष की उम्र में धरार-बोप शुरू किया जाता है घीर बलन भी बड़ाने धारम्भ कर बिये जाते है । जमीन-बीत बर्ष का होने पर कड़का घीर लगभग पम्पहू बर्ष की हाबे पर लड़की बिबाह-योग्य हो जाती है । भारत की तरह बिबाह की रत्न लड़की के पिता के यहाँ ही होती है ।

स्याम की भाषा में वाली घीर संस्कृत शोनों का मिश्रण है । इसमें ४४ ध्यंजन घीर ३२ एबर बिहू होते है । स्यामी भाषा बावें हाय से बावें हाय की घोर मिली जाती है घीर धम्मों के बीच रिक्त स्याम नहीं छूटता । इतने एबर घीर ध्यंजन धाम्यद

ही किसी दूसरी भाषा में हों।

स्वामि भारत का पड़ोसी देश होने के कारण भारतीय संस्कृति से प्राथमिक प्रभावित हैं। यों तो बौद्ध धर्म के कारण भारतीय संस्कृति का प्रभाव चीन जापान आदि सभी पुरबो देशों पर है, पर स्वामि बर्मा मलाया चीनोम आदि पर बहुत अधिक।

इन देशों में भारतीय जन-संख्या भी बहुत अधिक है। जैसा ऊपर कहा गया है स्वामि में लगभग दस हजार भारतीय रहते हैं।

नेताजी मुनाबचन्द्र बोस का आचार दिग्गज श्रीर के काल में स्वामि भी माना हुआ था।

बिहारों और स्तूपों के देश में

बंगलाका से रंगून पहुँचने में हमें केवल ३६२ मील बासा बा जितने लयमय हो चले गये । रंगून हम अफराङ्क में लगभग ४ बजे पहुँचे । रंगून के हवाई घड़े पर उठने सेने भारतीय हूतावास के प्रतिनिधि के प्रतिरिक्त मेरे भारत के परम मित्रों में से श्री राजवत्सलभदास श्री मूर्डूका तथा बर्मा की अनेक भारतीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों का एक जाला बसा बा । जिन संस्थाओं के लोग हवाई घड़े पर घाये थे उन संस्थाओं के नाम हैं—श्रील बर्मा-इण्डियन कॉलेज हिन्दी साहित्य सम्मेलन भारवाड़ी लक्ष्मण संघ । श्री लज्जन घाये थे जिनमें मुख्य थे श्री बदली भाई जोशी, राजवत्सलभदास श्री मूर्डूका डा० श्रीमप्रकाश श्री सत्यनारायण गोयनका श्री गोपी लम्पु केवड़ीदास श्री लड्डू, श्री मुम्बरलाल कोचर, श्री इन्द्राज्येय आदि । जब हम रंगून के हवाई घड़े पर उतरे उसी समय हम जित हवाई लड़ाक से घाये थे उसी हवाई लड़ाक से बर्मा के साम्प्रदायी बल के से प्रतिनिधि श्री बतरे, श्री चीन के हाल ही के धानि-सम्बलन में बाग लने गये थे । उनके स्वागत के लिए श्री लाल भण्डों के साथ एक भीड़ इकट्ठा थी, जिससे हमें मालूम हुआ कि बर्मा में कुछ न कुछ साम्प्रदायी प्रभाव है । इनके कारण हमें खु भी धारि के कार्यों से निपटने के लिए हवाई घड़े पर काफी देर लगी ।

रंगून में हमारे ठहरने की व्यवस्था श्री राजवत्सलभदास श्री मूर्डूका के स्वाम पर थी । हमारे बर्मा घाये की खबर मिलते ही उन्होंने जब हम आवास में से उठी समय मुझे लिखा बा कि हम जहाँ के साथ ठहरे और यद्यपि मेने उन्हें से धार लिखा बा कि इस बोरे के धर्म स्वार्थों के सबूदा रंगून में भी हम किली होटल में ठहरा जिनमें धोर से इस सम्बन्ध में कुछ न करे पर भला मूर्डूका श्री जब जानने वाले थे । सामाजिक सुधार के क्षेत्र में से धोर में मण्डेश्वरी महात्म्या में प्रक बर्ष लक्षी कार्यकर्ता रहे थे । धार्मिक रंगून में भी उनका व्यापारी बस्तर बा । हम सोच जहाँ के साथ ठहरे और कितनी महान् प्रभावगत की चन्हींने हम लीये की ।

रंगून एरोड्रोम से यहीं ही हम रवाना हुए हमें आज पड़ा जैसे हम भारत में

ही धरा गये हैं। रंगून हमें कतकते का ही एक विस्तृत ज्ञान पड़ा। बाज़िर बर्मा वहाँ तक भारत का ही भाग रहा चुका था और मेरा तो विश्वास ही कि बिदेसी घातकों ने बर्मा को यदि भारत से पृथक् न किया होता तो बर्मा भारत के ही संघ रहता तथा भारत में धाव खाद्य-पदार्थों में जाबल की जो सबसे बड़ी समस्या है वह हमारे सामने खड़ी ही न होती। बर्मा और भारत के स्वार्थों में भी कोई संघर्ष न था और जित्त समय बर्मा भारत के धन्य किया गया उस समय भी बर्मा की जनता का बहुत मत इस पृथक्करण के विरुद्ध था।

हम लोग तीन दिन रंगून में रहे। इन तीन दिनों में रंगून बेचने के कार्यक्रम को मौखिक तथा सार्वजनिक कार्यक्रम को मुख्य स्थान मिला जो इन बीरे के अथ तक के कार्यक्रमों में चीनेडा के कार्यक्रम को छोड़कर पसंदी बात थी।

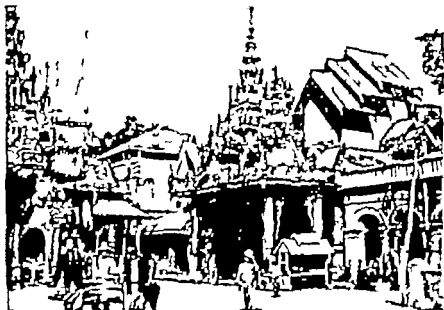
रंगून की सबसे अधिक दर्शनीय वस्तु 'स्वेडुगान' पयोडा है (चित्र नं १७७)। कहा जाता है कि इतना निर्माल्य ईसा से ३३८ वर्ष पूर्व हुआ था। यह पयोडा बाहर से १६५ फुट ऊँचे और ६० फुट लम्बे व ९० फुट चौड़े चतुर्भुज पर बना है। सीढ़ियों से चढ़कर ही इस पर जाना होता है। पानीपल जूते अतारकर ही चढ़ा जाते हैं। सीढ़ियों के दोनों ओर पत्र पुष्प तथा प्रायः सायबी बेचने वाले लोग बैठे रहते हैं। पयोडा की परिधि १,३३३ फुट और चौड़ाई ३६० फुट है। नीचे से लेकर ऊपर तक इस पर स्तंभोपम चढ़ा हुआ है जिसे समय-समय पर बदला जाता है। सबसे ऊपर जो छत्र है उसे सबसे पहले राजा मित्रनाथ ने बनाया था और इस पर सात लाख रुपये व्यय हुआ था, किन्तु १९३० के भूचाल में यह छत्र नष्ट हो गया था। इसके स्थान पर एक वर्ष उपरांत ही चीने का रत्न-सहित छत्र बना दिया गया।

हम चाहे चुम्की के रास्ते रंगून जायें चाहे समुद्र अथवा धाकाध के रास्ते यह पयोडा हमें प्रत्यक्ष से दिखायी देता है। बर्मा, स्पाम, भारत और लंका के चीने चीने से पानी बहता है। रात्रि में बिजली के प्रकाश में पयोडा कई मील दूर से दिखायी देता है। चाँदनी रात में इतकी ऊँचा दृश्यभूत होती है और घामरे के ताज-महल का स्मरण ही जाता है।

पयोडा के हरेक चीने में धावे सिंह और धावे मनुष्य की मूर्ति है। यह मूर्ति लयमग हरेक पयोडा में रहती है। इसे डारपाल कहा जाता है।

पयोडा के नीचे चार मन्दिर हैं जिनमें अबबाल बुद्ध की अनेक मूर्तियों में मूर्तियाँ हैं। स्थान-स्थान पर विभिन्न धाकार की घड़ियाँ हैं। एक घण्टा ४३ इंच का है जिसे राजा ताराबड़ी ने १८४० में बँट किया था।

पयोडा के पास ही रॉयल लोक और उलहीजी पार्क है। इसके बाध इस पयोडा जाता है। मूल पयोडा के समीप अहुर का तना-भवन है।



१३६ रंगून का एक मार्ग



१३७ रंगून का विश्व-विख्यात स्तूपपाल परमेश्वर

भारतीयों में उल्लेखनीय थे—श्री पी० के० बसु, और श्री एच० सुब्रह्मण्यम् उपसभा-पति बर्मा इंडियन कांग्रेस, भारतीय वृत्तावलि के श्री कानन पिन्ने, श्री बिमाकर और भद्रनाथार श्री रानी साहिबा। अन्तिम आयोजन का श्री ब्रजवस्तुनारायण श्री मूंदड़ा द्वारा दिया गया शोक जिसमें यहाँ के सभी प्रमुख भारवाही उपस्थित थे।

यहाँ हम लोगो ने जिनसे भेंट की उनमें मुख्य भेंट हुई बर्मा के प्रवाल मंत्री से। श्री ऊ नू हमें राजनीतिक क्षेत्र के ऐसे कार्यकर्ता जान पड़े जिनके लिए धार्मिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्र का राजनीतिक क्षेत्र से अधिक महत्व है। बर्मा के प्रवाल बर्मा वह पर रहते हुए भी वे यहाँ बौद्ध मन्दिर में मजल में बिताते हैं और न जाने कितनी सांस्कृतिक काम करते हैं। साहित्यिक क्षेत्र में उन्होंने एक मास्क लिखा है। कंठा बीला तथा सीवामन कंसो अन्ति और कंसो अस्तात विद्यता का उनके मुख पर। वे भाव केवल राजनीतिक कार्यकर्ताओं के मुखों पर दुर्भन रहते हैं। अभी हाल ही में श्री ऊ नू ने एक बौद्ध मन्दिर बनवाया है जिनके प्रविष्ट में एक विश्वविद्यालय का निर्माण होने वाला है। पर इस विश्वविद्यालय की स्थापना के पहले बौद्ध धर्म की सारी छात्राओं की एक विषय परिषद् होगी। यह परिषद् बौद्ध धर्म की ऐसी परिषदों में चौथी परिषद् है। पहली परिषद् हुई थी लक्ष्मण प्रकोप के समय और दूसरी हुई थी लक्ष्मण कविष्क के समय भारत में। इस परिषद् की तैयारी आरम्भ हो गयी है। दो वर्षों के बाद यह आरम्भ होगी और फिर दो वर्ष ही बनेगी। बर्मा में श्री बौद्ध धर्म एक अन्ति-आस्था धर्म है और बर्मा के ऐसे प्रवाल मंत्रों के कारण इसे और अधिक प्रोत्साहन मिल गया है। श्री ऊ नू से मेरी मुलाकात खूब दूर तक बची। उनकी और मेरे जीवन की पकरी ठीक बैठती जान पड़ी। कितनी धार्मिक, कितनी सांस्कृतिक, कितनी साहित्यिक चर्चा हुई इस भेंट में। राजनीतिक विषयों का तो अल्पतः बोल स्वाभ रहा।

बर्मा पर एक दृष्टि

बर्मा पर्वतों और मिज़ुमों और बिहारों का देश है। भारत से यह देश न केवल भौगोलिक दृष्टि से जिता हुआ है बल्कि साम्राज्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी उतनी का एक अंग है। बर्मा की सीमा पूर्वोत्तर में चीन, भारत और थायलैण्ड से मिली हुई है। इसके उत्तर में तिब्बत-पश्चिम में ल्हासा है। बर्मा में पाँच बड़ी नदियाँ हैं—ईरावदी, चिन्बिन, सातवीन, तिस्तांग और निर्गन। सबसे बड़ी नदी ईरावदी है। बर्मा के किनारे में तो इस नदी पर २०० मील तक स्टीमर और जहाज चला जा सकते हैं।

बर्मा का क्षेत्रफल कोई २ लाख ७२ हजार वर्ग मील है। इसमें से घान राज्यों का क्षेत्रफल २६ हजार वर्ग मील है। बर्मा का समुद्र-तट दो हजार मील है। बर्मा की जनसंख्या लगभग २ करोड़ १० लाख है।

बर्मा की मुख्य चीजें चावल, तापीन की लकड़ी और तेल हैं। उत्तरी घान राज्य खनिज-वस्तुओं से सम्पन्न है। दक्षिणी बर्मा में तम्बाकू और राने की खेती होती है। ईरावदी नदी का डेल्टा ही सबसे अधिक उपजाऊ प्रदेश है जहाँ चावल होता है। तारे बर्मा के बो-तिहाई लोग प्राचीनकाल के लिए भूमि पर निर्भर रहते हैं। एक हजार व्यक्तियों में से लगभग ६६६ या तो खेती से या बाँसों से जीविका कमाते हैं।

यह सम्पत्ति में बर्मा संसार का सबसे अधिक सम्पन्न देश है। कुछ बृहत्तम शहर तो पूरा तक ढँके होते हैं। कुछ से पहले कोई ताड़े चार लाख इन लकड़ी प्रति-बर्ग काटकर पिरामी जाती की और कोई ताड़े तीन करोड़ रुपये के मूल्य की बिंदियों को भेजी जाती थी। देश के ३७ प्रतिशत भाग में बानी एक लाख बैतालीस हजार वर्ग मील में जंगल है। बर्मा की खेती सामान की लकड़ी घायब हो संसार में कहीं मिलती हो।

बर्मा की तीसरी महत्वपूर्ण वस्तु कच्ची तेल है। जापानी साम्राज्य से यहाँ चार हजार चार सौ कु यों में से लगभग ३० करोड़ बैतल तेल निकाला जाता था।

इससे बर्मा की आबादी बढ़ती तो पुरी हो ही जाती थी ६ करोड़ पेंसन पैदोस और १४ करोड़ पेंसन मिट्टी का तेल भारत को भी दिया जाता था। बर्मा का तेल क्षेत्र मध्य बर्मा में ईरावदी नदी से निकलता है।

बर्मा के लोग बहुत ऊँचे नहीं होते, किन्तु उनका शरीर मठा हुआ और लुबोल होता है। वे रंगीन र सड़कीले लुठी घबका रेशमी बरम पहनना पसन्द करते हैं। खेत-कृष का भी उन्हें विशेष शौक रहता है। बर्मा के प्राचिन लोग धर्मात् कोई ८२ प्रतिशत बौद्ध हैं। वेसा कि पहले बर्लिन किया जा चुका है इनके पवित्र स्थान पयोडा कहलाते हैं। स्वयं बर्मा इन्हें पयोडा नहीं बल्कि 'बो' धर्मात् पूजा का स्थान कहते हैं। बर्मा के लोग बड़े उदार और दानशील होते हैं। वेसे आश्चर्य की बात है कि बौद्ध धर्म अस्तित्व भारत में आग हुआ भारत से तो लपमय निरु गया है, किन्तु बर्मा से लेकर जापान तक सारे बलिष्ठ-पूर्वो एशिया पर इसी का प्रभुत्व है।

इतिहास के अनुसार बर्मा के लोगों का मूल स्थान तिब्बत का पर्वत प्रदेश और युन्नान (Yunnan) प्रदेश था। धीरे धीरे ये लोग ईरावदी नदी के उपजाऊ प्रदेश की ओर बढ़े। बर्मा का इतिहास ईसा से २ सताब्दी पूर्व का है। १०३४ ईसवी से १०७० ईसवी तक राज्य करने वाले पापान (Pagan) के शासक धर्मा-वर्त ने बर्मा की संवर्धित व समृद्ध किया। बर्मा के इतिहास में उसे बड़ी स्थान प्राप्त है जो भारत के इतिहास में प्रथम को प्राप्त है।

१२८० में कृष्णाई का के प्राक्रमण के बाद पापान बंध समाप्त हो गया और धान साम्राज्य की स्थापना हुई। स्वाम वर भी इस बंध का अधिकार था। धान स्वाम के लोग अपने को बाई कहना पसन्द करते हैं जो कि धान लोगों का ही प्राचीन नाम है।

धीरे-धीरे कई यूरोपीय देश बर्मा की ओर आकर्षित होने लगे वे थे पुर्तगाल, हालैण्ड, इंग्लैण्ड और फ्रांस। सत्ता के लिए प्रतिद्वन्द्विता छिड़ पड़ी। धन में विषय अंग्रेजों की रही। १८१९ में उन्होंने बर्मा के अन्तिम राजा थीबा (Thibau) को बर्मा से उतार दिया। अंग्रेजों के शासन-काल में बर्मा में बराबर अस्थिर रही। दिसम्बर १९४१ में जापान के प्राक्रमण के कारण पुरी धापी सत्ताओं में बर्मा पहली बार युद्ध-क्षेत्र बना। जापान का उद्देश्य अपने साम्राज्य का विस्तार करना मात्र न था किन्तु बर्मा सड़क पर भी अधिकार करना था जो चीन को जाने वाला मुख्य मार्ग थी। युद्धकाल में चीन को सामान प्रादि इसी सड़क से पहुँचता था। बर्मा सड़क एक हजार बड़े लो मील लम्बी है और बर्मा के रेलवे शहर लाघिमो से चीन की युद्धकालीन राजधानी कुंमिंग तक जाती है। जून १९४० में बर्मा के लसुही बड़े की नींव बड़ी। सितम्बर १९४० में बर्मा में हवाई बड़े की स्थापना हुई। नई १९४२ में

संघर्ष और भारतीय सेनाओं ने पुनः रंगून में प्रवेश किया। जनवरी १९४८ में ब्रिटेन का शासन समाप्त हो गया। बर्मा को स्वतन्त्रता प्रदान की गयी और बर्मा में स्वतन्त्र गणराज्य की स्थापना हुई। बर्मा ने डॉमनवेन्य से भी अपना गस्ता छोड़ लिया। बर्मा के स्वतन्त्र होने से ठीक पहले एक दिन सारा संसार इस समाचार से आतंकित रह गया कि सरकारी प्रपत्र मन्त्री घोषणा और उनके ६ अन्य मन्त्रियों की हत्या कर दी गयी।

इस समय बर्मा की कई बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। सबसे बड़ी समस्या तो बर्मा के विद्रोहियों की है जो इस समय पहले जितनी उल्टट नहीं रह गयी है। बर्मा में इबेत भात और हुरे भण्डे वाले कम्युनिस्ट है जिनमें इबेत भण्डे वाले इस का बोर है। इसके प्रतिरिक्त करेनों का बोर है। बर्मा के किसी प्रदेश पर अरर अतिकार है तो करेनियों का ही। सरकार को यद्यपि विद्रोहियों का हसन करने में बहुत कुछ सहायता मिली है किन्तु उतनी नहीं जितनी कि होनी चाहिए। प्रायः ही बर्मा में लोपोमें अमुरसा की भावना फैली हुई है। तरह-तरह की अफवाहों भी प्रातानी से फैल जाती है। हाँ यह अफवाह है कि बर्मा सेना को काफी सफलतामिली है।

करेनियों की स्थिति अल्प विद्रोहियों से एकत्र अल्प है। वे राजनीतिक और सैनिक दृष्टि से संगठित है। साम्बान जिन से संकर बचाकारेक शहर तक २० मील लम्बी और कोई ४३ मील चौड़ी पट्टी में उगड़ी का शासन है। करेन प्रदेश में बाईस सदस्यों की एक सैनिक सरकार कार्य-संचालन करती है। करेनों के लगभग आठ-बस हजार सैनिक है। कहा जाता है कि करेनों में फूट पड़ चुकी है किन्तु अभी इस हब तक तो नहीं कि उनकी अस्थि का ह्रास हो सके।

बर्मा की एक और बड़ी समस्या उन बड़े-बड़े कोमितांग छापामारों की है जो लड़ाई के बाद से उत्तरी बर्मा में घूमते फिरते हैं। बर्मा के लिए तो ये छापामार मुसीबत की बड़ है ही ये चीन पर आक्रमण करते रहते हैं जिसके कारण बर्मा की बिम्बा और भी बड़ी हुई है। कोई भी स्वतंत्र देश इस तरह के विदेशी सैनिकों का अपने प्रदेश में घुसना पसन्द नहीं कर सकता फिर इन छापामारों का सम्बन्ध तो अरमोसा के कोमितांग अधिकारियों से बताया जाता है। बर्मा ने अमेरिका के सद् भाव को सहायता से इस समस्या को निपटाने का प्रयत्न किया था किन्तु इसमें उसे सफलता प्राप्त नहीं हुई। अब इस मामले को संपुष्ट राष्ट्र में देखा गया था चुका है। कितने ही देशों ने जिनमें भारत भी है बर्मा की भाँप का समर्थन किया है और यद्यपि संपुष्ट राष्ट्र ने इस सम्बन्ध में जो प्रस्ताव पास किया है उससे बर्मा को अधिक सहायता तो नहीं मिली पर आशा है कि इस समस्या से बर्मा को जल्दी ही मुक्तकारा मिल जायगा।

बर्मा और भारत की भी कुछ समस्याएँ हैं। एक समस्या है बर्मा में भूमि सुधार के सम्बन्ध में पैदा होनेवाले भारतीयों को मजबूत करने का सवाल और दूसरी है सीमा पर के छोटे-मोटे झगड़े। अभी हाल में भारत के प्रधान मंत्री भारत-बर्मा सीमा पर गये थे और वहाँ उन्होंने बर्मा के प्रधान मंत्री की ऊँच के साथ मिल कर बोरा किया था। दोनों देशों के अत्यन्त प्राचीन सम्बन्ध हैं और दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है ही इसलिए प्राया है कि भारत-बर्मा समस्या जैसी कोई उत्पन्न पैदा नहीं होगी।

दक्षिण-पूर्वी एशिया के अन्य देशों की तरह बर्मा भी एक कम उन्नत देश है। लोगों के रहन-सहन का दरजा गिरा हुआ है और परीबी व बेकारी धारि की समस्याएँ हैं। इसके प्रतिरिक्त पिछली बड़ी लड़ाई के आघात से बर्मा अभी तक नहीं लौट पाया। जपहू जपहू प्बन्त के चिह्न दिखायी देते हैं। सारे बर्मा का ही एक बिनडा हुआ है और ऐसा प्रतीत होता है कि लड़ाई की आत्म हुए मानों कुछ ही महीने हुए हैं। इसलिए बर्मा को पुनर्निर्माण का बड़ा काम ध्यापक रूप से करना है। हम आशा करते हैं कि अपने प्राकृतिक संपत्तों जड़ोनों, जनप्रति धारि की सहामता से बर्मा की जीव ही सफलता मिलेगी। इसका अभिष्य अरुणत है।

भारत और बर्मा के सम्बन्ध दोहजार वर्ष प्राचीन हैं। स्थिति बर्मा की ऐसी है जिसके कारण यह चीन और भारत दो मित्र देशों के बीच एक कड़ी का काम करता रहा है। भारत का सम्बन्ध न केवल बर्मा के बर्मा पर पड़ा है बरन् वहाँ के दर्शन और साहित्य पर भी है। भौगोलिक दृष्टि से और जैसी भी भारत व बर्मा को एक ही मूल्य समझना चाहिए। इसका एक बड़ा प्रमाण यह भी है कि दूसरे महायुद्ध से पहले बर्मा का दो तिहाई व्यापार भारत से ही होता था। आशा है कि दोनों देशों के बीच पूरा सहयोग रहेगा और वे मिलकर दक्षिण-पूर्वी एशिया की जागृति के अग्रगण्य हो सकेंगे।

पुनः जन्म भूमि में

ता० १५ दिसम्बर को प्रातःकाल रंगून से हवाई जहाज से रवाना हो तीन घण्टों में लण्डन पहुँचो। सो भील उड़कर हम कलकत्ता पहुँच गये। कौसा तुफान-ता मचा हुआ था इन घण्टों में मेरे हृदय में। कौसी भावनाओं की कस्तूरें उठ घोर विनीत हो रही थी मेरे मन में। बार पहीने घोर घठारह दिन पहले मेने इस विश्व-जगत के लिए भारत में भारत की राजधानी दिल्ली के प्रस्थान किया था। दिल्ली लौटने तक लण्डन की घाट घुमाए भील की यात्रा हुई थी। क्या-क्या देखा था इस बीच इतने कितने देस घनके कौसे-कौसे वृक्ष कौसी जनता घनके मिल मिल प्रकार के संघठन घोर रीति रिवाज ! कितनी सत्कार, कितने रंगमंच कितने प्रजापदघर ! घोर देस जान सकता था कि प्रकृति ने भारत को कितनी देस से भी कम नहीं दिया है। विचार घाराघों में भी भारत कितनी से पीछे नहीं। ब्रह्मिभत्ता में भी भारत के जन कहीं के लोयों से कम नहीं। इसीलिए कभी भारत संसार का मुख्य धिरोनलि रह चुका था पर समय ने पलटा जामा। हम पराधीन हुए, निर्बल हुए, निरक्षर हुए। विदेशी भारत से गये भी तब जब हमारा देस हर प्रकार से अन्धहर बन गया घोर यदि गांधी भी पैदा न हुए होते तो क्या अभी भी के जाले ? स्वतन्त्र हम हो गये पर भी देस संसार का मुकुट-मणि था उसे ठिर से उठी स्वान पर पहुँचाने में हमें क्या-क्या तथा कितना-कितना करना है। संसार की इस परिस्थिति में घोर हमारे देस के राजनीतिक बल-बलों के कारण क्या हमें यह सब करने के लिए समय मिल जामवा ? अमेरिका को अपने बलके के लिए कितना समय मिला—किस को भी कितना घोर हमें ? अविध्य-वाली कौन कर सकता है ?

घोर इस अन्धहर में भी बिबिध प्रकार की सभ्यताघों से सम्पन्न देसों से घाने पर भी कितना उत्साह कितना उत्सास था मेरे मन में। मुदुम्बियों से मिलने की उत्कण्ठा का भी इस उत्साह घोर उत्सास में कम स्वान न था। जेता मेने अपने घुहर बकिरल-मूर्खें प्रंच में निजा है मे हूँ यपार्थ में घरेलू भील।

जब हमारा बामुपान कलकत्ते के हवाई घड्डे पर उतरा तब हमने देखा कि

मेरे सम्बन्धी श्री गौबर्धनदास जी बिल्लाजी अपने कई मित्रों के साथ तथा मेरी पुत्री रत्नकुमारी एवं मेरे श्येष्ठ पुत्र मनमोहनदास हमारे स्वागत के लिए उपस्थित हैं। वे दोनों जयपुर से हमें लेने के लिए ही कतकत्ते घासे थे।

इतनी लम्बी यात्रा के निबिधन समाप्त होने के लिए जयबानू की कीर्ति-अग्रगण्य है तथा जम्मूनि की अचलित प्रशाम कर हम लोगों ने पुनः भारत भूमि पर परार्पण किया।

उपसंहार

घपनी इस पृथ्वी-परिक्रमा से कोई बहुत अधिक लम्बीय मन्डे नहीं हुआ । मन में एक घड़ीय उबल-पुबल मच गयी । तरह-तरह के विचार मन में घाये । एक घोर पृथ्वी की विद्यालता से मन अधिक हुआ तो दूसरी घोर उलकी सुष्मता से मन झुन्न भी हुआ । हमारी पृथ्वी से यह सुबं न जाने कितना बड़ा है और इस सूर्य से भी बड़े न जाने कितने सूर्य धम्य सौरमण्डलों में स्थित हैं । प्रकैनी प्राकाश-गंगा में जो हमें प्राकाश में दृग्गवारा की भाँति रात्रि में दिखलाई देती है अनेक सूर्य बनये जाते हैं । बहुत बड़ा-बड़ा की इस विद्यालता के घाने बना बेचारी पृथ्वी की हस्ती ही क्या है और इस पृथ्वी के देशों की तो फिर बात ही क्या हो सकती है । नर दूसरी घोर जब हम मनुष्य की भौतिक सीमाओं के सामने पृथ्वी को देखते हैं तो यह अत्यन्त विद्याल प्रतीत होती है यद्यपि इस पृथ्वी के तीन चौथाई भाग में जल है और बल केवल एक-चौथाई जग में ही है । फिर भी बड़े-बड़े महाद्वीप इसमें स्थित हैं । दूर दूर तक फैले हुए देश हैं । कहीं ऊँचे पर्वत शिखर हैं तो कहीं हरीमरी समुद्रमहती घाटियाँ हैं । कहीं सुष्क बंजर पठार हैं तो कहीं विस्तृत जंगल रेविस्तान हैं । विविध प्रकार की विविध जटायों से पूर्ण घोर विविध कठिनाइयों, बाधाओं से युक्त यह भरती सम्बो-बोड़ी अनेक देशों वाली घपने घाँवल में मानवता को संबोये हुए है । पर मानव प्रकृति की ही मोह में पतकर घाज प्रकृति पर बिजय पाने को कटिबद्ध है ।

घाधिकाल में मनुष्य पिरि-महूरों में निवास करता था । पावालु का एव पातु का प्रयोग कर कितनी प्रकार बहर बालन करता था । घोरे-घोरे बहु प्रयत्न करता हुआ पृथ्वी के कोने-कोने की ढोह लेने लगा । घाज जब कि संघार के साधन बहुत हो गये हैं संसार के किन्हीं भी दो घोरोंके बीच ईलीडोन तार या बेलार द्वारा किसी भी समय सम्पर्क स्थापित हो सकता है जब इतन अधिक वेग बाने बाध्यतल घुट कियों में मनुष्य को धगम्य बर्तों घोर सागरों के पार पहुँचा सकते हैं तब बेचारी भरती को भी तिमटकर रह जाना पड़ता है ।

इस पृथ्वी-परिक्रमा के बरबात् मन्डे संसार की जघार विविधता का बोध हुआ और साच ही उस एकक्यता का भी जो इस विविधता में निहित है । विविध प्रकार

के देश हैं विभिन्न जातियों के लोग हैं विविध क्य-रंग के व्यक्ति हैं और विभिन्न जनके रीति-रिवाज और परम्पराएँ हैं। यह तो है संसार की विविधता का क्य। पर इसके पीछे छिपी है यह एककपता जो एक देश और दूसरे देशके बीच, जो एक संस्कृत और दूसरी संस्कृति के बीच समानता उत्पन्न करती है। सर्वत्र ही मानव जीवित रहना चाहता है सर्वत्र ही यह धान्ति चाहता है धान्ति पाने के लिए ही गत ही महामुद्र हुए। धान्ति और समृद्धि की कौशल में ही संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्था की स्थापना हुई। पर इसी उद्देश्य को लेकर धान्ति दुनिया संगठित होने के बजाय विभक्त है।

संसार में धरती से अधिक प्रमुखता प्राप्त देश है किन्तु उनकी जनसंख्या और क्षेत्रफल में बड़ी विषमता है। उदाहरण के लिए मुद्र-पूर्व की जर्मनी में १८१,००० वर्ग मील में ६,७००,००० व्यक्ति रहते थे जब कि रूस में ३४६२,००० वर्ग मील में केवल १,१५,०००० कीताडिमन रहते थे। इस का क्षेत्रफल ८०००००० वर्ग मील है पर जगद मनुष्योपरी राज्य भी है जिसका क्षेत्रफल केवल ०६ वर्ग मील है। महान् संयुक्त राज्य अमेरिका का क्षेत्रफल ३०००००० वर्ग मील है किन्तु पाण्डोरा का केवल १२१ वर्ग मील है। किन्तु बाबाही घोर जनसंख्या की विषमता से भी अधिक महत्वपूर्ण है साधनों की विषमता। उदाहरण के लिए छोटा-सा बेन्जिबम अत्यन्त साधन-सम्पन्न है लेकिन विद्यालय मंगोलिया अथवा पाकिस्तान को बड़ी मुश्किलों से प्राप्त नहीं हैं। इससे भी आगे देखें के सामाजिक और धार्मिक विकास की स्थिति में बड़ी अन्तराली विषमता है। उदाहरण के लिए हालैंड जातियों ने कर्मठता का परिचय दिया है जब कि आयरलैंड निवासियों ने जतनी ही कर्मनिष्ठा नहीं दिखायी, और में जिस हद तक सांस्कृतिक विकास हुआ है बाबिल में घस हद तक नहीं हुआ। अमेरिका में मशीनी सम्पत्ता का प्रादुर्भाव ही सका है किन्तु इण्डोनेशिया में ऐसा ही नहीं हो पाया। अफगानिस्तान के निवासी वैदिक जाति के क्य में अथवा विकास कर सकते हैं किन्तु सिम्बतबाने घस तक कर्मनिष्ठ बने रहे हैं। यही नहीं इतिहास इस बात का साक्षी है कि जहाँ हिन्दू जाति अन्तर्द्वीप सामर्थ्य की घोर से उत्पन्न रही है वहाँ जर्मन जाति ने संसार की बार-बार मुद्र की ज्वाला में डकेला है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारी इस दुनिया में राष्ट्र तो अनेक हैं किन्तु राजनीतिक अर्थरक के मोहुरे बांधने वाले राष्ट्र गिने-बुने ही हैं। जल्दीसकी शताब्दी में महान् राष्ट्रों की गलना में कई राष्ट्र घाते थे किन्तु मुडोपराप्त दुनिया में उनकी सक्या अतरोत्तर घटती गयी है। १९१४ तक घाठ राष्ट्र बड़े देश माने जाते थे। जिनके नाम इस प्रकार हैं—कांत वेद ब्रिटेन, जर्मनी, जपान, आस्ट्रिया, इंग्लैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका, इटली और जापान। प्रथम मुद्रके पश्चात् उनकी संख्या यह गयी थी

ब्रिटेन फ्रांस अमेरिका जापान और इटली। १९१९ तक अर्थात् द्वितीय महायुद्ध धारम्भ होने के पूर्व दो और बड़ी शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ। इस बीच अर्मेनी ने अपनी शक्ति पुनः प्राप्त की और उस का अर्थ एक महान् देश के रूप में हुआ। इस प्रकार महान् देश फिर सात हो गये। कम-अ-अर्मेनी ब्रिटेन संयुक्त राज्य अमेरिका उस फ्रांस जापान और इटली। यद्योतर काल के बीच अस्तित्ववादी शक्त इस प्रकार है संयुक्त राज्य अमेरिका उस, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन। अन्तिम-काल में प्रस्ताव कर्ते कि तृतीय महायुद्ध के प्रस्तावना-काल में उस और चीन मिलकर संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस के मुकाबले के हो गये हैं। इसके अतिरिक्त भारत और जापान इन दो एशियाई शक्तियों का अर्थ हुआ है।

यह राष्ट्रों के उत्थान पतन और उनके वर्तमान शक्ति-सम्बन्धन की भाषा है।

संसार-शासकों ने जहाँ बुरी की काम किया और जैसे एक ही इकाई बनाने की दिशा में इतना कुछ किया जहाँ दूसरी ओर राजनीति के कारण दुनिया का कलेशा हो चुक हो गया है। जो अल्प शक्ति बन गये हैं एक का नेतृत्व करता है अमेरिका ब्रिटेन कहते हैं पश्चिम। दूसरे का नेतृत्व करता है उस ब्रिटेन कहते हैं पूर्व। दोनों ही अपना प्रभाव-क्षेत्र बढ़ाने की जो-जान से चेष्टा करते हैं। दोनों ही मानवता के विनाश-यती हैं और दोनों ही अन्तिम-युद्ध के दावेदार बनते हैं। किन्तु आश्चर्य है कि दोनों एक अन्तिम-युद्ध के लिये युद्ध की तैयारी में संलग्न हैं। अनुभव, हाइड्रोजन बम कोषण बन रहा और ऐसे ही अनेक अस्त्र अस्त्र तैयार किये जा रहे हैं अन्तिम अन्तिम-युद्ध का दावा किया जाता है। पर क्या इन सब से अन्तिम युद्ध होगी? पिछले महायुद्ध की विभीषिका हमारे सामने है और अपने युद्ध की संभावना से मानव-जाति बस्त है। यदि युद्ध हुआ तो क्या मानव-जाति सबकुछ जीवित रह सकेगी? कौन कह सकता है कि यदि अस्त्रीकरण की होइ इसी तरह बनी रही तो एक दिन ऐसा अस्त्र न विकसल अस्त्रों ब्रिटेन हमारी पृथ्वी के ही टुकड़े हो जायें।

जहाँ एक ओर सैनिक अस्त्रीकरण की योजनायें बनाकर मानव-जाति का अस्त करने का वक्ष्य बन रहा है जहाँ दूसरी ओर संसार के सभी विचारक अन्तिम-युद्ध के लिए वास्तव में प्रयत्नशील हैं। जहाँ तक मैं समझता हूँ इस दुनिया में दो ही महान् व्यक्ति ऐसे हैं जो अन्तिम न अस्त्रीकरण युद्ध चाहते हैं। वे हैं जनरल ग्यापकाई शोक और डाक्टर री। दोनों ही का स्वार्थ युद्ध छिड़ने में है। युद्ध के बिना व तो उनका जहाँ अस्तित्व ही है और न उनका अस्तित्व ही संभव है। जहाँ वे दो व्यक्ति युद्ध के प्रथम समर्थक हैं जहाँ दुनिया का एक व्यक्ति अस्तित्व ही अन्तिम का समर्थक है; वह है भारत के प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू। उनके नेतृत्व में अस्त्र-युद्ध होता हुआ केवल भारत ही एक ऐसा देश है जो सबकुछ अन्तिम चाहता है और अन्तिम के लिए

निःस्वाय भाव से प्रयत्नशील है। अचकारपूर्व दुनिया में घाब भारत ही घाला की एक मात्र किरण है यह ने नि सकोच कह सकता है।

जैसा कि मैं पीछे कह आया हूँ यूरोप कर्कर चरबा म है अमेरिका जगति के दिक्कर पर चमक्य है किन्तु मेरे मतानुसार वहाँ पर यह क्रिया धारंभ हो चुकी है जो अस्त में कितो भी देश के पतन का कारण बनती है। अमेरिका के लोग 'आयो-पोयो मस्त एहो' के सिद्धान्त पर चल पड़ है और यह सिद्धान्त राष्ट्र के अरित्र को होन बनाकर अस्त में उसके पतन का कारण होता है। एहो क्स की बात तो यह सत्ता-मद में खूर जान पड़ता है, और प्रचार-मात्र में आबश्यकता स अधिक बिश्वास रखता है।

जैसा कि मैंने कहा राष्ट्रों की बिबन्ता दुनिया की प्रपति म काफी हुह तक बायक है। एक ओर तो अस्त्यन्त छोटे राज्य है जो सब प्रकार बराबलबी है और दूसरी ओर अस्त्यन्त बिमाल राज्य है। अस्त्यन्त छोटे ६ राज्यों के नाम और उनका क्षेत्रफल इस प्रकार है—

देरा का नाम	क्षेत्रफल
नक्सलबर्ग	११० वर्ग मील
अर्जोरा	१११ वर्ग मील.
लोबर्टेस्टीन	६५ वर्ग मील
सन मेराइना	३० वर्ग मील.
बोगकायो	३०० एकड़.
अंत्रिकन राज्य	१०८७ एकड़

सत्तार के बिद्याल राज्य ८ है, और उनका बिबरण इस प्रकार है—

देरा का नाम	क्षेत्रफल
सोबियत क्त	८५७७० वर्ग मील
चीम जनराज्य	३८७७०० वर्ग मील
कनडा	३५६९,० वर्ग मील
बाजील	३२५६,०० वर्ग मील
संयुक्त राज्य अमेरिका	२६७७०००० वर्ग मील
आस्ट्रेलिया	२६,७३,०० वर्ग मील
भारत	१२०००० वर्ग मील.
अक्टोइना	१०५००० वर्ग मील,

यद्यपि यह बर्मीकरल बिभिन्न राज्यों का आकार जानने में सहायक है किन्तु तकार कितो राज्य बिद्यय की अक्ति का परिचायक भी हो ऐसा नहीं है।

उदाहरण के लिए बागील भारत से आकार में लगभग तीन गुना है फिर भी अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उसका उतना प्रभाव नहीं है जितना भारत का। भारत ने अपनी स्वतन्त्र विदेश-नीति द्वारा विचार-स्वातन्त्र्य का परिचय दिया है। बड़े राष्ट्रों की पुष्टि से घलघुल रहकर, और अपने स्वार्थ से नहीं बल्कि विश्व-कल्याण की भावना से प्रेरित होकर भारत ने जो कदम उठाये हैं उनकी संसार के सभी देशों में मुक्त कंठ से सराहना हुई है।

मुझे आनन्द पड़ता है कि भविष्य एशिया और अफ्रीका के देशों में है। एशिया में तो अखिलेश्वर की झलक स्पष्ट दिखने लगी है। चीन और भारत प्रगति-पथ पर अग्रसर हो रहे हैं। अफ्रीका में आगरण उतना स्पष्ट नहीं है किन्तु लोग वास्तव की सृष्टियों को छुड़ने की छत्रछटा रहे हैं। वन की चरकी का पाट उखाड़ने वाला है और आसि धमक दूर नहीं है। मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि जो देश अब तक अज्ञान में और अंधमार्ग में होते रहे वे बड़ी प्रगति सभ्य संसार के अग्रगण्य बनेंगे।

इसका कारण मैं तो यही समझता हूँ कि अज्ञान और अंधता को अंधमार्ग अज्ञान स्थिति और अज्ञान को समझते हैं और अज्ञानों के दर्द को समझने की क्षमता रखते हैं। भारत ने अपनी स्वतन्त्रता का संघाम तो लड़ा ही था वह सर्वत्र अज्ञानविरोध का विरोधी है। किसी भी स्थान पर किसी भी रूप में अज्ञानविरोध का प्रोत्साहन मानवता के लिए कर्मक की बात है। इसके अतिरिक्त एक और तरह का अज्ञानविरोध है जो अज्ञान ही अज्ञान है और वह है अज्ञान अज्ञान का अज्ञान-विरोध। अज्ञान अज्ञान के भारतीयों और अज्ञानियों को किस अज्ञान और अज्ञान का सामना करना पड़ रहा है यह तो बेचारे के ही अज्ञान है लेकिन संसार के सभी अज्ञानविरोधियों को इस प्रकार के अज्ञान का विरोध करते हैं। समस्त राष्ट्र संस्था तक जो अज्ञान अज्ञानों और अज्ञानों की पोषक नहीं जाती है इस तरह की अज्ञानियों को मुझ समझ मानो काल में तैल आने रहती है।

किन्तु अज्ञान के संसार में केवल यही एक ऐसी संस्था है जिससे अज्ञान के अज्ञान की पोषी-अज्ञान अज्ञान हो सकती है। किन्तु अज्ञान की बात यही है कि अज्ञान पर भी राजनीतिक पाँता पड़ा हुआ है। कुछ राष्ट्रों ने इस प्रकार अपनी स्थिति बना ली है कि वे अज्ञान राष्ट्रों की एक नहीं बनने देते। समस्त राष्ट्र का जो अज्ञान-विरोध है उसके अनुसार अज्ञानों को पुरा करने वाला कोई भी राष्ट्र इस अज्ञान-विरोध का अज्ञान हो सकता है और हो सकता चाहिए। किन्तु अज्ञान राष्ट्र जो अज्ञान से इस अज्ञान की अज्ञानता के लिए द्वार अज्ञानता रहे वे अज्ञान भी अज्ञान के अज्ञान हो सकने में अज्ञान नहीं हुए, और अज्ञान तो अज्ञानता के अज्ञान राष्ट्रों की अज्ञानता ०१ अज्ञान अज्ञान लगी है।

कस ने कहा था कि सत्यता जाहूँने वाले बीवह देशों का संयुक्त राष्ट्र में सम्मिलित कर लिया जाय, लेकिन अमेरिका मार्ग में बाधक हो गया। इस सम्बन्ध में यह नहीं कहा जा सकता कि कस ने इस सम्बन्ध में साम्यवाद को बढ़ावा मिलता क्योंकि कस ने बिन बीवह देशों का समर्थन किया था जिनमें से कम-से-कम नौ तो कम्युनिस्ट देश नहीं थे।

सरासर क्यावती की बात है कि चीन जनराज्य देश को संयुक्त राज्य में प्रतिनिधित्व प्राप्त नहीं है। भारत सरकार ने इस खटकने वाली स्थिति पर जोर देता प्राया है। संयुक्त राज्य में प्रतिनिधित्व की बात तो धमक रही कुछ राष्ट्र तो चीन जनराज्य का अस्तित्व तक स्वीकार करने को तैयार नहीं है। किन्तु चीन जनराज्य एक ऐसी वास्तविकता है जिसकी धोर से प्राज्ञे भूदने से कोई लाभ होने वाला नहीं है। कैमिस्तांग सरकार प्रपचा बाओबाई सरकार बीसी गठयुतली सरकारें प्राखिर कियने दिन बल सकती हैं ? चीन के प्रति उपेक्षा का जो रवैया है वह अकेले चीन के प्रति ही नहीं समस्त एशिया के प्रति है।

कौरिया राजनीतिक सम्मेलन की रचना को ही लीजिए। यूरोप के बीस धीर अमेरिका मिलकर एशिया की समस्याओं को सुलझाना चाहते हैं। यह जैसे आह्वय की बात है। यूरोप धीर अमेरिका एशिया की कब तक उपेक्षा कर सकेंगे ? व तो एशिया के अस्तित्व को ही मूल जाना चाहते हैं। पर कछुरा से अकार्ता तक तारा एशिया काय चुका है धीर अरर अमीका भी अरबद ले रहा है। यदि उन्नत देश एशिया की उपेक्षा कर अचना स्वार्थ साधने के स्वप्न देख रहे हैं तो वे भ्रम में हैं। संसार की तीव्र-बीपाई आबादी इस भाग में स्थित है। इसके अन्धाल के उपाय करने में ही उन्नत राष्ट्रों का अन्धाल हो सकता है। पर यदि उन्नत राष्ट्र एशिया धीर अमीका के प्रति ईर्ष्यानु बने रहे धीर उनके उचित स्थान प्राप्त करने के मार्ग में रोड़े अटकते रहे तो सम्भव है कि उनके अग्रने ही अस्तित्व के लिए अतरा पैदा हो जायेगा। अरबद बायु के बेग में बड़े पुराने धीर विशाल बुस भी अरबद जाया करते हैं यह उन्हें अमरल रचना चाहिए। इसके विपरीत यदि वे लक्ष्मण अंकर इस अवेग की धीन-हीन अगता के अन्धान में लहस्यक होने लो वह भी अिनअ भाव से अगता आकार मानेगी।

हम प्राते है कि पृथ्वी पर अणुव्य-आति का प्राली पात्र में सर्वोत्तम स्थान है। पृथ्वी के अणु-अशियों तथा अणु प्राशियों से अणुव्य अिल अकित के कारण अंका है अणु है अतकी अल-अकित। अणुवी इस अल-अकित की सहायता से अणुव्य अणु धीर अणु की अहवान करता है धीर अणुअगान प्राखिअर प्राखि अिनअ अेअों में अणुवी कुआप्रता का अरिअय देता है। इतिहास का अहुराई से अणुव्यन करने पर

हम पाते हैं कि आदिकाल से मनुष्य ने आध्यात्मिक और आधिभौतिक इन दो विधाओं की प्रगति की है। आध्यात्म और आधिभूत में मानव का समस्त विकास निहित है।

वहाँ तक आध्यात्मिक क्षेत्र में मनुष्य के विकास को धारण करने की बात है वहाँ निःसंकोच कहा जा सकता है कि पूर्व के देस इस क्षेत्र में सबसे धारण रहे हैं। जिस समय पश्चिमी जगत आन्धकारमय का और वहाँ सम्यता का नाम निदान नहीं पा इस समय पूर्व के देस आध्यात्मिक उन्नति के अन्तर पर थे। जिस से चीन-जापान तक और तिब्बत से स्वाम, बाबा, सुनात्रा तक आचार्य सम्प्रदाय और प्रेम का सम्बन्ध देते थे। कई हजार वर्ष पश्चात् प्रायः ही इस प्रवेश के नैतिक सिद्धांतों की मूल एकक्यता को सरलता से पहचाना जा सकता है। वे निःसंकोच और पूर्व के साथ कह सकते हैं कि आध्यात्मिक क्षेत्र में मानव ने जो कुछ विकास किया उसमें भारत ने सबसे अधिक योग दिया।

पर समय धारण पर दूसरे क्षेत्र में अर्थात् आधिभौतिक क्षेत्र में पश्चिम पूर्व के देसों से बहुत धारण निकल पया। इस क्षेत्र की तारी प्रगति एक कारण से कही जा सकती है और वह है निर्यात वर विजय पाने का प्रयत्न। इस क्षेत्र में पश्चिम का सबसे बड़ा कदम उठा लगभग दो सौ वर्ष पूर्व औद्योगिक क्रांति से; अर्थात् १७६० ई। सबसे पहले भाष की शक्ति का फल चला, फिर विद्युत-शक्ति का अन्तर्गत भौतिक प्रगति की बलि और भी बढ़ पयी। विद्युत-युग के बाद अणु-युग का पहुँचा है और प्रकृति वर विजय पाने का आकांक्षी मानव प्रयोगों और अनुसन्धानों के सहारे धारण ही बढ़ता जाता है।

भौतिक क्षेत्र में पश्चिम की प्रगति का परिणाम यह हुआ कि तैयार मान के लिए कच्चे मान की कमी और तैयार मान की बिक्री के लिए मंडियों की आवश्यकता के परिणामस्वरूप साधनों की निरन्तर कमी होने लयी। नये साधनों की खोज के कारण उपनिवेशों का जन्म हुआ और बीरे-बीरे पश्चिम का प्रमुख सारे देस में जा गया। दो विश्वयुगी युद्ध हुए और तीसरे युद्ध के भय से सारा संसार काँप रहा है। यदि यह युद्ध रुका हुआ है तो केवल इस कारण कि न अमेरिका को अपनी विजय का पुरा विश्वास है और न रुक को ही। पत युद्ध के बाद के इन घातकों में बुनियाद पर और आधिकारिक सत्ता रहा। तीस और कराइ से बुनियाद सिद्ध हुई। कम उन्नत देसों में आयरलैंड की तरह फैल गयी। बर्मा भारत पाकिस्तान एक के बाद एक उपनिवेश स्वतन्त्र होने लये। आध्यात्मिकता का सम्बन्ध फिर सुनायी देने लया। मानवता की बुद्धि देते हुए बलि के कर्मण्य के लिए मानवता के पुनारी म्हात्मा बाबा अन्तरित हुए।

घाब भी आध्यात्मिक और आध्यात्मिक संपर्क चल रहा है। जहाँ पश्चिम के देश आध्यात्मिक जगति को ही सच कुछ मान बैठे हैं वहाँ भारत घाब भी आध्यात्मिक पक्ष पर ही चल देता है। किन्तु जिस तरह केवल आध्यात्मिक पक्ष पर चल देने से सम्पूर्ण विगड़ता है उसी तरह घबरेले आध्यात्मिक पक्ष की घोर ध्यान देने से सम्पूर्ण विगड़ता है और आध्यात्मिक संसार में हमारा अस्तित्व भी अतएव में पड़ सकता है। इसलिए हम दोनों वर्गों को सम्बन्धित स्थान देने का प्रयत्न कर रहे हैं।

हमारे सामने मुख्य समस्या यही है कि दुनिया को युद्ध की लपटों से किस प्रकार बचाने और आन्ति का उपयोग करती हुई मानव-जाति किस तरह समृद्धि की ओर बढ़ती जाय। यदि यही स्थिति बनी रहती कि दुनिया के एक भाग में बेमुमारा आबादी हो और वहाँ के लोग बेकारी और भूख के कारण घबरे न बढ़ सकें और दूसरे भाग में आबादी अत्यन्त कम हो और लोग नुनकरें उड़ाते रहें तो स्पष्ट है कि संसार को आलस नहीं मिल सकता फिर तो संघर्ष भी रहेगा, और महायुद्ध भी होगा और संसार भी बिनाश की प्राप्त हुए बिना न रहेगा।

पर आन्ति का मार्ग भी है और वह बहु महत्त्वा का भी अत्यन्त अदृष्ट और अज्ञान युद्ध का विनाश हमारे प्रेम और अहिंसा का मार्ग। यह वही मार्ग है जिसका भारत के प्राचीन ग्रन्थों में उल्लेख है 'बभ्रुवैव कुटम्बकम्', अर्थात् तारा संसार एक बड़ा परिवार है। इस रास्ते पर हमें विनिम्नता को भुलाकर नून एकता को समझना होगा अर्थात् कि अहिंसा में भी कहा गया है :

“एवं तद् विद्या बहुधा बभ्रुवैव”

समाप्त

